
मासिक प्रकाशन
कादम्बिनी
भारतीय भाषाओं की
विशिष्ट पत्रिका
लना कहीं
मुहब्बत के
ी लोकसभा
ने में हम
चेहरा देखें !
दोलन
के थोक
सा पांच
कयों का
टाइम्स प्रकाशन

मूंगफली का लिफाफा, केले का छिलका
पान का छींटा, है कहां से टपका
जब हम ही गंदगी फैलाएंगे
तो प्लेटफार्म साफ कैसे रख पाएंगे।



आइये सफ़र सुखद बनायें।

उत्तर रेलवे
आपकी सेवा में

INTERPUB/NR/1/92



अगला अंक : जून अंक

रोमांच विशेषांक

- 'कादम्बिनी' के विशेषांकों की अपनी परंपरा है ।
- कादम्बिनी का हर विशेषांक दूसरे से अलग होता है !

छुट्टियों के लिए !!

- पढ़िए एक से एक दिलचस्प कहानियां, घटनाएं, रोंगटे खड़े करने वाले विवरण ।
- 'रहस्य-रोमांच विशेषांक' एक बार आपके हाथ से छूटा कि फिर मिलेगा नहीं ।
- 'रहस्य-रोमांच' विशेषांक की प्रति अभी सुरक्षित करा लीजिए ।

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

• ज्ञानेन्दु

१. **अभीष्ट** — क. लालायित, ख. कल्पित, ग. इच्छित, घ. सिद्ध।

२. **पर्याप्त** — क. बहुत, ख. काफी, ग. संतोषजनक, घ. अत्यधिक।

३. **पर्यावरण** — क. चारों ओर की स्थिति, ख. चारों ओर का परदा, ग. घुमाव-फिराव, घ. वायुमंडल।

४. **सचराचर** — क. विश्व, ख. जो अस्थिर हो, ग. सचल, घ. जिसमें स्थावर और जंगम सभी हों।

५. **सचित्त** — क. बुद्धिमान, ख. एकाग्र, ग. केंद्रित, घ. संचित।

६. **सचेत** — क. बुद्धिमत्तापूर्ण, ख. सावधान, ग. सशंकित, घ. चतुर।

७. **दुःखार्त** — क. रोता-चिल्लाता हुआ, ख. दुःखी, ग. पीड़ित, घ. असह्य वेदनामय।

८. **दुःसाध्य** — क. कठोर, ख. पीड़ामय, ग. जो कठिनाई से किया जा सके, घ. असंभव।

९. **सक्षम** — क. सफल, ख. क्रियाशील, ग. सचेष्ट, घ. समर्थ।

१०. **दुःश्रेय** — क. दुस्साहस, ख. अपयश, ग. कठिनता, घ. असमर्थता।

११. **विज्ञ** — क. जानकार, ख. समर्थ, ग. योग्य, घ. कुशल।

१२. **विडंबना** — क. असत्य, ख. उपहास का विषय, ग. उल्टी बात, घ. बहकानेवाली बात।

१३. **पर्याय** — क. अर्थ, ख. सार्थक शब्द, ग. समानार्थक शब्द, घ. समानांतर।

उत्तर

१. ग. इच्छित, अभिलषित। परिश्रम से ही **अभीष्ट** उद्देश्य की सिद्धि होती है। (व्युत्. –अभि, इष)

२. ख. काफी। देश में अन्न-भंडार **पर्याप्त** है। (व्युत्. –परि, अप्)

३. क. चारों ओर की स्थिति, अड़ोस-पड़ोस। **पर्यावरण** को दूषित होने से बचाना चाहिए। परि+आवरण (व्युत्. –आ, वृ)।

४. घ. जिसमें स्थावर और जंगम सभी हों। **सचराचर** की उत्पत्ति भगवान ने की है। (सचर+अचर)

५. क. बुद्धिमान, जिसका ध्यान केंद्रित हो। **सचित्त** छात्र परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। स+चित् (व्युत्. –चित्)

६. ख. सावधान। आशंकाओं के प्रति मनुष्य को सदैव **सचेत** रहना चाहिए। (व्युत्. –स, चित्)

७. ख. दुःखी, कष्ट में पड़ा हुआ। संसार में **दुःखार्त** लोगों की संख्या बड़ी है। (दुःख+आर्त)

८. ग. जो कठिनाई से किया जा सके । यह कार्य **दुःसाध्य** है । दुः+साध्य)

९. घ. समर्थ । परिश्रमी व्यक्ति कठिन कार्य करने में **सक्षम** होते हैं । (स+क्षम)

१०. ख. अपयश । राम को वन भेजने का **दुःश्रेय** कैकेयी का है । (दुः+श्रेय)

११. क. जानकार, विद्वान । शिक्षक को अनिवार्यतः **विज्ञ** होना चाहिए । (व्युत्. –वि, ज्ञ)

१२. ख. उपहास का विषय । सामाजिक जीवन अनेक **विडंबनाओं** से भरा है । (व्युत्. –विडंब)

१३. ग. समानार्थक शब्द । भाषा में अनेक शब्दों के **पर्याय** भी होते हैं । (व्युत्. –परि, इ)

पारिभाषिक शब्द

Recognition	= मान्यता
Recommendation	= अभिशंसा/सिफारिश
Favourable	= अनुकूल
Unfavourable	= प्रतिकूल
Undervaluation	= अल्पमूल्यांकन
Telecommunication	= दूर-संचार
Technologist	= शिल्पविज्ञानी
Agronomist	= शस्य-विज्ञानी

ज्ञान-गंगा

अल्पाश्रयं समासाद्य महानप्यल्पको भवेत् ।
गजेन्द्रः पर्वताकारो यथा दर्पणमाश्रितः ।।

(तराभरणम् ५५)

—छोटा आधार पाकर बड़ा भी वैसे ही छोटा बन जाता है, जैसे पर्वताकार हाथी दर्पण में समाश्रित होकर छोटा हो जाता है ।

यद् वा अहं किंचन मनसा धारयति तथैव तद् भविष्यामि ।

(गोपथ ब्राह्मण १/१/९)

—जिसे मैं मन से जैसा समझता हूं वह वैसा ही होगा ।

स्वर्गं नयति सूनृतम् ।

(शिशुपाल वध २/२७)

—मधुर वचन मनुष्य को स्वर्ग पहुंचाता है ।

क्रोधांधः परमांध एव हतधीर्नांधोहशांधो जनः ।

(आनंद वृंदावतचंपू १५/१४०)

—क्रोध से अंधा हुआ व्यक्ति ही परमांध होता है, क्योंकि उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है । केवल नेत्र से अंधा हुआ मनुष्य ही अंधा नहीं होता ।

शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु ।

(अथर्ववेद १/१०/२)

—तेरे लिए जल (शांति व क्षमा) के साथ अग्नि (तेजस्विता) कल्याणकारी हो ।

रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन ।

(रघुवंश ६/७९)

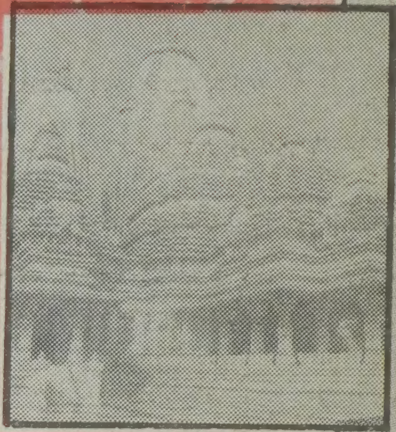
—रत्न को स्वर्ण के साथ संयुक्त करना चाहिए ।

प्रस्तुति : महर्षि कुमार पांडेय

कादम्बिनी वर्ष ३६, अंक ७, मई, १९९६

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

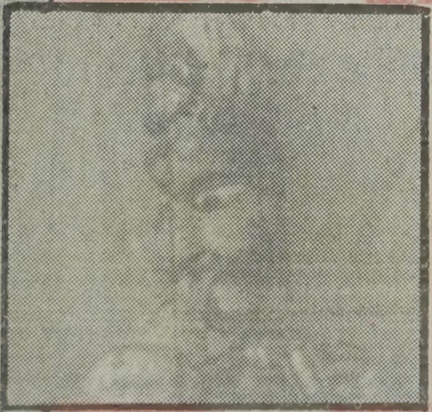




कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी





कविताएं

कहानियां एवं व्यंग्य

सार संक्षेप

स्थायी स्तंभ

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, सुजीत वाजपेयी
प्रूफ-रीडर : प्रदीप कुमार
कला विभाग-प्रमुख : सुकुमार चटर्जी चित्रकार : भुपेन मंडल
संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।
फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

'कादम्बिनी' : चंदे की दरें

अर्द्धवार्षिक ६० रुपये; वार्षिक : ११५ रुपये, द्विवार्षिक : २२५ रुपये; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटानः अर्द्धवार्षिक : १८५ रु. (अमरीकी डॉलर-७, पौंड ४), वार्षिक : ३६५ रु. (अमरीकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)
अन्य सभी देशों के लिए : अर्द्धवार्षिक २७५ रुपये (१०.५० डॉलर, पौंड ६); वार्षिक : ५३५ रुपये (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०)।

शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१।

आवरण चित्र में मॉडल 'रवीना चावला:' बंबई फिल्मी दुनिया की नवोदित अभिनेत्री

प्रतिक्रियाएं



पुरस्कृत पत्र

आप राजधानी में बैठे हैं एवं 'कादम्बिनी' के जरिये लाखों पाठकों को सत् साहित्य से परिचित करा रहे हैं । आपकी पत्रिका से मैं पिछले १० वर्षों से निरंतर प्रभावित होता रहा हूं । वर्षों से आपको पत्र लिखने का मन भी बनाया । आज जब मैं 'हास परिहास विशेषांक' पढ़कर उठा तो आपको पत्र लिखने बैठ गया । मन आशंकित भी है कि म. प्र. के पिछड़े आदिवासी बाहुल्य जिला 'सरगुजा' के मनेन्द्रगढ़ की चिट्ठी के प्रति पता नहीं आपकी दृष्टि कैसी हो ? सच मानिए व्यंग्य एवं हास्य कथाएं अंदर तक गुदागुदा गयीं, इस विशेषांक को पढ़ कर आनंद मिला । तनाव एवं भाग-दौड़ की जिंदगी में अब हमें फुरसत ही कहां है कि हम उन्मुक्त हंसी हंस लें । ऐसी प्रकृति बहुत कम ही लोगों की रही जो हंसते रहे और दूसरों को हंसाते रहे । आप मानें या न मानें सद्भावना के बीज इन्हीं उन्मुक्त वातावरण एवं हास्य में छुपे रहते हैं । प्रसन्नता तो प्रकृति की दी हुई बिना मोल की सबसे महत्त्वपूर्ण पौष्टिक है । निसंदेह इस विशेषांक से हमें भरपूर विटामिन मिला है । हमारे ऋषि संभवतः इस तथ्य से परिचित थे एवं आप भी हैं, अतः अपनी सुविधा एवं परंपरानुसार ऐसे विशिष्ट विशेषांक के लिए प्रयत्नशील रहते हैं ।

विश्वाहा सुमना दी दि हीहि ।
(अथर्ववेद-७/७४/४)

(हे मानव ! तू इस संसार में प्रसन्नचित्त होकर चमक, स्वयं प्रकाशित हो और अन्यों को प्रकाशित कर) । 'होली कीचड़ की', 'एक चिंतन पापड़ के नाम' 'अपना नरक दर्शन' 'नाक काटने की प्राचीन परंपरा' व्यंग्य पढ़कर आंखों में चमक, चेहरे में कांति और मन में स्फूर्ति, हास्य का संचार हुआ । लगता है आप हमारी मनः स्थिति से परिचित थे । कादम्बिनी ने बोझिल, दौड़ती, हांफती जिंदगी से प्रसन्नता की अच्छी संगति बैठायी है । 'कालचिंतन' में भी आपने स्वीकारा है कि ''कालखंड के हम विभीषण युग'' से गुजर रहे हैं । मानवता का अब तक का इतिहास यही बताता है कि अंधियारावाला पक्ष कभी भी उजले पक्ष पर हावी नहीं हो पाता । हम तो इसी विश्वास से जी रहे हैं कि यह अंधकार स्थायी नहीं है । उसे तो मिटना ही है । चिरपुरातनकाल से हमें 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रेरणा मिलती रही है । अंत में इस शुभकामना के साथ कि ।

''प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय प्राधीय आयुः

प्रतरंदधाना : (ऋग्वेद ६०/१८/३) अर्थात दीर्घतम और उत्कृष्ट जीवन को धारण करते हुए हम हास, उल्लास एवं आनंद भरे उत्तम मार्ग पर आगे ही बढ़ें ।

—सतीश उपाध्याय
मनेन्द्रगढ़-४९७४४२, जिला-सरगुजा (म. प्र.)

प्रोत्साहन पुरस्कार

अमरीकी राष्ट्रपतियों के प्रेम-प्रसंग (आखिर कब तक ?) की तरह ही हमारे राजनेताओं के भी प्रेम-प्रसंग चर्चित हुए हैं, लेकिन आजकल जो प्रेम-प्रसंग चर्चित होते हैं वे निचले स्तर के होते हैं, जिनकी कोई अपनी अहमियत नहीं होती है और न ही वे राजनीति को प्रभावित करते हैं ।

हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का एडविना माउंटबेटन से जो प्रेम-प्रसंग चला था वो न केवल पवित्र था बल्कि इस प्रसंग ने भारत विभाजन को भी प्रभावित किया था । पं. नेहरू के अजीज दोस्त और राजनीतिक सलाहकार ने ही नेहरू और एडविना के 'प्रेम-प्रसंग' को उजागर किया था । स्वयं नेहरूजी ने भी इससे इनकार नहीं किया था । ये अजीज दोस्त और सलाहकार थे, 'एम. ओ. मथाई', जिनकी स्वयं की भी धारणा थी कि "सभी महान व्यक्तियों के जीवन का घोषित महत्त्वपूर्ण तत्व 'सेक्स' है ।" उनकी ये बेबाक टिप्पणी नेहरू-एडविना के प्रेम-प्रसंग की तरह ही चर्चित रही । मथाई ने इस धारणा को नेहरू, जूलियस सीजर, क्लिओ पात्रा, नेपोलियन, मादाम और हिटलर-जैसी हस्तियों के जीने के ढंग के आधार पर ही बनायी थी ।

श्री एम. ओ. मथाई ने यह भी कहा था कि नेहरूजी ने कभी किसी महिला का पीछा नहीं किया, बल्कि महिलाएं ही नेहरू के पीछे रहा करती थीं । नेहरू और एडविना के प्रेम-प्रसंग के पीछे एडविना के पति लार्ड माउंटबेटन की भी मौन स्वीकृति थी । लार्ड का ये कहना था कि इस प्रसंग के चलते नेहरूजी को भारत विभाजन के लिए अंगरेजी सरकार की संशोधित योजना के लिए राजी किया जा सके, लेकिन जब नेहरूजी ने इस योजना का अध्ययन अपने अध्ययन कक्ष में किया तो वे आग-बबूला हो गये, क्योंकि इस योजना में भारत को कई टुकड़ों में बांटने की बात कही गयी थी । नेहरूजी अगर उस समय एडविना के प्रेम के मोहपाश में फंसकर इस योजना के लिए राजी हो जाते तो शायद आज देश के हालात दूसरे ही होते ?

नेहरूजी, एडविना के प्रति आसक्त कैसे हुए इसका जिक्र करते हुए श्री मथाई ने कहा था कि जवाहरलाल नेहरू उस समय विधुर और अकेले थे और अपनी जिंदगी में एक औरत चाहते थे । पं. नेहरू के इस विधुरता और अकेलेपन को एडविना ने अपने अस्तित्व से पाट दिया था । अंगरेज इतिहासकार भी इस तथ्य से इनकार नहीं करते हैं । नेहरूजी की लाडली बेटी और भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने इस प्रेम-प्रसंग को बकवास बताया था, लेकिन इतिहास आज इसका गवाह है । स्वयं इंदिराजी भी तो फिरोज गांधी के प्रेम में बंधकर परिणय सूत्र में बंधी थी । कहने का मकसद यही है कि प्रेम प्रसंगों को लेकर अमरीकी राष्ट्रपतियों ने भले ही बाजी मारी हो,

लेकिन भारत के राजनीतिज्ञों और नुमाइंदों का इतिहास प्रेम-प्रसंगों से भरा पड़ा है ।

—**अविनाश बावीकर**

६१, देवी अहिल्या मार्ग, सेंधवा (मध्य प्रदेश)

संस्कृति : राष्ट्र का तीसरा अंग

कहा गया है कि भूमि, भूमि पर बसनेवाले जन और जन की संस्कृति मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं । संस्कृति के बारे में आई. ए. एस. बाल्मीकि प्रसाद सिंहजी के विचार जानने को मिले, अच्छा लेख पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ । सभी देशों की अपनी-अपनी संस्कृति होती है, परंतु भारतीय संस्कृति की बात ही निराली है; बड़ी ही विविधताओं से भरी है भारतीय संस्कृति । इसे हम 'अनेकता में एकता' का जीवंत उदाहरण कह सकते हैं । भारतीय संस्कृति स्वयं में इतनी भिन्नताओं को समेटे हुए है कि पहले तो कई विदेशियों ने भारत को राष्ट्र न कहकर उपमहाद्वीप की संज्ञा दी । आखिर भारतीय संस्कृति इतनी सामान्य तो है नहीं कि हर किसी की समझ में आ जाए । जब विचार करो तो लगता है सचमुच महान है हमारी संस्कृति और धन्य हैं हम कि हमने इस महान संस्कृति वाले महान देश भारत में जन्म लिया ।

यदि देश की अन्य संस्कृतियों को ध्यान में रखते हुए भारतीय संस्कृति पर एक नजर डालें तो यह अन्यों से कहीं अधिक सहिष्णु और उदार है । वह भारतीत संस्कृति ही है कि जहां अपने विचार व्यक्त करने पर मौत का फतवा जारी नहीं किया जाता । यहां वैचारिक स्वतंत्रता है । स्वतंत्रता है हर किसी को अपना रास्ता चुनने की, एक अच्छा जीवन जीने की ।

संस्कृति की कोई एक परिभाषा तो दी नहीं जा सकती, हालांकि विद्वानों ने संस्कृति को शब्दों में भी बांधा है, "जीवन के विटप का पुष्प संस्कृति है ।" "ज्ञान और कर्म दोनों के पारस्परिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति है ।" परंतु मैं तो कहूंगी कि भारतीय संस्कृति विटप का पुष्प नहीं अपितु विटप ही है; एक सुंदर-सा वृक्ष जिस पर पत्ते भी हैं, फल भी हैं और फूल भी हैं ।

यदि हम वर्तमान संदर्भ में देखें तो भारतीय संस्कृति का किन्हीं कारणों से विकास नहीं हो रहा है या यूं कहें कि संस्कृति रूपी वृक्ष उचित प्रकाश और देख-रेख के अभाव में कुछ सूख-सा गया है । इस पर अतिक्रमण हो रहा है दूसरी संस्कृतियों का । आज जरूरत है तो केवल इस बात की कि कोई ऐसा अश्वमेघ यज्ञ हो कि जो भारतीय संस्कृति की धारा को प्रवाहित कर दे, आज ऐसे व्यक्तियों की जरूरत है जो स्वामी विवेकानंद की तरह भारतीय संस्कृति का प्रचार करें, प्रसार करें । वैसे हमारी संस्कृति इतनी कमजोर नहीं है कि इतनी जल्दी धूमिल हो जाए । भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी हैं । हम इतने सक्षम तो नहीं हैं कि इस मजबूत वृक्ष को सहारा दें पर इतने सक्षम तो हमें होना ही चाहिए कि इस संस्कृति रूपी वृक्ष की छांव ले सकें, फल ले सकें, फूल ले सकें ।

—**कु. ऋचा रावत**

सराफा बाजार, सागर (म. प्र.)

विवाह में सफलता

विवाह में सफलता के लिए व्यावहारिक

दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है । पति-पत्नी की परस्पर रुचियां न भी मिलती हों तो बुद्धिमत्ता एक-दूसरे की रुचियों को सम्मान देने में है न कि एक-दूसरे को अपने ढांचे में ढालने के प्रयत्न में कलह उत्पन्न करने में । पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निबाहते हुए, अहं भाव का परित्याग कर अगर अपनी-अपनी रुचियों को पल्लवित किया जाए तो भी शादी एक अभिशाप न बनकर वरदान साबित हो सकती है ।

—डॉ. अनूप कु. गक्खड़
जालंधर शहर

विधवा नहीं, पत्नी लिखें

वाह, अवस्थीजी, आपने मेरी सोच पर अपनी मुहर लगा दी । अब तक मैं पत्र-पत्रिकाओं (हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में भी) में किसी भी व्यक्ति के निधन के पश्चात यही छपता आ रहा था कि अमुक व्यक्ति के निधन के बाद उनकी विधवा बेसहारा हो गयी है । ऐसा पढ़कर मुझे बराबर संपादकों पर गुस्सा आता रहा है—परंतु इस बार कादम्बिनी में स्मृति-शेष श्यामाचरण दुबे के परिप्रेक्ष्य में यह पढ़कर कि—"प्रोफेसर दुबे ७३ वर्ष के थे । उनके परिवार में उनकी पत्नी प्रोफेसर लीला दुबे के अलावा दो पुत्र और एक पुत्र वधु है ।" यह पढ़कर मैं यह कहता उछल पड़ा कि वाह अवस्थीजी आपका तो देशव्यापी अभिनंदन होना चाहिए । आप अन्य हिंदी संपादकों-जैसे लकीर के फकीर नहीं रहे, जो अंगरेजी का अंधानुकरण करते हुए विडो ऑफ सो एण्ड सो की तर्ज पर लिख मारते हैं—"फलां के निधन के बाद उनकी विधवा . . .।"

मेरी राय में सभी हिंदी संपादकों को डॉ. अवस्थी से सीख लेनी चाहिए कि किसी के निधन के बाद उसकी 'पत्नी' - पत्नी ही रहती है—विधवा कहकर उसे संबोधित करना अशोभन है, ठीक उसी तरह जैसा कि पति की मृत्यु के बाद उसके सिर के बाल मुड़वा देना । एक बार फिर अवस्थीजी को मेरी बधाई है ।

—रघुनाथ प्रसाद विकल
पटना

(आपने इतनी सूक्ष्म बात पकड़ी, इसके लिए आभार— सं.) ।

धन्यवाद

'कादम्बिनी' में घरेलू सामग्रियों का औषधियों के रूप में प्रयोग बताया जाता है जो जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी है क्योंकि ये सामग्रियां सस्ती होने के साथ-साथ सहज उपलब्ध भी हैं । मैंने इससे लाभ भी उठाया है । मेरे पति के हाथ में दाद सरीखा एक इंची दाग हो गया था, जहां की त्वचा मोटी और काली हो गयी थी । कादम्बिनी में बताये उपचार के अनुसार मैंने प्रतिदिन तुलसी के रस में गेरू (लाल मिट्टी) मिलाकर लगाया, जिससे काफी लाभ है । इन उपचारों में धैर्य की आवश्यकता होती है । अतः कादम्बिनी परिवार को धन्यवाद देते हुए अनुरोध करती हूं कि इसी प्रकार आपकी पत्रिका जन साधारण के लिए दिनों दिन और उपयोगी बनती रहे ।

—श्रीमती ईरा पंत
कोरबा पश्चिम

अप्रैल '९६ अंक में व्यंग्य लेख 'गाय, बैल और सरकारी कायदे कानून' की लेखिका का नाम भूलवश मीनाक्षी गोस्वामी छप गया है । इनका सही नाम मीनाक्षी स्वामी है ।

गागर में सागर

'गागर में सागर' वाली कहावत 'कादम्बिनी' के स्वास्थ्य-विशेषांक पर चरितार्थ होती है, वैसे तो कादम्बिनी के हरेक अंक संग्रहणीय होते हैं, पर स्वास्थ्य-विशेषांक का तो कहना ही क्या ? मैं ८५ से कादम्बिनी का नियमित पाठक हूं और आज भी कादम्बिनी की उसी उत्सुकता से प्रतीक्षा किया करता हू', प्रति मिलने में एक दिन का विलंब भी मन को बेचैन कर देता है । दुर-सुदूर देहातों में रहनेवाला मुझ-जैसा पाठक कादम्बिनी में बताये गये नुस्खों का प्रयोग कर अपने रोगों से निजात पाता है । सचमुच, कादम्बिनी अपने नाम के अनुरूप ही अपने-आपको प्रस्तुत करती है ।

— शशि कुमार श्रीवास्तव
हजारीबाग-८२५३१२

हजल

सुरेश नीरव की 'हजल' पर हमें निम्नलिखित पाठकों के पत्र प्राप्त हुए : जगन्नाथ विश्व, (बिरला ग्राम, नागदा); सुधाकर त्रिपाठी (सतना, म. प्र.); नरेन्द्र शर्मा, (जबलपुर); सोमनाथ शुक्ल 'शशांक', (रीवा, म. प्र.); शिव भरोसे तिवारी (म. प्र.) । स्वामी वाहिद काजमी, (अंबाला छावनी); संजय झांसवी, (नयी दिल्ली); रामवरण ओझा, (खंडवा, म. प्र.) ।

'हास्य-परिहास' विशेषांक पर हमें निम्नलिखित पाठकों के पत्र प्राप्त हुए :

मोहन कुमार सरकार ([illegible]); [illegible] चौधरी (राज.), सत्यपाल सिंह 'सुमन' (नयी दिल्ली); श्रीकांत कुलश्रेष्ठ (मुंबई); अखिलेश्वर पांडेय (बिहार); आर. पी. सिंह चंदेल 'रवि' (म. प्र.); सुभाष कुमार गुप्ता (बिहार); [illegible] कुशवाहा (बिहार); सरोजनी पांडे (इलाहाबाद)।



—सत्य ?

—हां, सत्य के प्रतिकल्पी सत्यवान की खोज करनी पड़ेगी ।

—सोचना होगा : सत्यवान मिथक की संज्ञा का एक प्रयोगधर्मा और वर्ग चेतना का प्रतीक है अथवा व्यतीत के शिलालेखों में अंकित वह सहज, सजग और जीवित पात्र रहा है !

■

—सत्यवान की खोज सावित्री का पतिव्रत धर्म रहा है अथवा समय के प्रतीकों को अंकित करनेवाला मूल्यवान अर्थ ।

—सत्यार्थ तभी होता है जब समय के प्रचलित मूल्य उसे सामान्यतः स्वीकारते नहीं ।

—राम का राजसत्ता त्याग और वनगमन, दशरथ का बेबस होना, केकैयी का छाया-विद्रोह और फिर वनवास ; वनवास के पश्चात् की स्थितियां और राम का संघर्ष—प्रतीक हैं इस सत्य के कि राम-युग में राम ने जो भी किया वह युग-सत्य नहीं था ।

—युग-सत्य होता तो राम का गौरवपूर्ण राजतिलक सदियों बाद भी महिमा-मंडित नहीं हो सकता था ।

—अर्थ यह हुआ कि समय की वीभत्स शिलाओं को तोड़ने के लिए हथौड़े और विस्फोटकों की अनिवार्यता अनर्थ है ; अर्थ है आत्मसत्ता का समय के प्रबल आयोग के तूफानी बगूलों में फंसकर सहज ही बाहर आ जाना ।

■

—सत्य की परिभाषा यहीं करनी होगी ।

—सत्य का संबंध हमारी मानसिक दीर्घायुओं से है ।
—शरीर रथ है ।
—रथ में इंद्रधनुषी घोड़े जुते हुए हैं ।
—लगाम उनकी मन के हाथ में है ।
—रथ का सारथी है बुद्धि ।
—आत्मा रथी है ।
—रथी रूपी सारथी से जब रथ के सारथी का संयोग होता है और मन की लगाम से इंद्रधनुषी घोड़ों को वह शक्तिपूर्वक वश में करता है तब वह भोक्ता की स्थिति में पहुंच जाता है ।
—भोक्ता कभी उपभोक्ता नहीं बनता ।
—भोक्ता के वश में सभी कुछ संयुक्त होता है जैसे कुशल घुड़सवार के काबू में घोड़े का समूचा जीवन अस्तित्व ।
—इस स्थिति में आकर ही लक्ष्य और परिधि की अवधारणा टूटती है, क्योंकि असामान्य परिस्थितियों में भी सत्य की लगाम संपूर्ण समर्पण के साथ हाथ में रहती है ।
—समर्पण प्राप्ति का प्रथम और अंतिम सोपान है ।
—इसी सोपान में आत्मा का जागरण है ।
—आत्मा का संदेश है :

- अविराम चलते रहना
- अविराम निश्चिंत
- अविराम समर्पण
- समर्पण से उद्‌भूत सुख का अमृत कलश
- अमृत कलश से विनाश का प्रतिकार
- विनाश के प्रतिकार से समन्वयवादी सृष्टि का उदय

—समन्वयवादी सृष्टि के उदय से विकार विनष्ट होते हैं ।
—सत्य वही है जहां विकार की छाया भी नहीं पहुंचती ।
—विकार रहित मनुष्य की आत्मा उस हीरे की तरह है जो ठोस होता हुआ भी पारदर्शी है ।

■

—हीरे से कीमती न मनुष्य है और न विश्वमंडल । सभी को दूषित कर दिया है आक्रमणकारी, विघटनवादी और उपभोक्ता तत्वों ने ।
— इन्हें स्वच्छ करना सहज नहीं है ।



■

—प्रातबेला !

—अचानक एक व्यक्ति का मेरे कमरे में प्रवेश ।

—अनाहूत अतिथि !

—आग्रह किया मैंने, परेशान हैं आप ?

—जी, बेहद, अन्यथा, अचानक इस तरह अवतरित नहीं होता कोई !

—किसलिए लेकिन मेरे पास ? मैं क्या कर सकता हूं ।

—'सभी कुछ' उसने कहा, 'आप पारदर्शी हैं । पारदर्शी पुरुषोत्तम होता है ।'

—'मैं पुरुषोत्तम नहीं हूं । परेशान मत कीजिए मुझे । मैं... ।'

—'करूंगी ; मैं बाधाग्रस्त हूं । प्रेत, प्रेतछाया या प्रेतात्मा... ।'

—'परेशान सोचता हूं क्या कहूं । विश्वास तोड़ना सहज है । आगमन टूटे विश्वास से नहीं था ; तब ?'

—कहा मैंने, 'सुनो, तुम्हें रात्रि के तीसरे पहर में आना होगा । आना होगा अकेले । कहां, यह प्रश्न उठे तो वह भी बता देता हूं । वातायन के नीचे किसी शीर्ष दीवार के पटाक्षेप में' ।

—'स्वीकार्य है मुझे' बिना कुछ भी सोचे-समझे उसने उत्तर दे दिया ।

—समर्पण की यही चरमसीमा होती है । यहीं से सत्य उद्‌भाषित होता है ।

—प्रसंग यहीं समाप्त करूंगा क्योंकि सत्याकार को ओढ़े सभी असत्य के मुखौटे टूट गये और वह धराशाई थी पृथ्वी पर ।

—पृथ्वी संकल्प के लिए है, धराशाई होने के लिए नहीं ।

—मैंने उसे संकल्प से ऊपर उठाकर विकल्प के द्वार तक पहुंचा दिया !

■

—सत्य के उद्‌भाषित की मात्र यह एक घटना थी । उसका क्या होगा जहां

सत्य के आवरण झूठ, फरेब, भ्रम, शक्ति और शक्ति संतुलन के महाद्वारों तक प्रवेश कर गये हैं।

—हमारा समूचा आवरण मिथ्या-भ्रम और असत्य से आवृत्त है।

—समाज और संस्था से लेकर पृथ्वी का यह लघु गोलार्ध झीनी चदरिया के सामने एकदम नंगा है।

—इस नंगेपन ने महानता के सभी द्वार बंद कर दिये हैं।

—बंद कर दिये हैं या बंद होना पड़ा है, चिंतनीय है यह, क्योंकि शक्ति-संतुलन के अश्वमेघ हमें पराजित कर विवश छोड़ गये हैं।

■

—कौन है यहां जो कहे मैं सत्य हूं, सत्याभाषित हूं, सत्य स्वरूप हूं अथवा विनम्र होकर कह दे मैं सत्य के द्वार तक पहुंचना चाहता हूं। अभी उससे बहुत दूर हूं।

—कोहरा बहुत घना है।

—कोहरा बहुत घना है कि सूर्य की सहस्त्र-भुजाएं भी मौन, दबी हुईं कुंभकरण की मुद्रा में हैं।

—विश्वास लेकिन उन्हें है कि कुंभकरण सनातन नहीं रहा। सोचते हैं वे, कोहरा सनातन नहीं है। प्रश्न है तब भी मेरा मन भयग्रस्त है।

—विश्व का सजगतम प्रहरी भयग्रस्त हो जाएगा तो ?

—प्रलय ! नहीं महाप्रलय !

—काम नहीं चलेगा : महाप्रलय भी विश्वाच्छेदन नहीं कर सका।

—प्रकृति के सामने विकृतियों के महान-आडंबर भी धराशाई हुए हैं।

—होंगे, होते होंगे, करेगा क्या वह क्षणजीवी है। शाश्वत होने का प्रसाद उसे नहीं मिला, न मिलेगा।

—सहता रहे वह अमिट झींगरों की नस्ल को। कहा जाता है, कुछ भी हो जाए झींगुर समाप्त नहीं होंगे। न हों, हमने कब, किसके समाप्त की कामना की है, लेकिन... !

—पुरुष हैं हम, मानव हैं महामानव, झींगरों के अस्तित्व से बहुत ऊपर हैं।

—कौन हो तुम तब ?

—कौन हो तुम तब ?

—तब कौन हो ?

—श्रेष्ठता के विश्व-शिखर को नापना चाहते हो !

—नापना चाहते हो या मुट्ठियों में कैद करना चाहते हो कि श्रेष्ठ और सत्य



हमारे कारागार के स्थायी भाव हैं ।

■

—भ्रम पालनेवाले सदियों से होते रहे हैं ।

—तानाशाह, विश्वविजेता, मनुष्यभक्षक और आत्मा के अंतर के अतिरेक तक पहुंचने का उपक्रम करनेवाले दुस्साहसी ।

—नहीं पहुंच सका कोई ।

—आदमी की हथेलियों में टूटनेवाले अखरोट की तरह सभी बिखर गये । बिखर गये सभी कांच के चकनाचूर होते कण की तरह, बिखर गया पारा भी गंधक की स्पर्श छाया से, पिघल गये स्वर्ण कलश पारे के मात्र आभास से । क्या नहीं हुआ ?

—क्या नहीं हुआ ?

—पर्वत टूटा एक नदी से ।

—नदी टूटी पर्वत के पत्थरों से !

—धरती सिमटी दावानल से, ज्वालामुखी से, समुद्र मंथन से ।

—समुद्र सिमटा पृथ्वी के आक्रोशमय आक्रमण से ।

—बदल गये सब ! मानचित्र ही बदल गये । धरती के जुड़ने और टूटने के उपक्रम से सदियों से स्थापित देशों ने समर्पण कर दिया ।

■

—फिर ?

—सहजता से टूटनेवाले सत्य से हम युद्धरत हैं ।

—सत्य की हथेलियां निरीह नहीं हैं ।

—हथेलियों से प्यार करोगे, तुम्हें जीवनदान देंगी ।

—हथेलियों से टकराओगे कांच का चूर्ण बनोगे या पारे की तरह बिखरे दृष्टिगोचर होगे ।

—समय का सारथी जीवंत शिराओं का पहरुआ है ।

—समय के सारथी की प्रत्यंचा सत्य के साथ है ।
—सत्य सम्यक् है,
—सत्य नम्र है, विनम्र है ।
—सत्य समय देता है, समय लेता है !
—सत्य के उद्भाषक सूर्यरथों के अभिभावक बनकर सब-कुछ शांत कर देते हैं ।
—शांति...शांति मिले तो खोज किसकी !
—सत्य सार्थक हो तो विरोध किसका !

■

—समय सांप की तरह करवट लेता है तो धरती हिलती है और भूकंप की संज्ञा अभिषिक्त होती है ।
—भूकंप क्षणिक हैं । क्षणिक हैं महाकाल ज्वालामुखी ।
—क्षणिक है अनाचारी असत्य के महलों के दावेदार ।
—इन महलों के दावेदारों को उनका पहरुआ ही एक दिन धोखा देगा ।
—आइए तब, घंटियां बजाएं
—करें शंखनाद
—मंदिर हों, मसजिद, गुरुद्वारे या गिरजाघर : उपालंभ बदल सकते हैं, सत्य समयातीत है ।
—कौन तोड़ सका है सत्य को :
राम, ईसा, बुद्ध या पैगम्बर !
—सत्य के द्वार पर सबका
अभिषेक वही हुआ है !
—सत्य अपराजेय है,
सत्य सम्यक् है,
काजल का कालिख असत्य को
मुट्ठी में पीसकर चकनाचूर कर
देगा और उसके रक्त से
अपना अभिषेक करेगा ।
■ सत्य के लिए अब कोई सत्यवान नहीं मिल सकता, यह भी एक सत्य है ।

राजेन्द्र अवस्थी



हम अपना चेहरा देखें नयी लोकसभा के आईने में

भारत की राजनीति में विकृति के लक्षण पिछले एक दशक से स्पष्ट उभरकर आते रहे हैं । राजीव गांधी की हत्या के बाद उत्तर भारत से कांग्रेस का लगभग साफ हो जाना, पूरे इतिहास में परिवर्तन के लक्षण हैं । इस देश की आजादी में सभी व्यक्तियों और सभी दलों ने बिना भेदभाव के अपना अपना योग दिया था, लेकिन सारा श्रेय कांग्रेस पार्टी को मिला और स्वतंत्र भारत में सत्ता की बागडोर उसी के हाथ आयी ।

वह महारथियों का जमाना था । एक से एक बड़े राजनेता भारतीय रंगमंच में अपनी भूमिका अदा करते हैं । इतने शक्तिशाली व्यक्तियों का समूह जैसे-जैसे समाप्त हुआ, कांग्रेस दल ढीला पड़ता गया । पिछले पांच वर्षों में उसकी सारी प्रतिष्ठा ही दांव में लग गयी । आपसी वैमनस्य, आंतरिक तोड़फोड़ और महत्वाकांक्षाओं के शिखर इस तरह उभरने लगे कि दल से अधिक व्यक्ति-परक स्थितियां बनती गयीं ।

जब सत्ता की धुरी में बैठे हुए व्यक्तियों का चरित्र टूटने लगता है तो उसका असर समूची देश की जनता पर पड़ता है । स्थिति इस तरह बनती गयी कि ऐसा कोई राजनेता नहीं रहा, जिसे इस देश की जनता पूरे मन के साथ आदर दे सके और उस पर विश्वास कर सके । सहज ही कहा जा सकता है कि विश्वासघात की राजनीति के फंगस तीव्रगति से फैलने लगे । ऐसी स्थितियों में मनुष्य के मन, विचार, धर्म, कर्त्तव्य और संस्कार, सभी टूटने लगते हैं । इनके भीतर से अपने निजी व्यक्तित्व के तुष्टीकरण के कीड़े उभरते हैं । पिछले पांच सालों में यदि यह देश बचा है तो राजनीति के कारण नहीं, अपने

प्राचीन संस्कारों और संस्कृति से, जिसने उसे कलंकित नहीं होने दिया ।

इस समय हम ११वीं लोकसभा की प्रतीक्षा में पिछला इतिहास देखना चाहेंगे । यह भी देखना जरूरी है कि दो-तीन वर्षों के भीतर ही इस देश में भ्रष्टाचार इतना अधिक कैसे और कहां उभरकर सामने आया । सच बात तो यह है कि भ्रष्टाचार की जड़ें हमेशा बहुत गहरी होती हैं । उसमें जब और खाद पड़ जाए और 'माली' जरूरत से ज्यादा सावधान हो जाए तो जंगली कैक्टस की तरह सारा जंगल भ्रष्टाचार के पौधों से भर जाता है । यदि स्मरण-शक्ति कमजोर न हो तो श्रीमती इंदिरा गांधी के बेशकीमती फरकोट का बबूला राममनोहर लोहिया ने संसद में उठाया था । बात एक छोटे से कोट की थी, लेकिन उसी से न जाने कितने सवाल खड़े हो गये थे । उसके बाद 'स्वीडिश स्कैंडल' (बोफोर्स) ने इस देश में ही नहीं विदेशों में भी हलचल मचा दी थी ।

मुझे याद है कि मैं राजीव गांधी के साथ बैंकर (कनाडा) और वाशिंगटन (अमरीका) की लंबी यात्रा पर गया था । तब भी वहां की जनता ने भारत के विकास की बात कम सुनी, लेकिन राजीव गांधी को 'मिस्टर क्लीन' के नाम से बार-बार पुकार कर हमें नीचा दिखाने का पूरा प्रयत्न किया । पूरी योजना के अनुसार कॉमनवेल्थ कांफ्रेंस में कनाडा के बैंकर में ही राजीव गांधी पर आघात किया गया । सौभाग्य से वह नहीं हो





सका, परंतु कुछ वर्षों बाद अपने ही देश में लिट्टे के हाथों राजीव गांधी को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा । यह दुर्भाग्य ही है कि इंदिरा गांधी को 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' का फल भोगना पड़ा, तो राजीव गांधी को 'मिस्टर क्लीन' की कीमत चुकानी पड़ी और संजय गांधी अपनी बहादुरी के कारण बेदाग होकर भी जीवित नहीं रह सके । इन बातों का उल्लेख मात्र इसलिए है कि भ्रष्टाचार के पौधे सही या गलत, जो भी हों, उसी समय से पनपे ।

सेंट कीट्स का मामला उठा और थमा भी, लेकिन अब वह फिर सामने उभर रहा है । आश्चर्य की बात तो यह है कि हवाला कांड जैसा विस्फोटक ज्वालामुखी जब सामने आया तो १०-१५ मंत्रियों की बात नहीं बल्कि यह प्रश्न सामने आ गया कि भारत भ्रष्टाचार में डूबा हुआ देश है । दुनियाभर में इसकी तुलना की गयी और कहा गया कि भ्रष्टाचार के मामले में भारत का सातवां स्थान है । आश्चर्य तो यह है कि जिन और देशों का नाम इसके पहले जोड़ा गया है वे बहुत छोटे देश हैं । भारत जैसा दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र हवाला कांड की गिरफ़्त में आकर भ्रष्टाचार की बहुत बड़ी इकाई बन गया

आजादी के बाद : चर्चित घोटाले

आजादी के बाद के कुछ प्रमुख और चर्चित भ्रष्टाचार के मामले इस प्रकार हैं :

★ जीप दलाली कांड : १९४८-१९४९ के दिनों में मशहूर प्रतिरक्षा मंत्री वी. के. कृष्णमेनन पर सेना के लिए जीपें खरीदने के मामले में दलाली खाने के आरोप लगे । दो हजार जीपों के सौदे के बाद महज १५५ जीपों की डिलीवरी हुई । जांच में मेनन दोषी पाये गये ।

★ सिराजुद्दीन प्रकरण (१९५६) : पूर्वी भारत के एक बड़े पूंजीपति मुहम्मद सिराजुद्दीन एंड कंपनी के कलकत्ता व उड़ीसा दफ़्तरों पर छापों के दौरान ऐसी डायरियां मिलीं, जिनमें अनेक राजनेताओं को विभिन्न व्यापारियों से दलाली दिये जाने का ब्यौरा था ।

★ मूंदड़ा कांड (१९५७) : उद्योगपति हरिदास मूंदड़ा को सरकार की तरफ से उनके शेयरों के लिए ज्यादा दाम दिलवाये जाने के आरोप में वित्त मंत्री टी. टी. कृष्णामाचारी को वित्त मंत्री पद से हटाया गया । मूंदड़ा पर १६० करोड़ के घपले का आरोप था ।

★ नागरवाला कांड (१९७१) : रुस्तम सोहराब नागरवाला नामक व्यक्ति पर आरोप था कि उसने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पी. एन. हक्सर की आवाजें बनाकर फोन पर स्टेट बैंक की संसद मार्ग शाखा के मुख्य खजांची से ६० लाख रुपये मंगवाये । संदिग्ध परिस्थितियों में नागरवाला की मृत्यु हो गयी । विपक्ष जांच से संतुष्ट नहीं था ।

★ कुओ तेल कांड (१९८०) : इंडियन आयल कार्पोरेशन के शोधित तेल और हाईस्पीड डीजल के ठेकों में नौ करोड़ रुपये की हेराफेरी हुई । ठेका किसी हरीश जैन को मिला था, जिनकी पहुंच संजय गांधी तक थी ।

है । भ्रष्टाचार के मामले अभी शुरू भले हुए हों, लेकिन जल्दी समाप्त नहीं होंगे, बल्कि आगे तक निरंतर चलते रहेंगे । संभव है, इस सदी के अंत तक हवाला भारतीय रंगमंच में मनोरंजन का माध्यम बन जाए ।

११वीं लोकसभा के लिए चुनाव लगभग पूरे हो गये है । हमारे पाठकों के हाथों में जब यह अंक पहुंचेगा तो चर्चा इस बात की होगी कि सत्ता की कुरसी किसे मिलती है । अभी तक तीन-चार प्रमुख दल चुनाव लड़ते रहे, इस वर्ष का चुनाव दलों में नहीं, दल-दलों में हुआ । कांग्रेस पार्टी में बहुत बड़ा विघटन हुआ, फिर कई पार्टियों के बीच से नयी पार्टियां उभरीं, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में भी कई पार्टियां अस्तित्व में आ गयीं । उत्तर भारत में हरियाणा विकास पार्टी, समता पार्टी, समाजवादी जनता पार्टी, झारखंड पार्टी, मध्य प्रदेश विकास कांग्रेस , बहुजन समाज पार्टी इत्यादि इतने नाम हैं कि इनकी गिनती करना मुश्किल है । इसके साथ ही बड़े-बड़े दल टूटकर कई भागों में बटे हैं । आंध्रप्रदेश में लक्ष्मी पार्वती ने अपना दल बनाया, तमिलनाडु में तमिल मनीला कांग्रेस जैसे दल सामने आये । सच पूछा जाए तो प्रायः हर राज्य में पार्टियां टूटी हैं और

★ **अंतुले कांड (१९८२) : बंबई उच्च न्यायालय ने विभिन्न ट्रस्टों के नाम पर व्यापारियों से धन ऐंठने के आरोप में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अब्दुल रहमान अंतुले को दोषी ठहराया ।**

★ **चुरहट कांड : मध्य प्रदेश के चुरहट कस्बे में चुरहट बाल कल्याण परिषद नामक संस्था द्वारा चलायी जा रही लॉटरी में प्रशासनिक तंत्र का दुरुपयोग हुआ । बिचौलियों पर चार करोड़ १० लाख रुपये खाने के आरोप लगे । मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के बेटे और रिश्तेदारों पर भी आरोप थे ।**

★ **बोफोर्स कांड : १९८६ में स्वीडन की ए. बी. बोफोर्स कंपनी से १५५ तोपें खरीदने का सौदा हुआ । पता चला कि स्वीडिश कंपनी ने इस ऑर्डर को पाने के लिए ६४ करोड़ रुपये की दलाली दी । दलाली किसने ली, यह आज तक एक रहस्य है ।**

★ **प्रतिभूति घोटाला : हर्षद मेहता, हितेन दलाल और अन्य अभियुक्तों ने अपने नेटवर्क के जरिए पूंजी बाजार के दस्तावेजों में हेरफेर और मिलीभगत से १० हजार करोड़ रुपयों का घोटाला किया । संयुक्त संसदीय समिति ने कुछ केंद्रीय मंत्रियों को भी दोषी माना मगर सिर्फ वी. शंकरानंद और रामेश्वर ठाकुर ने इस्तीफा दिया ।**

★ हवाला कांड : मार्च १९९१ में कश्मीर के आतंकवादियों को मिलनेवाले पैसे के स्रोत का पता लगाने के लिए मारे गये छापों में जे. के. जैन नामक व्यक्ति के घर से अकूत संपत्ति के अलावा संदिग्ध डायरियां मिलीं जिनमें अप्रैल १९८८ से लेकर मार्च १९९१ तक हवाला रैकेटगीरों द्वारा अफसरों और नेताओं को धन बांटने के ब्यौरे दर्ज थे । मामले की जांच चल रही है ।

★ सरकारी आवास आवंटन घोटाला : सरकारी मकानों के आवंटन में करोड़ों रुपये का घोटाला ।

★ चारा घोटाला : बिहार के पशुपालन विभाग का बहुचर्चित पशुधन चारा घोटाला ।

जो चुनाव संपन्न हुए हैं इनमें इन पार्टियों के उम्मीदवारों के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़नेवाले लोगों की संख्या भी कम नहीं रही ।

११वीं लोकसभा बनने के पहले का विश्लेषण हमारे देश के इतिहास का बहुत बड़ा दस्तावेज होगा । एक दल से दूसरे दल में चले जाना आम बात थी । फिर वंशवाद का एक बहुत बड़ा नक्शा सामने आ गया जो नेता 'हवाला कांड' अथवा 'टाडा' में फंसे, उन्होंने अपने बेटे, पुत्रियों, भतीजों, पत्नियों, दामादों तथा किसी न किसी रिश्तेदारों को राजनीति में जरूर उतारा । सच पूछा जाए तो यह बहुत बड़ा बुद्धिमानी का खेल है, क्योंकि इन्हें पता लग गया है कि भ्रष्टाचार की दुकान केवल राजनीति की कुरसी पाकर ही चल सकती है । ऐसी स्थिति में यहां की जनता का चुनाव के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैया कोई नयी बात नहीं है । बुद्धिजीवियों और समझदार लोगों ने तो संभवतः अपनी विवशता के सामने तो खुद घुटने टेक दिये हैं । इसलिए पूरे चुनाव किन लोगों के वोटों से संपन्न हुए हैं, इसे आसानी से समझा जा सकता है । कीड़े लगी फसल से जो दाने उभरकर सामने आएंगे, क्या सहज ही हम उन पर विश्वास कर सकते हैं ?

एक नजर दसवीं लोकसभा में डाली जाए तो उससे मजेदार गुणांक सामने आते हैं । १०वीं लोकसभा में सदस्यों की संख्या इस प्रकार थी : —महिलाएं— ३९, वकील और न्यायपालिका से संबंधित व्यक्ति— १७, डॉक्टर २६, शिक्षक और शिक्षाविद— ५८, व्यापारी और उद्योगपति— ४६ ; इस लोकसभा में ७७ प्रतिशत सदस्य शिक्षित थे उनमें २४५ स्नातक, १५० स्नातकोत्तर, २० पी. एचडी या डीलिट् और १०१ मैट्रिक या हायर सेकेंडरी ।

अब एक दृष्टि ज्योतिषियों की ओर भी । हर दल और प्रभावशाली व्यक्तियों ने अपने-अपने ज्योतिषी पाल कर रखे हैं । इसलिए किसकी भविष्यवाणी को सही समझा जाए यह एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न है । भारतीय जनता पार्टी की ओर से अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री घोषित कर दिया गया है । कांग्रेस पार्टी ने कमर कस ली है कि समझौते की कैसी भी राजनीति चलायी जा सके तो पीछे नहीं हटना चाहिए और नरसिंह राव के हाथों में नेतृत्व देना चाहिए । कुछ लोगों ने नारे लगाये हैं कि साफ-सुथरी छवि वाला कोई व्यक्ति इस देश का नेतृत्व करे । मजेदार बात तो यह है कि जो ये नारे लगाते हैं उनकी छवि स्वयं विवादास्पद है । हमारे पाठकों को बहुत दिन तक प्रतीक्षा नहीं करनी होगी ; इस पूरे विश्लेषण के संदर्भ के बाद सब कुछ सारे निष्कर्ष सामने आ जाएंगे । हमने लोकतांत्रिक शासन सत्ता को स्वीकार किया है, हम न साम्यवादी हो सकते हैं और न तानाशाह, रहेंगे लोकतांत्रिक ही । एक बात समझना जरूरी है कि संसद लोकतंत्र का आईना होती है, संसद हमारा चेहरा है, जैसा हमारा चेहरा होगा और जैसा आईना होगा,

वैसी की वैसी हमारी ११वीं लोकसभा के शहंशाह प्रतिष्ठित होंगे । वोट हम दे चुके हैं इसलिए न हमें विरोध करने का हक है और न पश्चाताप । हमें अपने ऊपर विश्वास होना चाहिए, उस विश्वास के बल पर तैयार रहना चाहिए कि यदि भ्रष्टाचार, अनीति, अनैतिकता और वैमनस्य की परंपरा चलती ही रहनी है तो १२वीं संसद के लिए पांच साल ही क्यों ?

जहां तक संपन्न चुनावों की बात है, तो चुनाव शांत कब संपन्न हुए हैं । चुनावों के दौरान जो कुछ भी हुआ है वह सब अभी अखबारों में ताजा है । लेकिन इन चुनावों में पहली बार जो नयी बात उभरकर सामने आयी है, उसके लिए हमें गर्व है । इन चुनावों में मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन और उच्चतम न्यायालय की सख्ती इतनी रही कि दीवारें, चौराहे और रास्ते पोस्टर, बैनरों की भरमार से बचे रहे तथा अनावश्यक शोर-शराबा, हल्ला-गुल्ला और तमाशों से हम सब भी बचे रहे । बेहतर होगा कि अगले चुनाव 'अमरीकी पैटर्न' पर लड़े जाएं, जहां चुनाव सड़कों पर नहीं दूरदर्शन के माध्यम से लड़े जाते हैं ।

—राजेन्द्र अवस्थी



हाथी भी बने जोंकों के भोजन

प्रस्तुति—राबर्ट बेन्सन

अमरीका निवासी हेनरिक बन शिकार के बहुत शौकीन थे । यही शौक उन्हें लंका के जंगलों में ले गया । उन्होंने सुना था कि वहां के जंगल में हाथियों का शिकार आसानी से किया जा सकता है । इसी इरादे से जब वह जंगल में पहुंचे तो हाथियों के बदले उनका पाला एक अजीब से जीव से पड़ा, जिसके चंगुल से निकल पाना जिंदगी का एक ऐसा अनुभव था, जिसकी याद ताजा होते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । वह जीव इतना लंबा भी नहीं था कि सामने आने पर उसे मार दिया जाए । हेनरिक बन के अनुभव उन्हीं के शब्दों में :—

जब से अंगरेज लंका से गये हैं, तब से हर गोरे यात्री को लंका निवासी धनी अमरीकी ही समझते हैं और जितना अधिक पैसा बटोरा जा सके, बटोरने का प्रयत्न करते हैं, इसलिए लंका पहुंचकर मुझे सबसे पहले वहां के निवासियों को यह बताने में काफी समय लगा कि मैं एक गरीब आदमी हूं और हाथी पकड़ने के इरादे से आया हूं ।

लंका के जंगलों में यात्रा करने की अपनी असुविधाएं हैं, जिनकी कल्पना मैं कर चुका था और उनका सामना करने के लिए मैं तैयार था । चलते-चलते अचानक किसी टहनी से लटकता तीस फुट का बोआ सर्प मिल जाना तो दुर्घटना में नहीं माना जाता । इसके अतिरिक्त कभी-कभी पागल अथवा क्रुद्ध हाथी का भी सामना करना पड़ता है । उन जंगलों में शेर तो नहीं होते, लेकिन जब चीता चिंघाड़ता है, तब होश उड़ जाते हैं । सबसे खतरनाक है काला भालू । वह अन्य सभी किस्म के भालुओं से ज्यादा भयानक होता है । काले भालू का बच्चा भी चीते अथवा जंगली भैंस से टक्कर लेने में नहीं हिचकता । काले भालू को अजगर खाते हुए तो अकसर देखा जा सकता है ।

खतरों से सावधान

सब खतरों से तो मैं सावधान था, लेकिन उन सबसे बड़ा खतरा, जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी, वह एक फुट से भी कम लंबा था । वर्षा का मौसम था, लेकिन वर्षा अभी शुरू नहीं हुई थी । कोलंबो से ओपानेक तक रेल द्वारा गया और वहां से एक बस द्वारा रत्नपुरा के दक्षिण में एक गांव में जा पहुंचा । वहां मुझे जंगल में एक ऐसे मैदान का पता लगा, जहां उस समय २५ के लगभग युवा जंगली हाथी थे । मैंने तय किया कि पहले उन्हें देख तो

आऊं । मैंने वहीं के एक सिंहल निवासी को साथ लिया ।

हम तीनों, यानी मैं, मेरा साथी पूरण और उसका कुत्ता प्रातः सामान से लैस होकर चल पड़े ।

घने जंगल के बीच

हम घने जंगल के बीच थे कि वर्षा आरंभ हो गयी । अचानक सारा आकाश बिलकुल काला हो गया और घोर गर्जन-तर्जन के साथ बिजली चमकने लगी । बड़ी तेज आंधी चलने लगी, जिससे कमजोर काजू के वृक्षों की कतारें पर कतारें धराशायी होती गयीं ।

हम जंगली झाड़ियों के नीचे बैठ गये । वर्षा आरंभ हो गयी थी । धुआंधार वर्षा जो पहले वृक्षों और पत्तों के कारण रुकी रही । बाद में उनको भेदते हुए हमारे ऊपर यूं पड़ने लगी मानो नल में से पानी की धार बह रही हो । नीचे मिट्टी गीली हो गयी । चारों ओर पत्ते, बेलें अथवा नन्हे कमजोर वृक्षों का झुरमुट । आगे बढ़ना असंभव हो गया । हमने यह तय किया कि रात वहीं बिताकर प्रातः देखेंगे कि आगे क्या किया जाए ।

साहब मेरी मदद करो

जब मेरी नींद खुली तब दिन चढ़ आया था । मैंने लेटे ही लेटे देखा कि हमारा तंबू तो न जाने कब उखड़कर एक ओर पड़ा था और ऊपर ऊंचे लंबे घने वृक्षों में से सूर्य का प्रकाश छनकर आ रहा था । मुझे ऐसा लगा मानो मैं एक बहुत गहरे गड्ढे में हूं और ऊपर, कहीं बहुत ऊपर सूर्य चमक रहा है । मुझे अभी भी नींद आ रही थी । मैंने आंखें बंद कर लीं, लेकिन तभी मुझे स्वर सुनायी दिया, "साहब, मेरी मदद करो, साहब ।"

स्वर बहुत धीमा था । मैंने पुनः सुनने का प्रयास किया, जब स्वर पुनः नहीं आया तो मैंने अपना सिर घुमाया और पूरण को देखा, उसके चेहरे, गरदन और बांहों में से खून बह रहा था और वह मेरी ओर घिसटकर आने का प्रयत्न कर रहा था ।

मैं उठ बैठा, लेकिन स्वयं को इतना कमजोर पाया कि मैं पुनः पीछे गिर गया । यह क्या हो गया ?

मैंने स्वयं को देखा, मेरी बांह में से भी खून बह रहा था । काफी प्रयत्न करने पर ही मैं उठ पाया और अपनी चादर पर नजर डाली । वहां पर मांस के मोटे-मोटे लोथड़े से पड़े थे, जिन्होंने मेरा खून सोख लिया था, वैसे ही मांस के लोथड़े मेरी छाती और टांगों पर भी थे । मैंने

उन लोगों ने बताया कि उन जंगलों में जोंक हैं ही ज्यादा, लेकिन मानसून जिस वर्ष देर से आता है, उस वर्ष तो जोंकें जंगल के सारे पशु-पक्षियों को नष्ट कर देती हैं । यहां तक कि उनके गांव में से कोई गाय, बैल भूले-भटके उधर चला जाता है, तो वापस नहीं लौट पाता ।

झटके से उन्हें अलग करके फेंका ।

बहुत बुरी हैं जोंकें

पूरण की आवाज धीमी थी । वह बोला —"जोंक, जोंक —बहुत बुरी हैं ये जोंकें ।"

जब मुझे पता लगा कि हमारी शत्रु जोंकें हैं, तब मेरे अंदर कुछ शांति आयी, जो पहले अनजान शत्रु का हमला समझकर लुप्त हो चुकी थी । मैंने पूरण को उलटा और उसके शरीर से जोंकों को खींच-खींचकर अलग फेंका । उसका सारा शरीर जोंकों से बुरी तरह भरा हुआ था ।

"जलाओ, साहब !" पूरण का धीमा स्वर आया ।

मैंने देखा रात को जलायी आग में से कुछ लकड़ियां सुलग रही थीं । उनमें से मैंने एक उठायी और एक मोटी-सी जोंक पर लगायी । वह फौरन झुलसकर अलग गिर गयी । दस-बारह ज़ो मेरे शरीर पर शेष थीं, उन्हें भी जलाकर मैंने अलग किया । तब मैंने झोले में से शराब की बोतल निकाली और पूरण के मुंह से लगा दी । हम दोनों बड़ी मुश्किल से एक वृक्ष के तने के सहारे खड़े हो गये और उन मोटे-मोटे मांस के लोथड़ों को देखते रहे ।

उसी समय मुझे किसी का कराहट-भरा स्वर सुनायी पड़ा ।

शरीर जोंकों से भरा

हमने देखा कि पूरण का कुत्ता एक ओर पड़ा था । उसकी जीभ बाहर लटक रही थी और वह दयनीय-सा हमें ताक रहा था । उसका सारा शरीर जोंकों से भरा हुआ था । मैंने जलती हुई लकड़ी लेकर उसके शरीर से जोंकें उतारीं, आग तेज की, विहस्की पी और भोजन किया । हमें उस समय ताकत चाहिए थी ।

कुछ देर बाद हमें स्फूर्ति आयी । कुत्ता भी मांस का एक डिब्बा हड़प चुका था । वह भी स्वस्थ लग रहा था । अब हमारा भार भी काफी हलका था । अब मुझे एक ही धुन थी —किसी प्रकार जंगल से बाहर निकल जाने की, लेकिन इतनी कमजोरी में चलना भी एक समस्या थी और सबसे बड़ी जानलेवा समस्या थी वे जोंकें, जो पेड़ों पर से, झाड़ियों में से, पगडंडी पर से यानी चारों ओर से हम पर गिर रही थीं । जब कुछ दूर चलकर हम रुके तो मैंने देखा कि वे मेरे जूतों के अंदर भी घुस चुकी थीं और मेरे जूते में से खून बह रहा था ।

जोंकें हमारी तरफ

सिगरेट जलाकर उनकी दुमों पर मैंने लगायी और छुटकारा पाया । लेकिन पतले-भूरे धागे हमारी ओर इस तरह बढ़े आ रहे थे, मानो वे हमें देख सकते हों, हम दौड़ने की स्थिति में भी नहीं थे ।

"गांव यहां से कितनी दूर है ?" मैंने पूरण से प्रश्न किया ।

मैंने चार-छह बार यही प्रश्न दोहराया, तब कहीं जाकर उसने सुना । उसने अपने खून भरे चेहरे में से मुझे यूं ताका, मानो शून्य में देख रहा हो और सिर हिलाते हुए बोला, "पता नहीं साहब ।" फिर रुककर बोला, "मैं तो इस रास्ते को जानता नहीं ।"

लेकिन रुकना तो साक्षात मृत्यु थी ही । एक चौराहा आया, जहां दो पगडंडियां मिल रही थीं । धुली-धुली पगडंडियों पर कोई चिह्न नहीं थे, जिनसे हमें पता लगता कि गांव किस ओर है । बायीं ओर वाली पगडंडी घने जंगलों में

चली गयी थी ।

हमने दाहिनी ओर चलने का निर्णय किया, जिस ओर पगडंडी ऊपर की ओर गयी थी लेकिन पूरण का कुत्ता दूसरी ओर गया । लगभग एक मील चले होंगे कि पूरण ने देखा कि कुत्ता हमारे साथ नहीं है ।

"शायद कुत्ते को रास्ते का कुछ ज्ञान रहा हो," मैंने कहा ।

जोंकों से भरा हुआ था कुत्ता

हमने मुड़कर देखा तो नीचे पूरण का कुत्ता पड़ा हुआ था । जोंकों से भरा हुआ । हमने

> *हमने देखा कि पूरण का कुत्ता एक ओर पड़ा था । उसकी जीभ बाहर लटक रही थी और वह दयनीय-सा हमें ताक रहा था । उसका सारा शरीर जोंकों से भरा हुआ था ।*

रुककर विहस्की पी, जिससे कुछ ताकत आये ।

वर्षा फिर आरंभ हो गयी । कम से कम बहते पानी के कारण हम अपने पांवों की ओर से निश्चिंत हो गये कि अब उधर से जोंकों का हमला तो नहीं हो सकता, लेकिन दूसरी दिशाओं से उनका हमला जारी था । मेरी पतलून की जेब में, कमीज के अंदर सब ओर से घुसकर वे हमें जीवित पी जाने को आतुर थीं । इससे तो बेहतर रहता, अगर हमारा सामना चीते अथवा उन भयानक काले भालू से होता । तब हम जीतते या हार, लेकिन चुपचाप हमला कर खून चूसनेवाली जोंकों का हम क्या करते, जो लाखों में थीं ।

हम गलती से उनके निवास स्थान के बीचोंबीच आ गये थे । वे उस सूखी जलवायु में काफी बह चुकी थीं । कुछ घने वृक्षों के पश्चात एक ढलान थी, मेरा वहां पांव लड़खड़ा गया और मैं लुढ़कता हुआ एक नन्हीं-सी पहाड़ी के नीचे आ गया । सबसे पहले मैंने अपने हाथों से दोनों टांगों को झाड़ा, क्योंकि यह निश्चित था कि लुढ़कने पर दोनों टांगें तो जोंकों से भर गयी थीं परंतु मुझे आश्चर्य हुआ, जब मैंने देखा कि उनमें एक जोंक भी नहीं थी । मैंने नजर घुमायी तो देखा कि पास ही किसी गांव के चिह्न थे और दूर गांव का मैदान था ।

हमें शायद दूर से किसी ने देख लिया था, क्योंकि थोड़ी देर में ही शोर मचाते लोग हमारी ओर भागे आ रहे थे । उनके आने तक मैं बेहोश हो चुका था ।

होश में आने पर उन लोगों ने बताया कि उन जंगलों में जोंक हैं ही ज्यादा, लेकिन मानसून जिस वर्ष देर से आता है, उस वर्ष तो जोंकें जंगल के सारे पशु-पक्षियों को नष्ट कर देती हैं । यहां तक कि उनके गांव में से कोई गाय, बैल भूले-भटके उधर चला जाता है, तो वापस नहीं लौट पाता । तीन दिन वहां रहकर हमने खूब खाया-पीया और फिर मैं उन पच्चीस युवा जंगली हाथियों को भूलकर अपने घर लौट आया, जहां मैंने तीन मास तक आराम से खा-पीकर अपना वह खून पूरा किया, जो उन जोंकों ने चूस लिया था । हाथियों के शिकार की वह यात्रा मुझे सदा अविस्मरणीय रहेगी ।

—२३, प्रीतम रोड, देहरादून

पार्वती ने एक स्वप्न में देखा कि शिव पीली धोती पहने हैं और विवाह वेदी पर खड़े किसी का वरण कर रहे हैं । उन्होंने अपनी सखी से पूछा "इसका अर्थ क्या है ?" सहेली ने कहा "सवेरे का सपना है, यह तो सच है । शिव ने तुम्हारी बहन गंगा को ग्रहण किया है ।"

पार्वती के तेवर बदल गये, वह शिव से तो कुछ न बोलीं । उन्होंने गंगा को देवभूमि से धरती पर ढकेल दिया और कहा, "नीचे-नीचे रहना" गंगा ने कहा "मुझे स्वीकार है, मैं तुम्हारी संतानों की धाय बनूंगी, उनका कलुष धोऊंगी, उनको ताप-संताप से मुक्त करूंगी, उनको आत्मतृप्ति देकर पालूंगी, तुम्हारे बराबर कभी न बैठूंगी, बस धरती पर लोटती रहूंगी और कभी कुछ न कहूंगी ।"

शिव तो ठहरे शिव, उसके इस विनम्र व्यवहार पर प्यार भरे उपकार पर मुग्ध हो गये और उसे सिर पर बिठा लिया फिर स्वयं आनंदमग्न हो उठे :—

धातुः कमण्डल जलं तदुत्क्रमस्य, पादावनेजन
पवित्रतया नरेन्द्र, स्वर्धन्य भून्नभसि सा
पवततीनिमर्ष्टि, लोकत्रयं भगवतो विशेदेव
कीर्ति : ।

और इस तरह शिव के द्वितीय नव चंद्र जटित जटा मुकुट की कलगी बन गयी गंगा ।

गंगा साक्षात विष्णुवदन से प्रकट होकर हरिचरणामृत बनकर स्वर्ग की सीमाओं को मापते हुए शिव की जटा में भ्रमण करती है, फिर भगीरथ की तपस्या को फलीभूत करती हुई जगत के पापनाश के लिए हिमालय के ब्रह्मसदन को मुखरित करने के बाद वसुंधरा पर अवतरित होती हैं, यही गंगावतरण का पवित्र प्रसंग है और गंगा दशहरा उसी का पावन पर्व है । गंगा जन्मदिन वैशाख शुक्ल सप्तम माना जाता है परंतु अवतरण की तिथि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी ही कही जाती है ।

गंगा के शैशव प्रदेश के पर्यटक जानते हैं कि बद्रीनारायण के निकट नर-नारायण के पर्वत हैं । नारायण पर्वत के चरण प्रांत से अलकनंदा का जन्म होता है । अलकनंदा की यही धारा सपथ से होती बदरिकाश्रम पहुंचती है जो गंगा की मुख्य सहायक धारा है । गंगा का हिमप्रवाह (ग्लेशियर) भी आगे बढ़कर गोमुख दक्षिण में स्थित शिवलिंङ शिखर पर आता है । वास्तव में हिमालय प्रदेश की गहरी घाटियों में वर्तुलाकार परिक्रमा करती हुई गंगा शिव की अलकों में नर्तन करती हुई प्रतीत होती है । हरिद्वार में गंगा समतल पर पदार्पण करती है । आदिदैविक

गंगा नीर सुधा सम

● योगेश प्रवीन

जगत की यह सारी घटना भौतिक जगत में पूरी तरह खरी उतरती है । गंगा का आना सारस्वत सत्य है । स्वयं पवित्रता का अभिषेक है ।

गंगा सनातन संपदा

ऋग्वेद में गंगा का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है और पुराणों में तो गंगा की वंदना और महिमा विस्तार में वर्णित है । संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में गंगा छवि का इंद्र धनुष मिलता है । जगदगुरु आदि शंकराचार्य विरचित गंगा स्तवन तो अद्वितीय है ।

देव सुरेश्वरि भगवति गंगे, त्रिभुवन तारिणि तरल तरंगे, शंकर मौलि विहारिणी विमले, मम मति गस्तां तव पद कमले...

इसी प्रकार कश्मीर के पंडितराज जगन्नाथ की लिखी 'गंगा लहरी' को संस्कृत काव्य का भूषण माना जाता है । हिंदी साहित्य में विद्यापति, तुलसीदास, केशव और भारतेन्दु ने अपनी काव्य धारा में गंगा, गंगा की तरंगों के गीत गाये हैं । रीतिकालीन परिपाटी के अनुसार पदमाकर ने काव्य शिल्प में गंगा की आभा को इस तरह समेटा है ।

"कलित कपूर में न कीरति कुमोदिनी में, कुन्द में न कास में कपास में न कंद में, कहैं पदमाकर न हंस में न हास हूं में, हिय में न हेरि हारि हीरन में वृन्द में, जेती छवि गंगा की तरंगन में ताकियत, तेती छवि छीर में न छीरधि के छंद में, चैत में न चैत चांदनी में न चमेलिन में, चंदन में है न चंदचूड़ में न चंद में" ।

गंगा मुक्ति मार्ग है स्वर्ग सोपान है । उनके इसी कृतित्व को व्यक्तित्व से ऊपर प्रतिष्ठा दी है कवि रत्नाकर ने—

कोउ पापहिं पंचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत, बीन बीन बावन बीर बढ़त चौचंद मचावत, पै ताकी तकिलोथ, त्रिपथगा के तट ल्यावत, नौ द्वौ ग्यारत होत, तीन पांचहि बिसरावत ।

गंगा प्रेमी

आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले महर्षि चरक ने कहा था 'हिमवतप्रवाःपथ्याः' अर्थात हिमालय से प्राप्त होनेवाले जल को पथ्य कहा है और निस्संदेह उसमें गंगा जल सर्वश्रेष्ठ है । गंगा के ही संदर्भ में उन्होंने कहा, 'पुण्या देवर्षि सेविताः' और वास्तव में यह पुण्य सरिता देवताओं द्वारा सेवित है ।

नवीं सदी में वाग्भट्ट ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांग हृदय' में गंगा के गुणों का भलीभांति विश्लेषण किया है । ग्यारहवीं सदी में चक्रपाणि दत्त ने भी गंगा नीर की मुक्त कंठ से सराहना की

गंगा साक्षात विष्णुवदन से प्रकट होकर हरिचरणामृत बनकर स्वर्ग की सीमाओं को मापते हुए शिव की जटा में भ्रमण करती है, फिर भगीरथ की तपस्या को फलीभूत करती हुई जगत के पापनाश के लिए हिमालय के ब्रह्मसदन को मुखरित करने के बाद वसुंधरा पर अवतरित होती है, यही गंगावतरण का पवित्र प्रसंग है और गंगा दशहरा उसी का पावन पर्व है ।

है । चौदहवीं सदी में प्रसिद्ध विदेशी यात्री इब्नबतूता एशिया के अन्य देशों का भ्रमण करता हुआ भारत आया था और उसने अपने यात्रा विवरण में लिखा है—"सुल्तान मुहम्मद तुगलक यद्यपि दक्षिण में दौलताबाद में रहता है लेकिन वह गंगा का ही जल पीता है और गंगा को उत्तर से दक्षिण तक पहुंचने में चालीस दिन लग जाते हैं ।"

'आइने अकबरी' में अबुल फजल ने लिखा है कि बादशाह अकबर गंगा जल को 'आबेहयात' (अमृत तुल्य) समझते हैं । उनके पीने के लिए और भोजन बनाने के लिए मुहरबंद कलसों में गंगा नदी से पानी मंगवाया जाता था और इस प्रबंध के लिए एक अच्छा-खासा विभाग नियुक्त था । जब वे सीकरी या आगरे में होते थे तो सोरों से गंगाजल भेजा जाता था और जिन दिनों पंजाब में रहते थे तो हरिद्वार से गंगा का पानी पहुंचाया जाता था और तो और औरंगजेब जैसा कठिन कलेजेवाला बादशाह भी गंगा जल के कीटाणुनाशक और शक्ति, बलवर्द्धक गुणों को मंजूर करता था और सदा इसी का प्रयोग करता था ।

पूना के पेशवाः काशी का गंगा जल

पूना के पेशवाओं को गंगा जल पर इतनी श्रद्धा थी कि उसके लिए काफी रुपये खर्च कर एक बहंगी गंगाजल काशी से पूना पहुंचाया जाता था । बाजीराव पेशवा अपने निजी विश्वास के अनुसार अपने को ऋणमुक्त करने के लिए गंगा जल का सेवन करते थे । गंगा के प्रेम और प्रभाव की अनंत कथा है ।

उत्तर-दक्षिण को अपने हृदय में ढूंढ़नेवाले कहीं भी नहाते हों जलस्पर्श के साथ उनके मुख से अनायास निकलता है—

गंगा बड़ी गोदावरी, तीरथ बड़े प्रयाग, काशी कभी न भूलिए, जहां विश्वनाथ दरबार ।

मारीशस में गंगा तालाब

दक्षिण भारतवासी नदी, तालाब, झरने आदि किसी भी जल से स्नान करते समय गंगा नाम का उच्चारण बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं ।

मारीशस के निवासियों ने अपने एक पवित्र सरोवर को 'गंगा तालाब' का नाम दिया है । उत्तर के लोग गंगा को पाये नल में नहाते समय भी 'हर-हर गंगे, हर-हर गंगे' कहते रहते हैं और इस तरह गंगा केवल गंगा ही नहीं रह जाती, भारतीयों के प्राणों में प्रवेश करके भारत का प्राण बन चुकी है ।

गंगा गंगा मुख से कहिए, काया पावन करते रहिए ।

गंगा जल से स्वास्थ्य लाभ

सोलहवीं सदी में विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय का मृतप्राण होने पर जब गंगोदक दिया जाने लगा तो वे धीरे-धीरे बिलकुल ही स्वस्थ हो गये थे । तिब्बत के सूरीलामा ने वारेन हेस्टिंग्ज के पास एक दूत भेजकर गंगा तट पर कुछ भूमि मांगी थी, जहां पर उसने एक मठ और मंदिर बनवाया जो 'भोट बागान' के नाम से प्रसिद्ध है ।

उनका कहना था कि गंगा केवल हिंदुओं के लिए ही नहीं, बौद्धों के लिए भी पुनीत है । इस प्रकार देखा जाए तो गंगा सभी वर्गों द्वारा समान रूप से सम्मानित रही है ।

गंगा का वैभव

तीन धाराओं से विभूषित, तीन तापों का सहज ही हरण करनेवाली और तीन लोकों में व्याप्त गंगा 'त्रिपथगा' कही जाती है । देवप्रिया

होने के कारण सुरसरिता कहलाती है । भगीरथ का पूर्ण मनोरथ है । इसलिए भागीरथी है तथा जहनु ऋषि के आश्रम की शोभा है, इस कारण 'जान्हवी' उसका नाम है ।

गंगोत्री से गंगासागर तक की गंगायात्रा में बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश, हरिद्वार, मायावती, गढ़मुक्तेश्वर, शूकरक्षेत्र, ब्रह्मावर्त, प्रयाग और वाराणसी जैसे पावन पड़ाव आते हैं, जो अतितीर्थ कहे जाते हैं क्योंकि गंगा तो अपने आप में प्रवाहमान तीर्थ है । वैसे गंगा के चौदह प्रयाग हैं, लेकिन उनमें पांच प्रयाग प्रमुख माने

भारतीय जीवन परंपरा में गंगा नदी की प्रतिष्ठा का केवल आध्यात्मिक कारण ही नहीं है, बल्कि उसके जल में जीवाणुनाशक, कीटाणुनाशक एवं स्वास्थ्यप्रद क्षमता पायी जाती है ।

गये हैं । गंगा तट पर कन्नौज कड़ा, चुनार जैसे प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों के खंडहर मिलते हैं तो गंगा के ही किनारे कानपुर, पटना और कलकत्ता जैसे महानगर भी बसे हुए हैं । राजघाट, ददरी और अजगैबीनाथ के मेले गंगा के सत्कार में ही होते हैं ।

भारतीय जीवन परंपरा में गंगा नदी की प्रतिष्ठा का केवल आध्यात्मिक कारण ही नहीं है, बल्कि उसके जल में जो जीवाणुनाशक, कीटाणुनाशक एवं स्वास्थ्यप्रद क्षमता पायी जाती है । उसके लिए उसे वैद्यक में सराहा गया है—

गंगा नीर सुधा समं, बहुगुण पुण्यं सदा पुष्करं, सर्वव्याधि विनाशन बलकरं (इत्यादि) ।

पांडव गीता में तो स्पष्ट रूप से गंगा को रामबाण कहा गया है :

शरीरं जर्जरी भूते, व्याधिग्रस्ते कलेवरे, औषध जान्हवी तोयं, वैद्यो नारायणो हरिः ।

गंगा की व्यथा कथा

गंगा की सुरा धारा में संजीवनी का प्रवाह है जिसे स्वर्ग नसैनी की संज्ञा भी मिली है । जब तक उसे देवत्व देकर उसकी पवित्रता को बनाये रखा गया उसका जल वरदान रहा । आज जब उस आराध्या के आस्था के आयाम टूट रहे हैं, हमने हमारा अस्तित्व ही संकट में डाल लिया है । गंगा दर्पण जिसमें देवलोक प्रतिबिंबित था, आज अपने तट की प्राकृतिक सुषमा से भी हाथ धोता जा रहा है । सनातन विश्वास के उस साक्षात प्रवाह शाश्वत मूल्यों का महत्त्व समझे बिना धर्म एवं विज्ञान की उस अजस्त्र धारा में भौतिकता के विजातीय द्रव्य (द्रव) मिलाये जा रहे हैं और आज हम उसे क्या से क्या बना चुके हैं ।

गंगा का सुरम्यतम दृश्य ऋषिकेश और हरिद्वार अंचल हैं । इसके किशोर प्रदेश में ही आड़ी-तिरछी मनमानी योजनाओं से उसका सहज स्वरूप छीन लिया गया है । गंगा जल का अवशोषण इस सीमा तक किया गया है कि गढ़मुक्तेश्वर से कालाकांकर तक की गंगा अब सिकतापंजर मात्र है । कालाकांकर के नक्षत्र निवास के समीप प्रकृति सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत को जो गंगा महल के समीप मिलती थी, वह अब आपके नसीब में नहीं है ।

—पंचवटी, ८९ गौसनगर, लखनऊ-१८

प्रेरक प्रसंग

हमने राजनीति को नैतिकता के साथ मिलाने की बहुत बात की है। यह ऐसी चीज है कि हम हमेशा इस पर टिके रहेंगे। पिछली चौथाई सदी या इससे भी अधिक के दौरान महात्मा गांधी ने हमें राजनीति का नैतिक स्तर बनाये रखना सिखाया। हम इसमें कहां तक सफल हुए, यह सारी दुनिया के देखने और भावी पीढ़ियों के निर्णय देने की चीज है। कुछ ऐसी बात जरूर थी कि हमने इस महान आदर्श को अपने सामने रखा और अपने दुर्बल गिरते-पड़ते ढंग से इस पर चलने की कोशिश की। राजनीति और मजहब का (संकीर्ण-से-संकीर्ण मायने में) गठबंधन सबसे ज्यादा खतरनाक गठबंधन है और उसको खतम कर देना चाहिए। इससे सांप्रदायिक राजनीति पनपती है। यह गठजोड़ सारे मुल्क के लिए नुकसान देनेवाला है। यह बहुमत के लिए भी हानिकर है लेकिन संभवतः यह हर उस अल्पसंख्यक वर्ग के लिए नुकसानदेह है जो इससे कुछ फायदा लेना चाहता है। मेरे खयाल से भारत का पिछला इतिहास भी यही सिखाता है, लेकिन अगर किसी स्वतंत्र राज्य के अंदर अल्पसंख्यक वर्ग अपने-आपको अलग-थलग करना चाहे तो इससे उस मुल्क को तो नुकसान पहुंचता ही है, सबसे अधिक खुद उसके हितों को हानि पहुंचती है क्योंकि इससे अपने और दूसरों के बीच धार्मिक और राजनीतिक आधार पर भी एक दीवार खड़ी हो जाती है और इससे वह वर्ग अपना वह असर कभी नहीं डाल सकता जो जायज तौर पर डालने की इच्छा रखता है।

(जवाहरलाल नेहरू के भाषण से)

बात उन दिनों की है जब सर आशुतोष कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति होने के साथ-साथ कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी थे। ऐसे विद्वान, उच्च आदर्शों वाले भारतीय मनीषी को तत्कालीन सरकार ने इंगलैंड भेजने का निश्चय किया। विदेश-यात्रा का सारा प्रबंध हो गया और सर आशुतोष राजी भी हो गये लेकिन ऐन मौके पर उनकी माता ने धार्मिक विचारों के कारण विदेश जाने से मना कर दिया। अब आशुतोष क्या करते?

मां की आज्ञा को सर्वोपरि समझकर सर आशुतोष ने सरकार को लिखा, "मुझे विदेश जाने के लिए मेरी मां ने स्वीकृति नहीं दी है, अतः मैं असमर्थ हूं।"

पत्र पढ़कर वायसराय लार्ड कर्जन क्रोध से पागल हो उठा—एक भारतीय द्वारा शासन की इतनी उपेक्षा! उसने सर आशुतोष को बुलाकर कहा, 'जाओ, अपनी माता

से कहो कि भारत का वायसराय तुम्हारे पुत्र को विलायत जाने का आदेश देता है ।'

वायसराय की बात टालना टेढ़ी बात थी । वैसे भी कर्जन स्वभावतः कठोर एवं तुनक मिजाज था । बड़े-बड़े राजा-महाराजा उससे भय खाते थे । लेकिन सर आशुतोष जरा भी विचलित नहीं हुए और गंभीरता से उन्होंने कहा, "मैं अपनी मां की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता । हमारी मर्यादा, संस्कृति है—मातृ देवो भव-माता को देवता स्वरूप समझो । अतः इस विषय में आप किसी प्रकार का दबाव डालने की चेष्टा न करें ।'

सर आशुतोष की दृढ़ मातृ-भक्ति देखकर कर्जन का आक्रोश शांत हो गया और वह उन पर रीझ भी गया ।

('वैज्ञानिकों के रोचक और प्रेरक प्रसंग'—शुकदेव प्रसाद)

हम एक शांतिमय देश रहे हैं, लेकिन शांति के माने कमजोरी नहीं, शांति के माने हैं डटकर अपने पैरों पर खड़े होना, आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और अपनी सुरक्षा के लिए भी पूरी तौर से तैयार होना । शांति कमजोरी से नहीं मिलती, शक्ति से मिलती है, आत्मनिर्भरता से मिलती है, आत्मविश्वास से मिलती है । मैं चाहती हूं कि आज ये गुण हर एक हिंदुस्तानी के दिल और दिमाग में रहें । महात्माजी ने गरीबों में से, बिना हथियार के लोगों में से, आजादी के लड़ाकों की एक फौज बना दी थी—एक महान शक्ति । हमारी वह शक्ति आज और भी बड़ी हुई, क्योंकि हमारी जनता आज ज्यादा जाननेवाली, ज्यादा योग्यतावाली और ज्यादा क्षमतावान भी है ।

('छोटे कदम लंबा सफर'—इंदिरा गांधी)

भारत में बैठे-बैठे हम यह नहीं समझ पाते कि भारतीय संस्कृति कितनी प्राणवती और चिरायु है । किंतु, मॉरिशस जाकर हम अपनी संस्कृति की प्राणवत्ता का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर लेते हैं । मालिकों की इच्छा तो यही थी कि भारतीय लोग भी क्रिस्तान हो जाएं । किंतु, भारतीयों ने अत्याचार तो सहे, लेकिन प्रलोभनों को ठुकरा दिया । वे अपने धर्म पर डटे रहे और जिस द्वीप में भगवान ने उन्हें भेज दिया था, उस द्वीप को उन्होंने छोटा-सा हिंदुस्तान बना दिया । यह ऐसी सफलता कि बात है, जिस पर सभी भारतीयों को गर्व होना चाहिए । अजां की आवाज और शंखों की ध्वनि जैसी भारत में गुंजती है, वैसे ही वह मॉरिशस में भी सुनाई देती है ।

(रामधारी सिंह 'दिनकर')



अनुगीत

करने को हैं काम करोड़ों, हां करने का मन तो हो
भिड़ने की आतुरता इतनी है कोई दुश्मन तो हो
हाथ-पैर सब ठीक-ठाक हैं, रूप सलोना, इससे हलचल क्या होगी
लोक हृदय-मंथन-हित कुछ विस्फोटक आकर्षण तो हो
धाक जमाना कठिन नहीं, जमना मुश्किल है, बरस पड़ें संवेग, भले ही
भाल-गगन से चुए बड़प्पन, आंखों में बचपन तो हो
चलते-चलते नहीं थकेंगे जिम्मा किसका, सन्नाटा सन्नाटा ही
नाचे ज्वाल-शिखा क्यों खुलकर, पहले संघर्षण तो हो
सिर पर बोझ रखा जो उसमें कमी न आयी, और न आगे आनी है
चाहे भार न बदले, अंग-स्थल का परिवर्तन तो हो
दर्पण में प्रतिबिंबित भी अवकाश न दिखता, इसमें दोष किसी का क्या
नेत्र खुले हैं, किंतु लखाए जो वह आलंबन तो हो

—डॉ. मोहन अवस्थी
८/४ बैंक रोड,
इलाहाबाद-२११००२

आंसुओं की झील कोई

फिर उफन आयी पलक में
आंसुओं की झील कोई
फिर किसी अव्यक्त दुःख ने
कुंडली में कस लिया है
पड़ रहे हैं शब्द नीले
चेतना को डस लिया है
यातना के शिविर में हूं
वेदना के विवर में हूं
गिन रहा हूं अंगुलियों पर,
बैठ मेरी पसलियों पर
एक रेशा रोज दिल का
खा रही है चील कोई
सी रखा है मुंह समझ का
बोलना बिलकुल मना है
दृष्टि पर है धुंध भारी
सोच पर कुहरा घना है
दृश्य में हूं, पर न दीखूं
चीखना चाहूं न चीखूं
अकेला मुझको पकड़कर,
फिर शिकंजे में जकड़कर
बीच माथे में किसी ने
ठोंक दी है कील कोई
अति निकटता प्राप्त करके
फिर मुझे अलगाव देता
घाव भरते ही दुबारा
घाव पर फिर घाव देता
मैं न जानूं, मैं कहां हूं
सब अपरिचित हैं जहां हूं
दृष्टिहीनों के शहर में,
इस अंधेरे के सफर में
छोड़िए पाथेय कर में
है नहीं कंदील कोई

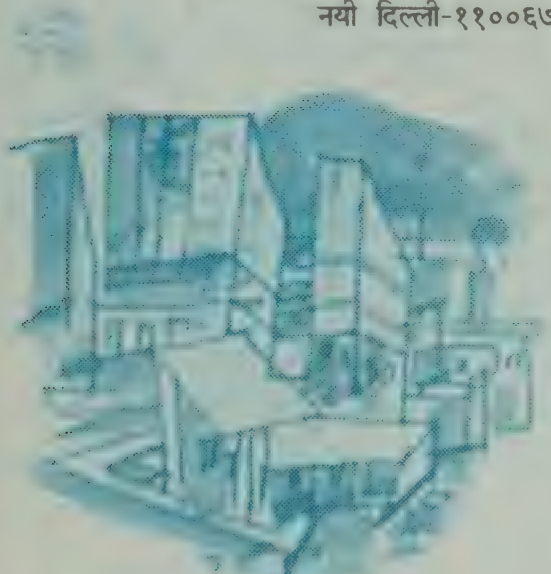


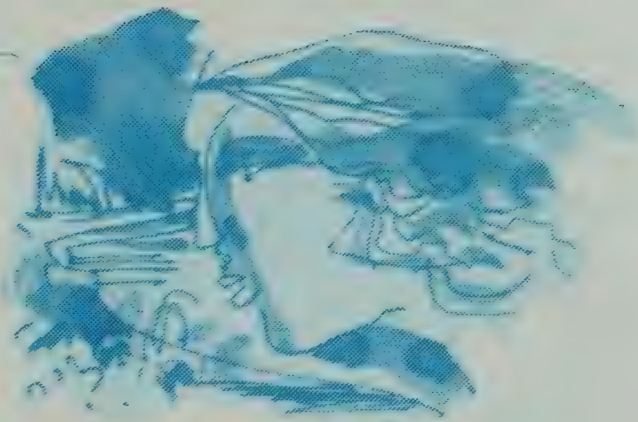
—चंद्रसेन 'विराट'
ई ५, इंदिरा सागर कॉलोनी
खंडवा (म.प्र.)-४५०००६

मकानों के जंगल

पहले यहां था घुप्प जंगल
शेर, चीते, भालू, भेड़िये घूमते थे मुक्त
आदमी बिचारा छिपता
कंदराओं में,
अब यहां पर उगे
मकानों के नये जंगल
जिन्हें कहते हैं 'विहार'
अशोक विहार, बुद्ध विहार
जिनमें शोक में डूबे अशोक
बुद्ध ही सबसे दुःखी ।
सब देवता हैं मस्त
देवियां अपने भवन में
बस आदमी ही खो गया है
शेर, चीते, भालू, भेड़िये
घूमते स्वच्छंद होकर
सजनी पोशाक में
ढूंढ़ते अपने शिकार !

—सुधेश
फ्लैट१३३५ पूर्वांचल,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नयी दिल्ली-११००६७





बादल चिट्ठी-रसां हैं

पानी की महराब पर, ये मौसम के ख्वाब,
बूंदें कलम दवात हैं, ऋतुएं लिखें जवाब ।
बादल चिट्ठी-रसां हैं, बांट रहे हैं डाक,
पानी की खबरें पढ़ें, बरगद, शीशम, ढाक ।
पानी मसनद बन गया, बने गलीचे कूप
लहरों की बारादरी, में बैठी है धूप ।
पुल से पूछो कहेगा, कितना सहा तनाव,
रहा झेला उमरभर, जो पानी के घाव ।
घायल मन को कर गये, ये पछवा के तीर,
नदियों के चूड़े बजे, पर्वत हुए अधीर ।
नदियां, काजल, आंजतीं, काले घन आकाश,
सात रंग की मेखला, इंद्र-धनुष के पाश ।
उमड़-घुमड़ बरसी घटा, हंसी नदी में मीन,
लहर-लहर हर बूंद ने, स्वप्न बुने रंगीन ।
कजरौटा ले रात का, काजल आंजे झील,
बिजुरी लेकर खड़ी है, किरणों की कंदील ।
पीठों पर लादे हुए, इक पानी की लाट,
बूंदों की पायल बजा,
गयी हवा क्या छेड़,
रह, रह भीगा रातभर,
इक जामुन का पेड़,
सौदागर बादल चले, ये बूंदों के हाट ।

—दिनेश शु[illegible]
[illegible]
खंडवा-४५०००१ ([illegible])

आकाश

जब तक लेती रहे
ऊपरी पलक
निचली पलक
का सिर्फ
चुंबन
समझो
आकाश बहुत दूर है ।
जिस क्षण ले लेगी
ऊपरी पलक
निचली पलक
का आलिंगन
समझो
आकाश तुम्हारा हो गया है ।



माथे की शिकन

द्वार पर
बिछी हुई
मां के
माथे की शिकन
प्रतिरात
कुचली जाती है
मेरे पांव तले ।
न वह छोड़ती है
प्रतीक्षा करना,
न मैं
कभी आता हूं
समय से पहले



पंखुड़ियां रिश्तों की

हवा का झोंका
कहीं भी ले जाए पंखुड़ी,
खुशबू गुलाब की
उसके गुलिस्तां की ही आएगी ।
समय कितना भी कर दे दूर
मुझे अपने परिवार से
छवि मुझमें
मेरी मां, मेरे पिता की ही आएगी ।

पंखुड़ियां रिश्तों की ही
फूल से परिवार का
श्रृंगार करती हैं
मन को मन से
बांधने का
कार्य करती हैं ।



● पद्मेश गुप्त
53 Castletown Road West Kensington
London W 14 9 HG, United Kingdom.

गीत

वक्त कभी माटी का, वक्त कभी सोने का
पर न किसी हालत में यह अपना होने का ।
मिट्टी से बने महल, मिट्टी में मिले महल
खो गयी खंडहरों में वैभव की चहल-पहल
बाज बहादुर राजा, रानी वह रूपमती
दोनों को अंक में समेट सो रही धरती
रटते हैं तोते इतिहास की छड़ी से डर
लेकिन यह सबक कभी याद नहीं होने का ।
सागर के तट बनते दंभ के घरौंदे ये
ज्वार के थपेड़ों से टूट-बिखर जाएंगे
टूटेगा नहीं मगर सिलसिला विचारों का
लहरों के गीत समय-शंख गुनगुनाएंगे
चलने पर संग चला सिर पर नभ का चंदा
थमने पर ठिठका है पांव मिरग-छौने का ।
बांध लिया शब्दों की मुट्ठी में दुनिया को
द्वार ही न मिला मुक्ति का जिसको मांगे से
सोने की ढाल और रत्न-जड़ी तलवारें
हारती रहीं कुम्हार के कर के धागे से
सीखा यों हमने फन सावन की बदली में
फागुन के रंग और नूर को पिरोने का ।

—डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र
४१, सेंट्रल रोड, यादवपुर, कलकत्ता-७०००३२





गीत

वासंती क्षण !
सपने भोर के—
वर्तमान यह अनभोगा अतीत-जैसा
यह प्यासा मन लगता विरह गीत जैसा
जगे खयाल सब
जी झकझोर के—
अंग-अंग गीत, मन-मृदंग असहयोगी
राह पर ठगा ठूंठा तरु विकल वियोगी
छूट गया खुद
सबको छोड़ के—
कौन उगे किसलय को लोरियां सुनाये
रोकर सौ बार एक बार गुनगुनाये
सब रिश्ते गयी
पिकी तोड़ के—
फिर आयी रात रेशमी-रस-अंगूरी
मन कैसे समझो मन की नामंजूरी
आये जब फूल
सभी ओर के—

—राजमणि राय 'मणि'
—ग्रा./पो. धमौन पट्टी,
वाया— महनार,
जिला— वैशाली (बिहार)

तुगलक पितृघाती था !

—धर्मवीर शर्मा

तुगलक वंश का संस्थापक ग्यासुद्दीन तुगलक शाह गाजी (८ सितंबर १३२०-१३२५ ई.) जाति का तुर्क था। मलिक-उल-गाजी के नाम से विख्यात सुल्तान का पिता मलिक तुगलक, बलबन (१२६६-८८) का गुलाम तथा मां पंजाब के एक स्थानीय जाट परिवार की स्त्री थी। सन १३०५ में उसे दीपालपुर की 'इक्ता' दी गयी तथा पश्चिमोत्तर सीमा की रक्षा का भार विशेष रूप से सौंपा गया, क्योंकि इस ओर से मंगोल बराबर आक्रमण कर रहे थे। १३२० ई. में राज्य हत्यारे खुशरूशाह (खिलजी वंश) का अंत करके वह अमीरों और सरदारों के अनुरोध पर दिल्ली का 'सुल्तान' घोषित हुआ। यह पहला अवसर था जब कोई सर्वसम्मति से दिल्ली का 'सुल्तान' स्वीकृत हुआ। सुल्तान ने ग्यासुद्दीन तुगलक का खिताब धारण करके तुगलकाबाद किले की नींव डाली, जो आज भी खंडहर के रूप में तुगलक वंश की गाया दोहरा रहा है।

खिलजी वंश का पतन

खिलजी वंश के पतन के साथ ही दिल्ली साम्राज्य का विघटन आरंभ हो गया तथा बंगाल और वारंगल के सुदूर प्रांत केंद्रीय सरकार के नियंत्रण से स्वतंत्र हो गये। सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक ने वारंगल के शासक प्रताप रुद्रदेव को पराजित कर वारंगल का नाम सुल्तानपुर रखा, जिसके परिणामस्वरूप कैकतीय राजवंश का सूर्य अस्त हो गया और वारंगल 'दिल्ली सल्तनत' की तलवार के साये में आ गया।

तिरहुत (मिथिला) के शासक हरिसिंह देव को परास्त कर सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली की ओर कूच किया। मार्ग से 'सुल्तान' ने शहजादे उलुगखां, फखरुद्दीन मुहम्मद जूनाखां, (जब उसे युवराज बनाया गया तो उलुगखां की उपाधि दी गयी थी) को आदेश भेजा। इब्नबतूता लिखता है, "दिल्ली के बाहर उसके स्वागत हेतु एक भवन का निर्माण करवाया जाए ताकि अगले दिन सजधज कर शुभ मुहूर्त में सुल्तान दिल्ली में प्रवेश करे। दिल्ली के सुल्तान ऐसा करना गौरव का प्रतीक समझते थे। शहजादा उलुगखां शेख निजामुद्दीन औलिया के पास आता रहता था। शेख संगीत तथा गोष्ठियों का आयोजन करके हर्षोन्मादपूर्ण गीत गाता तथा फकीरों की भांति नाज कर 'समा' बांधता था। संगीत सुनकर शेख को 'हाल' (भावावेश) होता रहा जबकि कट्टर सुन्नी मुसलमान भक्ति के इस रूप को 'शरा' (मुसलिम धार्मिक कानून) विरोधी मानते थे।

सुल्तान ने सूफी संप्रदाय के संत शेख निजामुद्दीन औलिया को भी संदेश भेजा कि "मेरे दिल्ली आने से पूर्व शेख दिल्ली छोड़ दें और संगीत का स्वर मेरे कानों में न पड़े ।"

शेख की मृत्यु

शेख निजामुद्दीन औलिया चिश्ती 'सिलसिले' के संत शेख फरीद (बाबा फरीद) के शिष्य थे । सूफी संप्रदाय (१२३६-१३२५) के संस्थापक ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेर के निवासी थे । शेख ७ वर्ष की उम्र में अपने पिता के मरणोपरांत बदायूं से दिल्ली आकर ग्यासपुर नामक गांव में बस गये । अमीर खुसरो इनके शिष्यों में प्रसिद्ध हुए, जिन्होंने शेख की मृत्यु पर कहा—

गौरी सोबें सेज पर मुख पर डाले केश ।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुं देश ।

सूफी संतों ने हिंदू-मुसलिम एकता के भरसक प्रयास किये । शेख सलीम चिश्ती भी इस संप्रदाय के प्रख्यात संत हुए, जिनकी 'दरगाह' पर (फतेहपुर सीकरी) हिंदू और मुसलमान 'मन्नत' मानकर धागे बांधते हैं ।

शेख निजामुद्दीन औलिया जीवनभर 'फुतूह' (भिक्षा का अन्न) खाते रहे तथा हजारों गरीब-अमीरों के लिए इनकी 'खानकाहों में प्रतिदिन भोजन उपलब्ध रहा, जिसको संत 'बैतुल माल' (सार्वजनिक कोष का धन) की संज्ञा देते थे । शेख ने सुल्तान के आदेश के उत्तर में कहा, "हनूज दिल्ली दूर अस्त" । (अभी दिल्ली दूर है) ।

जब चौथे शहर तुगलकाबाद का निर्माण हो रहा था, तो शेष द्वारा एक बावली निर्माणाधीन थी । सुल्तान ने बावड़ी निर्माण के लिए मजदूरी के काम में लगे लोगों को आदेश दिया कि बावड़ी पर निर्माण कार्य बंद कर दिया जाए और शेख को बावड़ी न बनाने के आदेश जारी किये । शेख ने सुल्तान से कहा, "जिस दुर्ग का निर्माण हो रहा है उसमें गुजर व झाड़ बसेंगे ।" यह सत्य प्रमाणित रहा । तुगलकाबाद शहर आज भी आबाद नहीं है ।

इब्नबतूता लिखता है कि शाहजादे उलुगखां ने अहमद आयाज, मीर इमारत (निर्माण मंत्री) के साथ मिलकर कुचक्र चला । सुल्तान और उसका ७ वर्षीय पुत्र महमूद महल में भोजन के समय भवन गिरने से दबकर मारे गये । तारीख-ए-मुबारकशाही के अनुसार यह घटना फरवरी १३२५ ई. में घटी । लेकिन आधुनिक इतिहासकारों में शाहजादे के पितृघाती होने पर मतैक्य नहीं है । घटना का सूक्ष्म विश्लेषण व निरीक्षण करने पर अनेक तथ्य सामने आते हैं । आगा मेहंदी हुसैन शाहजादे को पितृघात दोष से मुक्त रखते हुए तर्क देते हैं, "सुल्तान की मृत्यु एक आकस्मिक घटना का परिणाम थी । इसके पीछे कोई षड्यंत्र नहीं था ।" डॉ. ईश्वरी प्रसाद और बुल्जले हेग का तर्क है कि बड़े-बड़े सामंतों के साथ मिलकर मुहम्मद तुगलक ने साजिश की और ग्यासुद्दीन तुगलक की हत्या का षड्यंत्र रचा । निजामुद्दीन अहमद, बदायूंनी अबुलफ़ज्ल (बाद के लेखक) ने अलुगखां को हत्या के लिए दोषी ठहराया ।


धर्मवीर शर्मा

समकालीन स्रोत भी इस घटना पर

महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं । सुल्तान के समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी का कथन है 'बला-ए-आस्मानी नाजिल शुद-आकाश से विपत्ति का उल्कापात हुआ जिससे सुल्तान की मृत्यु हो गयी ।

हुसैन इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि 'आसमान से बिजली गिर पड़ी, जिससे सुल्तान की मृत्यु हो गयी ।'

समकालीन इतिहासकार इब्नबतूता कहता है, "घटना ६-७ वर्ष पूर्व घटित हुई है । घटनास्थल पर उपस्थित प्रत्यक्षदर्शियों से मुझे यह सूचना मिली है कि मुहम्मद तुगलक ने अपने प्रधानमंत्री अहमद अयाज के साथ मिलकर 'सुल्तान' की हत्या का षड्यंत्र रचा ।"

समकालीन इतिहासकार 'इमामी' भी शाहजादे को पितृघाती ठहराता है । लेकिन घटना का वर्णन भिन्न रूप से करता है, "सुल्तान के स्वागत के लिए 'अफगानपुर' (किलोखेड़ी या किलोकड़ी) दिल्ली-मथुरा रोड पर एक गांव के पास लकड़ी के महल का निर्माण करवाया गया, जिसकी नींवें जानबूझकर कमजोर डाली गयी थीं । जब सुल्तान भोजन कर रहा था तो उसके सामने हाथियों का प्रदर्शन किया गया । हाथियों की दौड़ के कारण भवन गिर पड़ा । भवन में तिलिस्म (जादू) किया गया था ।"

घटना को तर्क की कसौटी पर कसने से पूर्व परवर्ती स्रोतों पर भी एक दृष्टिपात आवश्यक है ।

इतिहासकार याहिया (तारीख-ए-मुबारकशाही), जो घटना के ११० वर्ष बाद १४३४ ई. में लिखी गयी का लेखक कहता है, "दुर्घटना अचानक हुई और शाहजादे का षड्यंत्र में हाथ नहीं था ।"

इतिहासकार निजामुद्दीन (तबकात-ए-अकबरी का लेखक) जिसने अपनी पुस्तक घटना के २५० वर्ष पश्चात १५९४ ई. में लिखी, कहता है, "शाहजादे ने अपने पिता की हत्या का षड्यंत्र रचा ।"

आपसी मतभेद

इतिहासकार फरिश्ता, तारीख-ए- फरिश्ता का लेखक, घटना का वर्णन १६२२ ई. में करते हुए कहता है, "मैंने लाहौर में तुगलकवंशियों तथा उनके संबंधियों से घटना की जानकारी प्राप्त की है । उनके उत्तर संतोषजनक नहीं थे । घटना को कोई सत्य बतलाता था, तो कोई झूठ करार देता था, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि सत्य क्या है । आधुनिक इतिहासकार डॉ. ईश्वरी प्रसाद का मता है कि सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक और उसके ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद में आपसी मतभेद थे । मनमुटाव का कारण शेख निजामुद्दीन औलिया को बताया जाता है । शाहजादा शेख के आश्रम में अकसर आता रहता था । शत्रुता के कारण ही सुल्तान ने शेख-उल-इसलाम (शेख निजामुद्दीन औलिया) को आदेश दिया था कि खुशुरखां से प्राप्त दान के ५ लाख टके वापस लौटा दें । उत्तर में शेख ने बताया कि सब धन गरीबों में वितरित कर दिया गया है । शेख ने सुल्तान के मना करने के पश्चात भी संगीत के कार्यक्रमों को बंद नहीं किया । सुल्तान के मना करने पर भी शाहजादा शेख के पास जाकर पैर छूता रहा । इन्हीं सब कारणों से सुल्तान शेख से रुष्ट था । शेख का उत्तर "हुनूज दिल्ली अस्त" इस बात

का प्रमाण है कि शेख को सुल्तान की मृत्यु के षड्यंत्र की पूर्व सूचना थी । इतिहासकार का मत है कि शेख से मिलकर षड्यंत्र रचा गया था ।

पिता-पुत्र के मध्य मनमुटाव के पक्ष में तर्क देते हुए कहा जाता है कि शाहजादे ने मुक्त हस्त से शाही खजाने को लुटाया था तथा अपे मित्रों और विश्वासपात्रों को मालोमाल कर डाला था । १३२३ ई. में वारंगल के शासक को बिना दबाए शाहजादा मार्ग से लौट आया था, क्योंकि शाही खेमों में अफवाह फैल गयी थी कि सुल्तान की मृत्यु हो गयी है । इस प्रकार सुल्तान शाहजादे से अप्रसन्न था ।

शाहजादे को दोषी मानते हुए निम्न प्रमाण दिये गये हैं ।

जियाउद्दीन बरनी ने तारीख-ए-फिरोजशाही में सुल्तान और शेख शत्रुता का कहीं भी जिक्र नहीं किया है, जबकि बरनी सर्बदा शेख के साथ रहता था ।

"जला-ए-आसमानी नाजिल शुद" का अर्थ यह नहीं है कि बिजली गिरी, बल्कि घटना का अलंकृत भाषा में वर्णन है । घटना का अर्थ समझाने के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा प्रयोग की गयी है ।

हिंदुस्तान में मार्च के महीने में बिजली गि. रना सामान्यतः संभव नहीं है । स्मरणीय है कि सुल्तान की मृत्यु मार्च १३२५ ई. में हुई थी ।

भवन निर्माण

इब्नबतूता स्पष्ट लिखता है, "मुझे शेख रुक्नुद्दीन से घटना का विवरण प्राप्त हुआ, जो घटनास्थल पर सुल्तान के साथ भोजन कर रहा था । भवन गिरने से पूर्व मुहम्मद तुगलक ने शेख को इंगित करके बाहर बुला लिया था । इससे स्प ष्ट है कि शाहजादे को भवन गिरने की पूर्व सूचना थी ।

भवन निर्माण कार्य अहमद आवाज के निर्देशन में संपन्न हुआ था । भवन गिरने के कारणों की जांच होनी चाहिए थी तथा मीर इमारत को दंड मिलना चाहिए था । परंतु मोहम्मद तुगलक ने उसे उंड के स्थान पर प्रधानमंत्री नियुक्त किया । क्यों ?

शेख रुक्नुद्दीन को शाहजादे ने १०० गांव जागीर के रूप में दिये ताकि वह षड्यंत्र पर परदा डाले रहे ।



ग्यासुद्दीन का मकबरा, तुगलकाबाद

सुल्तान के मरणोपरांत मोहम्मद तुगलक ने शेख निजामुद्दीन के मकबरे के उद्धार के लिए १२ लाख रु. दिये तथा शेख के संबंधियों को भी उच्च पद व जागीरें प्राप्त हुईं ।

उलुगखां को सुल्तान ने अपने जीवनकाल में ही युवराज घोषित कर दिया था । यही कारण था कि उसके उत्तराधिकार का विरोध नहीं हुआ ।

सर बुल्जले हेग (जे.आर.ए.एस. जुलाई १९२२-३३०-३१), डॉ. ईश्वरी प्रसाद (भारत में करौना तुर्कों का इतिहास, ४६ और आगे), डॉ. ए. मेहदी हुसैन (मोहम्मद बिन तुगलक का उत्थान और पतन, पेज ६६ और आगे), डॉ. मुईनुलहक (मुसलिम यूनिवर्सिटी जरनल १९३९, क्या मोहम्मद तुगलक पितृहंता था) ने समस्या का प्रत्येक पहलू से अध्ययन किया है। सर बुल्जले हेग और डॉ. ईश्वरी प्रसाद जूना खां पर संदेह करते हैं। जबकि बादवाले दोनों इतिहासकार उसे सभी अभियोगों से पूर्ण मुक्त करते हैं।

मंडप का गिरना

डॉ. ईश्वरी प्रसाद का दावा याहिया सरहिंदी, अबुल फजल निजामुद्दीन अहमद, बदायूंनी तथा अन्य व्यक्तियों के सुस्पष्ट तथा अस्पष्ट वचनों पर निर्भर है, जो इसामी और इब्नबतूता के विचारों का समर्थन करते हैं। दूसरी ओर ए.एम. हुसैन, हाजी मोहम्मद कंधारी, राय बिंद्रावन (लुब्बुत्वारीख हिंद, इंडिया हाउस की पांडुलिपि, ३८) तथा मोहम्मद बुलाक (मत्तलूबु तालिबीन) पर भरोसा कर इसके अतिरिक्त निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मंडप का गिरना एक दुर्घटना मात्र था न कि किसी षड्यंत्र का परिणाम। इसामी और इब्नबतूता को छोड़कर सभी बाद के लेखक हैं और उनमें प्रत्येक अपनी रूचि के अनुसार पूर्व कृतियों से संकेत लेता है।

मोहम्मद तुगलक को सुल्तान की हत्या के दोष से मुक्त करने के लिए भिन्न तर्क दिये गये हैं :—

सुल्तान शेख पर कभी भी इतना क्रोधित व रुष्ट नहीं हुआ था कि शेख उसकी हत्या के षड्यंत्र में भागी होता। सुल्तान ने ५३ धर्माधिकारियों से शेख के संदर्भ में सलाह ली थी लेकिन उन्होंने शेख के आचरण व कार्यक्रमों को कभी भी धर्मविरुद्ध नहीं ठहराया जिससे सुल्तान संतुष्ट हुआ।

वारंगल के अभियान को अधूरा छोड़ वापस लौटने पर भी सुल्तान शाहजादे से रुष्ट नहीं हुआ था, यदि वह असंतुष्ट होता तो उसे भी दंड देता जबकि उसके साथियों को मृत्युदंड दिया गया। सुल्तान शाहजादे के वारंगल संबंधी स्पष्टीकरण से सहमत था।

संतों का आशीर्वाद

शेख ने शाहजादे को सामान्य रूप से दिल्ली का सुल्तान होने का आशीर्वाद दिया था जैसा कि संत करते हैं। सुल्तान के कभी भी दिल्ली न लौट पाने की भविष्यवाणी ज्योतिषचार्यों ने की थी कि शेख निजामुद्दीन औलिया ने।

शाहजादा धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसने शेख रुकनुद्दीन को नमाज पढ़ने के लिए इशारा किया था न कि बाहर आने का गुप्त इशारा।

हाथियों का प्रदर्शन स्वयं सुल्तान के आदेश से करवाया गया था। शाहजादे ने तो केवल बंगाल से लाये गये हाथियों, जिन्हें सुल्तान अपने साथ लाया था, को देखने की इच्छा अभिव्यक्त की थी। हाथी परेड की स्वीकृति भी स्वयं सुल्तान ने दी थी।

भवन बनाने का आदेश स्वयं सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक ने दिया था, " दिल्ली के बाहर मेरे स्वागत हेतु एक भवन का निर्माण करवाया जाए।"

भवन निर्माण का आदेश ३ माह पूर्व प्राप्त हुआ था । समय के अभाव के कारण भवन लकड़ी का बनाया गया, जो शहतीरों और तखतों पर आश्रित था । भवन की नींव पक्की नहीं डाली जा सकी इसलिए दुर्देव से दुर्घटना हो गयी ।

बसातीन-उल-उन्स का लेखक अहमद हसन सुल्तान के साथ वारंगल से दिल्ली आ रहा था । उसका कहना है, "लौटते समय मई-जून का महीना था । बड़ी भीषण गरमी व लू चल रही थी । इसलिए जून के मास में वर्षा भी हो सकती है और बिजली भी गिर सकती है ।

सुल्तान मोहम्मद तुगलक ने अपने आत्मचरित (अप्रकाशित) में वर्णन किया है, मेरे पिता की मृत्यु जुलाई १३२६ ई. में हुई । भारत में जुलाई मास में पानी बरसता है और बिजली गिरने की संभावना भी हो सकती है ।

'सीरत-ए-फिरोजशाही' में मोहम्मद तुगलक की कटु आलोचना की गयी है व उसके अत्याचारों के विशद वर्णन हैं । परंतु कहीं भी इस बात का संकेत नहीं मिलता कि वह पितृघाती था ।

'इनसाय माइरू' के एक पत्र में वर्णित है कि भवन इसलिए गिरा, क्योंकि नींव कमजोर थी ।

इसामी का कथन है कि भवन उस समय गिरा, जब उसके सामने हाथी दौड़ाये गये । 'मतलबूत्तालिबीन' में स्पष्ट वर्णन है कि भवन वज्रपात के कारण गिरा ।

यदि सुल्तान को शाहजादे पर शंका होती, तो उसे दूसरी बार कुमक सहित वारंगल पर आक्रमण के लिए नहीं भेजता जो इस बात का प्रमाण है कि उलुगखां की स्वामिभक्ति पर संदेह नहीं किया गया तथा दरबार में उलुगखां की उपलब्धियां समारोह म नाकर सराही गयीं ।

पूर्वी अभियान पर प्रस्थान करने से पूर्व सुल्तान ने अपनी अनुपस्थिति में साम्राज्य का शासन कार्य चलाने का समुचित प्रबंध किया था । उसने उलुगखां को राजसी परिषद में नियुक्त किया, जिसमें शाहीन, आखूर बेक, अहमद अयाज व उलुगखां थे ।

पारस्परिक स्नेह

राजसत्ता ग्रहण करने के पश्चात मोहम्मद बिन तुगलक और उसकी माता के बीच पारस्परिक स्नेह बना रहा ।

> सुल्तान ग्यासुद्दीन तुगलक ने वारंगल के शासक प्रताप रुद्रदेव को पराजित कर वारंगल का नाम सुल्तानपुर रखा, और वारंगल 'दिल्ली सल्तनत' की तलवार के साये में आ गया ।

उलुगखां के उत्तराधिकार को, उसकी जीवित भाइयों और न ही दरबारी अमीरों के किसी वर्ग द्वारा दी गयी चुनौती का कोई वर्णन मिलता है । इस बात का भी उल्लेख नहीं है, कि पदोन्नति या ईनाम का वायदा कर उनकी स्वामिभक्ति खरीदी गयी ।

उलुगखां को पहले ही युवराज घोषित किया जा चुका था । इसलिए वह उत्तराधिकार के विषय में किसी चिंता में बहक नहीं सकता था ।

इब्नबतूता 'उलमा' वर्ग का सदस्य था । उसका विवाह माबर के शासक के परिवार में

हुआ जो मोहम्मद का शत्रु था । कई स्थानों पर उसका वर्णन बाजारू चर्चाओं के आधार पर कल्पित है, अतः उसका मत स्वीकार करने योग्य नहीं है ।

सुल्तान को शेख से दुश्मनी का कारण पांच लाख टकों के वापस न लौटाने का बताते हैं, जबकि दिल्ली के शेख ग्यासुद्दीन चिराग देहली के अनुसार, ''यमुना जल के समान दान तथा उपहार उनकी खानकाह में बहा करते थे । (खैरूल मंजालिस-२५७) इतना होते हुए भी उन्होंने कोई वस्तु दूसरे दिन के लिए बचाकर नहीं रखी । वह एक हाथ से स्वीकार करते और दूसरे हाथ से बांट देते थे । शेख शासकों के पास कभी नहीं गये और राजनीति में उन्होंने रूचि नहीं ली ।

जबकि राजा आये और गये, राजवंश उठे और गिरे, जबकि महत्त्वाकांक्षी राजकुमार लड़े और प्रतिस्पर्धी बे, षड्‌यंत्र बनाये गये, और जबकि दरबारियों ने चाटुकारी और विश्वासघात किया, शेख अपने कत्‌त्‌र्वय पर डटे रहे, जिसका उन्होंने संकल्प लिया था और गयासपुर स्थित अपने एकांत आश्रम में शांतिपूर्वक आध्यात्मिक मुक्ति का कार्य चलाते रहे ।'' (लाइफ एंड वकर्स ऑफ अमीर खुसरो, १३५/६)

संभव है सुल्तान इन सबसे अनभिज्ञ नहीं था और उसने शेख के कथन का बुरा नहीं माना होगा ।

'सियरुल औलिया' का लेखक अमीर खुर्द एक घटना का वर्णन करता है । उलमा वर्ग की हठधर्मी के कारण सुल्तान को एक सभा बुलानी पड़ी जिसमें शेख को भी 'उलमा' के समक्ष अपने दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण करना था । सुल्तान एक तटस्थ प्रेक्षक के रूप में देखता व सुनता रहा । सुल्तान ने काजी का यह प्रस्ताव कि 'सभा' अवैध घोषित कर दी जाए, ठुकरा दिया ।''

शेख का उत्तर ''हनूज दिल्ली दूर अस्त' बाद की मनगढ़ंत बात है । शेख उस समय बीमार थे और उन्होंने ४० दिन पूर्व ही भोज त्याग दिया था । वे इस समय सुल्तान की वापसी या शाहजादे के भविष्य से अधिक ईश्वर के ध्यान में मग्न थे ।

शेख रुकनुद्दीन ने, जिसके उलुगखां से घनिष्ठ संबंध थे, शासक सम्राट के विषरु में एक विदेश (इब्नबतूता व इसामी) को अपना विश्वासपात्र बनाया हो, आश्चर्यजनक प्रतीत होता है ।

शेख द्वारा राजनीति की बात तो दूर जो कि उनके स्वभाव के प्रतिकूल थी, चिश्ती संप्रदाय का अनुसारण कर उन्होंने राजाओं के दरबार में आने से भी इनकार कर दिया ।

लाल किले का सिंहासन

मोहम्मद अपने पिता का बड़ा भक्त था । पिता की मृत्यु पर उसे ४० दिन तक मातम मनाया । काले वस्त्र धारण किये नंगे सिर और पैर रहा । ४० दिन तक तुगलकाबाद में निवास करता रहा तदुपरांत बलबन के लाल किले में सिंहासन पर बैठा ।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सुल्तान को पितृहत्या के लिए दोषी ठहराना न्यायसंगत नहीं है ।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
नयी दिल्ली

विलासिता, वृद्धावस्था, विवेकशून्यता, हर युग में विश्वभर के राजकुलों के पतन का कारण बने हैं... अपशकुन के बादल जब मंडराने लगते हैं... जनता भी परिस्थितियों के अनुरूप आचरण करने लगती है... हर युग में मानव मन की वृत्तियां समान मिलती हैं, अनुकूल क्षणों और प्रतिकूल क्षणों की साक्षी बनकर । यह भी सच है कि इतिहास स्वयं दुहराता है... अतीत केवल कुछ घटनाओं का जाल नहीं प्रासंगिक संदर्भों में भी उतना ही अर्थवान है... प्रस्तुत कहानी पुराणों के आवरण में होकर भी आज की स्थिति का साकार चित्रण है ।

'राजा त्र्यरुण की रथयात्रा'

● डॉ. सुधा पांडे

अयोध्या की श्री-समृद्धि नष्टप्रायः हो चली है, मोहिनी रूपराशि लिये उस नयी रानी ने अपने मोहपाश में जब से महाराज को बांधा है, राज्य पर विपत्तियां ही मंडराने लगी हैं, किंतु मोह के वशीभूत, विलास के रागरंग में डूबे राजा को कुछ भी सुधबुध नहीं है... प्रजाजनों में भी राजा के इस कृत्य के कारण सुगबुगाहट है और आक्रोश के स्वर उभरने लगे हैं...'

उस दिन राजप्रासाद की वीथिका में मंत्रिगण परस्पर वार्तालाप कर रहे थे... बात को आगे बढ़ाते हुए एक मंत्री ने वाक्य जोड़ा —'अपने राजपुरोहित विवेकवान मित्र वृशजान को भी उन्होंने अपमानित करके बहिष्कृत कर दिया... कितनी अनिष्टकारी थी, राजा की वह दिग्विजय यात्रा...

प्रतापी इक्ष्वाकुवंश के वंशज थे राजा त्र्यरुण, मन में अनेक महत्वाकांक्षाएं पिता के शासनकाल से ही उभरने लगीं और उन्हें प्रतीक्षा थी कि कब उनका राज्याभिषेक हो, और कब अपने पराक्रम की यश पताका वे पूरे भू-मंडल पर फहरायें... महत्त्वाकांक्षा दिनोदिन बलवती होने लगी । पिता त्रिवृष्ण वृद्ध हो चले थे... उनके जीवनकाल में अयोध्या में सर्वत्र सुख-शांति का साम्राज्य रहा, प्राकृतिक आपदाएं भी राज्य में उपद्रव न कर पाती थीं... अयोध्या का जीवन निरापद वैभवपूर्ण जीवन था । यथासमय अवसर पाकर त्रिवृष्ण ने मंत्रियों को बुलाकर कहा —'मेरे वानप्रस्थ जीवन का

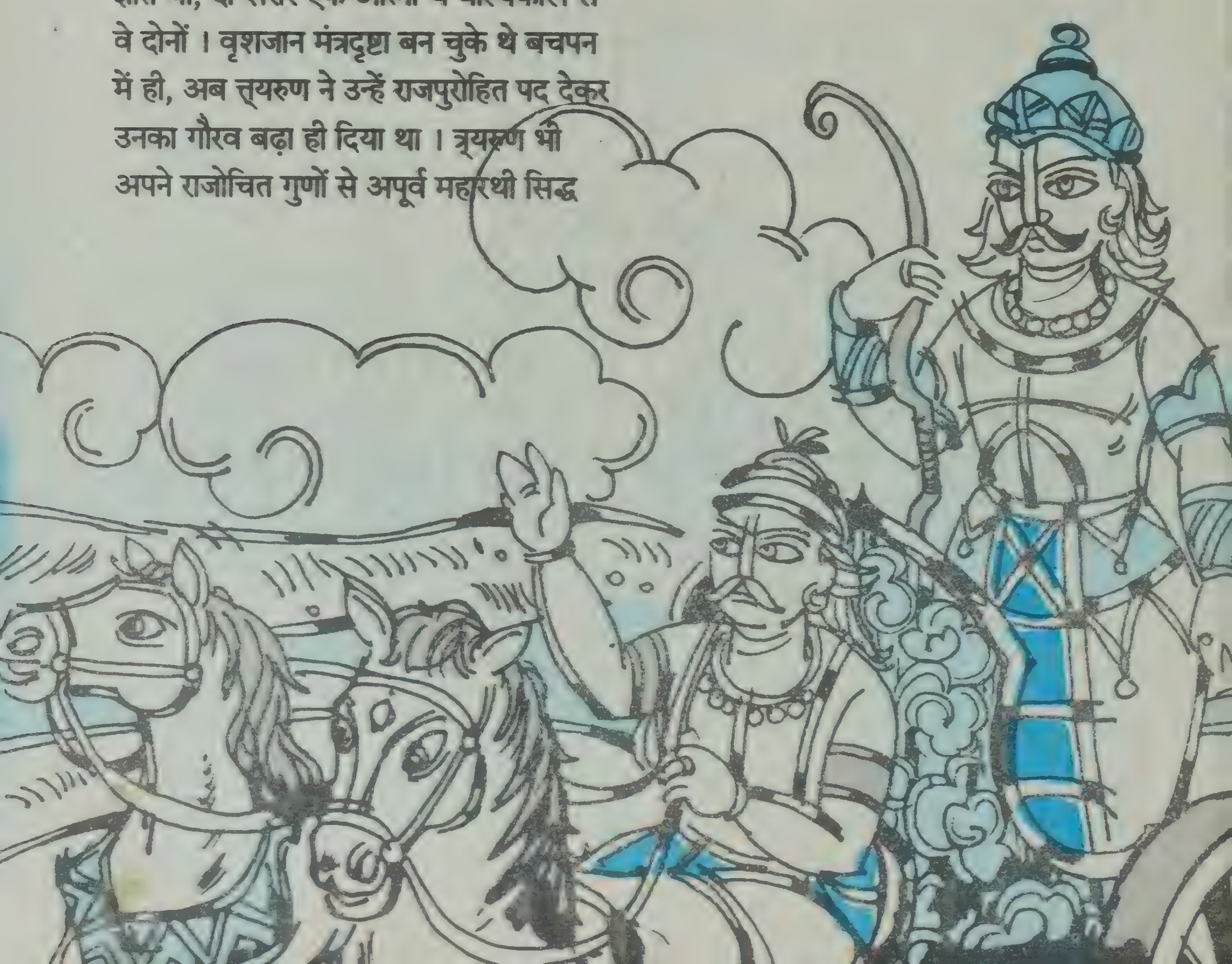
समय आ गया है... अब युवराज त्र्यरुण का राज्याभिषेक कर देना चाहिए ।'

महाराज के पुत्र को राजपद पर अभिषिक्त करने में किसी को क्या आपत्ति हो सकती थी ? सभी ने सहर्ष भाव से राजा के अभिमत का अनुमोदन किया, शुभ मुहूर्त्त देख युवराज का राज्याभिषेक हुआ और महाराज वन को चले गये... निष्काम भावना से राज्य की सुख-समृद्धि मंत्रियों और पुत्र के हाथ सौंपकर... युवराज को अभूभीस्पित फल मिल चुका था... वे तो इस अवसर की प्रतीक्षा में थे ही ।

त्तयरुण और वृशजान की मित्रता सभी को ज्ञात थी, दो शरीर एक आत्मा थे बाल्यकाल से वे दोनों । वृशजान मंत्रदृष्टा बन चुके थे बचपन में ही, अब त्र्यरुण ने उन्हें राजपुरोहित पद देकर उनका गौरव बढ़ा ही दिया था । त्र्यरुण भी अपने राजोचित गुणों से अपूर्व महारथी सिद्ध हुए । राज्यकार्य संचालन में वृशजान की अपूर्व मेधा और त्र्यरुण की वीरता ने मणिकांन योग की भांति अयोध्या में ख्याति प्राप्त की ।

"नृपश्रेष्ठ ! आपका राज्याभिषेक हुए काफी अवधि बीत चली है, अब दिग्विजय के लिए प्रयाण किया जाए ।" वृशजान ने उस दिन अवसर पाकर प्रस्ताव रखा था...

महाराज पुरोहित की इस सम्मति का भाव समझ चुके थे... हर्ष से भर उठे वे, क्षणभर में यात्रा के संभार एकत्रित कर दिये गये । अनेक मंगल कामनाओं से अपने भावाश्रु अर्पित कर पुरवासियों ने दिग्विजय यात्रा के लिए राजा को विदा दी... पुरांगनाएं गीत गा रही थीं, वृद्धों ने



आशीर्वचन दिये... नृपति की जय-जयकार का स्वर सभी दिशाओं में फैल गया ।

चतुरंगिणी सेना से राजा रथयात्रा के लिए निकल चुके थे... असंख्य रथों, घोड़ों, हाथियों और पैदल सैनिक राजा की जयकार करते हुए साथ चल रहे थे... सेना की पगध्वनि से धरती क्षणभर को कांप उठी थी मानों । मार्ग जनसमूह से घिर जाने के कारण संकरे हो गये... राजा के रथ को देखने के लिए मार्गों पर दोनों ओर असंख्य स्त्री-पुरुष एकत्रित हो जाते थे । राजा का रथ समीप पहुंचते ही सीमा पर स्थित राज्यों के अधिपति अनेक उपहार लेकर पहुंच जाते थे और राजा के साथ उनके पुरोहित का भी प्रशस्ति गान करते थे... जिस-जिस प्रदेश में उनका रथ गया वहां उनका प्रभाव छाता गया... चतुर्दिक सुख-शांति और सद्भाव की स्थापना के लिए यह यात्रा है, ऐसा जानते ही राजागण उनकी अधीनता स्वीकार कर लेते, किसी भी स्थान पर युद्ध करने की स्थिति ही उत्पन्न न हुई... यात्रा में बीतनेवाले प्रत्येक दिन अतिरिक्त आनंद के अतिरेक से भर उठे थे ।

महाराज ने उस विजयरथ पर आरूढ़ होकर उत्तर से पूर्व, दक्षिण से पश्चिम सभी दिशाओं में निर्बाध यात्रा पूर्ण की... अपने राज्य को चारों तरफ से सुरक्षित किया राजा ने... त्रुरुण के पराक्रम और वृशजान के बुद्धि वैभव को सफलता मिल चुकी थी... दिग्विजय यात्रा समाप्त हुई । अयोध्या वापस लौटने की घड़ियां भी आ चुकी थीं... राजा सहित सभी सैनिकों के हर्ष का पारावार न था । महाराज के इस दिग्विजय संदेश को वायु ने पुष्पों की सुगंधि की भांति सर्वत्र फैला दिया, सातों महाद्वीप एवं पूरा भू-मंडल राजा की अपरिमित कीर्ति से अभिभूत हो उठा ।

महाराज दिग्विजय प्राप्त कर अयोध्या में वापस लौट रहे हैं, यह संदेश सुनते ही प्रजावर्ग में हर्ष की लहर फैल गयी । सजी-संवरी अयोध्या रूपगर्विता नायिका की भांति उल्लसित हो उठी, राजमार्ग विशाल तोरण द्वारों से सुसज्जित था... मंगल वाद्य और मंगल गानों से सारा प्रांतर आह्लादित... समूचा राज्य आतुरता से अपने राजा के लौटने की प्रतीक्षा में उतावला हो रहा था..त्साह से भरे मनुष्यों से राजमार्ग और वीथिकाएं गवाक्ष खचाखच भर गये थे... भीड़ की अधिकता, रथ की गति रुक-रुक जाती थी... ।

महाराज और वृशजान दोनों एक ही रथ पर आरूढ़ थे...आगे-पीछे, इधर-उधर विशाल जनसमुद्र लहरा रहा था...राजा की एक झलक पाने को... ! रथ फिर बीच में रुक गया था अचानक महाराज उठे और सारथी के पास जाकर कहा, 'तुम हटो, मैं राह बनाता हूं...'

'नहीं महाराज ! ऐसा न करिए...जनता बहुत विह्वल है, आप अपने ही स्थान पर बैठे रहें...मैं, राजप्रासाद के गोपुर तक रथ को पहुंचता हूं' कहते हुए वृशजान ने सारथी के हाथ से घोड़ों की रास अपने हाथ में ले ली...वृशजान को सामने पाते ही गगनभेदी जय-जयकार से जनता ने सारा वातावरण गुंजा दिया...महाराज भी जनता द्वारा दिये जानेवाले आदर-अभिनंदन को पाकर हर्षातिरेक से फूले नहीं समा रहे थे !

उस विजय-यात्रा ने जीवन के लिए मानो अनंत महत्वाकांक्षाओं के पंख लगा

दिये...वृशजान के हाथों में रथ की डोरी आते ही, रथ को भीड़ में मार्ग मिलने लगा था । चारों तरफ अपार जन-समुद्र को देखकर रथ के घोड़े चंचल गति से भर उठे...वृशजान के निरंतर संभालते रहने पर भी घोड़ों ने गति पर संयम खो ही तो दिया...हवा को छूनेवाली गति से वे अश्व दौड़ते चले जा रहे थे...

'गति धीमी करो वृशजान ! इस दुर्निवार गति से कहीं कुछ अनर्थ न हो जाए ।'...महाराज ने कंपित स्वर में अपने मित्र से कहा, 'सारथी भी भयभीत हो उठा था...वृशजान प्रयास करके भी अश्वों की गति रोक पाने में असमर्थ थे...सारथी चीख-चीखकर जनसमूह को मार्ग से हटने के लिए कह रहा था...चारों तरफ कोलाहल मच गया, किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था...घोड़े दौड़ते ही जा रहे थे...उनके खुरों से उड़ी धूल ने धरती-आसमान को ढक दिया...

'रोको-रोको, रथ को रोको ! महान अनर्थ हो गया...' भीड़ में से किसी का स्वर था...रथ एक झटका खा अचानक रुक गया...सोलह वर्ष का कोई ब्राह्मण कुमार रथ की आरों में फंसा तड़प रहा था...घोड़ों के खुरों और रथचक्रों की द्रुतगति ने उसका सारा शरीर क्षत-विक्षत कर दिया था । तेजस्वी मुद्रा, कमनीय देहयष्टिधारी वह युवा निश्चेष्ट होकर गिर पड़ा था...करुण चीत्कार निकली उसके मुख से और एक तरफ लुढ़क गया वह ।

[illegible]



वेदना से फट जाने को हुआ...एक झटके से कूदकर अगले ही क्षण वे रथ से नीचे आ गये । महाराज के पास पहुंच करुण क्रंदनभरे स्वर में बोले, 'महाराज, विजय यात्रा अभिशप्त हो गयी...रथ के पहियों में फंसकर एक ब्राह्मण कुमार दब गया और अचेत पड़ा है...' वृशजान का स्वर कातर हो उठा था...कंठ अवरुद्ध हो गया, नेत्रों से अविरल अश्रुधार बह चली...महाराज भी विह्वल हो उठे । अब तक अपार जनसमूह एकत्रित हो चुका था !

विजय यात्रा का कलंक लगेगा, इस बात का स्मरण आते ही राजा की बुद्धि स्तब्ध हो गयी । क्षणभर में ही गंभीर स्वर बनाकर वृशजान के प्रति रोष प्रकट करते हुए बोले, 'इस अनर्थ के मूल कारण आप ही हैं ! न आप सारथी के हाथ से रथ की डोर लेते, न ही अश्व [illegible] होते...इस भरी भीड़ में रथ चलाने का आग्रह यदि आपने न किया होता, तो यह [illegible] न घटती ।'

संकट के क्षणों में राजा के मुख से ऐसे शब्द [illegible] लित हो उठे और तत्काल [illegible] यम रखकर बोले, 'न आप इस यात्रा का उपक्रम करते...न यह दुर्घटना

होती...यदि दिग्विजय का यश आपको मिलता है तो यह अपयश भी आपके ही पक्ष में जाएगा ! महत्त्वाकांक्षा और अभिमान से ओत-प्रोत आपका ही स्वभाव आपको इस सीमा तक ले गया है...'

महाराज से यह अपमान सहन न हुआ, तत्काल उन्होंने वृशजान को कठोर शब्दों में तिरस्कृत करते हुए आज्ञा दी, 'आप इसी क्षण राजधानी छोड़कर अन्यत्र चले जाएं...' वृशजान आश्चर्यचकित थे ! उन्हें महाराज से ऐसे कठोर आदेश की आशा न थी...राजपुरोहित को निष्कासित किया गया है, यह बहुत बड़ी घटना थी...

राजा का आदेश पाकर परिजन उस कुमार को चिकित्सा के लिए उसके घर तक पहुंचाने में व्यस्त हो रहे थे...रथ आगे बढ़ा दिया गया...दिग्विजय के उल्लासभरे समारोह बंद कर दिये गये । अयोध्या की राजनीति में विष उतर चुका था...महाराज भी अपनी यातनाओं से जूझते कहीं अंधेरों में खो गये ! राजपुरोहित के अपमान से सारी अयोध्या क्षुब्ध थी...पश्चात्ताप की अग्नि में सभी धधक उठे थे...

वृशजान के चले जाने के बाद अयोध्या में अराजकता फैलने लगी...राजप्रसाद से लेकर साधारण जनता तक सभी विलासी हो चले । घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार जैसी भावनाएं अयोध्या पर हावी हो गयीं...सुख-शांति का अवसान हो गया । चारों तरफ अव्यवस्था का बोलबाला होने लगा...अकाल की आशंका सारे राज्य में फैल चुकी थी, प्रजा संत्रस्त थी, सांसारिक सुख ही सर्वोपरि थे और महानाश का वह कारण सारी प्रजा के लिए दुर्भाग्य बनकर

...जब महाराज ने अपनी वृद्धावस्था का भी विचार न करते हुए एक नगर वधू की कन्या से विवाह कर लिया । अंतःपुर की सुंदरी-रमणियां राजा के इस व्यवहार से हा-हाकार कर उठीं !

नयी रानी के राजधानी में प्रवेश करते ही अयोध्या आपदाओं से घिर उठी...पिता-पुत्र, भाई-भाई में विविध मतभेद उठ खड़े हुए...कुलाङ्गनाओं की प्रतिष्ठा खतरे में पड़ गयी...सर्वत्र अनाचार का प्रभुत्तव बढ़ चला, ...निंदा और अपकार...दूसरों की संपत्ति का अपहरण, स्त्रियों के मान-सम्मान शीलहरण की दुष्कल्पनाओं में सभी का मन रमने लगा... ।

वृशजान को अयोध्या छोड़े काफी समय ... चला था...मंत्रियों ने राजा को सलाह दी कि वृशजान को वापस बुलाया जाए, उन्हीं के स्वस्तिवाचन से अयोध्या का कल्याण हो सकेगा...

नयी रानी इसके पक्ष में न थी, 'उस अधर्मी पुरोहित को दुबारा क्यों बुलाया जा रहा है...' गर्जनाभरे स्वर में उसने विरोध किया और ...कर कोप भवन में चली गयी ।

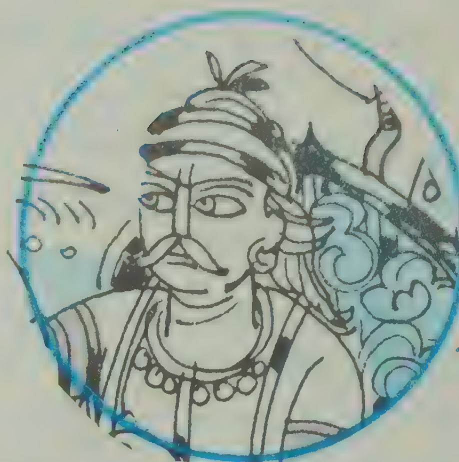
अयोध्यावासियों के सुफल थे या राजा का ..., प्रजा का कष्ट अब असह्य हो चला था, ...नों की दुःखभरी स्थिति जब राजा को ज्ञात हुई तो वह पश्चात्ताप की अग्नि में धधकने लगे...'अपने निजी सुखों में भूलकर मैं प्रजा की सुध ही न ले सका...' राजा के मन में विवेक जाग्रत हो चुका था...उन्होंने अनुभव किया...वृशजान सदृश् विवेकवान राजपुरोहित ... अपने बाल्य-मित्र का अपमान कर उन्होंने ... पैरों स्वयं कुल्हाड़ी मारी थी, जैसे भी हो वृशजान को वापस बुलाना ही होगा...

राजा स्वयं पार्षदों सहित वृशजान के आश्रम गये । समीप पहुंचते ही महाराज विचलित हो उठे, करुणा विगलित हृदय से दोनों मित्र मिले और अंतर का कलुष पश्चात्ताप की अश्रुधार में बह चला...

आज राजधानी में अपूर्व आनंद का अवसर है । निष्प्राण अयोध्या में नवजीवन का संचार हो चला है । वृशजान स्वस्ति यज्ञ में तत्पर हैं...अयोध्या की खोयी समृद्धि लौटाने को...अपार जनसमूह उस यज्ञ का पुण्य लाभ करने को एकत्रित हुआ, किंतु अब यह कैसी नयी बाधा आ गयी ? अग्नि प्रज्ज्वलित ही नहीं हो रही थी...वृशजान कारण समझ गये । उन्होंने मंत्रोच्चार किया, तभी अंतःपुर की ओर से चीखती कोई स्त्री यज्ञशाला की ओर बढ़ती दिखायी दी...आते ही वह स्त्री जोर-जोर से क्रंदन करने लगी...विकृत वाणी, विकृत आकृतिवाली वह स्त्री साक्षात् विघ्नमूर्ति प्रतीत हो रही थी...यह स्त्री और कोई नहीं नवीन रानी थी !

यह क्या है ? महाराज रानी का यह रूप देख आश्चर्य से भर उठे...वे कुछ बोलें, इससे पूर्व ही वृशजान ने उन्हें चुप रहने का संकेत किया और मंत्र जपने लगा...क्षणभर में ही वह रानी थर-थर कांपने लगी...पुरोहित के मुख से 'स्वाहा' शब्द निकलते ही अग्नि की भयंकर लपटें उसके शरीर से निकलीं और पलभर में सब शांत हो गया था...अमोघ मंत्र अपना प्रभाव दिखा चुका था ।

महाराज विचलित थे, अपनी प्रियतमा रानी का वियोग उन्हें असह्य प्रतीत होने लगा... यज्ञशाला में उपस्थित सभी लोग स्तब्ध थे । इस



विलक्षण घटना को देखकर... तभी वृशजान राजा को रहस्य बताने लगे, 'महाराज ! आपकी यह नवीन रानी साक्षात् आपदा थी...इसी के आगमन से अयोध्या में दुरवस्था फैल गयी थी...चारों तरफ विद्वेष और कलह के स्वर सुनायी देते थे...आप इसके मोहपाश में इतने जकड़े थे कि आप इसकी वास्तविकता को भी न भांप सके !' यह नारी रूपधारिणी 'पिशाची' थी ।

महाराज त्र्यरुण कांप उठे थे...कैसा अनर्थ किया था उन्होंने...सत्ता महत्त्वाकांक्षाओं के अपार सागर में हिलोरें लेता उनका अंतर्मन विवेक तक खो चुका था...अपनी विवेकहीनता के कारण राजा का मन आत्मग्लानि से भर गया...'मैं पुनः राज्यकार्य में प्रवृत्त न हो सकूंगा...' राज मद विगलित हो चुका था...वे राजपद से विरक्त होकर पुत्र सत्यव्रत को राज्य पर अधिष्ठित कर अग्रमहिषी के साथ वन की ओर प्रस्थान कर गये ।

अयोध्या के एक दुःखमय अध्याय का अवसान हुआ !

—प्राचार्य
एम.के.पी. पो.ग्रे. कॉलेज,
देहरादून (उ.प्र.)

महिला मुक्ति संगठन

वे राजनीति की रोटी सेंक रहे हैं

● देशबंधु वशिष्ठ

घर एवं दफ़्तर में दोहरी भूमिका निभानेवाली महिलाओं की अपनी अलग ही त्रासदी है। दो नावों की सवार यह अपनी किसी भी भूमिका को न्यायपूर्ण स्थिति में नहीं निभा पाती। एक मां और एक पत्नी के रूप में यह कामकाजी महिलाएं दूसरों के साथ तो क्या स्वयं अपने साथ भी न्याय नहीं कर पातीं।

एक सर्वेक्षण के अनुसार दिल्ली में काम करनेवाली ऐसी महिलाओं की संख्या एक लाख पचास हजार से एक लाख ८० हजार के बीच है, जिन्हें सरकारी एवं गैर सरकारी उपक्रमों में कार्य करने के लिए दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों से प्रतिदिन राजधानी में आना पड़ता है।

दिल्ली से बाहर की महिलाएं

इन कामकाजी महिलाओं का इससे अधिक त्रासदीपूर्ण एक अन्य वर्ग है, दूरदराज के क्षेत्रों से राजधानी दिल्ली में कार्य करने आनेवाली महिलाएं। दिल्ली को राष्ट्र की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है और अपने इसी वर्चस्व के कारण राजधानी दिल्ली के समीपवर्ती क्षेत्रों में फरीदाबाद, गुड़गांव जैसे स्थानों से हजारों की तादाद में महिलाएं स्थानीय रेल अथवा बस इत्यादि के माध्यम से आती-जाती हैं।

प्रतिदिन आवागमन में रहनेवाली महिलाओं को मार्ग में होनेवाली कठिनाइयों के अतिरिक्त परेशानी के रूप में स्थानीय रेल और बसों में यात्रा के दौरान आर्थिक और मानसिक पीड़ा से गुजरना पड़ता है। प्रतिदिन आवागमन में रहनेवाली इन कामकाजी महिलाओं की संवेदना भले ही सर्वोपरि है परंतु इस श्रेणी में स्कूल-कॉलेज की छात्राओं एवं दूसरे कार्यों में लगी लड़कियों को भी मानसिक उलझन की इस स्थिति से गुजरना पड़ता है।

यहां प्रस्तुत हैं ऐसी ही कुछ महिलाओं के विचार—



कनाट प्लेस की ट्रेवल एजेंसी में कार्यरत डॉ. मीनू अग्रवाल का कहना है कि—'मुख्य परेशानी तो बाहर से आने की है। आफिस आने में ही डेढ़-दो घंटे लग जाते हैं। पांच-छह बजे आफिस से छूटने के बाद घर

पहुंचते-पहुंचते कभी-कभी तो आठ भी बज जाते हैं । इसी तरह सुबह को घर से आठ बजे निकलना होता है । इस तरह हमारा तो बारह घंटे का आफिस हो जाता है । सरदियों के मौसम में तो और भी आफत रहती है । न अपना ख्याल रख पाओ और न ही किसी दूसरे के बारे में सोच सको, बस आनन-फानन में दौड़ते हुए रेलवे स्टेशन पहुंचो । और बसों की तो यह हालत है कि बैठने की सीट मिलना तो दूर कभी-कभी तो खड़े होने की जगह भी दूभर हो जाती है । सांस रोककर दम साधे खड़े रहो । भीड़ में तनिक किसी के हाथ-पैर लग जाए तो दूसरा लड़ने को तैयार रहता है । इन्हीं सब मुश्किलों से तंग आकर मैंने रेल से चलना शुरू किया है । लेकिन आफत है कि यहां भी पीछा नहीं छोड़ती । कभी पता चलता है कि ट्रेन लेट है तो कभी हम ही लेट हो जाते हैं ।'

गाजियाबाद की ललिता वर्मा दिल्ली की एक प्राइवेट फर्म में स्टेनो टाइपिस्ट के रूप में कार्य करती हैं, इस संबंध में उनका कहना है कि—

'आफिस के काम से ही शाम तक सिर घूमने लगता है । उस पर भी घर में आकर घर का काम भी करना पड़ता है । अब दो-दो जगह के कार्य की हिम्मत कहां एक महिला में । प्राइवेट नौकरियों में आफिसवाले यूं ही पैसा नहीं देते, पूरा काम करवाते हैं तब कहीं जाकर मुक्ति मिलती है । अब आफिस का ही कार्य हो तो कैसे भी चल जाए लेकिन घर में भी शाम को एवं प्रातः दो-तीन घंटे काम करना पड़ता है । पति महोदय के मन में आया तो थोड़ा-बहुत काम में हाथ बंटा दिया वरना खुद ही करना पड़ता है । उनसे सहयोग की अपेक्षा करो तो अपनी परेशानी का बखान करने लगते हैं । अलीगढ़ से दिल्ली (नेहरू प्लेस)



आनेवाली एक महिला पुष्पा चौधरी को दूर से आने के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है । इस संबंध में उनका कहना है कि—

'इतनी दूर से आफिस पहुंचना होता है, कई बार तो जल्दी करते-करते भी देर हो जाती है । अब महीने में एक-दो दिन की बात हो तो चल भी जाए, पूरे महीने में दस दिन लेट समय से आफिस पहुंचना अच्छी बात नहीं है ऐसी स्थिति में सीनियर की अच्छी-बुरी बातें सुननी पड़ती हैं । हमारी मजबूरी को कोई नहीं समझता, लोग समझते हैं कि हमारी तो लेट आने की आदत है । प्राइवेट फर्मवाले चाहते हैं कि समय से पहले ही वहां हाजिर रहें । अब वह भी क्या करें, गलती उनकी है न हमारी... ।'



फरीदाबाद से आनेवाली अनामिका अवस्थी दिल्ली के बैंक ऑफ बड़ौदा में कार्य करती हैं, इस संबंध में उनका मानना है कि—

'अब सुबह-शाम घर में भी कार्य करना होता है । समय की कमी के कारण वही बहुत जरूरी कार्य हो पाते हैं । बाकी कार्यों को उनकी सीमांत स्थिति तक टालना पड़ता है । अगर किसी कामवाली से काम करवाओ तो वह केवल खानापूर्ति ही करती है । पति तो हमारी

यह दफ़्तर में होती हैं तो इन्हें घर में अपने छोटे बच्चों की चिंता लगी रहती है या फिर दूसरे, आधे-अधूरे कार्यों की फिक्र लगी रहती है और यदि वह घर में होती हैं तो जल्दी-जल्दी घर के काम निपटाकर दफ़्तर में पहुंचने और लेट हो जाने पर बॉस की झिड़की सुनने का भय सताता रहता है ।

मजबूरी को समझते हैं परंतु बच्चों को कौन समझाये । बच्चों की अलग फरमाइश, एक औरत की जान को कितनी मुसीबत है । घर में बच्चों एवं रसोई से तो अंततः, औरत को ही जूझना पड़ता है, भले ही वह दफ़्तर में जाए या किसी व्यवसाय में ।'

यह सच है कि भारत में विकास चक्र ने गांवों की मूलभूत तसवीर को परिवर्तित कर उसमें आधुनिक के रंग भरे हैं । अब वहां भी पक्की सड़कें, विद्युत प्रकाश, स्वच्छ पेयजल सुविधा, परिवहन के उत्तम साधन, मनोरंजन के साधन, चिकित्सा की आधुनिक पद्धतिमय उपचार सुविधा, उच्च शिक्षा संस्थान, ऊंचे साफ-सुथरे मकान तथा बाजार इत्यादि मौजूद हैं । भले ही यह संपूर्ण भारत में संभव न हो पाया हो लेकिन फिर भी भारत के कुछ गांव तो अपने इस रूप को प्रदर्शित करते हैं ।

गांवों में फैशन परस्ती

अब वहां के लोग भी इन सब आधुनिक, विलासितामयी भौतिक सुख-सुविधाओं को गांवों में ही प्राप्त करना चाहते हैं जिन्हें वह अपने जीवन के लिए वांछनीय मानते हैं । इस संदर्भ में गांवों की नयी पीढ़ी आज अनेक परंपरावादी रूढ़ियों को तोड़ रही है । वह अपने भविष्य के प्रति जागरूक हैं तभी तो गांवों की लड़कियां बेहतर शिक्षा की आकांक्षा से शहरों में पदार्पण कर रही हैं । शहरी एवं ग्रामीण प्रतियोगिता के संदर्भ में ग्रामीण लड़कियों ने अपने आपको संवारा है, उन्होंने बोलने, बातचीत करने के परंपरागत ढंग को बदला है । अब वह भी सुंदर दिखने की अभिलाषा से नये-नये चलन के फैशनों को अपना रही हैं । यह वहां की व्यावहारिक तब्दीली की बदौलत है कि अब वह भी सौंदर्य प्रसाधनों के दम पर लड़कियां स्वयं को कोमल बनाना चाहती हैं ।

स्त्री-पुरुष में भेद

इस संबंध में एक अन्य लड़की सीमा शर्मा का मानना है कि 'मैं कस्बे में रहती हूं लेकिन फिर भी किसी महानगर में रहने की इच्छा तो अवश्य है । क्योंकि यहां की संस्कृति किसी गांव से बेहतर नहीं है । और गांवों में महत्त्वाकांक्षी होने का कोई अर्थ नहीं है । यहां लड़के-लड़की में व्यापक भेद समझते हैं, यहां के लोगों की विचारधारा अत्यंत क्षीण और रूढ़िवादी है ।

भारत में संवैधानिक तौर पर स्त्री-पुरुष समान समझे जाते हैं, इनके व्यावहारिक जीवन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है, महिलाएं आज भी पुरुषों की अपेक्षा निम्न दरजे की नागरिक समझी जाती हैं । इक्कीसवीं सदी की चौखट पर

दस्तक दे रहे भारत में चहुंमुखी विकास में ढोल की पोल तब खुल जाती है जब साढ़े छह करोड़ महिला मजदूरों की त्रासदीपूर्ण जिंदगी की विवशता की व्यथा कथाओं से आये दिन पत्र-पत्रिकाएं छपी रहती हैं ।

महिला मुक्ति आंदोलन के नाम पर जितने भी संगठन कार्यरत हैं वह सब प्रायः किसी न किसी खास वर्ग की स्वार्थपूर्ति करते हैं या फिर सामाजिक कार्य के नाम पर राजनीति की रोटी सेंक रहे हैं । इनके कल्याण हेतु निर्मित कानून भी भ्रष्ट सहकारी मशीनरी के जाल में फंसकर असफल हो जाते हैं । महिलाओं के उत्थान एवं कल्याण के लिए हाल में संसद के भीतर व बाहर काफी विवाद हुए हैं । किंतु वास्तविक तसवीर से वही ढाक के तीन पात वाली कहावत सच प्रतीत होती है ।

१९९१ की जनगणना के अनुसार भारत में महिलाओं की जनसंख्या ४०.६३ करोड़ है जो कुल जनसंख्या का ४६.७ प्रतिशत भाग है । महिलाओं में भी श्रमिक महिलाओं का एक ऐसा वर्ग है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ होते हुए भी विकास की सभी अवस्थाओं से दूर फटे हाल और बर्बर जिंदगी जीने को मजबूर है ।

दोहरी भूमिका

भारत में महिला मजदूरों की कुल संख्या साढ़े छह करोड़ है । इसमें से ६० प्रतिशत महिला ग्रामीण क्षेत्रों में लगी हैं और ४० प्रतिशत महिला श्रमिक, कस्बों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में लगी हैं । इस प्रकार समाज का इतना महत्त्वपूर्ण अंग आज तक हाशिये पर है और जीवन देनेवाली खुद दाने-दाने को मोहताज है । यदि इन महिला श्रमिकों की भागीदारी न हो तो भारतीय अर्थव्यवस्था असंतुलित हो जाएगी । दोहरी-तिहरी भूमिका निभानेवाली भारतीय श्रमिक महिलाएं एक साथ घर की देख-रेख, बच्चों का पालन-पोषण, खाना पकाने, ईंधन आदि की व्यवस्था करने के साथ मजदूरी करने का अदम्य साहस भरा कार्य करती हैं, फिर भी इनका जीवन काफी दयनीय बना हुआ है ।

सारणी

भारतीय महिलाएं जो कार्य में लगी हैं—

महिलाओं द्वारा	ग्रामीण	नगरीय
प्रशिक्षण प्राप्त	१०.३१	३०.५२
अन्य सभी धंधे	८९.६९	६९.४८
अप्रशिक्षण प्राप्त	—	—

भारतीय महिला श्रमिकों को घर और बाहर कुल मिलाकर १४-२० घंटे तक भी प्रतिदिन कार्य करना पड़ता है फिर भी उनको सर्वत्र निम्न माना जाता है । पुरुषों की अपेक्षा हीन समझी जानेवाली महिला मजदूरों को कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती है ।

प्रायः सभी श्रेणियों की महिला मजदूरों में शिक्षा और संगठन की कमी है । अशिक्षा इनके जीवन का भयंकर अभिशाप है, जिससे यह अंधविश्वास की शिकार भी होती हैं । अशिक्षा के कारण किसी भी कल्याणकारी योजनाओं और कानूनों यहां तक कि अपने अधिकारों की जानकारी से वंचित रहती हैं । इससे इनका जीवन और दुख :मय बन गया है ।

—द्वारा—
श्री बिक्रमसिंह (अध्यापक)
३१९, संतपुरा, श्याम सिंह बिल्डिंग के पीछे
मोदीनगर
जिला—गाजियाबाद-२०१२०१ उ. :।

"**मा**य वो माय" जोर से चिल्लाता हुआ ऊंची— पूरी कद काठी का बुधना जाने कौन-सी खबर लाया है, जो मारे उत्तेजना के दरवाजे के भीतर घुसते-घुसते सिर झुकाना भी भूल गया।

"ओऽऽऽ माय वो.ऽऽ.ऽऽ" सिर भड़ाक से चौखट से टकराया और बुधना चीख पड़ा।

बुधना की चीख सुन अम्मा जैसे नींद से जागी। बुझते चूल्हे की राख के ढेर के नीचे दबती हुई चिंगारियों में जाने क्या दीदे फाड़े देखती हुई सोच में डूबी थी, उसकी अम्मा निम्मो।

उसका सोच टूटा बुधना की चीख से। सोच क्या टूटा, जैसे निम्मो का बुढ़ापा ही टूट गया,

कहानी

अंतर्प्रलय

● डॉ. मीनाक्षी स्वामी



बिजली की फुरती से निम्मो उठी और लपककर बुधना तक पहुंच गयी ।

'कई हुई गयो ? हांक काई लेवा मारीरो ऽऽ ज ? यहींज तो ऊबी हूं ।' (क्या हो गया ? चिल्लाता क्यों है ? यहीं तो हूं मैं ।) शब्दों में खीज पर मन में ढेरों शंका, कुशंका और चिंता लिए छोटे कद की निम्मो ने एड़ी ऊंची कर पंजों के बल शरीर साधा और आंचल मुट्ठी में भरकर बुधना के माथे पर रखा । मन में यही खयाल रहा कि कहीं मेरे बुधना को चोट तो नहीं आ गयी ।

'अपणो गांव डूब में अई रोऽ ज' बुधना ने निम्मो का हाथ हटाया सिर की चोट कोई मायने नहीं रखती जब इतनी बड़ी धारदार खबर मन में लगी हो तो ।

"कई ? कई कय रयो तू ? तू क किन्न दियो ? (क्या ऽऽ ? क्या कह रहा है तू ? किसने तुझे बताया) निम्मो की मुट्ठी में भरा आंचल बुधना के सिर से हटकर अपने माथे पर आ गया । मौसम तो गरम नहीं था, पर बुधना के साथ निम्मो के माथे पर भी पसीने की बूंदें छलक आयीं ।

"अब कई हो गयग ?" चिंता का सारा केंद्र अब यही था ।

"कई मालम, मन तो बा से सुणियो थो, वा पेपर में पढ़ीक न कई रा था... पण सरकार कई न कई त करेग ... कई न कई जमीण बी दई देग ।" बुधना ने कहते हुए कोई खास परवाह नहीं की ।

बुधना को जैसे कोई खास फर्क नहीं पड़ा था । नयी उमर का नया उत्साह, उमंग भरपूर था । जो होगा देखा जाएगा का भाव, नयी जगह भी गये तो क्या ? मेहनत करके कमाना खाना ही तो है । कहीं भी सही ।

पर सोच में डूब गयी थी संवेदनशील निम्मो । उसकी खाली आंखों में अब सोच ही सोच भर गया । ओह ! तो यह सब डूब जाएगा । लाखों की जमीन, जायदाद, मकान, सोना उगलते सफेद कपास के खेत ।

पर सोच में डूब गयी थी संवेदनशील निम्मो । उसकी खाली आंखों में अब सोच ही सोच भर गया । ओह ! तो यह सब डूब जाएगा । लाखों की जमीन, जायदाद, मकान, सोना उगलते सफेद कपास के खेत !

यहां कितने सुख-दुख देखे । जिस जगह जन्मी, पली-बढ़ी, खेली-कूदी, दुल्हन बनी, ब्याही गयी वही जगह छूट जाएगी । जाने कहां और जाने कैसे फिर नये सिरे से बसना पड़ेगा । निम्मो के हाथ आदतानुसार, यंत्रवत काम में लगे थे पर मन कभी पीछे तो कभी आगे दूर-दूर तक जा रहा था । गांव से जुड़ी बचपन से लेकर अब तक की सारी यादें न जाने कहां से निम्मो के पीछे चली आयीं । शादी के पहले

सहेलियों के साथ झूले-झूलना, खेतों में उछलकूद और शादी के बाद खेत में बुधना के बापू के लिए छम-छम पायल बजाते हुए खाना लेकर जाना, चिरौरी करते हुए खाना खिलाना, निम्मो को सब याद आता रहा ।

अरे ! मायके का घर छोड़ने तक में निम्मो को कितना दुःख हुआ था, फिर गांव बदलना ? वह भी दबाव से । हे भगवान ! कितना दुखद है । अरे ! जब पाकिस्तान छोड़कर आये थे तो यह संतोष तो था कि जो जगह हम छोड़कर जा रहे हैं, वह फेरबदल के साथ ही सही पर मौजूद तो होगी, पर ... हम जो जगह अब छोड़कर जाएंगे वह होगी— जल में निमग्न ।

जल में निमग्न ... यह सोचते ही निम्मो के बदन में झुरझुरी दौड़ गयी । आंखों के आगे जल ही जल दिखायी देने लगा, उछलता, उफनता, उमड़ता, वेग से बहता जल ही जल ।

सोचते-सोचते निम्मो की आंखों से जल बहने भी लगा ।

अब तो निम्मो रात-दिन, उठते-बैठते, सोते-जागते यही सब देखती-सोचती रहती !

बुधना के बापू बड़े व्यावहारिक हैं, पर अब वे भी निराश हैं । कह रहे थे— यहां लाखों की जमीन है पर अब बिकना मुश्किल है । बिक जाती तो हाल के हाल चले जाते गांव छोड़कर । आसपास के जो गांव डूब में नहीं आ रहे हैं, वहां जमीन के भाव आसमान को छू रहे हैं ।

कहते हैं, सरकार पैसा देगी ... पर इतना थोड़ी देगी और हमें तो कोई खास फायदा होगा नहीं ... बल्कि नुकसान ही होगा । ... हां,



रघुवीर को बड़ा फायदा होगा ... अरे, उसकी बंजर जमीन के बदले भी उसे रकम तो सबके बराबर ही मिलेगी ना ।

तो क्या सरकार बंजर और उपजाऊ जमीन का एक भाव देगी ! निम्मो बड़ी भोली है ।

और क्या ? सरकार को यहां खेती थोड़ी करनी है । सबको एक ही भाव देगी । लेना है तो लो वरना ... ।

वरना क्या ... ?

वरना क्या ... सरकार जमीन तो लेगी ही ।

बुधना दो दिन के लिए शहर गया था । आज ही रात लौटा है । थका-हारा बुधना, हाथ-मुंह धोकर खाना खाने बैठा । निम्मो ने थाली परोसी, बुधना ने एक कौर तोड़ा और मुंह में रखा ही था कि बापू ने एक खबर भी परोस दी । कान में खबर क्या पड़ी कि बुधना के गले में कौर ही अटक गया । निम्मो पर भी बिजली गिरी । आखिर खबर भी तो ऐसी ही थी !

असल में बुधना की सगाई टूट गयी थी । ... पर इन्हें भी अभी बताने की क्या पड़ी थी । खाना तो खा लेने देते । बेचारा थका-हारा बुधना बगैर खाये ही उठ गया । दीवाली बाद ही तो शादी थी । जैसे-जैसे शादी पास आ रही

थी बुधना के पैर भले ही जमीन पर टिके रहते हों पर मन आसमान में उड़ा करता था और आंखों में तैरते थे शादी के सपने ।

पर ... बापू ने यह खबर सुनाकर बुधना के सपनों को परे ढकेल दिया । यह डूब ऐसा ही कहर ढाएगी यह तो कभी सोचा ही न था । बुधना की आंखों में हंसती खिलखिलाती चंदा की झलक उतर आयी । चंदा ... जिसके साथ उसका ब्याह होनेवाला था । क्या चंदा खुश होगी ... इस खबर से ... क्या पता ? आखिर फैसला तो उसी के बापू ने लिया है ।

बुधना को अब तक तो डूब का कोई खास गम न था । गांवभर में उचकता फिरता था । डूब को लेकर वह जरा भी गंभीर न था । उसका मन तो शादी के सपनों में रमा था ।

पर ... जब से सगाई टूटी है मायूस होकर कई दिनों से खाट पर पड़ा है । न खाना खाया न पानी पीया । फिर एक दिन जाने क्या जोश आया कि बिजली की-सी फुरती से उठा और यार-दोस्तों को इकट्ठा करके अपना गांव बचाने के लिए शहर जाकर न जाने क्या कागज दे आया, कहता था— "हिला देंगे गौरमेंट को ।"

बुधना ही क्या ? गांव के अनब्याहे लड़कों को भी लड़कियां नहीं मिल रही हैं ब्याह के लिए । आखिर कौन ब्याहेगा अपनी बेटियों को जब गांव ही डूब में आ रहा हो । बाद में जाने क्या ठौर-ठिकाना हो ?

तभी तो सब लोग लग लिये हैं बुधना के साथ ।

पर रतनलाल को तो देखो, बड़ा चालू है । सरकार खूब पैसा देगी, का झांसा मारकर अपने



निखट्टू रघु को ब्याह लाया ।

सारे गांववाले तो गांव छोड़ने की तैयारी में हैं पर जाने कहां से दलाल आ गये हैं गांव में । जाने कहां के गरीबों के झोंपड़े बसवा दिये हैं, गांव में । बुधना बता रहा था कि ये बड़े तिकड़मबाज हैं । देखना तो, इनसे अंगूठा लगवाकर सरकार से पैसा ले लेंगे और इन्हें थोड़ा-बहुत देकर बाकी सारा अपनी जेब में ।

गम तो सभी को है । धन-दौलत, जमीन, जायदाद का तो है ही पर सबसे बढ़कर गम है अपनी मिट्टी छूट जाने का ।

ये खेत, ये मेढ़ें, ये पेड़ सब जल में डूब जाएंगे । पेड़ों पर लटके पंछियों के घोंसले, शाम ढले घोंसलों में लौटते, दुबकते पंछी जब किसी शाम लौटेंगे तो यहां ये घोंसले पेड़, बच्चे कुछ न पाएंगे, पाएंगे तो सिर्फ जलप्रलय ।

गोबर के ऊपले दीवार पर थोपते-थोपते निम्मो सोचती जा रही थी ये गाय, ये ढोर सब... पेड़ों की छतों से ढकी गांव को शहर से जोड़नेवाली लंबी काली, सरपट दौड़ती-सी सड़क, रेल की पटरियों के किनारे की लंबी घास जो रेल के गुजरते समय थरथराया करती है, अब न रेल गुजरेगी, न यह घास थरथराएगी ।

सोचते-सोचते निम्मो की देह थरथराने लगी और थरथराती देह पर पसरने लगी थकान तिस पर मायूसी ने भी डेरा डालकर, निम्मो को निढाल कर दिया ।

काम अधूरा छोड़कर निम्मो आंगन में बिछी खाट पर जाकर लेट गयी और आसमान देखने लगी । नीला-नीला दूर तक फैला विशाल आसमास देखकर निम्मो को बड़ा अच्छा लगा । ये आसमान तो यहीं रहेगा । बिलकुल ऐसा ही, सोचते हुए निम्मो का मन कुछ पल को हलका हुआ, पर आसमान में रूई के फाहे से सफेद बादल देखते ही निम्मो को कपास के खेतों की याद आ गयी और उसका मन फिर भारी हो गया ।

कपास के सफेद फूलों से पटे अंतर्मन तक को पवित्रता से भर देनेवाले पवित्र खेत, गांव में खिलता-दहकता पलाश, धीमे-धीमे शांत बहती नदी में रोज रात को अपनी परछाई देखता चांद किसी दिन अचानक जब उफनते जल में अपनी परछाई देखेगा, तो क्या वह खुद को उफनता हुआ नहीं पाएगा ?

जिस गांव में उगता सूरज, डूबता सूरज, बरसता पानी, सूखा-अकाल, बाढ़, दिन-रात सब कुछ देखा, वह जल में डूब जाएगा । कैसा आश्चर्य है ?

यहां होगा सिर्फ जल ही जल । प्रलय में भी तो यही होता है । पर प्रलय तो पूरी धरती पर होती है ... पर ... हमारी धरती, हमारा संसार तो क्या, हमारा तो पूरा ब्रह्मांड यही गांव है ।

कभी मोह टूट-सा जाता है, वैराग्य जागने लगता है । सरकारी तौर पर संन्यास आ जाता है ।

कभी फिर वही जल ही जल दिखने लगता है । बाहर तो प्रलय होगी शायद पांच-छह या शायद आठ-दस वर्ष बाद, सरकारी काम के चलते शायद मृत्योपरांत भी । पर ... मन में तो हर पल प्रलय चल रही है । इस जल प्रलय में निम्मो दिन-रात डूबती-उतरती रहती है ।

—सी-एच-७६, एच. आय. जी. दीनदयाल नगर, सुखलिया, इंदौर (म.प्र.)-४५२००८

दे है तो दे

सुप्रसिद्ध बंगला साहित्यकार प्यारी चंद्र मित्र बड़े मजाकिया स्वभाव के थे । एक बार उनके एक घनिष्ठ मित्र देवनारायण दे के पुत्र के विवाह के सिलसिले में खर्च-वर्च का हिसाब खातियाया जा रहा था । प्यारी बाबू पर ही दे साहब ने खर्च की राशि निश्चित करने का जिम्मा दिया था । प्यारी बाबू ने खूब बढ़ा-चढ़ाकर फेहरिस्त बना दी । देवनारायण दे बौखलाकर बोले, "एतो टाका दिते हबे ?" (इतने रुपये देने पड़ेंगे ?)

प्यारी बाबू ने हंसते हुए कहा, "तुमि देबे ना तो देबे के ? तोमार नामेर शुरूतेओ दे, शेषेओ दे !" (तुम नहीं दोगे तो देगा कौन ? तुम्हारे नाम के शुरू में भी दे है और अंत में भी दे है ।)

बेचारे देवनारायण दे से कुछ भी कहते न बन पड़ा ।

● गोपी रमण

शायर प्रेमिका का शिकार-प्रेमी

● नवीन पंत

दिल्ली के लाल किले का जनानखाना । सत्रहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध । मुगल सम्राट औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा (जेबुन्निसा का अर्थ होता है स्त्रियों का आभूषण) के महल का उद्यान । शाहजादी जेबुन्निसा और एक सजीला-गठीला आकर्षक युवक बगीचे में एक कोने में एक पेड़ के नीचे धीरे-धीरे बातचीत कर रहे थे । दीन-दुनिया से बेखबर । वह युवक औरंगजेब के वजीर का पुत्र अकिल खां था ।

अचानक सुरक्षा सैनिकों की आवाज आयी । होशियार, खबरदार, शाहंशाह मुही-उद्दीन मुहम्मद औरंगजेब तशरीफ लाते हैं । शाहजादी जेबुन्निसा मुगल सम्राट के इस तरह अचानक आने से हक्की रह गयी । वह अपने प्रेमी को कहां छिपाये ? पेड़ से थोड़ी दूर पर एक विशाल देग था । उसके नीचे लकड़ियां भी लगी थीं । जेबुन्निसा नें अकिल खां से देग में छिप जाने को कहा । अकिल खां निधड़क देग में छिप गया । जेबुन्निसा ने देग का ढक्कन बंद कर दिया ।

सम्मान की रक्षा

थोड़ी देर बाद शाहंशाह औरंगजेब वहां पहुंचे । वह कुछ देर तक जेबुन्निसा के साथ गुफ़्तगू करते रहे । फिर उन्होंने पूछा, 'देग में क्या है ?'

जेबुन्निसा ने उत्तर दिया, 'केवल पानी ।' शाहंशाह ने हुक्म दिया, 'पानी गरम किया जाए ।' इस बीच सम्राट कुछ और लोगों से बातें करने लगे । उनकी नजर बचाकर जेबुन्निसा देग के समीप गयी । उसने कहा, 'अगर तुम मेरे सच्चे प्रेमी हो तो मेरे सम्मान की रक्षा के लिए चुप रहना ।'

जेबुन्निसा के सामने केवल एक विचार था । सम्राट की नजरों के सामने अपनी इज्जत कैसे बचायी जाए ?

देग के नीचे आग जला दी गयी । उसकी लपटें जोर पकड़ने लगीं । अकिल खां आलू की तरह उबलने लगा । उसने जान दे दी लेकिन उफ नहीं की । जेबुन्निसा की मान-रक्षा हो गयी । सम्राट अपने महल में लौट गये । जेबुन्निसा के विश्वस्त कर्मचारियों ने अकिल खां की लाश को ठिकाने लगा दिया ।

साहित्यिक अभिरुचि

जेबुन्निसा, औरंगजेब और उसकी ईरानी पत्नी दिलरस बानू बेगम की ज्येष्ठ पुत्री थी । उसका जन्म १५ फरवरी १६३८ को दौलताबाद में हुआ था । उसने हाफिजा मरियम से शिक्षा प्राप्त की थी ।

कहानी की शुरुआत १६६२ में होती है । जेबुन्निसा उस समय २४ वर्ष की थी । अनिंद्य सुंदरी, वाकपटु विदुषी और शायर । उसे पैनी बुद्धि, साहित्यिक रुचि और भाषा पर

असाधारण अधिकार अपने पिता से विरासत में मिला था । वह अरबी और फारसी में पारंगत थी । छोटी उम्र में कुरान शरीफ कंठस्थ करने के लिए उसके पिता ने उसे ३० हजार अशर्फियां प्रदान की थीं ।

वह बड़ी खूबसूरती के साथ फारसी की तीन शैलियों—नस्तलिक, नश्ख और शिकस्त लिख लेती थी । उसके पास पुस्तकों का बेजोड़ संग्रह था । वह अनेक विद्वानों को पुस्तक लिखने, अनुवाद करने और पुस्तकों की नकल करने के लिए उदार आर्थिक सहायता प्रदान करती थी । वह स्वयं भी शायरी करती थी । कहा जाता है कि वह मरव्फी उपनाम से शायरी करती थी । दीवान-ए-मरव्फी नाम से उसकी शायरी का संग्रह है ।

औरंगजेब बीमार

अपने शासनकाल के चौथे वर्ष १६६२ में औरंगजेब गंभीर रूप से बीमार पड़ा । राजकीय हकीमों ने उसे हवा बदली की सलाह दी । हवा बदली के लिए औरंगजेब अपने परिवार और दरबारियों को लेकर लाहौर चला गया । लाहौर का गवर्नर उन दिनों औरंगजेब के वजीर का लड़का अकिल खां था । युवा, सुदर्शन और शायर । उसने जेबुन्निसा के रूप-गुण के चर्चे सुन रखे थे । वह उसकी शायरी से भी परिचित था । अकिल खां जेबुन्निसा से मिलना चाहता था । शहर की चौकसी का निरीक्षण करने के बहाने वह महल दीवारों पर अपना घोड़ा दौड़ाता रहता था । उसकी एकमात्र इच्छा जेबुन्निसा की एक झलक पाना था ।

एक दिन सूर्यास्त के समय महल की छत पर उसे जेबुन्निसा की झलक मिली । वह सुर्ख लाल रंग के कपड़े पहने थी । उसे देखते ही अकिल खां उसका दीवाना हो गया । जेबुन्निसा भी अकिल खां पर रीझ गयी ।

जेबुन्निसा को लाहौर बहुत पसंद आया । उसने वहां एक बाग लगवाना शुरू किया । एक दिन अकिल खां ने सुना कि जेबुन्निसा बाग के मध्य में बन रही संगमरमर की बारहदरी देखने आनेवाली है । अकिल खां राज मजदूर का वेश धारण करके वहां पहुंच गया ।

एक दिन सूर्यास्त के समय महल की छत पर उसे जेबुन्निसा की झलक मिली । वह सुर्ख लाल रंग के कपड़े पहने थी । उसे देखते ही अकिल खां उसका दीवाना हो गया ।

जेबुन्निसा अपनी कुछ सहेलियों के साथ चौसर खेल रही थी । अकिल खां ने शेर का एक अधूरा छंद कहा । उसका अर्थ था, "तेरी चाहत में मैं धरती पर घूमनेवाला धूल का कण बन गया हूं ।" जेबुन्निसा अकिल खां को पहचान गयी । उसने शेर को पूरा करते हुए उत्तर दिया, "अगर तुम हवा का झोंका भी बन जाओ तो तुम मेरे बालों की एक लट भी नहीं छू सकोगे ।"

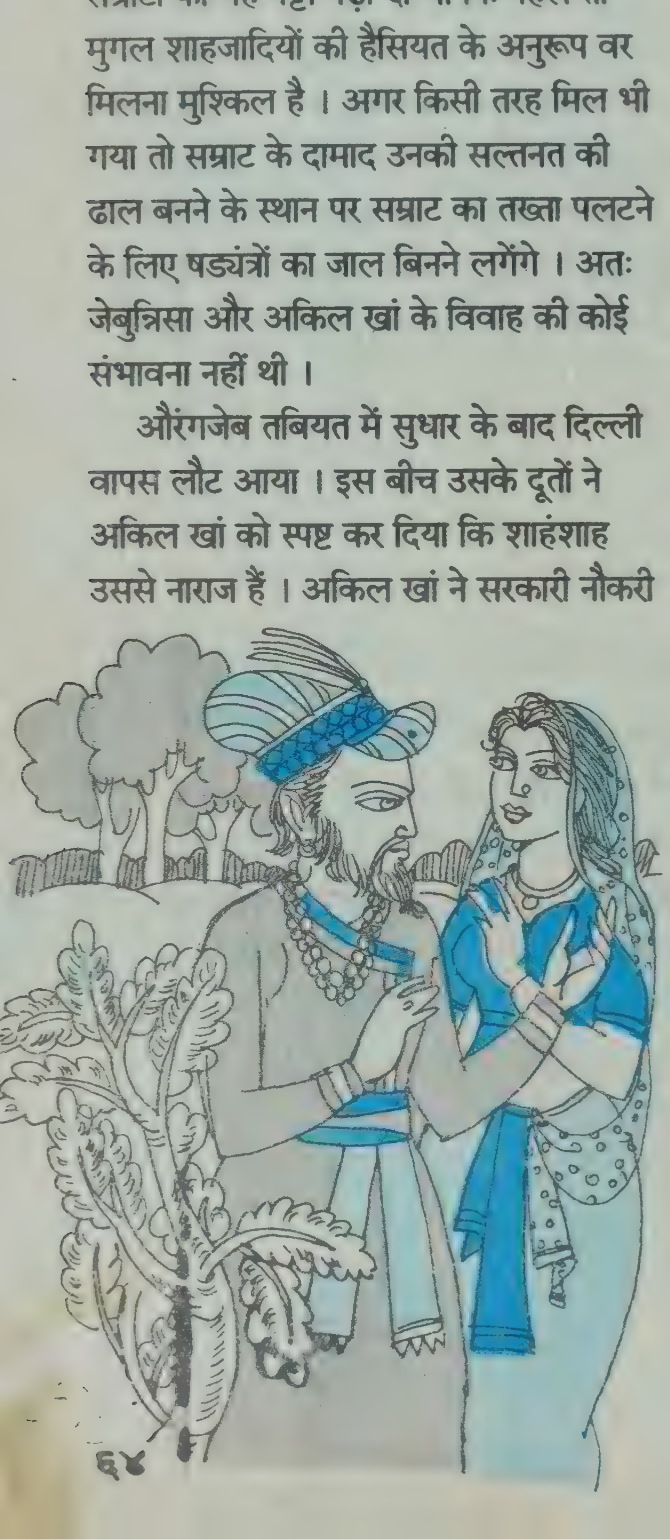
इसके बाद जेबुन्निसा और अकिल खां ने एक-दूसरे से छिपकर मिलना शुरू किया ।

उनके प्रेम की अफवाहें औरंगजेब के कानों तक भी पहुंची।

बेहूदा रिवाज

मुगल बादशाहों में एक बड़ा बेहूदा रिवाज था। मुगल शाहजादियों को आजीवन कुंवारी रहना पड़ता था। मुगल दरबारियों ने मुगल सम्राटों को यह पट्टी पढ़ा दी थी कि पहले तो मुगल शाहजादियों की हैसियत के अनुरूप वर मिलना मुश्किल है। अगर किसी तरह मिल भी गया तो सम्राट के दामाद उनकी सल्तनत की ढाल बनने के स्थान पर सम्राट का तख्ता पलटने के लिए षड्यंत्रों का जाल बिनने लगेंगे। अतः जेबुन्निसा और अकिल खां के विवाह की कोई संभावना नहीं थी।

औरंगजेब तबियत में सुधार के बाद दिल्ली वापस लौट आया। इस बीच उसके दूतों ने अकिल खां को स्पष्ट कर दिया कि शाहंशाह उससे नाराज हैं। अकिल खां ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया।



भूख-प्यास गायब

अकिल खां ने अपने मन को समझाने की और जेबुन्निसा को भूलने की कोशिश की। लेकिन उसे इसमें सफलता नहीं मिली। उसके लिए जेबुन्निसा का वियोग असह्य हो गया। उसकी भूख, प्यास और नींद गायब हो गयी। वह चुपचाप दिल्ली पहुंच गया। दिल्ली पहुंचने के बाद वह किसी तरह जेबुन्निसा के पास पहुंचने में सफल हो गया। कुछ दिनों तक दोनों प्रेमी सावधानी बरतते हुए मिलते रहे फिर उनकी सावधानी में कुछ ढील आ गयी। औरंगजेब के गुप्तचरों से उनका मिलना छिपा नहीं रहा। उन्होंने इसकी सूचना शाहंशाह को दी। इसका जो नतीजा हुआ उसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

जेबुन्निसा के प्रेमी अकिल खां के दुखद अंत का पहला उल्लेख मुंशी मोहम्मदउद्दीन खालिक की रचना 'हयात-ए-जेबुन्निसा' में मिलता है। बाद में इसी के आधार पर मुंशी अहमद उद्दीन बी. ए. ने अपनी रचना 'दूर-ए-मकतूम' लिखी। १९१३ में श्रीमती वेस्ट ब्रुक ने जेबुन्निसा के कलाम 'दीवान-ए-जेबुन्निसा' की प्रस्तावना में इस घटना का उल्लेख किया है।

मुगल इतिहास के विशेषज्ञ प्रोफेसर यदुनाथ सरकार के मतानुसार इस कथा में अनेक असंगतियां हैं। तथापि यह सत्य है कि १६६९ से १६७५ तक सात वर्षों तक औरंगजेब अकिल खां से नाराज रहा था। क्यों ? यह स्पष्ट नहीं है।

—२१, मैत्री अपार्टमेंट्स,
ए/३ पश्चिम विहार, नयी दिल्ली

कलकत्ता का राधाकृष्ण मंदिर

बिरला परिवार की आध्यात्मिक चेतना का उपहार

कलकत्ता-जैसे महानगर में जो कुछ दर्शनीय स्थल हैं उनमें एक नाम और जुड़ गया— बालीगंज में श्री राधाकृष्ण मंदिर। २१ फरवरी, १९९६, भव्य समारोह के साथ इस मंदिर में भगवान राधाकृष्ण, भगवान शिव, भगवती दुर्गा, गणेश, हनुमान और भगवान विष्णु के दशावतारों की आकर्षक मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा के साथ मंदिर का पटोद्घाटन संपन्न हो गया। संसद सदस्य और विख्यात उद्योगपति श्री कृष्णकुमार बिरला ने २५ वर्षों की दीर्घ अवधि में ऐसे मंदिर का निर्माण किया है कि देशभर के हिंदू मंदिरों में इसका अपना अलग अस्तित्व है।

इस मंदिर का उद्घाटन दार्शनिक और चिंतक डॉ. कर्ण सिंह के कर कमलों द्वारा हुआ। उन्होंने अपना विद्वतापूर्ण भाषण संस्कृत के अनेक प्रार्थना गीतों से आरंभ किया। अपने भाषण में डॉ. कर्ण सिंह ने कहा, "मंदिरों का निर्माण करना बहुत पुण्य का काम है। मंदिर में लोगों को आध्यात्मिक शक्ति मिलती है जिससे इनसान अपने कर्मक्षेत्र में सफल हो पाता है। इनसान के लिए भोजन से बढ़कर आध्यात्मिक शक्ति का होना अत्यावश्यक है। यह मंदिरों में ही उपलब्ध हो सकती है और कहीं नहीं। श्रीमद्भागवत गीता में चार योग— भक्ति योग, कर्म योग, ज्ञान योग और राज योग की बात कही गयी है और इस मंदिर में वे चारों योग परिलक्षित हैं। हमारी संस्कृति में भगवान एक होते हुए भी अनेक रूप धारण किये हुए हैं। समय-समय पर अवतार लेकर भगवान मानव जाति का कल्याण करते हैं।" उन्होंने कहा कि बिरला परिवार ने औद्योगिक क्षेत्र के साथ ही साथ मंदिर निर्माण में जो योगदान दिया है, वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा। कार्यक्रम के आरंभ में श्री कृष्णकुमार बिरला ने अपने विद्वतापूर्ण भाषण में इस मंदिर के निर्माण कार्य के पीछे अपनी और अपने परिवार की भावना को स्पष्ट किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा, "यह मंदिर २५ वर्षों की दीर्घ अवधि में पूरा हो सका है। इसका निर्माण कार्य सन् १९७० में आरंभ किया गया था। मंदिर का कार्य जब आरंभ किया गया तो आशा थी कि यह कार्य पांच-सात वर्षों में पूरा हो जाएगा। वास्तव में मंदिर के परिनिर्माण में जिस तरह की परिकल्पना निहित थी, उसमें आनेवाली कठिनाइयों का हम पूर्वानुमान नहीं कर पाये। इस मंदिर के परिनिर्माण में इतना अधिक समय इसलिए लगा क्योंकि हमारी आकांक्षा थी कि यह मंदिर कला और सौंदर्य का उत्कृष्टतम उदाहरण और कलकत्ता के

निवासियों तथा यहां आनेवाले यात्रियों के लिए इस नगर का अप्रतिम केंद्र बने।

निर्माण कार्य प्रारंभ होने के लगभग एक वर्ष बाद ही यह प्रतिभासित हो गया था कि निर्माण कार्य में समय अधिक लगेगा। यदि हमने अपनी प्राचीन वास्तुकला की बारीकियों के साथ समझौता कर लिया होता तो इस मंदिर का निर्माण कार्य हम पहले पूरा कर सकते थे। किंतु हमने इस दृढ़ संकल्प के साथ निर्माण कार्य आरंभ किया था कि किसी भी स्थिति में भारतीय मंदिरों की प्राचीन वास्तुकला की उपेक्षा न की जाए। इस आकांक्षा की पूर्ति के लिए मेरे पूरे परिवार ने मुझे पूर्ण रूप से प्रोत्साहित किया। इनमें मेरी पत्नी मनोरमा देवी और पिता श्री घनश्यामदासजी बिरला का अधिक योगदान था जिन्होंने मुझे दृढ़तापूर्वक उत्साहित किया।

मेरे पिताजी दार्शनिक थे। उनका विश्वास था और यह मेरा भी विश्वास है कि मंदिर हमारी प्राचीन संस्कृति और पुरातन जीवन शैली के प्रतीक हैं। मेरे पिताजी यद्यपि कर्मकांड पर अधिक विश्वास नहीं करते थे, लेकिन वे सहज रूप में उसे स्वीकारते भी थे ताकि हमारी प्राचीन संस्कृति और परंपरा का निर्वाह होता रहे।

मुझे अपनी पत्नी से भी पूरा प्रोत्साहन मिला। वे जहां चाहती थीं कि मंदिर का निर्माण कार्य शीघ्र संपन्न हो, वहां वे यह भी चाहती थीं कि मंदिर की वास्तुकला और बारीक शिल्प उत्कीर्ण में किसी तरह का समझौता न किया जाए। इस मंदिर के निर्माण में जिन पत्थरों का उपयोग किया गया है, वे मध्यप्रदेश के पन्ना क्षेत्र से मंगवाये गये। मंदिर का प्रांतर संगमरमर से प्राच्छादित है। इस मंदिर की योजना बनाते समय हमने स्व. सोमपुराजी की सहायता ली थी जो भारत के प्राचीन मंदिरों की वास्तुकला के अभिज्ञाता थे। उनके पौत्र आज यहां उपस्थित हैं। मित्र श्री जगमोहन डालमिया ने मंदिर-निर्माण का कार्य सुव्यवस्थित ढंग से तथा सावधानीपूर्वक संपन्न कराया।

गीता के पठन-पाठन से मुझे मानसिक शांति मिलती है। भगवान के उपदेशों को मैंने मनन करने का प्रयत्न किया है।

गीता में शांति एवं दया के भाव विशेष रूप से व्यक्त किये गये हैं, न केवल मानव मात्र के लिए बल्कि समस्त प्राणी जगत के लिए। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो सभी प्राणियों के प्रति हित अर्थात् कल्याण का भाव रखते हैं, वे मुझे प्राप्त कर लेते हैं।

ते प्राप्नुवन्ति मामेव
सर्वभूतहिते रताः।

जीव मात्रा के लिए अद्वेष, प्रेम और करुणा का भाव रखनेवालों के प्रति गीता में भगवान ने विशेष रूप से कहा है—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां
मैत्रः करुण एव च।

ऐसा व्यक्ति ईश्वर का भक्त है और उनका प्रेम प्राप्त करता है :

यो मद्भक्तः स मे प्रियः।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में मुख्य रूप से इस दर्शन को प्रतिपादित किया है कि द्वंद्वों से परे रहना चाहिए

सारा कार्यक्रम सुचारू रूप से संपन्न हुआ। श्री पुरुषोत्तम जलोटा के भक्ति संगीत के बाद मंदिर जनता के दर्शनार्थ खोल दिया गया। अब कलकत्ता महानगर में यह मंदिर एक दर्शनीय स्थल बन गया है। ●



▲

कलकत्ता :
राधाकृष्ण मंदिर

मंदिर में राधाकृष्ण
की भव्य कलात्मक
प्रतिमा ➤



छायादर्शी : दिलीप बनर्जी

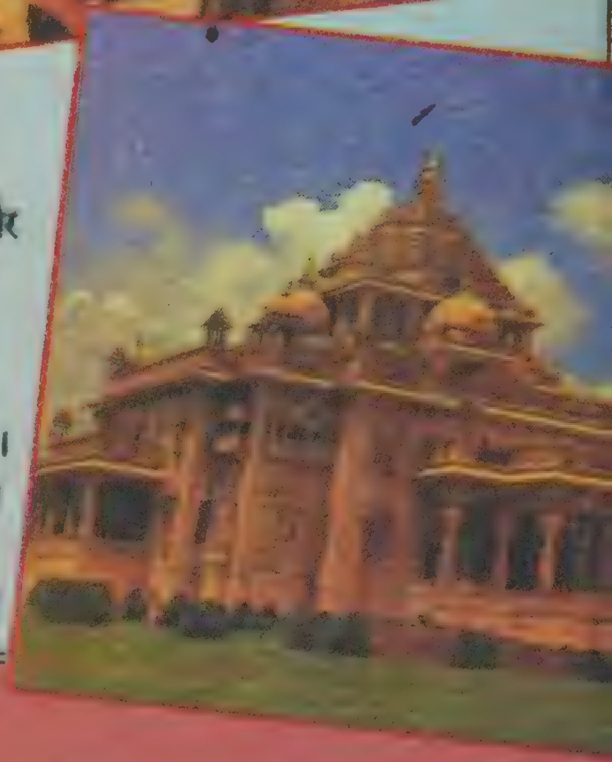




स्वामीनारायण नगर का प्रवेश द्वार

द्रौपदी चीर हरण का दृश्य

गुजरात की राजधानी गांधीनगर में कला और संस्कृति की अलौकिक छटा बिखेरता अक्षर धाम न केवल गुजरात का अपितु देश का एक विलक्षण तीर्थ स्थल है । अक्षरधाम की बाहरी और भीतरी छटा देखते ही बनती है । यह कला एवं संस्कृति का अद्‌भुत संगम स्थल है । असंख्य लोग अक्षरधाम के नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवेश में इस तरह सिमट जाते हैं

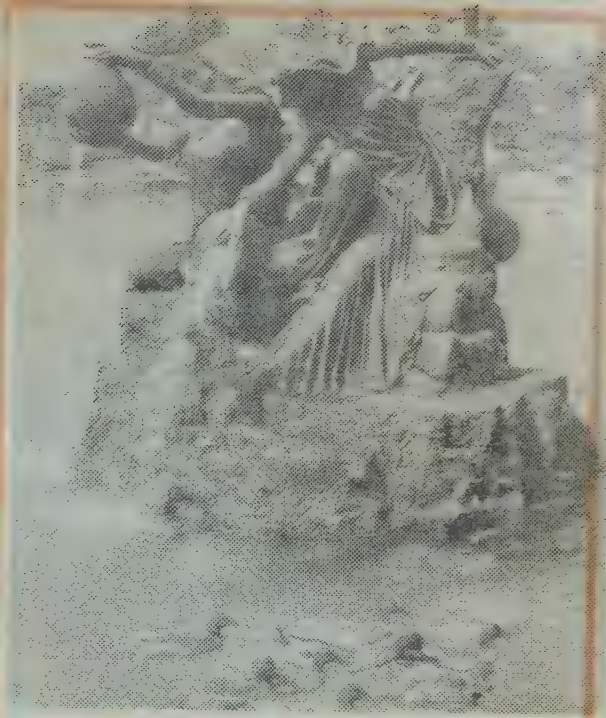


मानो कुछ समय के लिए भौतिकवाद विस्मृत हो गया हो ।

अक्षरधाम की भव्य इमारत में छह हजार मैट्रिक टन गुलाबी पत्थर उपयोग में लाया गया है ।ऐसा कहा जाता है कि यह ८० लाख मानव श्रम की साधना का प्रतिफल है । इस संपूर्ण आश्रम धाम को देखने में लगभग तीन घंटे लग जाते हैं । इसे तीन भागों में विभक्त किया गया है । प्रत्येक भाग अपने आप में कई विशेषताओं को समेटे हुए है । इसकी प्रदर्शनियां देखते ही बनती हैं । आज के भौतिकवाद से उपजे संतापों को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है । काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ एवं स्वार्थ आदि विकृतियों से घिरा मनुष्य किस तरह संकटों की

कौरवों की अनीति मूर्तियों का माध्यम

• डॉ. बसन्तीलाल बाबेल



आग में झुलस रहा है । इसका सजीव चित्रण यहां देखने को मिलता है ।

इतना ही नहीं धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप, नीति-अनीति आदि को भी बड़े कलात्मक ढंग से चित्रित किया गया है । ऊंच-नीच के भेदभाव पर तीखा प्रहार राम और सबरी के दृश्य से निरूपित किया गया है । कौरवों की अनीति को पांचाली के चीर-हरण के दृश्य से जन-जन तक पहुंचाया गया है । राम बनवास, भरत-मिलाप, सीता हरण आदि दृश्य देखते ही बनते हैं ।

संपूर्ण अक्षरधाम भगवान स्वामी नारायण को समर्पित एक ऐसा दस्तावेज है जो आने वाली पीढ़ी का नैतिक और आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त करता रहेगा । कलयुग में पत्रों पर सतयुग की छाप छोड़नेवाला अक्षरधाम मानव मूल्यों का वह सशक्त हस्ताक्षर है जो युगों-युगों तक अमिट रहेगा ।

—उपसचिव, राज्य विधि आयोग, के-९, फतेह टीबा, आदर्श नगर, जयपुर (राज.)



गूंजती हुई लहरें

● शीला गुजराल

प्रकृति की कोख में छिपी ऐतिहासिक निधि का दर्शन करना चाहें तो पंचमढ़ी जाइए। मध्यप्रदेश में भोपाल की दक्षिण-पूर्वी दिशा में लगभग २१० किलोमीटर की दूरी पर यह सुरम्य स्थान, अभी भी अपनी अछूती आभा को सहेजे सहृदयी पर्यटकों के लिए शांत, सुखद, मन की सारी व्यथा हर लेनेवाला वातावरण बनाये हुए है।

दिल्ली से जाने के लिए रातभर रेलगाड़ी का सफर और आगे दो घंटे कार की सवारी या फिर भोपाल तक हवाई यात्रा और आगे साढ़े चार घंटे की मोटर यात्रा, यही दो सहज रास्ते हैं।

हमने सुबह ५.३० बजे अपना निवास-स्थान छोड़ा। हवाई अड्डे जाकर जहाज पकड़ा और भोपाल में भरपेट नाश्ता लेकर सायं पांच बजे तक पंचमढ़ी जा पहुंचे। सामान कमरों में रखवा, चाय का प्याला पीते ही हमारे पांव पंचमढ़ी की पगडंडियां चूमने को आतुर हो उठे। अपनी-अपनी टार्च हाथों में उठाए सभी वयस्क अपनी-अपनी मनपसंद दिशाओं की ओर बढ़ते, पंचमढ़ी का रूप आंकने निकल पड़े। सूर्यास्त की आभा इतनी मोहक थी कि मैं तो अपनी सुधबुध बिसार, न जाने कितनी देर तक मंत्रमुग्ध-सी खड़ी रही।

अगली सुबह कंपाउंड में ही कुछ क्षण सूर्य-रश्मियों की चुम्मियां ले, हम नाश्ता करते ही गाड़ियों में सवार हो गये बच्चों के साथ पंचमढ़ी को देखने । शहद और कुछ आवश्यक सामग्री खरीदने जब हम सदर बाजार में गाड़ियों से उतरे तो देखकर दंग रह गये कि छोटी-छोटी गलियों में भी कहीं कूड़ा-करकट का नामोनिशान नहीं ।

रास्ते में हमारे गाइड ने हमें एक विशाल मैदान दिखाया, जहां एक भाग हिंदू मेलों के लिए और दूसरा भाग मुसलमानों के मेलों के लिए निश्चित किया गया था । दोनों जगह दोनों धर्मों के अनुयायी इन मेलों में शामिल हो अपना मनोरंजन करते थे । कुल बारह हजार की आबादी वाले इस छोटे-से शहर में मंदिर, मसजिद, गिरिजाघर— सबको मान्यता है और सभी सद्भाव से रहते हैं ।

बाल वाटिका में छोटी-सी रेलगाड़ी में बच्चों को घुमा, साथवाले पार्क में उन्हें मृगछौने दिखा, शहर का पूरा ब्यौरा ले शाम को हम घर पहुंचे ।

बगीचा राजेंद्र बाबू का

शाम को पदयात्रा और अगले दिन सुबह गाड़ियों में बैठ हम राजेंद्र गिरी पहुंचे जहां, डॉक्टरों के सुझाव पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति पूरा एक वर्ष ठहरे थे । डॉ. राजेंद्र प्रसाद के व्यक्तित्व की छाप अभी भी वहां हर पेड़-पौधे पर लगी हुई थी । देश-विदेश के सुंदर पौधे इकट्ठे कराकर उन्होंने इस बगीचे को इतना समृद्ध कर दिया था कि अभी तक वहां कई ऐसे पौधे मौजूद हैं, जो भारत में शायद ही कहीं और देखने को मिले । सुघड़ मालियों ने कुछेक की कलमें भी तैयार कर रखी थीं ।

राजेंद्र गिरी की सबसे ऊपर की मंजिल से शहर का चप्पा-चप्पा दिखायी देता था ।

समय कम और दर्शनीय स्थान अनेक । एक से एक बढ़कर रमणीय । अगले दो दिन हम निरंतर घूमने-घुमाने में व्यस्त रहे ।

ऊंची भीमकाय चट्टानों से घिरी पांडव गुफा



देखने गये, जहां अज्ञातवास के समय पांडवों ने अधिकांश समय बिताया था। वहां के लोगों का कहना था कि चट्टानों पर हुई मद्धिम चित्रकारी उसी समय की देन है। पर देखने में वह इतनी पुरानी नहीं लगती थी। बोटेनिकल गार्डन घूमने के बाद हम यह स्थान देखने गये।

पंचमढ़ी के घने जंगलों में जंगली जानवर विशेषकर, शेर की खोज में जाना, वहां हर पर्यटक के लिए अनिवार्य समझा जाता है। हम भी जीपों में बैठकर कई घंटे निरंतर जंगलों में घूमते रहे। लेकिन, हमें तो एक मोर के अतिरिक्त कोई भी जीव-जंतु नजर नहीं आया। रास्ते में ड्राइवर ने एक ऊंची चोटी की ओर इंगित कर बताया कि वहां बौद्ध गुफाएं हैं। छड़ी का सहारा लिये हम दुर्गम चट्टानें फांदते हुए जैसे-तैसे वहां पहुंचे। विशाल चट्टानों पर खुदे अनेक दस्तावेज अपनी ऐतिहासिक प्रतिभा के प्रत्यक्ष प्रमाण थे।

शिकवा वानर सेना का

अगले दिन सुबह हम लोग छोटा महादेव मंदिर देखने गये। ब्रह्मा, शिव और विष्णु की त्रिमूर्ति का दर्शन करने, गुफा की शिलाओं से टपका-टपका गिरती बूंदों का आस्वादन लेते, ऐसा प्रतीत होता था मानो हम वैष्णोदेवी पहुंच गये हों। बाहर निकले तो वानर सेना खड़ी थी, पता नहीं स्वागत हेतु व शिकवा करने कि आप सब लोग हमारे हनुमानजी को क्यों भूल गये।

गुप्त महादेव का दर्शन करने अभी आधा रास्ता ही पहुंचे थे कि राहगीरों ने समझाया कि वापस आते-आते रात हो जाएगी। इतनी दूर आप नहीं जा पाएंगे। फलतः वहीं से आधे रास्ते से वापस हो हम थके-मांदे मुश्किल से अपनी गाड़ियों तक पहुंचे। भोजन उपरांत झरनों की खोज में निकले। कुछ दूरी गाड़ियों से और कुछ पैदल तय कर जब हम जल-प्रपात का मधुर संगीत सुकर घर पहुंचे, तो सारी रात वह मद्धिम ध्वनि हमें मां की लोरी की तरह थपथपाती रही।

अगले दिन हम ऊंचे टीले पर बने, हरियाली से घिरे सेना-संगीत वाद्य विद्यालय देखने गये, जो सड़क के दूसरे पार कमल फूलों से लदी झील को झांकता, अपने भाग्य पर इठला रहा था। आकाश की छत तले आरामदायक कुरसियों पर बैठकर जब हमने मंच की ओर दृष्टि घुमायी तो दंग रह गये। दो विशाल वट वृक्षों की छाया में कलात्मक ढंग से तैयार किया सहज प्रकृति का वरदान स्थापत्य-कला का एक अनोखा नमूना था। इस मोहक वातावरण में वाद्य संगीत का रसपान करते मानो हम दूसरी दुनिया में पहुंच गये।

घंटेभर का प्रोग्राम देख, जब हम वाद्यों का निरीक्षण करने हॉल में गये तो कोने में पड़े 'धीमा करने के यंत्र' ने मुझे विशेष आकर्षित किया। अकसर 'बीटिंग रीट्रीट' के समय संगीत की मधुर लहरियां जब देर तक दिशाओं में गूंजती रहती थी, तो मुझे अचंभा होता था कि खुलेआकाश के नीचे यह कैसे संभव है? संगीत निदेशक ने आज यह गुत्थी सुलझायी।

विद्यालय से विदा लेते ही हमारे खेमे की बीटिंग रीट्रीट का सिलसिला शुरू हुआ। हम पंचमढ़ी से विदा ले, भोपाल के लिए रवाना हुए जहां से अगले दिन सुबह जहाज में बैठ हमें दिल्ली पहुंचना था।

—जी. १३ महारानी बाग
नयी दिल्ली-११००६५



अमीर खुसरो का स्मारक और पटियाली

• डॉ. विजय चतुर्वेदी

पटियाली और अमीर खुसरो का स्मारक । पटियाली, जिसने महाभारत काल में महाराज द्रुपद के वैभव-विलास के ताने-बाने बुने थे, आज हिंदी (हिंदवी) के आदि-पुरोधाओं और उन्नायकों में से एक अमीर खुसरो के जन्म-स्थल के भग्नावशेष को अपने परकोटे में संजोए हुए है । महाराज द्रुपद का किला खंडहर होकर अब जिस ऊंचे टीले में रूपांतरित हो चुका है, उसी के नीचे किसी समय अमीर खुसरो के वालिद का निवास-स्थान था । आजकल यहां टाउन एरिया की पानी की टंकी है । अमीर खुसरो इसी पटियाली की रज में लोट-पोटकर और घुटनों के बल सरक-सरक कर बड़े हुए थे और उन्होंने इस गर्व को महसूस किया था ।

अमीर खुसरो का कहना था—

तर्कु हिंदुस्तानोयम
मन हिंदवी गोयम
जवाब शकर मिस्त्री नदायम
कज अरब गोयम सुखम

अर्थात, मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूं और हिंदवी में उत्तर देता हूं । मेरे पास मिस्र की शाकर नहीं है, मैं अरबी की बात नहीं करता । मैं तो हिंदवी में उत्तर देता हूं ।

अमीर खुसरो अरबी-फारसी और उर्दू के प्रगाढ़ पंडित थे । उन्होंने खूब लिखा । इस बात का इसी से पता चलता है कि उन्होंने पहेलियां ही पांच लाख की संख्या में लिखीं, जिनमें ढाई लाख फारसी और उर्दू में लिखीं और ढाई लाख हिंदवी में । उनके विशद साहित्य के तथ्य और कथ्य में भारतीय सभ्यता व संस्कृति, दर्शन और जीवन-शैली के प्रति उनकी अगाध निष्ठा का परिचय पा सकते हैं ।

इतिहास बताता है कि अमीर खुसरो का जन्म पटियाली में सन् १८५३ में हुआ था । उनकी मां एक हिंदू (कायस्थ) थी और पिता एक तुर्क थे । नाम था— सैफुद्दीन महमूद । पटियाली उनकी जागीर में थी । आठ वर्ष की अवस्था में उनके पिता का साया उनके सर से उठ गया और वह अपने नाना के संरक्षण में

पटियाली में उन्होंने अपने बचपन के आठ वर्ष ही व्यतीत किये थे, और इन आठ वर्षों में ही पटियाली की हवा ने, यहां की मिट्टी-पानी और धूप-छांव ने उनके उस व्यक्तित्व का आधारभूत ढांचा तैयार किया, जिसने विकसित होकर उन्हें अपने समय का एक महान भाषाविद्, राष्ट्रवादी और संगीतकार बना दिया।

स्थायी रूप से दिल्ली आ बसे।

हवा-पानी का असर

पटियाली में उन्होंने अपने बचपन के आठ वर्ष ही व्यतीत किये थे, और इन आठ वर्षों में ही पटियाली की हवा ने, यहां की मिट्टी-पानी और धूप-छांव ने उनके उस व्यक्तित्व का आधारभूत ढांचा तैयार किया, जिसने विकसित होकर उन्हें अपने समय का एक महान भाषाविद्, राष्ट्रवादी और संगीतकार बना दिया।

अमीर खुसरो ने दिल्ली की गद्दी पर बैठनेवाले नसिरुद्दीन महमूद से लेकर मुहम्मद तुगलक तक सात सुल्तानों के दरबारों में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया और प्रसिद्ध सूफी संत शेख निजामुद्दीन औलिया के प्रमुख शिष्य के रूप में ख्याति पायी।

जब औलिया साहब ने इंतकाल फरमाया, तो अमीर खुसरो ने कहा—

गोरी सोवे सेज पर
मुंह पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने
रैन भई चहुं देस

और इसके कुछ समय बाद ही वह भी इंतकाल कर गये, बहत्तर साल की उम्र में। उन्हें भी औलिया साहब की मजार के निकट दफना दिया गया, सन् १३२५ में।

आज राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में यह अति आवश्यक है पटियाली के महाभारतकालीन और मध्यकालीन ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण के लिए कुछ ठोस उपाय किये जाएं, ताकि हम आगे आनेवाली पीढ़ियों को विरासत के रूप में सद्भाव और राष्ट्रीय गौरव की निशानी दे सकें।

सद्भाव की मिसाल

जिस सद्भाव की मिसाल अमीर खुसरो ने कायम की थी, पटियाली आज भी उसे सहेजे हुए है। आज भी पटियाली की ऊबड़-खाबड़ गलियां जहां एक ओर मंदिरों के घंटों के घनन-घनन निनाद सुनती है, वहीं दूरी ओर मसजिदों से आती अजान की गूंज और संकीर्णता के विष को अमृत समझकर पीनेवाले कट्टरपंथियों को बतलाती है कि अमीर खुसरो की पटियाली उसकी चिंतन-धारा अब भी महाभारतकालीन वैभव की खुशनुमा तरंगों से तरंगित है।

आज एक कस्बे का रूप ले चुकी पटियाली दरअसल, उन प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों में से एक है, जो कभी अपना एक विशेष महत्त्व रखते थे। द्वापर युग में पटियाली के उत्तर में कभी पतितपावनी गंगा बहती थी, जिसकी एक

छोटी-सी धारा प्रमाण-स्वरूप आज भी विद्यमान है । इसके समीप ही द्रुपद के कंपिल (वर्तमान में कंपिला) में राजमहल थे और पटियाली छत्रपति के नाम से जानी जाती थी । यहां पर भी एक प्राचीन किला था, जो अब खंडहर हो चुका है ।

महाराज द्रुपद ने यहां एक देवी मंदिर का निर्माण कराया था । जो देवी पाटलावती के नाम से जाना जाता है । द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद से अपने तिरस्कार का बदला लेने के लिए अपने शिष्य अर्जुन से गुरु-दक्षिणा के रूप में राजा द्रुपद को पकड़ लाने को कहा था । और अर्जुन युद्ध में द्रुपद को हराकर पकड़ लाया था । पराजित और बंदी राजा द्रुपद को द्रोणाचार्य ने मित्रभाव में आधा राज्य वापस दे दिया था और आधा अपने पास रख लिया था । गंगा के दक्षिण तट से चंबल नदी के उत्तर तट तक का क्षेत्र द्रुपद के पास रहा और अहिछत्रा (कंपिल) के उत्तर में गंगा के उत्तरी तट के उसैत जिला बदायूं से अहिछत्रा (आधुनिक रामनगर, जिला बरेली) तक का क्षेत्र द्रोणाचार्य के राज्याधीन । इसी समय से छत्रवती के राजभवन पाटलावती के नाम से पुकारे जाने लगे, जो कालांतर में पटियाली हो गया, जो आज भी है ।

राजा द्रुपद के किले के खंडहरों के साथ बूढ़ी गंगा के किनारे पर एक प्राचीन रामेश्वर का शिव मंदिर है, जो कंपिला में द्रौपदी द्वार स्थित कालेश्वर शिव के मंदिर से मिलता-जुलता है । यहां एक मेंहदीवाला बाग था । यह भी किंवदंती है कि यह बाग भी राजा द्रुपद ने ही लगवाया था । पटियाली के पास कभी गंगा बहती थी, इसलिए गंगा यहां पर पटियाली गंगा कहलाती थी । यहां गुरु द्रोणाचार्य का टीला है जहां कभी उनका आश्रम और गुरुकुल था । वहां खोदने पर एक गुफा निकली, जो साफ-सुथरी थी और उसमें सोटा, कूडी तथा धूनी में गढ़ा हुआ चिमटा मिला था । इस टीले से थोड़ी दूर पर गुरु द्रोणाचार्य द्वारा स्थापित महादेव का मंदिर है— पाताली महादेव ।

—पटियाली, जनपद एटा-२०७२४३





कहानी

सच, है न विचित्र कथा

● यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र'

"सुन म्हारां धणी ! म्हारे चुड़ले रा सिणगार ! मैं आपकी धणियाणी हूं, पत्नी हूं । मुझ पर मोल लाई हुई डावड़ी की तरह अत्याचार मत कीजिए । मुझे तिल-तिल क्यों मार रहे हैं ? एक बार विष देकर खेल खतम कीजिए...", देवड़ी ने बिलखकर अपने पति चांपा सिंघल से कहा ।

हत्थकढ़ी दारु का गिलास हाथ में लिए हुए चांपा जाजम पर उन्मत्त-सा बैठा था । उसके पीछे गाव और पीठ तकिये रखे हुए थे । सब सफेद झक थे ।

देवड़ी पीले रंग की गोटे-कनार की जड़ी कांचली, कुर्ती और लहंगा पहने हुए थी । उसके सिर पर रखड़ी, नाक में नथ, गले में चंदनहार, हाथों में सोने मढ़ी लाख व हाथी दांत की चूड़ियां । ऊपरी बाजू पर हाथी दांत का चुड़ला और पांवों में घुंघरूओंवाली पायल । एकदम सजी-सजायी दुल्हन-सी ।

चांपा ने दारु का एक घूंट और लेकर कहा, "मैं तुझ पर कहां करता हूं अत्याचार ! अत्याचार तो तुझ पर ईश्वर कर रहा है ?"

वह तड़पकर बोली, "आप अपना उपचार तो करा सकते हैं ? किसी अच्छे वैद्य को क्यों नहीं दिखाते ?"

चांपा चुप रहा ।

अंत में वह एकदम झुंझला उठी, "आप चुपचाप क्यों बैठे हैं ? तीन बरस हो गये मुझे गीली लकड़ी की तरह सुलगते हुए ।"

इस पर चांपा सरदार ने उसे क्रोधित दृष्टि से देखा । फिर कहा, "तो क्या हुआ...हम ठाकुरों के यहां स्त्री का सुलगना उसकी नियति है । वे तो जनानी ड्योढ़ियों में ककड़ी-मूली की तरह सड़ती रहती हैं और जब सड़ जाती हैं, तब फेंक दी जाती हैं... ।"

"पर आप उपचार... ।"

उसने देवड़ी को झपटे के साथ पकड़ा और उसे जाजम पर पटकते हुए घृणा से कहा, "तू चाहती हैं कि मैं सरेआम पौरुषहीनता का ढोल पीटूं ? नपुंसक कहलाऊं ? ...देख, तू कान खोलकर सुन ले, लुगाई का धर्म है पति का सुख, संतोष, सम्मान और उसकी मान-मर्यादा की रक्षा करना ।"

"ठाकुर सा, मेरी बात को समझिए । है आपमें दोष और लोग मुझे बांझ कहते हैं । आपके परिवारवाले, खासकर आपकी मां मुझे बांझड़ी और निपूती कहती हैं । कई बार वह यहां तक ताना मार देती है कि सूरज उगते तुझ निपूती का मुंह देख ले तो रोटी नसीब न हो ।"

चांपा उसी कठोरता से बोला, "ये सब तो तुझे सुनना ही पड़ेगा । लुगाईजात का जन्म ही इसलिए होता है । अरी नासमझ ! यहां तो बात की रक्षा के लिए लुगाइयों को जिंदा गाड़ देते हैं, जला देते हैं... ।"

सुरा की मादकता में उन्मत चांपा देवड़ी पर

झुक गया । उसने उसके कांचली कुरती को खोलना चाहा, तो देवड़ी ने मना कर दिया । इस पर चांपा ने उसे एक चांटा मारा और अपनी बलिष्ठ अंगुलियों में कांचली की कसियों को झटके-से तोड़ डाला ।

वह मर्माहत हो, पीड़ा और क्रोध से तिलमिला उठी । पूरी ताकत लगाकर उसने चांपा को धक्का मार दिया । चांपा थोड़ा पीछे हुआ, तो उसने घुटने इकट्ठे कर दोनों पांवों से जोर की लात मारी ।

चांपा के भीतर जैसे बारूद फट पड़ा, वह वहशी की तरह उस पर टूट पड़ा, "हरामी की जाई, खसम को लात मारती है । नीच, रांड,

मेरे इस तरह जल मरने के बाद मुझे भी लोग सती ही कहेंगे । आज तक इच्छा-अनिच्छा, जबरदस्ती से जो भी स्त्री पति के साथ जली तथा जलायी गयी, वह सती ही कहलायी है ।

ऐसी ही लाय (अगन) तुझ में है, तो कोठे पर बैठ जा । खानदानी औरतें अपनी धणी का इस तरह निरादर करती है ? मैं तुझे मार-मारकर लूली-लंगड़ी और पांगली (अपाहिज) कर दूंगा ।" वह स्वयं हांफने लगा । उसने उस पर कितने लात-घूसे बरसाये, उसे स्वयं को पता नहीं ।

देवड़ी ने आंखें बंद कर लीं । वह सिसकती रही । चांपा ने कक्ष के बाहर निकलते-निकलते धमकी दी, "एक बात कान खोलकर सुन ले मादरजात, यदि तूने किसी को इस बारे में बताया, तो तेरी जीभ कटार से काट डालूंगा ।"

देवड़ी अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहाती रही ।



किसे कहे वह अपना दुःखड़ा । किसे बताये अपने हृदय की पीड़ा । तड़प-तड़प बिताये इन तीन सालों की व्यथा-कथा ।

सोचते-सोचते उसे नींद आ गयी । कब चांपा उसके पास आकर सोया, उसे पता नहीं ।

सूर्य ने क्षितिज सुंदरी के अधरों से अरुणिमा चुरा ली । तीव्र प्रकाश फैल गया प्राची के प्रांगण में । घर में उसकी मां और एक डावड़ी (दासी) के स्वर सुनायी पड़ रहें थे ।

सूर्य घर के पूरे आंगन में फैल गया । देवड़ी नीचे आयी । उसके मुंह के कोने पर खून की लकीर अब भी जमी हुई थी । आंख के नीचे सूजन थी । हाथों की कई चूड़ियां टूटी हुई थीं । उसका पोर-पोर दर्द कर रहा था । उसकी इच्छा हो रही थी कि वह अपने शरीर पर तेल छिड़कर आग लगा ले या किसी कुएं-बावड़ी में डूबकर मर जाए ।

उसकी विधवा सास ने उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखकर पूछा, "क्या हुआ बींनणी ? यह सब क्या है ?"

वह अपनी सास के चरणों में लोटकर फूट-फूटकर रो पड़ी । सिसक-सिसककर कहने लगी, "मां सा, मुझे जहर दीजिए, मेरा गला घोंट दीजिए । मैं इस तरह जिंदा नहीं रह सकती ।"

"क्यों ?" उसने तपाक पूछा ।

"मैं अब यह अत्याचार नहीं सह सकती ।"

"आखिर बात क्या है ?" उसकी सास ने गंभीर स्वर में पूछा ।

"आप जानकर अनजान बन रही हैं । उसने अपने रोदन पर काबू पाकर कहा, "आपने मुझ गाय पर जो अन्याय किया है, वह बड़ा पाप है ।

सास की त्यौरियां चढ़ गयीं । कठोरता उसकी आकृति पर आ गयी । कड़ककर बोली, "क्यों बक-बक कर रही है । क्यों पहेलियां बुझा रही है, साफ-साफ क्यों नहीं कहती... ?"

आज जैसे उसके अंतस की दुर्बह वेदना तिलमिला रही थी । विद्रोह पर उतारू थी । उसने तीव्र स्वर में कहा, "आप जीवित मक्खी निगल रही हैं । मां सा ! जब आपको अपने बेटे के बारे में जानकारी थी, तो आपने मेरा जीवन सर्वनाश की भट्टी में क्यों झोंका ?"

उसकी सास पलभर के लिए स्तब्ध रह गयी । बोली, "मैं अपने स्वर्गवासी पति की सौगंध खाकर कहती हूं कि मैं कुछ नहीं जानती । सुन, मेरे बेटे में कोई खोट-कसर नहीं है ।"

"मां सा ! आप मुझे निपूती और बांझड़ी कहती हैं । पर सच यह है कि आपका बेटा मर्द नहीं है ।"

ठकुरानी खड़ी हो गयी । भड़ककर बोली, "क्या बकती है तू ?"

"सच कहती हूं । इस धरती-आकाश को साक्षी बनाकर कहती हूं । अपने सुहाग की सौगंध खाकर कहती हूं कि तीन बरसों से मैं जो असामान्य स्थितियों को भोग रही हूं, जिस बर्बरता को भोग रही हूं, उसे मैं जबान से नहीं कह सकती । हद से बाहर जाकर मैंने आज यह बात आपके सामने खोली है ।"

"इतना हट्टा-कट्टा आदमी नपुंसक कैसे हो सकता है ?...जो तलवार का धनी है, जो युद्ध के क्षेत्र में शत्रु का संहार करता है, वह हिजड़ा कैसे हो सकता है ?" फिर कुछ देर रुक कर उसने ज्ञानी की भांति कहा, "संसार में हर

व्यक्ति हर क्षमता को प्राप्त नहीं कर पाता । कोई न कोई दोष रह ही जाता है प्राणी में ।" और वह उठकर अपने कक्ष में चली गयी ।

ठकुरानी निष्प्राण हो खाट पर आ पड़ी । फिर पुकारा, "गोमली...ए गोमली ।"

गोमली पीछे गायों को घास डाल रही थी । ठकुरानी की आवाज सुन दौड़ी आयी । पूछा, "क्या हुक्म है मां सा ?"

"जा, चांपा को बुलाकर ला ।"

"हुक्म ।" वह चांपा के पास गयी । चांपा जाग गया था । उसने संदेश दिया । थोड़ी देर में चांपा ने आकर मां के चरण छुए और पूछा, "कैसे याद फरमाया आपने ?"

"पहले बैठ जा । फिर शांति से सुनना ।

"कहिए मां सा !" वह सहम गया ।

"क्या तुम नपुंसक हो ?...तुम वंश चलाने में अक्षम हो ।" मां फट-सी पड़ी ।

चांपा को लगा कि कोई विराट किला उस पर हहरा कर गिर पड़ा हो ।

"झूठ मत बोलना । तूने गोली का नहीं, मेरा दूध पिया है । बता, सच बता ।"

उसने अपराधी की तरह सिर झुकाकर कहा, "यह सच है मां सा !"

"क्या ?" अवाक् रह गयी मां ।

"हां, मैं आपके सामने झूठ नहीं बोलूंगा । मैं तन और मन से सक्षम हूं पर नहीं जानता, ईश्वर ने मुझे ऐसा क्यों बनाया ? इतना दीन-दुःखी और अपमानित होने के लिए यह जीवन क्यों दिया ?"

"तो बींनणी सच कह रही थी...और तू उसे बातों से शारीरिक कष्ट क्यों दे रहा है ? यह तो दानवता है ।



"वह मुझसे बहुत जबान लड़ाती है । तानें देती है । मां सा ! आप उसे समझा दीजिए, नहीं तो मैं कभी उसे मार डालूंगा ।" वह गुस्से से कांप रहा था ।

"तुम शांत रहो । मैं उसे समझा दूंगी ।"

"एक बात और है— इस सच को कोई दूसरा जाने नहीं । मां सा ! आप खुद और बहू दोनों समझ लें कि किसी ने भी इसे अपनी जबान के बाहर निकाला तो मैं उनके प्राण ले लूंगा ।"

और चांपा घर से बाहर निकल गया ।

इसके बाद देवड़ी पर अधिक प्रतिबंध लग गये । अत्याचारों का सिलसिला भी बढ़ गया । वह पिंजरे में बंद परिंदे की तरह फड़फड़ाती रहती थी । धीरे-धीरे वह मुंहफट हो गयी । मार खा लेती थी, जलील हो लेती थी, पर मनचाही सुनाने में कोई कोर-कसर नहीं रखती थी ।

गणेश चौथ आ गयी । सास ने कहा, "बींनणी, तुझे व्रत रखना है अपने सुहाग के लिए ।"

"मुझे अपना सुहाग नहीं चाहिए ।"

"मर्यादा से बाहर कदम रखनेवाली स्त्री अच्छी नहीं होती । एक सुख के लिए अपनी मान-मर्यादा, धर्म, पतिव्रत को त्यागना ठीक

नहीं है । तुझे मेरा हुकम है । रात को तालाबवाले गणेश मंदिर के दर्शन करके व्रत तोड़ना । हां, और यह जान ले कि तेरी नियति यही है कि तुझे इस घर में इसी दशा में जीना है । अब यूं सुख से जी या हाय-हाय करके । रहना है हर हाल में यहीं पर । यहां तेरी डोली आयी है और यहां से ही तेरी अरथी निकलेगी, समझी ।''

देवड़ी ने कोई उत्तर नहीं दिया । उसने चोरी से खा-पीकर व्रत रख लिया ।

रात को वह सूनसान स्थल पर स्थित गणेश मंदिर के दर्शन करने गयी, तो फिर लौटी ही नहीं । चांपा और उसकी मां ने सोचा कि उसने अवश्य ही आत्महत्या कर ली होगी । उसकी लाश भी कहीं नहीं मिली ।

और दस दिन बाद उसे एक दारोगा ने आकर खबर दी, ''चांपा सरदार ! आपकी धणियाणी ठाकुर मायल पदमसिंह के पुत्र कुंवर सज्जन के घर में है । उसने उसके साह घरवास कर लिया है ।''

''क्या बकते हो ?'' वह चिल्लाया ।

''बक नहीं रहा हूं । सच-सच कह रहा हूं । मैंने अपनी इन आंखों से उसे देखा है ।''

''मैं उसकी बोटी-बोटी काट डालूंगा और मेरी इज्जत पर जिसने हाथ डाला है, उस सज्जन को भी जिंदा नहीं छोड़ूंगा । मैं भी राजपूत हूं ।''

एक दिन चोरी-छुपे डावड़ी गोमली देवड़ी से मिली । गोमली की आंखों के प्रश्नों को देवड़ी समझ गयी, ''तू जानना चाहता है गोमली कि मैं यहां कैसी हूं ?...सुन...ईश्वर को साक्षी मानकर कह रही हूं कि मैं यहां बहुत सोरी-सुखी हूं । कुंवरजी बहुत ही अच्छे हैं । मुझे प्यार करते हैं । एक मर्द का सुख स्त्री के लिए इससे बड़ा कोई सुख नहीं है ।''

''आप यहां आयी कैसे ?''

''बताती हूं'', उसने कहा, ''गणेश मंदिर से मैं आत्महत्या करने के लिए भागी । जंगल में जो बंद कुआं है, मैं उसमें कूदने लगी कि अचानक कुंवरजी आ गये । वे किसी दूसरे गांव से लौट रहे थे । तारों का उजास था । उन्होंने मुझे पकड़ लिया । मैंने अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए बहुत कहा कि 'मुझे मरने दीजिए...मैं नरक-से जीवन को नहीं जीना चाहती । मैं उस नपुंसक मर्द को नहीं सह सकती, उस कैद में नहीं रह सकती ।'

''आप कौन हैं ? देखिए, भगवान ने जीवन भोगने के लिए दिया है, खत्म करने के लिए नहीं ।''

''मैं चांपा की घरवाली हूं । चांपा मर्द नहीं है । नपुंसक है । स्वभाव से जानवर है । बहुत अत्याचार करता है । फिर मैं क्यों और कैसे जीऊं ?''

कुंवरजी ने कहा, ''हमारे घर चलिए । हमारे साथ घरवास कीजिए । हम आपको मान-सम्मान और प्रेम से रखेंगे । हम चांपा से नहीं डरते । वह हमसे बहुत छोटा राजपूत है । रो-धोकर रह जाएगा । चलिए...मुझ पर विश्वास कीजिए । मैं भी सामांत हूं । जो कह दिया, उस पर अमल करूंगा । चलिए !''

''बस, गोमली मैं इस घर में आ गयी । मुझे लगा कि यह घर ही मेरा है । कुंवरजी मेरे हैं । मैं सुखी और संतुष्ट हूं । कोई पाप का अनुभव नहीं होता । सती हूं—यही मान होता है सदा ।''

दो-तीन बरस बीत गये । लोक-निंदा और उलाहनों ने चांपा को आधा पागल-सा कर दिया । वह प्रतिशोध की आग में जलता रहा । वह सज्जन की हत्या करने के लिए घात लगाये रहा पर सज्जन भी एकदम सचेत था । उसने चांपा के कई अवसर असफल कर दिये ।

एक दिन सज्जन अकेला कहीं से लौट रहा था । चांपा छुपा बैठा था । सज्जन घोड़े से उतरकर घास की ओट में पेशाब करने लगा कि चांपा ने पीछे से घात लगाकर प्रहार कर दिया । प्रहार था तो गरदन पर लेकिन वह जरा नीचे लगा । सज्जन एकदम पलटा । चांपा दूसरा प्रहार करता, इससे पहले उसने उसे दबोच लिया, ''कमीने ! छुप कर वार करता है, रजपूत होकर रजपूत पर ।''

''तू रजपूत नहीं गोला है । दूसरी रजपूत की मर्यादा भंग करनेवाला पापी है । थू है तुझ पर ।''

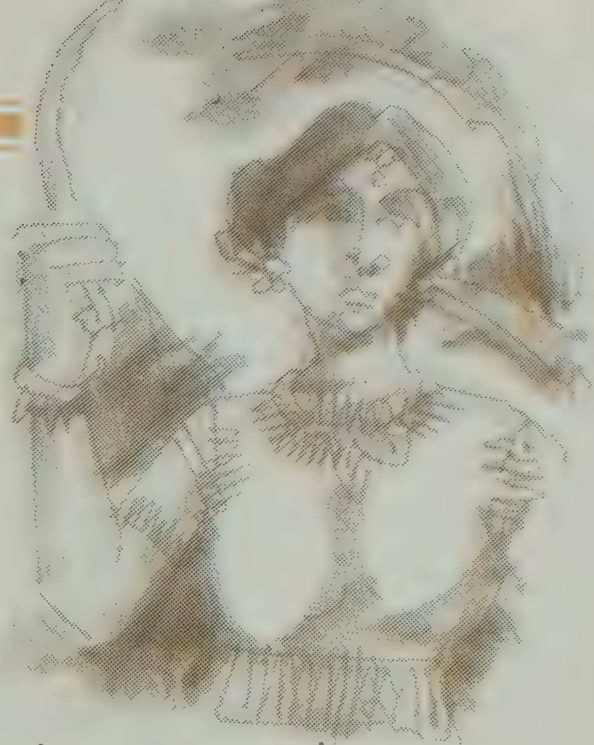
''थू तेरे-जैसे नामर्द पर जिसने एक औरत की जिंदगी नष्ट कर दी । अरे पा...पी... ।'' दोनों लड़ते ही जा रहे थे ।

और दोनों ही लड़ मरे ।

सज्जन की लाश जब लायी गयी तो देवड़ी जार-जार रोने लगी । कितना प्यार किया था उसने । संपूर्ण देह और मन को तृप्ति दी थी कुंवरजी ने । अब उसके बिना जीना व्यर्थ है । कुंवरजी ने मेरे लिए अपना जीवन विसर्जित कर दिया, अब उनके बिना मेरे जीने का कोई मतलब नहीं ।

जब वह सजने लगी तो उसकी डावड़ी ने पूछा, ''क्या आप सती हो रही हैं ?''

''मेरी-जैसी दूसरी के घर में वास करनेवाली



को क्या सत्त चढ़ सकता है ?

''फिर आप सज क्यों रही हैं ।''

''सती होने का नाटक करने के लिए ।''

डावड़ी ने शंका की, ''जलने की पीड़ा का पता है आपको ?''

''इसका प्रबंध मैं कर लूंगी ।''देवड़ी ने उसे प्यार से गले लगाकर कहा, ''तू मेरी पक्की भायली (सहेली) है । तूने मेरी बहुत सेवा की है, प्यार भी । लेकिन तुझे देवी मां चामुंडा की सौगंध खानी होगी कि मेरे इस जल मरने के भेद को तू किसी को कभी नहीं बताएगी ।''

''जो हुकम ! मैं किसी को नहीं कहूंगी ।''

घाट पर दो चिताएं बनायी गयीं । तभी लोगों ने अचानक देखा कि देवड़ी सोलह श्रृंगार करके हाथ में तलवार लेकर श्मशान की ओर आ रही है ।

सब स्तब्ध और हैरान । यह क्या है...एक के नाम की चूड़ियां उतारीं और दूसरे की पहनीं और वह त्वरा से चिता में कूद पड़ी । ●

—आशालक्ष्मी,
नयाशहर, बीकानेर-३३४००४

पिछले साल आम की बागवानी के मामले में कलीम उल्लाह खां सुर्खियों में रहे सारे भारत का ध्यान उनकी ओर तब केंद्रित हुआ जब 'परख' कार्यक्रम में उनके द्वारा आम के एक ही पेड़ में २०१ किस्मों के आमों की चर्चा हुई । आम उत्पादन के मामलों में उनका यह प्रयोग औद्योगिक मामले में खोजपूर्ण उपलब्धि अवश्य है । पिछले दिनों मैंने कलीम मियां से मुलाकात की तो उन्होंने बताया कि अब उस आम के पेड़ में इस वर्ष २७५ किस्म के आम आएंगे, क्योंकि उस पेड़ में लगभग १०० आम की किस्मों की कलमें और बांध दी गयी हैं । उन्होंने कहा कि आम की तीन फसलें ली जा सकती हैं और इससे करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित हो सकती है । इन्हीं अनेक तथ्यों पर आधारित है आम उत्पादन पर तथ्यपरक दृष्टिकोण...

वर्ष १९९५ आम उत्पादन के मामले में काफी चर्चित रहा । उस वर्ष मलिहाबाद की अब्दुल्ला नर्सरी के मालिक कलीम उल्लाह खां ने जो नयी खोज आम उत्पादन व प्रजातियों के समावेश पर दी, वह काफी महत्त्वपूर्ण है ।

नया कीर्तिमान

एक ही आम के वृक्ष में २०१ किस्म की प्रजातियां तैयार करने में आपको कितना समय लगा होगा । इस प्रश्न के उत्तर में कलीम उल्लाह खां ने कहा कि यह बात तो आठ साल पुरानी है । इस वर्ष तो मैं इसी वृक्ष में २७५ किस्मों के आम उत्पादित कर औद्योगिक क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित करना चाहता हूं । उन्होंने कहा कि मैंने वह तकनीक भी खोज ली है, जहां एक ही साल में आम की तीन फसलें उत्पादित की जा सकती हैं । जिस आम के वृक्ष में २०१, किस्म के आम के उत्पादन की चर्चा हुई थी, उस वृक्ष को मैंने बहुत नजदीक से देखा था । उस समय उसमें लगे आम की किस्में थीं

एक ही पेड़ में २७५ किस्म के आम

● जगदीश प्रसाद 'साहनी'



हुस्नआरा, गोल, बदैंया, द्वारिका दास, सीपिया, जाफरान, बहराइच, बाम्बे ग्रीन, आमिन अब्दुल हक, असलुर मुकर्रर, आमिन गूदड़शाह, आम्रपाली तथा अनुपान ।

उक्त वृक्ष की जिस टहनी में रामकेला प्रजाति का आम लगा था उसके पास की टहनी में बौर निकल रही थी और आम के टिकोरे बैठ रहे थे । बढ़े हुए तापक्रम के कारण आम के टिकोरे पीले होकर गिर रहे थे । जिस टहनी में यह आम के टिकोरे लगे थे वह प्रजाति सेह फसली मुर्शिदाबाद की थी जो साल में तीन फसलें फलती हैं । पहला दौर बौर से फल तैयार हो जाने पर, जब फल पंकने लगते हैं, तब शाखा में बोर निकल आते हैं तथा टिकोरे (छोटे फल) होने के साथ ही वृक्ष में बौर आने लगती हैं और इस बौर में फल तब लगते हैं, जब पिछले लगे हुए टिकोरे बड़े हो जाते हैं ।

कलीम उल्लाह खां ने बताया कि उनका यह पेशा खानदानी है । उनके पूर्वजों ने अब्दुल्ला नर्सरी कायम की और दशहरी की नयी प्रजाति 'अब्दुल्ला ग्रेट' बनायी जिसे काफी लोकप्रियता मिली । अखिल भारतीय आम प्रदर्शनी में अब्दुल्ला ग्रेट को प्रथम स्थान मिला था । एक ही वृक्ष में आम की अनेक प्रजातियां देखने के लिए जापान के इंटरनेशनल फार्मिंग सेंटर के चेयरमैन प्रोफेसर थेरी योहिगा तथा मित्सुरूमाशूनाशा (डायरेक्टर इफेक्टिव माइक्रो आग्रेनिज्म नयी दिल्ली) आये, उत्तर प्रदेश फल एवं अनुसंधान लखनऊ के उद्यान विशेषज्ञ डॉ. संजीव कुमार, औद्योगिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केंद्र के मुख्य उद्यान विशेषज्ञ रमाशंकर मिश्र ने भी उक्त वृक्ष पर किये गये तथ्यपरक शोध देखा । इस वृक्ष के संदर्भ में प्रसिद्ध उपन्यासकार माईल मलिहाबादी का कहना है कि जिस आम के पेड़ की टहनियों में कलम बांधकर यह अनुसंधान किया गया है वह ६०-६५ साल पुराना असलुर मुकर्रर आम की प्रजाति का वृक्ष है । इसकी शाखें ऊपर से काट दी गयीं और निकले हुए नये कल्लों में कलम बांधकर इतनी प्रजातियां एक ही वृक्ष में उत्पादित करना एक नया प्रयास है । कलीम उल्लाह खां ने आम की प्रजातियों का जो गुलदस्ता बनाया है उसके लिए वह सराहना के पात्र हैं ।

८ सितम्बर १९९५ को उत्तर प्रदेश शासन के उद्यान सचिव अरुण कुमार मिश्र अब्दुल्ला नर्सरी पहुंचे और उन्होंने आम की बहुप्रजाति उत्पादित करनेवाले वृक्ष को देखा, उस समय भी उसमें चार विभिन्न प्रजातियों के आम लगे थे ।

कलीम उल्लाह खां एक ऐसे व्यक्ति हैं जिसे अनेक आम प्रदर्शनियों में प्रथम पुरस्कार पाने का श्रेय प्राप्त है । जुलाई वर्ष १९९३ में दिल्ली अंतरराष्ट्रीय आम महोत्सव में उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला था ।

कलीम उल्लाह खां का कहना है कि आम प्रकरण पर उनके द्वारा किया गया शोध कार्य नया है । वैसे सेब पर यह प्रयोग सत्रहवीं सदी में शुरू हो गया था । लेकिन आम में बहुप्रजाति एक ही पेड़ में समाहित करने का मामला नया है । इस वृक्ष के नामकरण के प्रति उनका कहना है कि यह एक महत्त्वपूर्ण वृक्ष है । ●

—साहनी निकेतन
मलिहाबाद (लखनऊ)



जसवंत सिंह, सोलन
शहद और घी का एक साथ सेवन वर्जित क्यों है ?

घी, तेल तथा चिकने पदार्थों के साथ शहद की समान मात्रा मिलने पर यह विष बन जाता है, इसलिए यह वर्जित है ।

भारती सेन, इलाहाबाद
हवाला धंधा कब से और कैसे शुरू हुआ ?

विदेशी मुद्रा की सरकारी और हवाला दरों में अंतर होता है । हवाला दरें अधिक आकर्षक होती हैं । यह धंधा बहुत पुराना है । विदेशों में रहनेवाले भारतीयों की संख्या में वृद्धि के साथ ही यह धंधा पनपने लगा है । सत्तर के दशक में खाड़ी देशों में रहनेवाले अनिवासी भारतीयों ने जब से हवाला एजेंटों के माध्यम से पंजाब, केरल, गुजरात आदि स्थित अपने घरों को रुपया भेजना शुरू किया, तब से यह धंधा पनपता ही चला गया है ।



रामकुमार मुंडा, सोसोकलां (हजारीबाग)
क्या पौधे भी मांसाहारी होते हैं ?

हां, पौधे भी मांसाहारी होते हैं । ऐसे मांसाहारी पेड़-पौधों के अस्तित्व की जानकारी सबसे पहले प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन ने दी थी । इस प्रकार के पौधों की लगभग ५०० प्रजातियां विभिन्न महाद्वीपों में पायी जाती हैं । ये पौधे मुख्यतया घड़े अथवा ऐसे ही किसी पात्र की तरह के, थैली सदृश और चिपचिपी एवं रोमिल सतह वाले होते हैं । ये पौधे अपने पास आनेवाले कीट-पतंगों को चिपचिपे पदार्थ से फंसा लेते हैं और कांटे-जैसे रोम उनके शरीर में गड़ाकर उनके रक्त-मांस को चूस लेते हैं । कुछ मांसाहारी वृक्ष भी पाये जाते हैं, जिनकी शाखाएं भी पशुओं को जकड़ कर उनके रक्त-मांस को चूस लेती हैं ।

कन्हाई लाल बोस, दरभंगा
सरस्वती और व्यास सम्मान क्या है ?

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किसी भी राष्ट्रीय भाषा में भारतीय नागरिक द्वारा लिखी गयी एक उत्कृष्ट कृति को सम्मानित करने के लिए यह वार्षिक सम्मान— 'सरस्वती सम्मान' के. के. बिड़ला फाउंडेशन (नयी दिल्ली) द्वारा स्थापित किया गया है । इसकी पुरस्कार राशि तीन लाख रुपये है । केवल हिंदी कृतियों के लिए उक्त फाउंडेशन का एक दूसरा सम्मान— 'व्यास सम्मान' अलग से है, जिसकी सम्मान राशि डेढ़ लाख रुपये है ।

डिगेश्वर महतो, पूरबडीह गोला (हजारीबाग)
क्या ऐसे भी पशु-पक्षी होते हैं, जो जीवनभर एक जीवन-साथी के साथ ही रहते हों ?

हां, ऐसे कुछ पक्षी तो अवश्य हैं, जैसे कैनडा और अलास्का में पाया जानेवाला कैनडा गूज, जो जीवन पर्यंत एक ही जोड़े के रूप में रहते हैं ।

—मैक. एनसाक्लोपीडिया, पृष्ठ २१९

गफूर अहमद, लोहारडागा
बरतानिया में मुसलमानों और उनकी मसजिदों की संख्या कितनी होगी ?

'रिलिजन इन ब्रिटेन' के अनुसार अधिकतर पाकिस्तान और बांग्लादेश तथा भारत, साइप्रस, मलयेशिया व अफरीका से आकर ब्रिटेन में बसे मुसलमानों की संख्या नौ से दस लाख तक है और इनकी लगभग छह सौ मसजिदें हैं, जिनमें केंद्रीय लंदन स्थित मसजिद सबसे बड़ी है ।



कामिनी कदम, लहेरिया सराय

वेदव्यास और कृष्ण द्वैपायन में आपसी रिश्ता क्या है ?

ये दोनों एक ही व्यक्ति के नाम हैं । वेदांत दर्शन या ब्रह्मसूत्र के मान्य लेखक थे— बादरायण । भारतीय परंपरा इन्हें वेदव्यास तथा कृष्ण द्वैपायन के नाम से जानती है । महाभारत के अनुसार ये ऋषि पराशर और धीवर कन्या सत्यवती से उत्पन्न हुए थे । माता ने संकोचवश इनको एक द्वीप में रख दिया था, जहां इनका पालन-पोषण हुआ । अपने सांवले वर्ण के कारण ये कृष्ण और द्वीप में पलने के कारण द्वैपायन- इस तरह कृष्ण द्वैपायन कहलाये ।

बालू भरतिया, कलकत्ता

ग्रहों की खोज कब हुई और पृथ्वी किन ग्रहों के बीच में स्थित है ?

सौर मंडल के पांच ग्रहों यथा— बुध, शुक्र, मंगल, गुरु और शनि से तो हम पहले से ही परिचित हैं, तीन अन्य नक्षत्रों की खोज हाल में हुई है । उरण, अर्थात यूरेनस की जानकारी सन् १७८१ में, वरुण यानी नेपचून की सन् १८४६ और प्लूटो की सन् १९३० में हुई । पृथ्वी शुक्र और मंगल ग्रहों के बीच में स्थित है ।

रजनीकांत ओझा, भागलपुर

पसीने से भींगा व्यक्ति पंखे की हवा से राहत क्यों महसूस करता है ?

पंखे से आती हवा शरीर से पसीने के वाष्पीकरण की गति को बढ़ा देती है । वाष्पीकरण प्रक्रिया से शरीर की कुछ गरमी बाहर आ जाती है, जिससे शरीर शीतल होने लगता है फलतः पसीने से भीगा व्यक्ति राहत महसूस करने लगता है ।

वीरेंद्र शुक्ल, उज्जैन

प्रातःकाल शैय्या त्यागने से पूर्व शास्त्रों में किस प्रार्थना का विधान है ?

प्रातःकाल सूर्योदय से डेढ़ घंटा पूर्व ब्राह्म-मुहूर्त में उठकर दोनों हथेलियों (करतलों) को देखते हुए निम्न श्लोक के पाठ का विधान शास्त्रों में है—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्

अर्थात, हथेलियों के अग्रभाग में लक्ष्मी निवास करती है, मध्य भाग में सरस्वती और मूल में ब्रह्माजी निवास करते हैं । अतः प्रभात में उठकर हथेलियों के दर्शन से पुण्य-लाभ होता है ।

रुद्रप्रताप सिंह, सीधी (म.प्र.)

महात्मा गांधी को कितने देश और किस प्रकार सम्मानित कर चुके हैं ?

यूरोप, अमरीका तथा एशिया के अनेक देश महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी पर डाक-टिकट जारी कर उन्हें सम्मानित कर चुके हैं । हाल ही में दक्षिण अफरीका ने अपनी एक ट्रेन का नाम महात्मा गांधी एक्सप्रेस रखकर उन्हें सम्मानित किया है ।

चलते-चलते

प्रश्न : आपकी दृष्टि में नयी सरकार किसकी होगी ?

उत्तर : राजसी भोजन ने सारे राजनैतिक दलों का पेट खराब कर दिया है, इसलिए नयी सरकार 'खिचड़ी' होगी ।

— सूत्रधार

[illegible] की लोककथा

भलाई का रास्ता

प्रस्तुति : संगमलाल मालवीय

किसी गांव में तीन भाई रहते थे । वे बचपन में ही अनाथ हो गये । उनके माता-पिता बड़े गरीब थे । उनके पास जमीन-जायदाद कुछ थी नहीं, सिर्फ सिर छुपाने के लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी भर थी । तीनों भाई दर-दर भीख मांगकर अपना जीवन-यापन करने लगे । बचपन बीता, जवानी आयी, तो एक दिन तीनों भाइयों ने यह सोचा कि कहीं दूसरे गांव में चलकर मेहनत-मजूरी की जाए । शायद, कोई भला आदमी अपने यहां काम पर रख ले । वे गांव छोड़कर चल दिये । रास्ते में उन्हें एक बहुत बूढ़ा राहगीर दिखाई दिया । उसकी दाढ़ी खूब लंबी और सफेद थी । बूढ़े ने भाइयों के पासआकर पूछा, ''बच्चों, कहा जा रहे हो ?''

''मजदूरी की तलाश में ।''

''क्या तुम्हारे पास अपनी खेती-बारी नहीं है ?''

''नहीं'', भाइयों ने मायूसी से उत्तर दिया, ''काश, हमें कोई भला आदमी मिल जाता, तो उसके यहां हम लोग मेहनत से काम करते और अपने पिता की ही तरह उसका आदर करते ।''

बूढ़ा सोच में पड़ गया । क्षणिक खामोशी के बाद बोला, ''आज से तुम लोग मेरे बेटे हुए और मैं तुम्हारा धर्म-पिता । मैं तुम लोगों की सहायता करूंगा, ईमानदारी, परोपकार और सच्चाई का रास्ता दिखाऊंगा । बस, तुम लोग अपना फर्ज निभाते चलना, मेरी सीख जीवन में याद रखना ।''

तीनों खुश हुए और भलाई का जीवन बिताने के लिए तत्काल सहमत हो गये । बूढ़े ने उन्हें अपने साथ लिया और आगे बढ़ चला । बियाबान जंगलों और लंबे रास्तों को पार करते हुए वे तीनों बूढ़े के पीछे-पीछे चलते रहे । अचानक रास्ते में थोड़ी दूर पर उन्हें एक शानदार हवेली दिखाई दी । हवेली सजी-संवरी सुंदर थी, चौतरफा रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे । घर के बगल में चेरी की बगिया थी, जहां एक युवती खड़ी हुई थी । वह हू-बहू रूप की रानी लग रही थी । उसे देखते ही बड़ा भाई मोहित हो गया, बोला, ''काश, यह लड़की मेरी पत्नी होती । अमीर है, इसलिए दहेज में जमीन-जायदाद, गाय-बैल, घोड़े भी मिलते !''

यह सुनकर बूढ़े ने कहा, ''तो आओ, तुम्हारा रिश्ता तय कराये देते हैं । तुम्हारी शादी हो जाएगी और दहेज भी खूब मिलेगा । खुशी-खुशी जिंदगी गुजारना । बस, सच्चाई का रास्ता कभी मत भूलना ।''

बूढ़ा उन्हें लड़कीवालों के यहां ले गया । झट मंगनी, पट शादी । सभी बड़े खुश हुए । इस तरह बड़ा भाई हवेली का मालिक बन गया

और सुखपूर्वक रहने लगा ।''

शेष दो अपने मुंहबोले बेटों को साथ लेकर बूढ़ा आगे चल पड़ा । वे पूर्ववत बियाबान जंगलों और लंबे रास्तों को पार करते हुए चलते रहे । चलते-चलते उन्हें रास्ते में खूबसूरत-सा, चमचमाता हुआ घर दिखाई दिया । घर के बगल में एक तालाब था और तालाब के किनारे पनचक्की लगी थी । घर के पास एक युवती अपनी धुन में मगन किसी काम में व्यस्त थी । इस कार्य-दक्ष युवती को देखते ही मझले भाई ने कहा, ''काश, ऐसी ही युवती मेरी पत्नी होती ! दहेज में तालाब और पनचक्की मिल जाती तो मैं मजे से चक्की चलाना, गेहूं पीसता और चैन से जिंदगी गुजारता ।''

''तो आओ, तुम्हारी ही मर्जी सही'', बूढ़े ने लड़के से कहा ।

बूढ़ा और उसके साथ दोनों लड़के लड़कीवाले के यहां पहुंचे । बूढ़े ने शादी तय करा दी और जल्दी ही धूम-धाम से विवाह भी करा दिया । मंझला भाई भी घर का मालिक बन गया और अपनी पत्नी के साथ आनंद से रहने लगा । उससे विदा लेते हुए बूढ़े ने कहा, ''बेटे, अब हम चलते हैं, तुम खुश रहो । लेकिन याद रखना कि सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना ।''

अब बूढ़ा और सबसे छोटा लड़का फिर आगे बढ़ चले । अचानक उन्हें एक साधारण-सी झोंपड़ी दिखाई दी । उषा की लालिमा-जैसी सुंदर एक युवती अपनी झोंपड़ी से बाहर आ रही थी । वह बहुत गरीब थी । उसके पुराने कपड़ों पर कई-कई पैबंद थे ।''

छोटे भाई ने कहा, ''काश, यह युवती मेरी पत्नी होती । हम दोनों कंधे से कंधा मिलाकर मेहनत करते और हमारे यहां बस, खानेभर का अनाज होता । तब हम दीन-दुखियों की भरसक मदद करते, खुद खाते और दूसरों को भी खिलाते ।''

यह सुनकर बूढ़े ने कहा, ''शाबाश, ऐसा ही होगा । पर देखो, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना ।''

अब इस छोटे की शादी भी बूढ़े ने करा दी और बूढ़ा अपनी राह चल पड़ा ।

इधर तीनों भाई अपनी-अपनी जिंदगी जीने लगे । बड़ा भाई इतना अमीर हो गया कि उसने अपने लिए अच्छे से अच्छे घर बनाये । फिर भी उसे दिन-रात यही धुन सवार रहती कि वह और अधिक से अधिक अमीर कैसे बने ? कैसे अधिक से अधिक हीरे-जवाहरात, सोना-चांदी इकट्ठे करे । गरीबों की मदद या उन्हें सहारा देने की बात तो उसके मन में कभी आती ही नहीं । वह अत्यंत कंजूस भी हो गया ।

मंझला भाई भी अमीर हो गया । उसके यहां भी नौकर-चाकर काम करने लगे और वह ऐशो-आराम की जिंदगी गुजारने लगा । वह बस, काहिलों की तरह खाता-पीता और नौकरों पर हुक्म चलता रहता ।''

''सबसे छोटा भाई मेहनत-मजदूरी कर शांति से अपनी गुजर-बसर कर रहा था । घर-गृहस्थी में जब कुछ होता, तो वह दूसरों

साथ मिल-बांटकर खाता । जब कुछ न होता, तो संतोष करता पर वह कभी भी अपनी परेशानियों का रोना न रोता ।

इस बीच बूढ़ा दूर-दूर का सफर करता रहा । एक दिन उसे अपने मुंहबोले बेटों का ख्याल आया । उसने उनकी खोज-खबर लेनी चाही कि आखिर वे नौजवान बेटे कैसे जी रहे हैं ? कहीं वे सच्चाई के रास्ते से भटक तो नहीं गये ?

बूढ़े ने भिखारी का भेष बनाया । सबसे पहले वह बड़े लड़के के घर जा पहुंचा और बड़े दीन भाव से झुकते हुए गिड़गिड़ाकर बोला, ''जुग-जुग जिओ मेरे लाल, इस ग़रीब लाचार बूढ़े को खाना खिला दो ।''

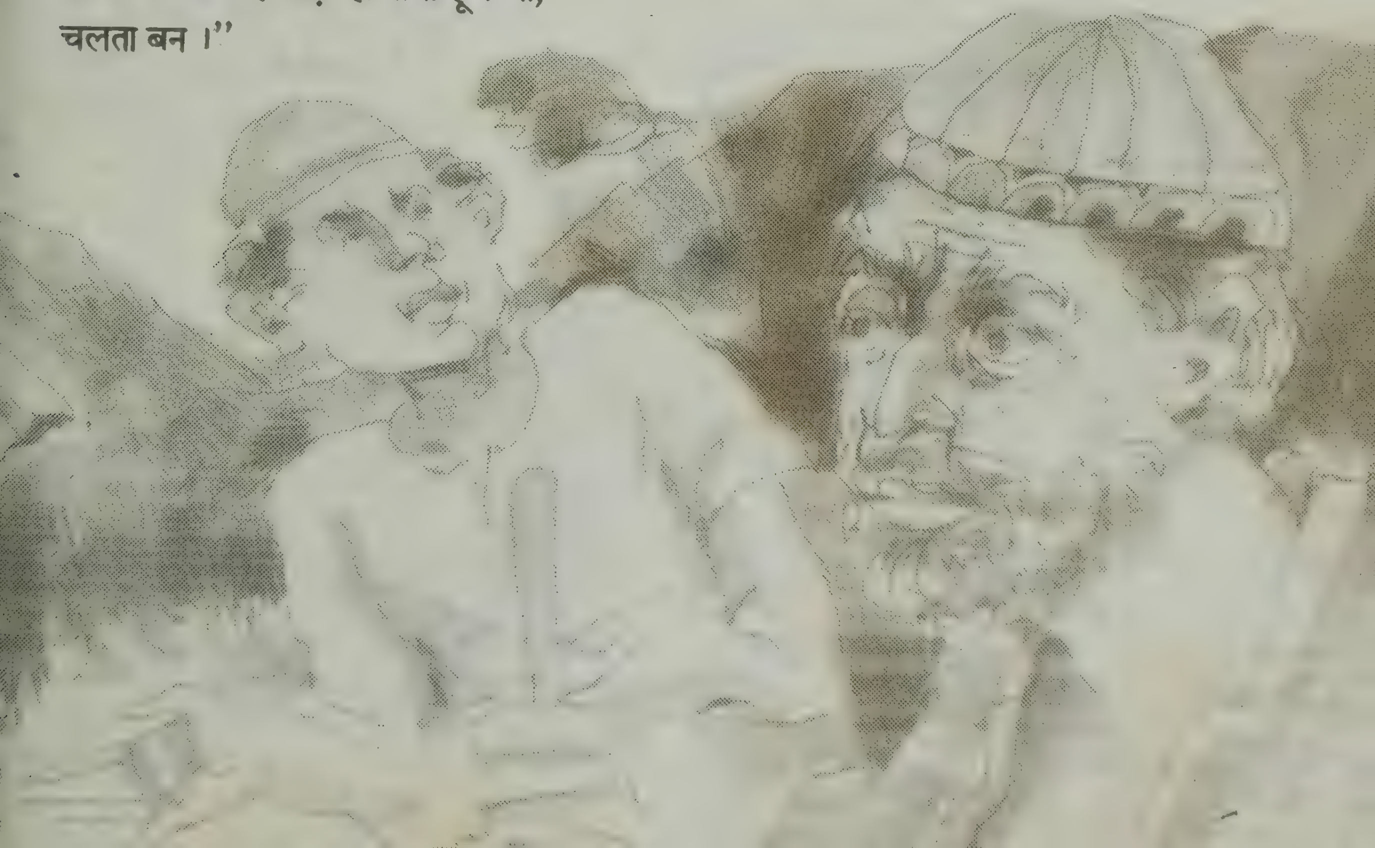
बड़े लड़के ने बूढ़े को अपमानित करते हुए कहा, ''अरे खूसट, तू अभी हट्टा-कट्टा तो दिख रहा है । भूख लगी है, तो जा कहीं मेहनत-मजदूरी कर ! अभी तो मैं खुद अपने पैरों पर किसी तरह खड़ा हो पाया हूं । जा, चलता बन ।''

बूढ़ा वापस चल दिया । लेकिन थोड़ी दूर जाकर वह ठहर गया उसने पलटकर बड़े लड़के के घर की ओर देखा, तो वह धुआं उगलता हुआ भस्म हो गया ।

बूढ़ा अब मझले लड़के के पास पहुंचा । वह खुद पनचक्की पर बैठा हुआ नौकरों पर हुक्म चला रहा था । बूढ़े ने झुककर दैन्य भाव से कहा, ''बेटे, भगवान तुम्हारा भला करे । थोड़ा-सा आटा दे दो । मैं भिखारी हूं, दाने-दाने को तरस रहा हूं ।''

''वाह बाबा, वाह !'' दूसरे बेटेने कहा, ''यहां तो मैं खुद गरीबी से जूझ रहा हूं । मेरे पास तो खुद अपने लिए आटा नहीं है । तुझ जैसे भिखारी तो रोज मारे-मारे फिरते हैं । आखिर, किस-किस का मैं पेट भरूं ?''

बूढ़ा दूसरे लड़के के यहां से भी मायूस होकर चल पड़ा । और थोड़ी दूर जाकर एक टीले पर ठहर गया । बूढ़े ने पलटकर देखा तो



मझले लड़के का घर और पनचक्की धू-धूकर जल उठे ।

अब बूढ़ा तीसरे छोटे लड़के के यहां पहुंचा । वह सचमुच गरीब था । उसकी झोंपड़ी वैसे ही, छोटी-सी ही थी, लेकिन साफ-सुथरी दिख रही थी ।

"बेटा, भगवान तुम्हारा भला करे । मैं बहुत भूखा हूं । कुछ खाने को दे दो ?"

"बाबा, अंदर चलो, खाना मेरे घर में है । खाना खा लेना और थोड़ा रास्ते के लिए साथ भी लेते जाना ।"

झोंपड़ी के अंदर बूढ़ा पहुंचा । उसने घर की मालकिन को देखा । वह साधारण कपड़े पहने हुए थी, पर उसे बूढ़े के फटे-पुराने कपड़े देख बहुत अफसोस हुआ । वह बूढ़े के लिए कपड़े ले आयी, बोली, "बाबा, ये कपड़े पहन लो ।"

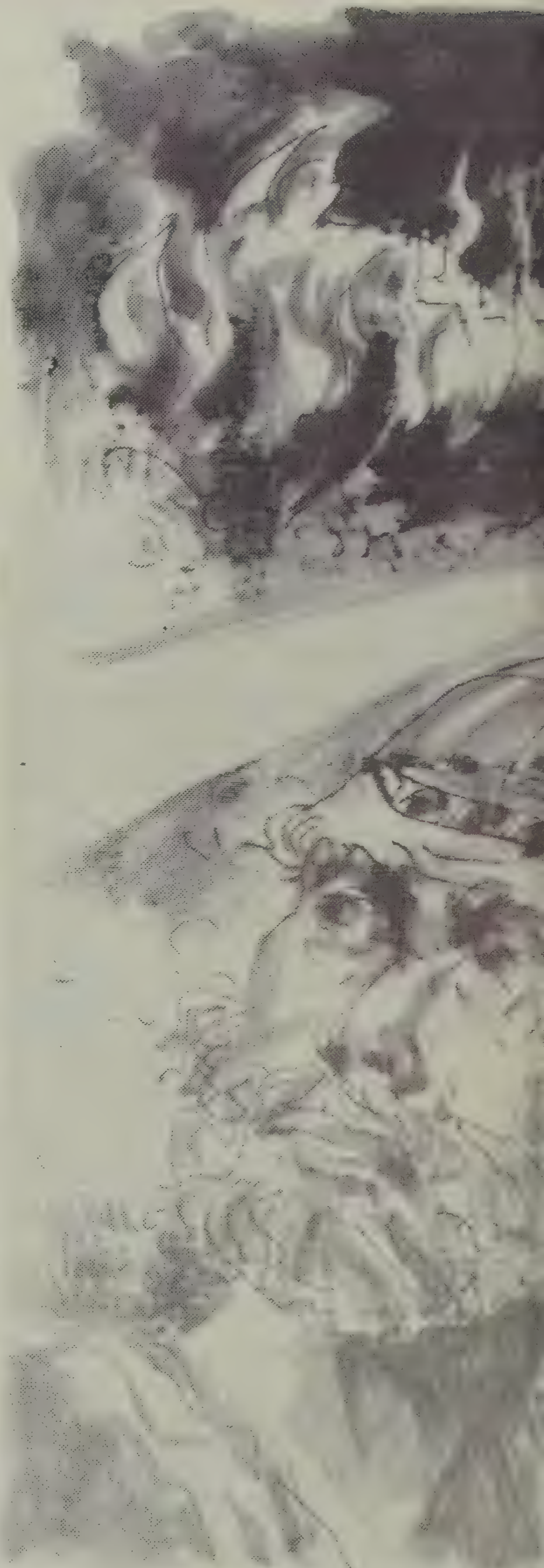
बूढ़ा खुशी-खुशी कपड़े पहनने लगा तो मालकिन ने देखा कि बूढ़े के सीने पर एक बड़ा-सा घाव है । बूढ़े को बैठाकर उसने भर पेट खाना खिलाया । अचानक छोटे लड़के ने पूछा, "बाबा, तुम्हारे सीने में इतना बड़ा जख्म कैसे है ?"

"बेटा, यह बड़ा अजीब जख्म है । अब तो मैं बस चंद रोज का मेहमान हूं । इस जख्म की वजह से मेरी मौत कभी भी हो सकती है ।"

"तोबा ! तो क्या इसकी कोई दवा नहीं है ?" घर की मालकिन ने दुख प्रकट करते हुए कहा ।"

"दवा तो है । बस, एक ही दवा है, लेकिन उसे कोई देगा नहीं, जबकि हर कोई दे सकता है ।"

तब छोटे लड़के ने कहा, "आखिर, क्यों



नहीं देगा ? ऐसी कौन-सी दवा है ?''

''दवा बड़ी अजीबो-गरीब है, बेटा ! जानना चाहते हो तो सुनो, यदि किसी घर का मालिक अपने घर समेत अपनी सारी दौलत आग लगाकर फूंक दे और उसकी राख मेरे जख्म पर छिड़क दे, तो जख्म अपने आप सूख सकता है ।''

छोटा बेटा थोड़ी देर असमंजस में पड़ा रहा । फिर अपनी पत्नी से बोला, ''कहो, तुम्हारा क्या ख्याल है ?''

''ख्याल ? मैं तो समझती हूं मेरी झोंपड़ी, मेरा घर फिर बन जाएगा, बाबा बेचारे की जिंदगी खतरे में है, क्यों न, इन्हें मरने से बचा लिया जाए ?''

''फिर देर क्या है ? आओ, बच्चों को झोंपड़ी से बाहर निकाल लें ।''

बच्चे झोंपड़ी से बाहर आ गये । छोटे लड़के ने झोंपड़ी पर एक नजर डाली, उसे अपनी जो कुछ भी जमा-पूंजी थी, उसके लिए अफसोस तो था लेकिन, बूढ़े के प्रति उसके हृदय में कहीं ज्यादा तकलीफ थी । अतः उसने झोंपड़ी में आग लगा दी । झोंपड़ी थोड़ी देर में राख का ढेर बन गयी । लेकिन यह क्या ? अचानक झोंपड़ी के स्थान पर एक खूबसूरत हवेली आ खड़ी हुई ।''

उधर बूढ़ा अपनी लंबी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ मुस्करा रहा था ।

''बेटा, तीनों भाइयों में से तुम ही अकेले सच्चाई के रास्ते पर चल रहे हो । खुश रहो और युग-युग जिओ ।''

अब छोटे लड़के की समझ में आया कि यह वही बूढ़े बाबा हैं, जिन्होंने एक दिन तीनों भाइयों को अपना मुंहबोला बेटा बनाया था ।

वह बूढ़े की ओर लपका, लेकिन तब तक वह गायब हो चुके थे ।

—१४७, केशव भादुड़ी रोड,
लखनऊ-२२६०१९



आइए चलें जंगल की ओर

सारस : यह सिकोनाइडी परिवार का प्राणी है । इसकी टांगें लंबी और टांगों का निचला भाग कुछ बाल रहित, खुला होता है । गरदन लंबी और भारी, चोंच नुकीली होती है । सारस की स्वर पेशियां नहीं होतीं, इसलिए यह आमतौर पर चुप ही रहता है । यह गले से हलकी घुरघुराहट की-सी आवाज निकालता है । इसकी लंबाई साढ़े तीन फुट तक होती है । जंगहिल, दांख, कंकारी, हरगिल, गुरुर या टेंक आदि इसकी प्रमुख प्रजातियां हैं । शिकार के लिए यह पानी में कूबड़ निकाले एक टांग पर खड़ा रहता है । मछलियां, मेंढक, केकड़ा, घोंघे इसका प्रिय भोजन है ।

यह अपना घोंसला पानी के निकट पेड़ों पर बनाता है । श्रीलंका और केरल में व्यापक रूप से पाया जाता है । मादा सारस एक बार में तीन से पांच तक अंडे देती है ।





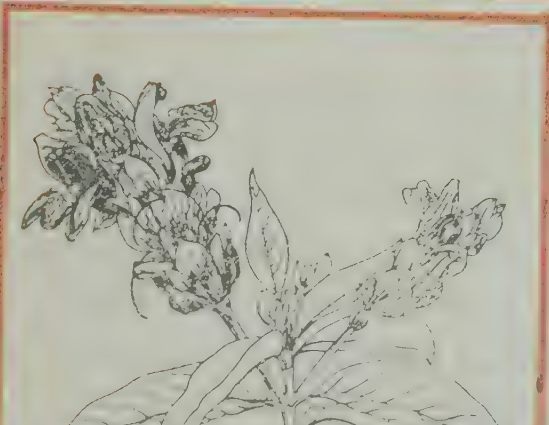
शिकरा : यह कद में लगभग कबूतर-जैसा होता है । ऊपरी भाग राख-जैसा, कुछ-कुछ नीलापन लिए भूरा, नीचे के हिस्से पर भूरी धारियां होती हैं और पूंछ पर चौड़ी, काली-सी पट्टियां । मादा का ऊपरी भाग भूरा और यह नर की अपेक्षा बड़ी होती है । टिड्डे, छिपकली, चूहे, मेंढक आदि इसका आहार है ।

यह जंगली प्रदेशों, गांवों तथा खेतों के आसपास अपना जोड़ा बनाकर रहता है । घोंसला पत्तेदार पेड़ों की चोटियों पर टहनियों की मदद से बनाता है । इसके अंडे हलका नीलापन लिये होते हैं ।

अमलतास : यह कम ऊंचाई का वृक्ष होता है । इसके पत्तों का रंग हरा और लंबाई पांच से दस सेंटीमीटर तक होती है । फूल लगभग ३.५ से ५ सेंटीमीटर व्यास के, पीले रंग के गुच्छों में होते हैं । फल ५०-६० सेंटीमीटर लंबे, बांसुरी की-सी आकृति के काले या गहरे कत्थई रंग के होते हैं । इसके फल ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में गिर जाते हैं, किंतु इस समय वृक्ष फलों से लदा होता है तथा दूर से पूरा वृक्ष पीला दिखायी पड़ता है ।



यह लगभग पूरे भारत में ही पाया जाता है । यह नम तथा सदा हरित वनों में अधिक होता है । उद्यान तथा सड़कों के किनारे अमलतास के वृक्ष लगाना बहुत उपयुक्त माना जाता है । इसके वंश की एक अन्य जाति सनाय है, जो छोटी झाड़ी जैसी होती है । सनाय अरब व सोमालीलैंड का पौधा है और दक्षिण भारत आदि में इसका रोपण किया गया है ।



वसाका : कुछ जगह इसे अडूसा भी कहा जाता है । यह एक से दो मीटर ऊंचा सदा हरित पौधा है । इसकी शाखाएं हलकी पीली, विभाजित व घनी होती हैं । फूल सफेद होते हैं, उनकी पंखुड़ियों पर गुलाबी या बैंजनी रंग की धारियां होती हैं । अडूसा के फल एक छोटी-सी संपुटिका की भांति होते हैं, जिनमें चार बीज होते हैं । इसके पत्तों से दुर्गंध आती है । इसका अरक या रस बलगम, कफ, खांसी, दमा में लाभदायक पाया गया है । वासक से वसीसीन नामक पदार्थ भी प्राप्त होता है जो गर्भपात के लिए उपयोगी है ।

इसके पौधे भारत में सभी मैदानी तथा तलहटी क्षेत्रों में पाये जाते हैं । आबादीवाले स्थानों के आसपास यह अधिक पनपता है ।

महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन

मानव मस्तिष्क की क्षमता का चमत्कार

● डॉ. सी.बी.एल. वर्मा

''जिस टैक्सी में मैं आपको देखने आया हूं, उसका नंबर १७२९ है। मुझे यह नंबर कुछ मनहूस-सा लगा, कहीं यह किसी अपशकुन का सूचक तो नहीं ?''

''बिलकुल नहीं'', अस्पताल की शैया पर लेटे युवक ने कहा, ''बल्कि, यह एक बड़ा दिलचस्प नंबर है— वह छोटे से छोटा, जो दो भिन्न प्रकार से दो संख्याओं के घनों का योग है''— $१७२९ = १^३ + १२^३ = ९^३ + १०^३$

प्रश्नकर्त्ता थे ट्रिनिटी कॉलेज कैंब्रिज के तत्कालीन प्रोफेसर जे.ई. लिटिलवुड और युवक था महान भारतीय गणितज्ञ रामानुजन।

'नंबर तो उसके हाथ में मानो खिलौने थे,' प्रो. लिटिलवुड लिखते हैं, 'ऐसा मालूम पड़ता है जैसे प्रत्येक नंबर रामानुजन का व्यक्तिगत मित्र हो।'

नंबर थ्योरी तथा शुद्ध गणित की विभिन्न शाखाओं में रामानुजन का शोध-कार्य अभूतपूर्व है। बत्तीस वर्ष की अल्पायु में वह गणित जगत को लगभग चार हजार फार्मूलों की अद्‌भुत और महत्त्वपूर्ण विरासत छोड़ गये, जो उनकी तीन नोट-बुकों तथा उनके तथाकथित १३० खोये पृष्ठों में हैं, और जो उच्चकोटि के गणितज्ञों के लिए भी एक शताब्दी से अधिक की मूल्यवान सामग्री है।

रामानुजन यानी श्रीनिवास रामानुजन आयंगर का जन्म एक गरीब ब्राह्मण परिवार में २२ दिसंबर, १८८७ को कुंबकोणम-मद्रास (वर्तमान तमिलनाडु) में हुआ था। पिता एक बजाज के यहां खजांची थे। माता प्रखर बुद्धि की महिला थीं। वे इरोड़ की अदालत के एक मुंसिफ की पुत्री थीं।

कहते हैं, रामानुजन के नाना ने अपनी पुत्री के पुत्र-प्राप्ति के लिए नामक्कल की देवी नामगिरि के मंदिर में विशेष प्रार्थना की।

पांच वर्ष की आयु में शिक्षा आरंभ कर जब दो साल बाद वह कुंबकोणम के शहर के स्कूल में पहुंचे, तब इन्हें छात्रवृत्ति मिलती थी। वह बड़े शांत और गंभीर स्वभाव के विद्यार्थी थे। स्मरण-शक्ति इतनी विलक्षण थी कि अपने मित्रों के साथ पाई (π) तथा २ के मान अनेक दशमलव अंकों तक कह डालने में इन्हें बड़ा आनंद आता था।

पंद्रह वर्ष की आयु में जब ये छठवीं कक्षा में थे, तब इनके एक मित्र ने इन्हें जार्ज शूब्रिज कार की एक पुस्तक 'ए सिनोप्सिस ऑफ

रिचर्ड ऐस्के ने लिखा है, 'रामानुजन का महत्व इसलिए नहीं है कि वे एक महान गणितज्ञ थे, वरन् इसलिए भी है कि वे हमें बताते हैं कि मानवीय मस्तिष्क की क्षमता और उसका सामर्थ्य क्या कर सकता है !'



एलीमेंट्री रिजल्ट्स इन प्योर एंड एप्लाइड मैथेमैटिक्स' लाइब्रेरी से उधार लेकर दी थी। इस पुस्तक में उच्च गणित के लगभग छह हजार साध्य हैं, परंतु सन् १८६० के बाद के गणित का कोई उल्लेख नहीं है। रामानुजन की प्रतिभा इतनी प्रखर थी कि केवल एक पुस्तक के अध्ययन से उन्होंने अपने स्वयं अनेक सूत्र प्रतिपादित कर डाले, जो कठिन से कठिनतर होते गये और उनके साथियों और शिक्षकों की समझ के बाहर भी। जार्ज शूब्रिज कार लंदन में एक प्राइवेट कोच थे, जिन्हें उन्हीं के शहर के लोग भूल गये, पर रामानुजन ने उनका नाम अमर कर दिया।

पहले उन्होंने जादुई वर्गों यानी मैजिक स्क्वेयर्स में रूचि ली। इन जादुई वर्गों का प्रचलन बारहवीं या तेरहवीं सदी से चला आ रहा था। आयलर (१७०७-८३, स्विस) और आर्थर कैले (१८२१-९५,ब्रिटिश) जैसे प्रख्यात गणितज्ञ भी मैजिक स्क्वेयर्स में रूचि लेते थे। रामानुजन की प्रथम नोटबुक के पृष्ठ २ पर निम्न जादुई वर्ग बना हुआ है —

१०	२	८
४	५	११
६	१३	१

जिसमें बायें से दायें और ऊपर से नीचे अंकों का योग २० है, पर तिरछे (कर्णवत्) नहीं। रामानुजम ने ऐसे जादुई वर्ग बनाने का प्रयत्न किया, जिनमें कर्णवत् योग भी वही हो। इसी नोट बुक के प्रथम अध्याय में इस प्रकार का एक जादुई वर्ग दिया हुआ है —

६	१	८
७	५	३
२	९	४

जादुई वर्गों के पश्चात् रामानुजन ज्यामितीय प्रश्नों की ओर मुड़े। ईसा पूर्व पांचवीं सदी के प्लेटो के समय से चले आ रहे 'तीन सनातन प्रश्न' बहुत प्रसिद्ध हैं। वे हैं— १. किसी कोण को सम त्रिभाजित करना। २. किसी वृत्त के क्षेत्रफल के बराबर वर्ग का निर्माण करना। और ३. किसी घन के दुगुने आयतन के बराबर घन बनाना।

इनकी रचना में केवल रूलर और कंपास का ही उपयोग किया जाता है। रामानुजन ने दूसरे प्रश्न का जो हल प्रस्तुत किया, वह जर्नल ऑफ दि इंडियन मैथेमैटिकल सोसाइटी के सन् १९१३ के अंक में प्रकाशित हुआ। इसमें उन्होंने वर्ग की भुजा और वृत्त की त्रिज्या को

लंबाई का अनुपात ३५५/१३३ निकाला । यह पाया गया कि यदि वृत्त का क्षेत्रफल एक लाख चालीस हजार वर्ग मील हो, तो उनके द्वारा निकाले गये वर्ग की भुजा की लंबाई अपेक्षित लंबाई से केवल एक इंच बड़ी होगी ।

बीजगणित के सूत्र

बीज गणित में भी रामानुजन ने अनेक सूत्र निकाले । उनमें कई तो बड़े से बड़े गणितज्ञों की समझ के परे हैं । कहते हैं कि नामगिरि की देवी स्वप्न में आकर रामानुजन को उनकी गणित की शोध में मार्गदर्शन करती थीं और रामानुजन सुबह उठकर अपनी नोट बुक में स्वप्न में आये हुए उन सूत्रों को लिख डालते थे ।

सोलह वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की,परंतु अंगरेजी में कमजोर होने के कारण इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण न कर सके । सन् १९०९ में बाइस वर्ष की उम्र में इनका विवाह हो जाने पर उनके सामने जीवन-यापन की समस्या आ खड़ी हुई ।

दीवान बहादुर रामचंद्र राव जो उस समय नैलोर के कलैक्टर थे, गणित में भी रूचि रखते थे । वे लिखते हैं, 'कई वर्ष पहले मेरे एक भतीजे ने अपने एक साथी के बारे में बताया, जो अद्भुत प्रश्न करता था और एक रोज वह उसे ले भी आया था । मेरे सामने एक गरीब लड़का अस्त-व्यस्त कपड़ों में खड़ा था, परंतु उसकी आंखों में एक अजीब चमक थी । उसके हाथ में एक कागज का टुकड़ा था, जिसमें उसने कुछ प्रश्न लिख रखे थे । मैंने उन्हें देखा पर वे मेरे गणितीय ज्ञान के दायरे बाहर थे ।'

रामचंद्र राव ने मद्रास इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रो. ग्रिफिथ के माध्यम से पोर्ट ट्रस्ट के चेयरमैन सर फ्रांसिस स्प्रिंग से रामानुजन का परिचय करा दिया, जिससे उन्हें ऑफिस में क्लर्क की नौकरी मिल गयी ।

रामानुजन ने अपना गणित का अध्ययन जारी रखा । इनका प्रथम शोध-पत्र जे.एम.आई.एस. में सन् १९११ में प्रकाशित हुआ । फिर उसी पत्रिका में सन् १९१२ में बर्नोली नंबर्स पर उनका एक लंबा शोध-लेख भी प्रकाशित हुआ ।

पूर्णांक नंबरों के क्षेत्र में रामानुजन का योगदान अपूर्व है ।

रूढ़ संख्याओं का विस्तार

रामानुजन का रूढ़ संख्याओं का सिद्धांत बहुत विख्यात हुआ । सन् १८९६ में फ्रांस और बेल्जियम के गणितज्ञों ने इस विषय पर कुछ शोध किये थे, परंतु रामानुजन ने जो परिणाम निकाले, वे इतने महत्त्वपूर्ण मालूम हुए कि उनके शिक्षक शेणु अय्यर (जो बाद में उनकी जीवनी लेखक भी बने) ने उन्हें इंगलैंड के उस समय के सबसे विख्यात प्रोफेसर जी.एच.हार्डी को अपने शोध अनुसंधानों से अवगत कराने का परामर्श दिया । रामानुजम ने प्रो. हार्डी को एक पत्र लिखा,जिसमें अपना परिचय देते हुए उन्होंने अपने १२० सूत्र भी संलग्न कर दिये ।

गणित के इतने कठिन सूत्र पाकर प्रो. हार्डी स्तंभित रह गये । इन सूत्रों के संबंध में वे लिखते हैं, 'एक दृष्टि में इन्हें देखकर कहा जा सकता है कि वे किसी महान प्रतिभा-प्राप्त गणितज्ञ द्वारा लिखे गये हैं । वे निश्चय ही सत्य होंगे क्योंकि, यदि वे सत्य नहीं होते तो कोई भी उन्हें ढूंढ़ निकालने की कल्पना तक नहीं कर सकता ।'

लंदन प्रवास

इसके बाद प्रो. हार्डी ने रामानुजन को लंदन बुलाने का बड़ा प्रयास किया, परंतु उनके वहां जाने में दो मुख्य बाधाएं थीं— एक तो जाति का बंधन और दूसरी, अपनी मां की अनुमति प्राप्त न होना । मां की अनुमति उन्हें विचित्र प्रकार से प्राप्त हुई । प्रो. हार्डी लिखते हैं, 'एक रात्रि रामानुजन की मां ने स्वप्न में देखा कि उनका पुत्र एक बड़े हॉल में यूरोपियनों के बीच बैठा है और देवी नामगिरि उन्हें निर्देश दे रही हैं कि वे अपे पुत्र के जीवन की उद्देश्य-पूर्ति में बाधा न बनें ।' अंततः सन् १९१४ में उन्होंने इंगलैंड के लिए प्रस्थान किया । उस समय उनकी ख्याति अन्य देशों में भी फैल चुकी थी । क्योंकि रामानुजन ने विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों के अनुरूप अध्ययन नहीं किया था, इसलिए प्रो. हार्डी को उन्हें विषय की प्रारंभिक शिक्षा देनी पड़ी । प्रो. हार्डी लिखते हैं, 'मैंने जितना उन्हें पढ़ाया, उससे कहीं अधिक उनसे सीखा ।'

रामानुजन शुद्ध शाकाहारी थे । लंदन में अपना भोजन स्वयं बनाते थे । परंतु वहां की जलवायु तथा रहन-सहन की रीति-रिवाज उन्हें रास नहीं आयी और सन् १९१७ से वह अस्वस्थ रहने लगे । जब हालत अधिक बिगड़ गयी तो वे भारत लौट आये । अगले वर्ष २६ अप्रैल, १९२० को टी.बी. से उनकी मृत्यु हो गयी ।

रामानुजन को हर कोई गणितज्ञ नहीं समझ सकता । उनके कई साध्य अभी तक सिद्ध नहीं हो पाये हैं । प्रो. रिचर्ड ऐस्के लिखते हैं, 'प्रो. हार्डी ने कहा है कि यह दुर्भाग्य है कि रामानुजन सौ वर्ष पहले पैदा हुए । मैं कहता हूं अच्छा होता यदि वे सौ वर्ष बाद पैदा होते । इस युग में कठिन से कठिनतर सवाल सामने आते जा रहे हैं । हमें इस समय रामानुजन सदृश्य प्रतिभा की और आवश्यकता है ।'

रिचर्ड ऐस्के आगे लिखते हैं, 'रामानुजन का महत्त्व इसलिए नहीं है कि वे एक महान गणितज्ञ थे, वरन् इसलिए भी है कि वे हमें बताते हैं कि मानवीय मस्तिष्क की क्षमता और उसका सामर्थ्य क्या कर सकता है !'

—१०/१२ नेहरू नगर (पूर्व)
भिलाई-४९००२०

तथाकथित 'खोये' १३० पृष्ठ

अपने जीवन के अंतिम वर्ष में रामानुजन गंभीर रूप से अस्वस्थ थे । इस अवधि के बारे में श्रीमती रामानुजन कहती हैं, 'वे कंकाल-मात्र रह गये थे, उनके लिखे गये पृष्ठों को मैं संभाल-संभाल कर इकट्ठा करती जाती थी ।'

बगैर जिल्द के इन १३० पृष्ठों में लगभग छह सौ सूत्र हैं, जो प्रो. जी.एन. वाट्सन के पास लगभग ४० वर्ष निरर्थक पड़े रहे, इसलिए उन्हें 'खोये' कहा जाता है ।

श्रीमती वाट्सन ने इन पृष्ठों को प्रो.आर.ए.रैंकिन तथा प्रो. जे.एम. व्हिटेकर के साथ ट्रिनिटी कॉलेज, कैंब्रिज की लाइब्रेरी में जमा करा दिया, जिनकी पुनर्खोज पेंसिलवेनिया स्टेट यूनीवर्सिटी के प्रो. जार्जइ.एंड्रूज ने सन् १९७६ के आसपास की और अपने शोध कार्य में उनका उपयोग किया । विंसकंसिन यूनीवर्सिटी के प्रो. रिचर्ड ऐस्के लिखते हैं, 'रामानुजन ने अपने अंतिम वर्ष में जो कार्य किया, वह कोई अत्यंत प्रतिभाशाली गणितज्ञ अपने संपूर्ण जीवन में भी कदाचित ही कर पाये ।



मामला गबन का

अनिलकुमार शर्मा, नेपाल : मैं प्रधानाध्यापक हूं । दो वर्ष पहले एक अध्यापक ने पुलिस में मेरे विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करायी कि मैंने उसके वेतन का गबन किया है । मामला न्यायालय में है । दरअसल, मैंने उसका वेतन विद्यालय के कैशियर के पास जमा करा दिया था और उसकी जमा-रसीद भी कैशियर से ले ली थी । जमानत के समय यह रसीद मैंने न्यायालय में पेश की थी । अब वह रसीद मुझसे खो गयी है,लेकिन उसकी फोटोस्टेट कापी मेरे पास है । कृपया, बताएं न्यायालय को फोटोस्टेट कापी मान्य होगी या नहीं ?

मूल दस्तावेज के प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत किये जाने का अपना ही महत्त्व है, लेकिन मूल दस्तावेज के खो जाने पर अन्य उपलब्ध प्रमाणों का सहारा लिया जा सकता है । आपके विद्यालय में वेतन वितरण करने तथा उसका विवरण रखने का क्या तरीका है— यह आपने नहीं लिखा । वैसे वेतन की राशि कैशियर को देने पर अपनी रोकड़ बही में उसका उल्लेख किया होगा— आपके पास रसीद उस तथ्य की पुष्टि के रूप में ही थी । रसीद खो जाने का प्रमाण देते हुए आप अपने पास उपलब्ध फोटो कापी को न्यायालय में प्रस्तुत करें । इसके साथ कैशियर की बही आदि प्रमाण रूप में प्रस्तुत कराएं ।

बैंक परेशान कर रही है

नीतिक्षमा, सिद्धार्थनगर : मैं, मेरी बहन व मां को एक कंपनी की बैलेंस्ड फंड योजना के अंतर्गत एक बैंक की सभी शाखाओं पर सममूल्य पर देय लाभांश अदायगी आदेश (वारंट) प्राप्त हुए थे । हमने उन्हें नौगढ़ (सिद्धार्थ नगर) स्थित अपने खातों में करा दिया । परंतु एक महीना बीतने के बाद भी बैंक ने हमारे खातों में रकम अदा नहीं की । उनका कहना है कि उन्होंने अदायगी के लिए वारंटों को बैंक की जारी करनेवाली शाखा को भेजा हुआ है, वहां से क्लीयर होने पर उनका भुगतान कर दिया जाएगा । क्या, ऐसा करके बैंक हमें परेशान नहीं कर रही ?

यह उत्तरदायित्व रकम अदा करनेवाली कंपनी का था कि वह संबंधित बैंक की शाखाओं में रकम अदायगी की व्यवस्था करती । लाभांश अदायगी आदेश एक चैक के समान देय होता है । आपको पैसा मिलने में विलंब हुआ है, पर ऐसा तो नहीं है कि आपको रकम देने से इनकार किया गया हो । किसी भी बैंक की शाखा द्वारा चैक या देय आदेश जारी करनेवाली शाखा से चैक या आदेश के विषय में

जानकारी लेने को अनुचित नहीं कहा जा सकता।

किरायेदारों को संरक्षण

सुरेंद्रकुमार, अमरोहा (उ.प्र.) : तीस साल से हम एक किराये के मकान में रह रहे हैं। मकान मालिक की मृत्यु हमारे आने से अठारह साल पूर्व हो चुकी थी और वह मकान किसी के नाम नहीं कर गये थे। हम उनकी लड़की के लड़के को मनीआर्डर से किराया भेजते रहे हैं। हमें बाद में पता चला कि मकान मालिक की एक और लड़की है। लेकिन उसके लड़कों ने मकान पर कभी अपना दावा नहीं किया। मकान-मालिक की ओर से बीस साल तक गृहकर जमा नहीं कराया गया, तो हमने गृहकर अपने नाम से जमा करा दिया। अब वह मकान बेचने के लिए हमसे मकान खाली कराना चाहते हैं। बताइए, क्या कानून हम किरायेदारों को कोई संरक्षण देता है या नहीं ?

आपने मकान किससे किराये पर लिया था ? पूर्व मकान-मालिक की मृत्यु आपने मकान किराये पर लेने से पहले हो गयी थी। मकान का स्वामित्व, उत्तराधिकार के अधिकार के आधार पर साधारणतः दोनों लड़कियों को प्राप्त हो गया। आप भी बराबर मनीआर्डर से किराया भेज रहे हैं। नियमानुसार यह ही माना जाएगा कि लड़की का लड़का अपनी मां के लिए किराया प्राप्त कर रहा है।

गृहकर देने का उत्तरदायित्व मकान मालिक का ही होता है। गृहकर न मिलने की स्थिति में नगरपालिका किरायेदारों को नोटिस देकर उनसे किराये की रकम जमा

विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

कराने का आदेश दे सकती है,लेकिन आपने किसी भी आदेश के बगैर ही गृहकर जमा कर दिया।

उत्तर प्रदेश में किरायेदार से उत्तर प्रदेश शहरी संपत्ति (किराये पर देना, किराया व बेदखली विनिमय अधिनियम, १९७२) में वर्णित आधारों पर ही मकान खाली करवाया जा सकता है। मकान बेचने के उद्देश्य से मकान मालिक आपसे मकान खाली नहीं करा सकता।

विवाह-पूर्व का उपनाम

अशोककुमार शर्मा, प्रतापगढ़ : लड़कियां पढ़ाई के दौरान, विवाह से पूर्व अपने नाम के साथ जो उपनाम (जातिनाम) लगाती हैं, उसे दूसरी जात या उपजात में शादी करने के बाद बदलना पड़ता है,तो इससे विवाह पूर्व के प्रमाण-पत्रों के आधार पर नौकरी करने में कोई वैधानिक अड़चन तो नहीं आएगी ?

लड़कियों के विवाह पूर्व का उपनाम साधारणतया विवाह के बाद बदल जाता है। इससे व्यक्ति की पहचान पर कोई अंतर नहीं पड़ता। और न ही शैक्षिण प्रमाण-पत्र के आधार पर नौकरी करने में कोई वैधानिक व्यवधान ही पड़ता है। उचित यह रहता है कि वे विवाह से पूर्व नाम के साथ विवाह के बाद

के नाम का भी उल्लेख कर दें । इससे नौकरी वर्तमान नाम से की जा सकेगी और शैक्षणिक योग्यता के लिए विवाह के पूर्व के नाम की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी ।

शिकायत की धमकी

आर. जेता, दमोह : मैं शासकीय महाविद्यालय में इतिहास विषय का प्राध्यापक हूं । साथ ही मैं प्रशासनिक प्रतियोगी-परीक्षाओं हेतु कोचिंग भी करता हूं । एक वर्ष पूर्व महाविद्यालय से मैंने इस आधार पर अवकाश लिया था कि मुझे आई.ए.एस. परीक्षा के साक्षात्कार हेतु जाना है, जबकि साक्षात्कार हेतु मेरा चयन ही नहीं हुआ था । मेरे एक उस समय के मित्र, जिससे अब अनबन हो गयी ने, मेरे इस झूठे आधार पर अवकाश लेने के कृत्य की शिकायत उच्चाधिकारियों को करने की धमकी दी है । क्या मेरे खिलाफ कार्यवाही हो सकती है ?

शासकीय सेवा पूर्णकालिक होती है इसलिए साधारणतया अन्य कार्य करने की अनुमति नहीं होती । प्रशासनिक प्रतियोगी-परीक्षाओं हेतु कोचिंग का कार्य करने की आपने अपने विभाग से अनुमति ली या नहीं— इसका उल्लेख आपने नहीं किया । आपने गलत आधार पर छुट्टी ली, इसके लिए आप पर विभागीय कार्यवाही की जा सकती है ।

अपील में देरी

राकेशकुमार, कट[illegible] एक मुकदमे का निर्णय हमारे खिलाफ हो [illegible] । अपील नियमानुसार निर्धारित समय के बाद दस दिन में दाखिल की गयी । दरअसल, वकील साहब के मुंशी अपील दाखिल करना भूल गये । मुंशी ने देरी के लिए कोई अलग से दरखास्त भी नहीं लगायी । अब सुनवाई की तारीख आनेवाली है । मुझे डर है कि कहीं देरी से कारण अपील रद्द ही न कर दी जाए ।

दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश-४१ नियम ३ ए (१) के अंतर्गत यह व्यवस्था है कि यदि कोई अपील निर्धारित समयावधि के बाद प्रस्तुत की जाए तो उसके साथ एक आवेदन भी प्रस्तुत करें, जिनमें उन कारणों का वर्णन करें, जिनके आधार पर अपीलकर्ता न्यायालय को देरी के कारणों पर विश्वास दिला सके । इस प्रकार का आवेदन व शपथ-पत्र अपील के साथ दिया जाना चाहिए । अपील समय पर तैयार होने के बावजूद, वकील के मुंशी की भूल से अपील समय पर जमा नहीं कराया जाना, स्वीकार योग्य आधार है ।

यह आवेदन आप अब न्यायालय में दे सकते हैं । आवेदन समय-सीमा अधिनियम (१९६३) की धारा ५ व दीवानी प्रक्रिया संहिता के आदेश ४१/३ ए (१) अंतर्गत दिया जाना चाहिए । देश के उच्च न्यायालय में विशेष रूप से ए.आई.आर. के १९८१ केरला २४०, १९८६ कर्नाटक १९९, १९८४ बंबई ३९० व १९८७ उच्चतम न्यायालय १३५३ वर्णित निर्णयों का आप लाभ उठा सकते हैं ।



१. **किसी** संख्या के चतुर्थांश और तृतीयांश में ३:४ अनुपात है । वह न्यूनतम संख्या क्या है ?

२. **क. ऋग्वेद** में अग्नि देवता की स्तुति कितने सूक्तों में की गयी है ।

ख. पृथ्वी-सूक्त किस वेद में है ?

३. **भारत** में पहला सम्राट कौन था जिसने नौसेना के महत्त्व को समझा था और नौसैनिक विभाग की स्थापना भी की थी ?

४. **क. मई-दिवस** की शुरुआत कहां, कब और कैसे हुई थी ?

५. **नेताजी** सुभाषचन्द्र बोस ने 'आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता' किसे बताया था ?

६. **क. भारतीय** संविधान कब लागू हुआ था ?

ख. भारतीय संविधान में 'मौलिक कर्त्तव्य' कब जोड़े गये ?

७. **क. विश्व** का सबसे नीचे बसा हुआ नगर कौन-सा है ?

८. **क. हाल** ही में सबसे बडी छिपकली कहां पायी गयी है ?

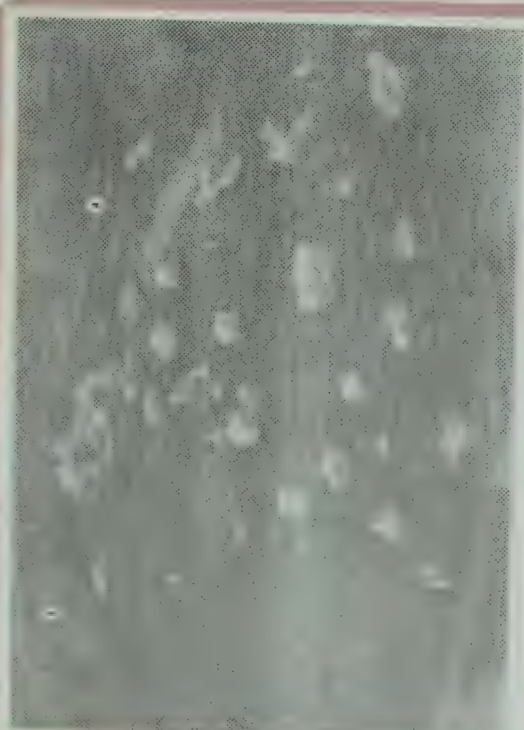
ख. उसका आकार व वजन कितना है ?

९. **क.** मध्यप्रदेश सरकार का १९९६ का राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान किसे प्रदत्त किया गया है ?

ख. किस भारतीय छाया चित्रकार का नाम लिम्का बुक ऑव रेकॉर्ड में हाल में दर्ज किया गया है ?

१०. **महिलाओं** की एक हजार मीटर की दौड़ में नया विश्व इंडोर रेकॉर्ड किसने कायम किया है ?

११. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए कि यह क्या है—



अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए । उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे । यदि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प

— संपादक

बालीद्वीप के प्रेतपूजक वैद्य—बालियान

● डॉ. राजेन्द्र मिश्र

बालीद्वीप में आज भी नब्बे प्रतिशत लोग बालियानों से ही उपचार कराना पसंद करते हैं। भारतीय ओझा-सोखा लोगों की तरह ये पारंपरिक वैद्य, जिन्हें बालियान कहा जाता है, अपनी कला से कठिन रोग को भी, कुछ ही महीनों में ठीक कर लेते हैं। मैंने एक रोगी को देखा जिसे लकवा मार गया था। घरवाले उसे डोली पर लादकर ले आये थे। वह हाथ तक नहीं हिला सकता था। परंतु तीसरे ही महीने बालियान ने उसे दौड़ने योग्य बना दिया था। यह सारा कमाल बालियान अपनी कुलपरंपरा-प्राप्त तंत्रशक्ति से करता है।

कौन हैं ये बालियान ?

बालियानों को समझने के लिए बालीद्वीप की सामाजिक पृष्ठभूमि जाननी आवश्यक है। बालीनरेश धर्मोदयनदेव की रानी महेंद्रदत्ता, जावानरेश मकुटवंशवर्धन की कन्या थी। उसे जावा के संस्कृत-शिलालेखों में 'यवराजलक्ष्मी तथा गुणप्रियधर्मपत्नी' आदि विरुदों से अलंकृत किया गया है। दुर्भाग्यवश वह बचपन से ही तंत्राभिचार एवं कापालिक धर्म में अनुरक्त हो गयी थी। बालीद्वीप की साम्राज्ञी बनते ही उसने समूचे द्वीप में वैष्णवोपासना बंद करा दी तथा गांव-गांव में तांत्रिकों, कापालिकों एवं वाममार्गी साधकों का जाल-सा बिछा दिया।

प्रजा आतंकित हो उठी तथा विरोध करनेवाले लोग तंत्र प्रयोग से लूले, लंगड़े, अंधे बनाये जाने लगे। प्रजा की यह विपत्ति जब धर्मोदयनदेव वर्मा (९८६-१०२२ ई.) को ज्ञात हुई तो उन्होंने जिद्दी रानी को निर्वासित कर दिया— बुरवन के जंगल में (यह स्थान बाली की राजधानी डेनपसार से प्रायः ३४ कि.मी. उत्तर-पूर्व में स्थित ग्यान्यार जिले के कुतरी गांव के पास है)

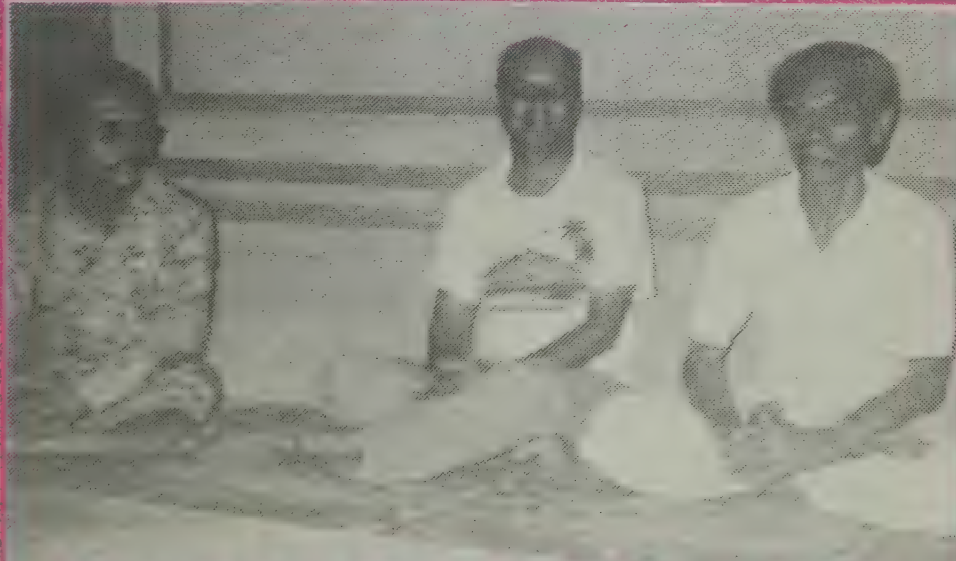
उदयन की मृत्यु के बाद महेंद्रदत्ता को 'रांगडा' (अर्थात् रंडा, विधवा) कहा जाने लगा। उसके अत्याचार इतने बढ़ गये कि उसी के पुत्र सम्राट एरलंग ने भराड़ नामक महातांत्रिक को जावा से भेजकर, उसकी हत्या करवा दी। रांगडा को प्रेताधीश्वरी महिषासुरमर्दिनी के रूप में, कुतरी गांव में ही एक मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया गया जो आज भी प्रेतसमर्थकों का आकर्षण केंद्र बना है।

भराड़ एवं रांगडा के अभिचार-युद्ध की लोमहर्षक कथा प्राचीन जावी में लिखे गये 'जलोनरंग' नामक ग्रंथ में सुरक्षित है। समूचे इंडोनेशियाई द्वीपों में रांगडा के नानाविध मुखौटे दूकानों पर मिलते हैं जिन्हें दीवार में टांग देने पर

घर में रोग-दोष अथवा प्रेतबाधा नहीं होती है ।

रांगडा की सिद्धि प्राप्त करनेवाले साधकों को ही बालियान कहा जाता है । ये बालियान दो प्रकार के होते हैं— बालियान विशद तथा बालियान देगूझ,देगूझ,देगूझ ान ।

बालियान-विशद तो आयुर्वेद का पंडित होता है । वह शास्त्रोक्त मंत्रप्रक्रिया (जैसे ओंकार मंडित ताबीज अथवा मंत्रपूत गंगाजल— तोया अर्मिता आदि) के साथ ही साथ अपने हाथ से बनायी गयी औषधियों से रोगी को ठीक करता है । बालियान विशद द्वारा निर्मित काथ, अवलेह तथा रसायनवटियां अत्यंत लोकप्रिय तथा लाभप्रद होती हैं । परंतु बालियान देगूझ, देगूझ,देगूझ ान की बात ही कुछ ओर है क्योंकि वह केवल अपनी विलक्षण प्रेतसिद्धि, रांगडाकृपा तथा कुलदेवता के अनुग्रह से रोगोपचार करता है और देखते ही देखते, रोग को हड्डी, पत्थर या कोयले की शक्ल में शरीर से बाहर निकाल लेता है । इस प्रक्रिया में न तो देह से खून निकलता है, न ही कोई घाव बनता है । चार-छह बार की इसी प्रक्रिया से रोगी एकदम स्वस्थ हो जाता है । जिस बालियान से मेरा घनिष्ठ संपर्क था वह 'कैंसर' को भी निर्मूल कर देने का दम भरता था ।



लियान (पुली आदि पुत्र, जो शिक्षक योगाभ्यासी थी है।) के साथ लेखक

जब मैंने बालियानों से इलाज कराया

उन दिनों मैं बाली के प्रेततंत्र का गहराई से अध्ययन कर रहाथा । बालियानों की विलक्षणता मै सुन चुका था अतः उनसे मिलने को उत्कंठित भी था । एक दिन मेरा मित्र धर्मयशा मुझे मेलायू गांव ले गया जहां उसके एक मित्र का इलाज चल रहा था । वह बालियान जाति से 'शत्रिय' (क्षत्रिय) था । उसकी उम्र चालीस के आसपास थी ।

बालियान के घर के अहाते में प्रवेश करते ही मैं हतप्रभ हो उठा । विविध अवस्था की पचासों रूप-सौंदर्य की प्रतिमाभूत युवतियां, वृद्धाएं, बच्चियां तथा पुरुष वहां अर्धनग्न बैठे थे । कटिवस्त्र के अतिरिक्त उनकी देह पर कुछ भी नहीं था । हां, युवतियां अपने वक्षस्थल को या तो बाहों में समेटे थीं या फिर उतारे गये वस्त्र से ही ढंके हुए थीं । सब के हाथों में अगरबत्तियां थीं जिसका धुआं वे सब अपने अंग-प्रत्यंग में लगा रहे थे ।



पुरा पनलुसान (तंत्र सिद्धि केंद्र) में पूजा करते हुए

मेरा रूप-रंग तथा शरीर-सौष्ठव तो सबसे अलग था । अतः मेरे प्रणाम करते ही बालियान ने मुसकराकर मेरे मित्र से पूछा—

—बरू इनी ? (क्या ये नये हैं ?)

धर्मयशा ने बताया— या या ! पंडित बेसार इनी दी यूनिवर्तितास उदयना । मेंगजार भाषा संसकिर्ता । सूडाह दतंग दरी इंडिया । मऊ ताहू तेंतांग बालियान (हां-हां, ये उदयन यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर हैं । संस्कृत भाषा पढ़ाते हैं । भारत से आये हैं । बालियान के विषय में जानना चाहते हैं)

प्रसन्नमन बालियान ने स्वागत करते हुए मुझे बैठाया और मैं उसकी उपचार-विधि देखने लगा । परंतु कैमरे पर हाथ लगाते ही उसने मुझे मना कर दिया, फलतः मैं उस अद्भुत दृश्य को चित्रांकित नहीं कर सका ।

प्रत्येक रोगी की पहले विधिवत नारियल के तेल से मालिश की जाती है । इसके बाद रोगी चार-पांच की संख्या में, बालियान के गृहमंदिर (पेमिराजन) में जाते हैं । मंदिर-द्वार के स्तंभ पर एक पात्र में जल तथा गुलाब के फूल रखे रहते हैं । लोग बारी-बारी से आगे बढ़ते हैं, गुलाब के फूल से जल का छींटा अपने अंग-प्रत्यंग पर देते हैं और मंदिर के गर्भगृह के समक्ष बिछी चटाई पर यथास्थान बैठ जाते हैं ।

एक दल के आ जाने पर, बालियान की पत्नी पूजा प्रारंभ करती है । सबको तीन बार नारियल के तेल का आचमन कराकर तीन-तीन जलती अगरबत्तियां हाथ में दे दी जाती हैं और देवता का ध्यान करने को कहा जाता है । बालियान की पत्नी लंबे साबर मंत्रों का पाठ करती हुई, सभी रोगियों पर जल छिड़कती रहती है ।

पेमिराजन-पूजा की समाप्ति के बाद रोगी बाहर आते हैं तथा अगरबत्ती के धुएं से शरीर को सेंकते जगह-जगह बैठ जाते हैं । धुआं उस अंग में अधिक दिया जाता है जहां रोग है ।

अपनी बारी आने पर रोगी बालियान के पास जाता है और चटाई पर लेट जाता है । अब रोग-परीक्षण (डॉयगनासिस) होता है । बालियान अपनी तांत्रिक अंगूठी दोनों हाथों की मध्यमा पर, दोनों पैरों के अंगूठों पर, दोनों स्तनों पर तथा माथे पर लगाता है । जिस किसी भी अंग में रोग होगा, तांत्रिक अंगूठी का संस्पर्श करते ही रोगी, हलाल किये जाते बकरे की तरह चीख पड़ता है । बस रोग पकड़ में आ गया ।

अब बालियान कटोरी से तेल लेकर रोगयुक्त अंग-विशेष पर मालिश करने लगता है और चार-पांच मिनट की मालिश के बाद ही,

विद्युतगति से चमड़ी फाड़कर, सफेद या मटमैला नुकीला पत्थर का टुकड़ा निकालकर रोगी के हाथ में रख देता है । यह सब इतनी तीव्र गति से होता है कि रोगी को चीखने तक का अवसर नहीं मिलता । पत्थर निकलते ही वह राहत महसूस करता है । उसके फटे चमड़े पर थोड़ा तेल लगा दिया जाता है और प्लास्टिक की थैली में थोड़ा और तेल दे दिया जाता है, घर पर लगाने के लिए !

रोग की भयावहता के आधार पर रोगी को दो-चार बार और आना पड़ता है— पंद्रह-बीस दिन के अंतर से । इस उपचार की कोई फीस नहीं । हां, रोग ठीक हो जाने पर जब पेमिराजन (गृहमंदिर) में रोगी से अंतिम देवपूजा करायी जाती है तब वह अपनी इच्छा से दक्षिणा या खाद्य-सामग्री, फल-फूल या उपहार बालियान की पत्नी को अर्पित करता है ।

बालियान ने इसी विधि से मेरा भी परीक्षण किया । तांत्रिक अंगूठी के विविध केंद्रों पर लगाने पर भी जब मुझे कोई हलचल नहीं हुई तो उसने मुसकरा कर कहा— बागुस (बहुत अच्छा) फिर उसने मेरे पेट की मालिश प्रारंभ की— ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, आड़े, तिरछे ! थोड़ी ही देर में मेरा उदर रुई के फाहे-जैसा नरम हो गया और बालियान की अंगुलियां मेरी पीठ की पसली में कंघी की तरह सिरहन पैदा करने लगीं । जब तक मैं कुछ और सोचता, बालियान ने मेरी नाभि के नीचे का मांस दो अंगुलियों से समेटा और नाभिरंध्र को चीरकर, एक नुकीला मटमैला पतला-सा पत्थर का टुकड़ा बाहर निकाल लिया । मजाक करने के लिए उसने आधा ही बाहर निकाला और मुझे

बाली के हिंदुओं का विश्वास है कि पादप्रक्षालन के ही साथ, आगंतुक के साथ आये प्रेत-पिशाच विनष्ट हो जाते हैं तथा मंत्रजप से व्यक्ति स्वयं पूर्ण सुरक्षित हो जाता है ।

दिखाने के बाद ही, पूरे पत्थर को बाहर निकाला । मैं पहले तो चीखा, बाद में बालियान के ठहाके के ही साथ स्वयं भी हंसने लगा ।

बालियान ने बताया कि यही पत्थर कोमल अंग में (गाल ब्लैडर आदि) बनता है तो जानलेवा हो जाता है परंतु मांसल भाग में रहकर कोई नुकसान नहीं करता । प्रेतोपासक बालियान (वैद्य) का यह हस्तकौशल देखकर मैं दंग रह गया ।

यह संस्मरण कथा मेलायू गांव के बालियान पा सुमेरु की है । एक और बालियान से मैं मिला जो प्राइमरी स्कूल (सेकोलाह पूर्वा) के मास्टर थे । उन्होंने दियासलाई की तीली धंसा-धंसाकर मेरी परीक्षा की और स्वास्थ्य अच्छा बताया । उन्होंने अभूतपूर्व कृपा करते हुए, मेरे दोनों नथुनों में सिरके-जैसी किसी क्षाररस की ऐसी पिचकारी मार दी कि मेरा बुरा हाल हो गया । लगा— जैसे नथुनों में गीली मिट्टी भरकर उन्हें ठस्स बंद कर दिया गया है । मैं सारी रात मुंह से सांस लेता रहा । परंतु

ब्रह्मवेला में मेरी नाक खुल गयी और सारी देह में अद्भुत स्फूर्ति का संचार हो गया।

सावधान ! घर में कोई बीमार है

घर में किसी के बीमार पड़ते ही बालीवासी केवड़े की आरीनुमा पत्ती को दुहरा मोड़कर, घर के बाहर रस्सी से लटका देते हैं। उसे देखते ही हर व्यक्ति सावधान हो जाता है और अकस्मात् घर में प्रवेश नहीं करता। नाते-रिश्तेदार बाहर ही पांव धोकर तथा 'सावेनपत्र' (दुहरी केतकी) को श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर, रोगविषयक साबर मंत्र विशेष का जाप करते हुए ही घर में जाते हैं। बाली के हिंदुओं का विश्वास है कि पादप्रक्षालन के ही साथ, आगंतुक के साथ आये प्रेत-पिशाच विनष्ट हो जाते हैं तथा मंत्रजप से व्यक्ति स्वयं पूर्ण सुरक्षित हो जाता है।

बालीवासी प्रायः प्रत्येक रोग के पीछे किसी 'लेयाक' (भूत-प्रेत) का हाथ मानते हैं और तुरंत ही 'बालियान ड्रे.ड्रे.ड्रे.न' के पास ही ले जाते हैं। बड़ी लंबी और लोमहर्षक कहानी है इन प्रेतोपासक बालियानों की। जो रोग का उपचार करते हैं मंत्रौषधि अथवा प्रेतसिद्धि से, वे तो सहृदय हैं, लोकोपकारी हैं। परंतु इनसे भी अधिक नृशंस उन बालियानों का क्या कहना जो मात्र शक्ति सिद्धि या बदला लेने के लिए संहार एवं अनर्थ करते रहते हैं। रोग उत्पन्न करना या किसी पर मारण-मोहन-उच्चाटन का प्रयोग कर देना उनके बायें हाथ का खेल है। ये नृशंस बालियान मृत्यु के मूल्य पर भी अपना कोई रहस्य प्रकाशित नहीं करते। अतः समाज से अलग-थलग रहते हैं। किसी भी व्यक्ति के वस्त्र, कटे नाखून, कटे बाल, पैर तले की माटी, लार-थूक या पान की पीक (बासेह) को पाते ही ये मंत्र-तंत्र प्रयोग से उसकी चेतना को वशीभूत करके उसे नाना प्रकार की यातना देते हैं। फलतः हर व्यक्ति ऐसे अघोरी बालियानों से सावधान रहता है।

सर्वाधिक भयंकर वे अघोरी बालियान हैं जो प्रेत-शरीर तक धारण करने में समर्थ हैं। उन्हें 'पंगिवा' कहते हैं। ये स्वेच्छानुसार लेयाक-विशेष (वानर, सांप, वन्यसूकर, टोके आदि) का रूप धारण करते हैं और फिर अपने मूल रूप में भी आ जाते हैं। इन दोनों कार्यों की पृष्ठभूमि में होती है बालियानों की चिरकालिक घोर साधना तथा मंत्रसिद्धि ! 'उत्तुंग-बेकुंर' नामक जंगली वानर का रूप धारण करने के लिए जिस मंत्र की सिद्धि बालीद्वीप के तंत्रग्रंथों में बतायी गयी है, वह इस प्रकार है—

'अः हेडक हेड्. हुड्. । उः हेक्क केक्क केक्क केक्क ।'

मनचाहा प्रेतशरीर (बेताल) धारण करानेवाला एक दूसरा सिद्ध साबर मंत्र इस प्रकार है—

ओंग इडिपकुरूम्पचक् संग कुंडविजयमूर्तिपिजिकन गेनि रिग् सरीर सक्ति। ओंग् गेनि प्रलिह्, रिग् पेपुसुह्, गेनि अबग् रिग् हति, गेनि कुलिंग रिग् उंसिलावु, गेनि ब्रोंग् रिग् अपोस, गेनि पराकुन रिग् नाबि, पितु रिग् लिवकारंकु अंग अंग अंग् अंग् अंग् जेमिजिल्... ओंग् लिंदिलांति कायुक संर् संर् संर् ।

इस मारणमंत्र में कुंडविजयमूर्ति (नामक देवता) से मारणयोग्य व्यक्ति के अंग-प्रत्यंग में (प्रलिह=नेत्र, पेपुसुह=फुफ्फुस, फेफड़ा, हति=हृत, हृदय, नाब=नाभि आदि) भयावह आग (गेनि=अग्नि) पैदा कर देने की प्रार्थना की गयी है।

—अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
हिमाचल प्रदेश वि.वि. शिमला-५

गायिका

• अ. चेखोव



उस समय वह जवान, सुंदर और मीठे गलेवाली थी ।

एक दिन पाशा के घर में उसके एक आशिक, कोल्पाकोव साहब बैठे थे । गरमी के मारे दम घुट रहा था । कोल्पाकोव साहब अभी खाना खाकर सस्ती शराब की पूरी बॉटल पी चुके थे । इसलिए उनकी तबीयत ठीक नहीं थी ।

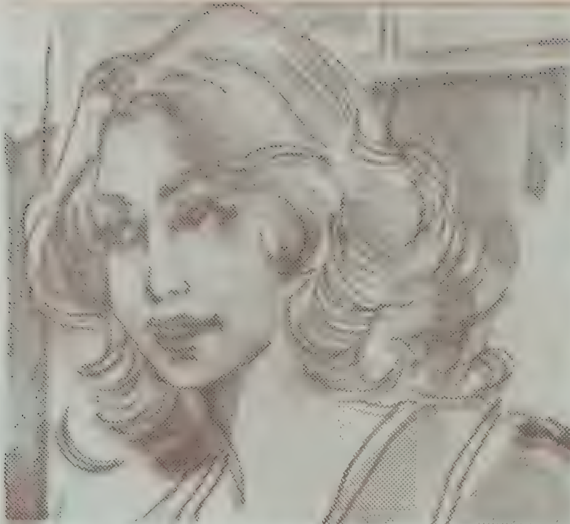
दोनों उस समय का इंतजार कर रहे थे कि गरमी टल जाने के बाद बाहर घूमने जाएं ।

अचानक दरवाजे की घंटी बजी । कोल्पाकोव साहब जो जैकेट और जूते उतारकर बैठे थे, उठकर खड़े हो गये और पाशा की तरफ सवाल-भरी निगाह से देखा ।

''शायद पोस्टमैन हो या कोई सहेली'', गायिका बोली ।

कोल्पाकोव साहब न तो पोस्टमैनों से शरमाते थे, न पाशा की सहेलियों से । फिर भी अपने कपड़े उठाकर दूसरे कमरे में चले गये । पाशा दौड़कर दरवाजा खोलने गयी । उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने देखा कि यह पोस्टमैन नहीं था और सहेली भी नहीं । एक अनजानी महिला थी यह, जवान, सुंदर, अच्छे-अच्छे कपड़े पहननेवाली और देखने में अभिजात !

महिला का चेहरा पीला था । वह मुश्किल



से सांस ले रही थी । जैसे ऊंची-ऊंची सीढ़ियां चढ़कर आयी हो !

"जी, फरमाइए", पाशा बोली ।

महिला ने जवाब नहीं दिया । एक कदम आगे बढ़ी, कमरे पर नजर दौड़ायी और बैठ गयी । लगता था कि थकावट या बीमारी के कारण वह खड़ी नहीं हो सकती थी । फिर कुछ कहने की कोशिश करते हुए वह अपने पीले होंठ हिलाने लगी ।

"मेरे पति आपके यहां हैं ?" आंसूभरी आंखें पाशा की तरफ उठाकर महिला ने पूछा ।

"कौन पति ?" पाशा फुसफुसायी । डर के मारे उसके अंग-अंग ठंडे हो गये ।

"कौन पति ?" उसने कांपते हुए फिर पूछा ।

"मेरे पति । कोल्पाकोव साहब !"

"न...नहीं मेम-साहब...मैं...मैं किसी पति को नहीं जानती ।"

एक मिनट तक सन्नाटा छाया रहा । अनजानी महिला ने अपने पीले होंठों पर रुमाल लगाया । वह कांप रही थी और सांस खींच रही थी । पाशा उसके सामने स्तब्ध खड़ी थी और आश्चर्य तथा भय भरी निगाहों से उसे देख रही थी ।

"तो आप कह रही हैं कि वह यहां नहीं हैं ?" महिला की आवाज कठोर हो गयी । मुसकान आ गयी अजीब-सी ।

"मैं...मैं नहीं जानती, आप क्या पूछ रही हैं ।"

"आप नीच हैं, गंदी हैं, कमीनी हैं !" महिला बड़बड़ायी पाशा की तरफ नफरतभरी निगाह डालकर, "हां, हां, नीच...बहुत खुश हूं मैं कि तुमसे यह कहने का मौका मिला आखिर मुझे !"

पाशा को यह लगा कि इस गोरी, पतली अंगुलियोंवाली कुलीन महिला को मैं किसी गंदी चीज-जैसी मालूम पड़ती हूं । अपने फूले-से लाल गालों और चेचक के दागों से भरी नाक पर शरम आने लगी । पाशा को यह भी लगा कि अगर मैं पतली होती, पाउडर नहीं लगाती होती तो अपनी बेशरमी छिपायी जा सकती थी और तब इस अनजानी महिला के सामने लजाना नहीं पड़ता !

"मेरे पति कहां हैं ?" महिला बोली, "हां, वह यहां हैं कि नहीं मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन मैं यही कहने आयी हूं कि उन पर गबन का आरोप है । खोज अभी शुरू हुई है उनकी । मिलते ही गिरफ्तार किये जाएंगे । यह फल चखिए ।"

महिला उठी और बड़ी घबराहट में इधर-उधर घूमने लगी । पाशा उसकी तरफ ताक रही थी और मारे डर क कुछ समझ नहीं पा रही थी ।

"वह मिलते ही आज पकड़े जाएंगे", महिला सिसकी । उसकी आवाज में अपमान

और घृणा थी ।

"हां मुझे मालूम है, उन्हें इस भयानक उलझन में किसने फंसाया है ! नीच, हरामजादी कहीं की !" (महिला का मुंह बिगड़ गया और नाक चढ़ गयी, घृणा के मारे)"

"मैं बेबस हूं, सुनो नीच, मैं बेबस हूं, तुम्हारा बस है, लेकिन मेरा और मेरे बच्चों का साथ देनेवाला भी है ! भगवान सब कुछ देखता है । न्याय है भगवान का ! मेरे हर आंसू, हर टूटी रात का दाम चुकाएगा भगवान ! समय आएगा जरूर, मुझे जब तुम याद करोगी ।"

फिर सन्नाटा छा गया । महिला निराशा में

को जबरदस्ती नहीं घसीटती ! जो चाहे वह आ जाए !"

"मैं कह रही हूं कि गबन खुल गया है । उन्होंने ही गबन किया है । तुम्हारी-जैसी... तुम्हारे लिए ही उन्होंने जुर्म किया !"

"सुनो", महिला पाशा के सामने रुकी ।

"तुम्हारे जीवन में कोई मर्यादा या सिद्धांत नहीं हो सकते । तुम बस, इसीलिए जी रही हो कि दूसरों का जीवन बरबाद किया जाए, यही तुम्हारा इरादा है । लेकिन शायद तुम इतनी नीच हो चुकी हो कि तुममें तनिक भी मानवता नहीं बची । उनकी पत्नी और बच्चे हैं । अगर उनको सजा हो जाए तो हम बच्चों के साथ भूखों मर

महिला ने जवाब नहीं दिया । एक कदम आगे बढ़ी, कमरे पर नजर दौड़ायी और बैठ गयी । लगता था कि थकावट या बीमारी के कारण वह खड़ी नहीं हो सकती थी । फिर कुछ कहने की कोशिश करते हुए वह अपने पीले होंठ हिलाने लगी ।

घूम रही थी । पाशा उसे चौंककर देख रही थी । मालूम होता था कि कोई मुसीबत आने वाली थी ।

"मेम-साहब मैं कुछ नहीं जानती", पाशा बोली और रो पड़ी ।

"झूठ !" महिला चिल्लायी । उसकी आंखें चमकीं, "मुझे सब-कुछ मालूम है ! मैं तुम्हें बहुत पहले ही जान चुकी हूं ! पिछले महीने वह तुम्हारे यहां रोज आया करते थे !"

"जी हां, तो क्या हुआ ? क्या है इसमें ? मेरे पास बहुत-से मेहमान आते ही हैं । मैं किसी

जाएंगे । समझी न ! फिर भी उनको और हमें गरीबी और बेइज्जती से बचाने का एक रास्ता है । अगर मैं आज ही नौ सौ रूबल वापस कर दूं, तो उनको छोड़ दिया जाएगा ।"

"कौन-से नौ सौ रूबल ?" पाशा ने धीमी आवाज में पूछा ।

"मैं कुछ नहीं जानती । मैं...मैंने नहीं लिये... ।"

"मैं तुमसे नौ सौ रूबल नहीं मांगती । तुम्हारे पास होंगे ही नहीं । बात कुछ और है । तुम-जैसी वेश्याओं को मेहमान जेवरात के

तोहफे दिया करते हैं । मेरे पति के दिये हुए जेवरात वापस करो बस !"

"मेम-साहब मुझे उनसे कुछ नहीं मिला !" पाशा चिल्लायी । वह कुछ सोचने लगी ।

"तो पैसे कहां गये ? मेरी और अपनी सारी दौलत उड़ा दी है उन्होंने । सरकारी भी । कहां गया यह सब-कुछ ? सुनो...मैं गुस्से में थी, तुमको बहुत ही बुरी बातें सुना चुकी हूं, पर माफी चाहती हूं । हां, तुम मुझसे नफरत करती होगी, लेकिन...अगर तुम क्षमा कर सकती हो, तो मेरे मन की बात समझ लो । मैं दुआ मांगती हूं, जेवरात दे दो !"

मारे ।

"यह क्या दे रही हो ? मैं भीख तो नहीं मांगती, वही मांग रही हूं जो तुम्हारा अपना नहीं । जो मेरे पति से, उस कमजोर, बदनसीब आदमी से चूस लिया है तुमने ! बुधवार को जब मैंने तुम्हें उनके साथ देखा नदी के किनारे, तुम कीमती जेवरात की लड़ी पहने हुए थीं ! मेरे सामने मासूम बच्ची का नाटक मत रचाना ! आखिरी बार पूछ रही हूं, जेवरात दोगी या नहीं ?"

"अजीब-सी बातें हैं आपकी ।" पाशा को बुरा लगा ।

महिला ने ठंडी सांस लेकर कांपते हाथों से जेवरात रूमाल में लपेट लिये । कुछ बोली नहीं, सिर भी नहीं हिलाया । जल्दी से चली गयी । पासवाले कमरे का दरवाजा खुला, कोल्पाकोव साहब निकले । मुंह पीला-सा था । ऐसे दीख रहे थे जैसे कि कुछ कड़ुवा खा लिया हो, आंखों में आंसू चमक रहे थे ।

"ओह !" पाशा बोली, "मैं क्यों न देती, लेकिन भगवान मुझे दंड दे अगर झूठ बोलूं, उनसे मुझे कुछ नहीं मिला है । सच बात है ।" हां, ठीक है, पाशा शरमायी ।

"दो चीजें मिली हैं, एक बार । लीजिये, आप चाहें तो मैं दे देती हूं ।"

पाशा ने एक डिब्बी निकाली और एक सस्ती-सी सोने की कलाई और एक पतली-सी माणिकवाली अंगूठी महिला को दे दी ।

"यह लीजिए ।"

महिला का मुंह लाल हो गया अपमान के

"सच कह रही हूं कि आपके पति से मुझे इस कलाई और अंगूठी को छोड़कर कुछ नहीं मिला है । वह यहां बस मीठे पकोड़े ही लाया करते थे ।"

"मीठे पकोड़े !" महिला क्रोधपूर्वक हंसी, "घर में बच्चों के लिए खाना नहीं, और यहां मीठे पकोड़े लाकर देते हैं । तो क्या तुम जेवरात वापस करने से साफ इनकार कर रही हो ?"

कोई जवाब नहीं मिला, तो महिला बैठ गयी और कुछ सोचने लगी ।

"अब क्या करूं ?"



वह बोली, "अगर मैं नौ सौ रूबल वापस नहीं कर देती, तो उनके लिए सब खत्म है, और मेरे लिए, मेरे बच्चों के लिए भी ! मार डालना नीच को या पांव पड़ना इसके ?"

महिला ने मुंह पर रुमाल लगाया और रो पड़ी ।

"मैं क्षमा चाहती हूं ।"

वह सिसकी, "तुमने ही मेरे पति को बरबाद किया है, तो बचाओ उन्हें ! उन पर कुछ दया न हो, तो बच्चे...बच्चे...क्या कुसूर है बच्चों का ?"

पाशा ने मन-ही-मन भूखे बच्चों की तस्वीर बनायी और खुद रो पड़ी ।

"मैं क्या करूं मेम-साहब ।"

वह बोली, "आप कहती हैं कि मैं नीच हूं और आपके पति का दिवाला पिटवाया, लेकिन भगवान साक्षी है, मुझे उससे कुछ नहीं मिला है ! हमारी कंपनी में सिर्फ 'मोटी' को एक अमीर रखता है, बाकी गायिकाएं सूखी रोटी ... खुश होती हैं । आपके पति एक पढ़े-लिखे, ...ले आदमी हैं, वह आया ही करते थे । हम लोग इसके बिना नहीं रह सकतीं ।"

"मैं बस जेवरात मांग रही हूं ! जेवरात दे ! मैं रो रही हूं, अपनी इज्जत गिरा रही हूं । ...हो तो मैं पांव पड़ूं तुम्हारे । यह देखो ।"

पाशा घबराकर चिल्लायी और डर के मारे ...थ नचाने लगी । उसे यह लगा कि यह ...र-सी महिला, जो नाटक-जैसी ऊंची बातें ... रही है सचमुच पांव पड़ सकती है— हां, ...ने गौरव से, अपने को ऊंचा करने के लिए ...र गायिका को नीचे गिराने के लिए !

"हां ठीक है, मैं जेवरात दे दूं ।"

पाशा बोली आंखें पोंछकर, "यह लीजिये । ...न आपके पति के नहीं हैं, दूसरे मेहमानों के ... यह लीजिए..."

पाशा ने आलमारी की ऊपरी डिब्बी खोली ...र हीरे की एक पिन, मूंगों की मनकी, कई ...लाइयां और अंगूठियां निकालीं ।



"लीजिये, अगर चाहें, तो लीजिए, लेकिन मुझे आपके पति से कुछ नहीं मिला है । अगर आप शरीफ-ईमानदार हैं, उनकी धर्मपत्नी हैं, तो अपने सुहाग को अपने पास रखिए...है, न । मैंने उन्हें थोड़े ही बुलाया, वह खुद आ गये..."

महिला ने आंसूभरी आंखों की नजर जेवरात पर डाली और बोली ।

"यह तो पूरा नहीं हुआ...पांच सौ तक भी नहीं होगा..."

पाशा ने झपटकर डिब्बा पलटा और एक सोने की कलाईवाली घड़ी, सिगरेट केस और कई पिन निकालकर बोली ।

"बस और कुछ नहीं बचा । चाहें तो आप तलाशी ले लें ।"

महिला ने ठंडी सांस लेकर कांपते हाथों से जेवरात रुमाल में लपेट लिये । कुछ बोली नहीं सिर भी नहीं हिलाया । जल्दी से चली गयी । पासवाले कमरे का दरवाजा खुला, कोल्पाकोव साहब निकले । मुंह पीला-सा था । ऐसे दीख रहे थे जैसे कि कुछ कड़ुवा खा लिया हो, आंखों में आंसू चमक रहे थे ।

"क्या मुझे आपसे कोई जेवरात मिले हैं ?" पाशा गुस्से में बोली, "कब मिले जेवरात, बताइए तो सही !"

"जेवरात ! क्या बकवास है जेवरात ! कोल्पाकोव ने सिर थामा, "हे भगवान ! वह तो तेरे सामने रो रही थी, अपनी इज्जत मिट्टी मिला रही थी । मैं पूछ रही हूं, आपने मुझे जेवरात दिये हैं कि नहीं !" पाशा चिल्लायी ।

"हे भगवान, वह इतनी शरीफ, इतनी ईमानदार, इतनी इज्जतदार औरत है और...इस वेश्या के पांव पड़नेवाली थी । मैं ही कुसूरवार हूं ! मैंने ही यह सब होने दिया है !" कोल्पाकोव साहब ने सिर थामा और कराहने लगे, "नहीं, नहीं, मैं अपने को कभी माफ नहीं करूंगा । नहीं करूंगा ! हट जा, छोड़ दे मुझे, नीच !" चिल्लाकर उसने पाशा को घृणा से कांपते हाथों से हटाया ।

"वह पांव पड़ने को तैयार थी । और किसके ! तेरे ! हाय भगवान !"

उन्होंने जल्दी से अपनी पोशाक पहन ली और पाशा की तरफ नफरतभरी नजर डालकर चले गये ।

पाशा लेट गयी और जोर से रोने लगी । अपने जेवरात की याद आयी । पछताने लगी कि किसलिए दे दिये ! फिर याद आयी कि तीन साल पहले उसने बेकसूर होते हुए अपने एक मेहमान व्यापारी की मार भी खायी थी । वह और भी आंसू बहाने लगी ।

(अनुवाद : डॉ. यूजीनिया वैनीना)

कहां से शुरू हुआ चांद-तारे का निशान

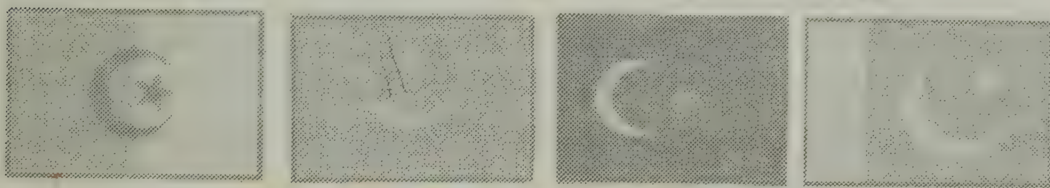
• नवीन खन्ना

अर्द्धचंद्र और सितारे के निशान को आमतौर पर इसलाम का प्रतीक माना जाता है । संसार के बहुत से मुसलिम देशों ने इस निशान को राष्ट्रीय चिह्न के रूप में अपनाया हुआ है ।

तुर्की ने प्रयोग किया

आधुनिक युग में अर्द्धचंद्र और सितारे को राष्ट्रीय-प्रतीक के रूप में सर्वप्रथम तुर्की द्वारा इसे इसलाम के प्रतीक के रूप में अपना लिया । जिन अन्य देशों ने इस चिह्न को अपने राष्ट्रीय ध्वज पर प्रदर्शित किया उनमें पाकिस्तान, अलजीरिया, ट्यूनीशिया, मैरिटेनिया इत्यादि प्रमुख हैं लेकिन इस चिह्न को राष्ट्रीय ध्वज में अपनानेवाले देशों ने चिह्न के रंग अथवा इसकी पृष्ठभूमि के रंग में अंतर अवश्य रखा है । इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं चिह्न में प्रदर्शित सितारों के

बायें से अलजीरिया, मैरिटेनिया, तुर्की और पाकिस्तान के चिह्न



प्रयोग किया गया । तुर्की के राष्ट्रवादी इस चिह्न को २५ अगस्त, १९२२ की संध्या के साथ जोड़ते हैं । इसी दिन कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की सेना ने यूनानी सेना को अनतोलिया के युद्ध में पराजित किया था । तुर्की के लोगों का मानना है कि इस दिन यूनानी सेना के रक्त की नदी में अर्द्ध चंद्र और तारे का बिंब परिवर्तित होकर तुर्की की विजय का संदेश दे रहा था । यही कारण है कि तुर्की का राष्ट्रीय-ध्वज लाल रंग का है जिसमें श्वेत रंग का अर्द्धचंद्र और सितारा प्रदर्शित है ।

तुर्की की देखा-देखी अन्य मुसलिम देशों ने कोणों की संख्या में भी अंतर मिलता है ।

कृष्ण-पक्ष का चंद्र और शुक्र ग्रह

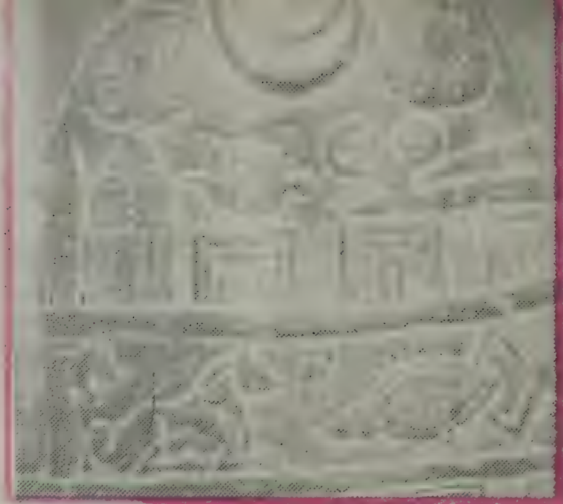
चंद्र का आकार यदि अंगरेजी अक्षर 'सी' की तरह हो तो यह कृष्ण-पक्ष का चंद्र होता है । इसके विपरीत अंगरेजी अक्षर 'डी' के आकार का चंद्र, शुक्लपक्ष का चंद्र होता है । शिवजी की जटाओं में प्रदर्शित चंद्र का खाली वाला भाग अकसर ऊपर की तरफ होता है । यह कृष्ण-पक्ष का ही चंद्र है । मुसलिम देशों द्वारा अपनाया गया चंद्र भी कृष्ण-पक्ष का चंद्र है । लेकिन पाकिस्तान इत्यादि देशों में प्रतीक के रूप में दोनों प्रकार के अर्द्धचंद्रों का प्रयोग देखने को

मिलता है । ध्वज के पारदर्शी होने के कारण 'गी' का आकार दूसरी तरफ से 'डी' की तरह प्रतीत होता है । इस कारण वहां सामान्यतः दोनों प्रकार के चंद्रों के प्रयोग को स्वीकार कर लिया गया है, यानी सितारा कभी चंद्र की दाहिनी तरफ होता है और कभी बायीं तरफ ।

अलजीरिया के राष्ट्रीय ध्वज में लाल रंग का अर्द्धचंद्र हरी तथा श्वेत दोनों पट्टियों में फैला हुआ है और लाल रंग का सितारा चंद्र के दाहिनी तरफ श्वेत पट्टी पर अंकित है । मैरिटेनिया के राष्ट्रीय ध्वज में हरी पृष्ठभूमि में श्वेत रंग का चंद्र और तारा प्रदर्शित है लेकिन चंद्र ऊपर की तरफ से खाली है और तारा चंद्र के ऊपर ही है । पाकिस्तान के राष्ट्रीय ध्वज में श्वेत रंग का चंद्र और श्वेत तारा हरित पट्टी पर है, लेकिन चंद्र का खालीवाला भाग ऊपर के दाहिने कोने की तरफ है । ट्यूनीशिया के राष्ट्रीय ध्वज में लाल पृष्ठ भूमि के भीतर स्थित एक श्वेत चक्र में लाल रंग का ही अर्द्धचंद्र और सितारा दिखाया गया है । अर्द्धचंद्र और सितारे के चिह्न में शुक्र-ग्रह को सितारे के रूप में प्रदर्शित करते हैं । शुक्र-ग्रह आकाश का सबसे अधिक चमकवाला सितारा है ।

वैज्ञानिकों की असहमति

अमरीका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा के ज्योतिर्विद ब्रेडले स्केफ्रर तुर्की के राष्ट्रवादियों के इस तर्क से सहमत नहीं हैं कि २५ अगस्त, १९२२ की रात्रि में शुक्र-ग्रह अर्द्धचंद्र के संपुट में था । उपरोक्त वैज्ञानिक के अनुसार उस रात्रि में न केवल शुक्र-ग्रह चंद्र से काफी दूर हटा था, बल्कि दो अन्य ग्रह शनि और बृहस्पति भी इसके बहुत निकट थे । सबसे बड़ी बात तो



मेसोपोटेमिया सभ्यता में कई हजार वर्ष पूर्व अर्द्धचंद्र और तारे का प्रयोग मिलता है ।

है कि उस दिन चंद्र आकाश में उसी रूप में था जैसा तुर्की के ध्वज पर प्रदर्शित है । इससे यूनानियों के खून की नदी में परछाई वाली बात गलत सिद्ध होती है, क्योंकि वैसी स्थिति में चंद्र को उल्टा दिखाया जाना चाहिए था ।

यदि इस बात को मान भी लिया जाए कि राष्ट्रीय प्रतीक चुनते समय जिन पहलुओं पर विचार किया जाता है, जरूरी नहीं कि वे सभी पहलू उस स्वीकृत चिह्न में समाहित किये जा सकें । फिर भी यह बात माननी पड़ेगी कि उपरोक्त चिह्न स्वयं तुर्की के ओटमन सुल्तानों द्वारा सन् १९२२ से बहुत पहले प्रयोग में लाया जाता रहा है । तुर्की द्वारा सन् १८६३ में जारी किये गये प्रथम डाक टिकट पर यह निशान छपा हुआ मिलता है । इसके अतिरिक्त तुर्की के सुल्तान सलीम तृतीय ने उन्नीसवीं सदी के शुरू में इस निशान को अपने झंडे में अपनाया था ।

भारत, मिस्र, मेसोपोटेमिया इत्यादि विश्व की विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं में इस चिह्न को हजारों वर्षों से महत्त्व देने के प्रमाण पाये जाते हैं । भारत में शिव के मस्तक पर अर्द्ध चंद्र प्रदर्शित है । प्राचीन मिस्र के 'इआ' देवता के मस्तक पर भी यही चिह्न प्रदर्शित है । इसके

अतिरिक्त लीबिया, यमन, इजरायल, रोमानिया, इंगलैंड इत्यादि देशों में इस चिह्न के प्रयोग विषयक हजारों वर्ष पुराने प्रमाण मिलते हैं । इस विषय में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण सिकंदर महान के पिता फिलिप (ई. पू. ३३९) के युद्ध संबंधी भी है'। इसके एक पक्ष की देवी का प्रतीक चिह्न अर्द्धचंद्र और सितारा था ।

मेरीलैंड के अंतरिक्ष ज्योतिर्विद इमाद अहमद तथा वाशिंगटन के पुरातत्व-ज्योतिर्विद गेराल्ड हार्किंस दोनों यह मानते हैं कि रमजान की शबे कद्र २७ को कुरान मुहम्मद साहब पर नाजिल हुआ तथा उस रोज चंद्र और शुक्र ग्रह उसी स्थिति में थे जिस स्थिति में यह निशान कई देशों में राष्ट्रीय चिह्न में प्रदर्शित है ।

इसमें संदेह नहीं कि पिछले ४५०० वर्ष से उपरोक्त चिह्न विश्व की लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं तथा धर्मों में किसी न किसी रूप में प्रचलित रहा है । एक मान्यता यह भी है कि कैलेंडर में प्राचीनकाल से विभिन्न सभ्यताओं द्वारा 'चंद्रतिथियां' तथा 'सौर तिथियां' प्रयोग में लायी जाती रही हैं । चंद्र तिथियों को प्रयोग में लानेवाली सभ्यता तिथि-पत्रों और अन्य धार्मिक स्थलों पर प्रतीक के रूप में चंद्र के चिह्न को प्रदर्शित कर देती थी । प्रारंभ में अर्द्धचंद्र और तारे का निशान ज्योतिष संबंधी गणनाओं का चिह्न था, जिसे बाद में अन्य क्षेत्रों में भी प्रयुक्त किया जाने लगा लेकिन इसे सर्वाधिक महत्त्व इसलाम के उदय के बाद ही मिला । इसके बाद यह निशान मुसलिम सिक्कों, मसजिदों कशीदाकारी, पॉट्री इत्यादि का अभिन्न अंग बन गया ।

—सी-४५२, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८

इश्क भी क्या जुदा-जुदा

उसका होना भी न होने के बराबर है
जिसके अंदर कोई तूफान नहीं होता
—मोहम्मद हनीफ

मैंने तो यूं ही राख में फेरी थीं उंगलियां
देखा जो गौर से तेरी तस्वीर बन गयी
—सलीम बेताब

हर्फ व कलम को जिसने नये जाविए दिये
क्या शख्स था कि अपने ही साये में सो गया
—अख्तर होशियारपुरी

तुम सलामत रहो हजार बरस
हर बरस के हों दिन पचास हजार
—गालिब

भरे तो कैसे परिंदा भरे उड़ान कोई
नहीं है तीर से खाली यहां कमान कोई
—जकी तारिक

देखा है अक्ल-वालों को आपस में उलझते
दीवानों को दीवाने से लड़ते नहीं देखा
—दिवाकर राही

अब भी इक उम्र पे जीने का न अंदाज आया
जिंदगी छोड़ दे पीछा मेरा मैं बाज आया
—शाद अजीमाबादी

अचानक सोनेवाला देर से बेदार था शायद
ज्यादा जागनेवालों को गहरी नींद आती है
—शक्स

दहशत में देख के वह रोज बुलाता था मुझे
अब जो बस्ती में हूं मौजूद तो घर गायब है
—अब्दुल अलीम तालिब

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

व्यंग्य

"यार, आप लोगों की तरफ कैसे रहे चुनाव ?"

"लगभग शांति रही । बस...चार-पांच ही मरे ।"



●

"आप क्या करते हैं ?"

"जी, सरकारी महकमे में हूं ।"

"तो, यूं कहिए न, कि कुछ नहीं करते । सि
मौज करते हैं ।



शहर के एक चिड़ियाघर में नन्हे शावक को गरमी से बचाने के लिए कूलर की व्यवस्था की गयी ।

मित्र ने यह खबर सुनी तो कह उठे, "देख रहे हो । क्या नसीब हैं और एक हम हैं, खस की टट्टियां भी नसीब नहीं ।"

मैंने उन्हें समझाया, "दोनों स्थितियों में बहुत अंतर है । शावक राष्ट्रीय संपत्ति हैं । उन्हें बचाना राष्ट्र का कर्त्तव्य है, अभी इस देश का नागरिक राष्ट्रीय संपत्ति की परिभाषा में नहीं आता है ।"

—महेश राजा



पति, "बेगम आज बाजार से मेरे लिए कंघी लेते आना ।"

पत्नी, "क्योंजी, दो साल पहले ही तो खरीदकर दी थी, वह कहां गयी ।"

पति, "बेगम, कंघी का आखिरी दांत आज ही टूटा है ।"



●

कंजूस पति, "चलो, एक-एक भेल और हो जाए"

पत्नी, "लेकिन अभी तो हमने एक भी भेल नहीं खायी ।"

पति, "याद करो, पांच साल पहले जब हम यहां घूमने आये थे तब नहीं खायी थी क्या !"

—संजय पठाड़े 'शेष'

तरंग



मौसम

एक बुढ्ढे ने
दूसरे बुढ्ढे से कहा
चेहरा गमगीन है !
दूसरे ने कहा—
मौसम रंगीन है ।

—विभा कुमारी

वायदे

उन्होंने
चुनाव में
वायदे बड़े-बड़े
कर दिये
मगर बाद में
हाथ खड़े
कर दिये ।



औकात

इनकी
उनकी
सब की
देख ली औकात
नतीजा वही
ढाक के
तीन पात ।

—मिश्रीलाल जायसवाल

कबिरा

कबिरा खड़ा दूल्हों के
बाजार में
कहता यूं मुसकाए
जो भी तगड़ा माल दे
छांट बीन ले जाए ।



याद

हंसी है या
कल-कल निनाद
जनाब
बीते दिन की याद ।

विज्ञापन

विज्ञापन
परिवार नियोजन के
ज्यों-ज्यों बढ़ते जाए
कहें कबीरदास
हंस-हंस कर
त्यों-त्यों जनसंख्या
बढ़ती जाए ।

—राजश्री

दर्पण के पीछे

• विजया वासुदेव

चारों तरफ अफसरों की कोठियां और बीच में बेहद बड़ा-सा लॉन । जहां बच्चों के लिए तरह-तरह के झूले, फिसल पट्टी, मेरी गो राउंड आदि हैं और इसी पार्क के एक कोने में है— तरणताल । कोठियों का लॉन खत्म होने के बाद काली डामर की पक्की सड़क पर साढ़े सात और पौने आठ के बीच का दृश्य एकदम ऐसा होता है— जैसे सेनाएं खेमे से अपने-अपने रथ पर सवार होकर निकल रही हों ।

साहबों की गाड़ियां साढ़े सात से पौने आठ के बीच सरसराती निकल जाती हैं और उसके बाद उनकी मेम साहब (वैसे यह संबोधन विचित्र लगता है जब बिखरी-सी अलसाई लापरवाह ऊंची-नीची साड़ी में, या बेतरतीब कुर्ते पाजामे में या ऊंचे-नीचे कफ़्तान या गाउन में लगायी हुई नितांत भारतीय गोरी से भूरी और भूरी से श्यामवर्णी होती छवि को देखकर) एक दूसरे से सड़क के आर-पार समाचारों का आदान-प्रदान करती है । वैसे भी कल सुबह इसी हाल में ये यहां मिली थी । दोपहर को भी एक दूसरे को या तो फोन किया होगा या स्वयं ही पधारकर मिलने का मिलना हो गया चाय पार्टी साथ में । रात क्लब में ताश या किटी पर थे ही । फिर भी पता नहीं कहां-कहां से समाचार आ जाते हैं सुनने-सुनाने के लिए ।

इसी तरह से ही आयी थी दक्षिण से संगमरमर-सी गोरी । भंवरे-जैसे काले लेकिन एड़ी तक पहुंचने की कोशिश करते काले, घुंघराले बालोंवाली गुड़िया-सी सुकन्या—रंगानाथन । उनके पति जगदीप रंगानाथन काले, लंबे छह फुट से कुछ ऊंचे थे लेकिन उनके संग बिलकुल भोली-सी निर्मल हंसी बिखराती सुकन्या बिलकुल स्वाभाविक लगती थी—जैसे गहरे हरे पत्तों के बीच खिली चमेली । जब भी जगदीप की गैरहाजिरी में महिला मंडली पधारती सुकन्या इतनी विह्वल हो उठती कि उसे समझ में नहीं आता वो उनका स्वागत सत्कार कैसे करे ? ये महिला मंडली कम चुस्त चालाक नहीं है । हफ़्ते में एक दिन उसकी पाक कला का अच्छा खासा आयोजन करवा ही लेती । व्यर्थ है यह टेलीफोन अगर उनके आगमन की पूर्व सूचना सुकन्या को न पहुंचाये और आज इडली होनी चाहिए या उतपम अथवा मेदू बड़ा यह सुकन्या नहीं खानेवाली बताएंगी । वो बस बनवाभर लें । सुकन्या इन महिलाओं की तरह नहीं थी । सीधी भोली, चतुरता नाम मात्र को नहीं है उसमें । हिंदी टूटी-फूटी-सी जानती है और अंगरेजी भी वैसी ही । लेकिन जहां शब्दों की कमी होती है उसे वो अपनी निर्वेग झरती हंसी से पूरा कर लेती है ।

सुकन्या को—जैसे रम्मी की लत ही लग गयी । घर से अपने संग लायी नौकरानी पापा-अम्मा के हवाले कर और रसोई करके अब वो सारे दिन सहेलियों में और रात को पुरुष महिलाओं की मंडली में ताश के बावन पत्तों के बीच खोयी रहती । जगदीप के मुंहलगे कर्मचारी ने कहा, साहब मैडम ज्यादा ताश में लगी रही तो आप को भी भूल जाएंगी अच्छा



हो इन्हें आप जीते-जागते खिलौने देकर ताश भुलवा दें । जगदीप 'हूं' करके सिगार मुंह में लगाये कुछ सोचते रहे । फिर थोड़ी ही दिन बाद एल. टी. सी. लिया और साथ ही ली महीनेभर की छुट्टियां । कुछ दिन घूमे फिरे । उसके बाद सुकन्या को मायके छोड़कर साहब अकेले लौट आये और खबर दी, ऐसी हालत में ये पहाड़ी जगह उसे सूट नहीं करती, फिर यहां बड़े-बूढ़े भी तो नहीं है कोई । तब की गयी सुकन्या डेढ़ साल बाद लौटी तो उसके गोद में नन्हा सुमेध आठ महीने का था ।

एक दिन सुबह जब अफसरों की गाड़ियों का लाव-लश्कर निकल रहा था तो सुकन्या की पड़ोसन मिसिज यादव ने कहा, "सुकन्या तुमने कुछ देखा ?"

"क्या जी ?" सुकन्या अपने बेटे को दुलारते हुए बोली ।

"ये तुम्हारे साहब की गाड़ी अपनी लेडी डॉक्टरनी की गाड़ी के पीछे जाती है ।"

"तो क्या ? सुकन्या निर्विकार-सी बोली । हर गाड़ी किसी के आगे और किसी के पीछे ही तो जाएगा ही । ये घर 'सेमी सर्किल' में न बना है सारा ।

मिसिज यादव ने कहा, "याद करो पहले तो ऐसा नहीं था । आगे हमारे साहब की गाड़ी होती थी । फिर आपकी गाड़ी के पीछे लेडी डॉक्टरनी की ।"

"उससे क्या, सुकन्या बेफिक्री-सी अंदर जाने लगी ।"

"अरे रुको भी, आने के समय भी देखना । पहले डॉक्टरनी आएंगी फिर तुम्हारा साहब । फिर मिसिज यादव" खीजती-सी आंखों से

सुकन्या को देखते हुए बोली, "बाकी कोई तो इस तरह डॉक्टरनी के पीछे-पीछे नहीं आता । मैं देख रही थी तुम यहां नहीं थी तभी से ये सिलसिला शुरू हुआ । कुछ सोचती कुछ समझने का प्रयास करती सुकन्या बोली, "ये सिलसिला क्या होता जी ?"

"सिलसिला !" मिसिज यादव ने दोहराया, "सिलसिला माने—अफेयर ।"

सुकन्या खिलखिला उठी, "छोड़ो जी आप तो जोक करता है ।" घर की तरफ कदम बढ़ाते हुए वो बोली, "जगदीप तो आंख पूरा खोलकर हमें भी नहीं देखता । दूसरा किसको देकेगा—और क्यूं देकेगा ?"

मिसिज यादव हंस दी, "तुमको क्या देखेगा इतना गोरा रंग होने से अच्छा नहीं । सुकन्या तुम्हारा रंग की चमक से उसकी आंख बंद होती है । डॉक्टरनी काला है तो साहब पूरा आंख खोल के देखता है ।" सुकन्या की हंसी मिसिज यादव की बात ने उसके चेहरे से पोंछ दी । अनमनी-सी वो घर के अंदर आ गयी ।

खाना खाने के लिए जगदीप आये तो उन्होंने घर घुसते ही सुकन्या की उदासी पकड़ ली । खाना लगाने के प्रयास में सुकन्या स्वयं को व्यस्त रखने का प्रयास करती रही ।
जगदीप ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए पूछा, "तबियत तो ठीक है ना ?" बस इतना पूछना था कि सुकन्या की आंखें सावन-भादों की भरी घटाओं-सी बरस पड़ीं । "हुआ क्या है बताओ तो ? अरे !! अरे !! कैसे बच्चों-सी रो रही हो तुम तो " जगदीप उसका चेहरा अपने हाथों में समेटते हुए बोला, "मुझे पता भी चले आखिर हुआ क्या है ?" मां की चिट्ठी आयी है ?

"न" में सिर हिलाती सुकन्या बोली, "मां की बहुत याद आ रही है ।" इससे अच्छा बहाना सुकन्या को दूसरा नहीं मिल सकता था । जगदीप लाड़ से दुलारता हुआ बोला, "तो हो आओ गांव दस-बारह दिन में ले आऊंगा । मैं वालटेयर जा रहा हूं टूर से जाते हुए एक दिन की छुट्टी लेकर तुम्हें गांव पहुंचा दूंगा ।"

"और तुम्हें यहां कौन देखेगा ?" सुकन्या उत्सुक होते हुए बोली ।

चलो मेरे साथ टूर पर चलो । बाहर घूमकर आएंगे तो तुम्हें अच्छा लगेगा । आज ही अपनी पैकिंग— चैकिंग कर लेना । इस बार तो मुन्ना भी हमारे साथ है, ढेर-सारा सामान लेकर जाना पड़ेगा । अब आकर थोड़ा-सा लेट लो ।" जगदीप सौंफ की फंक्की भरते हुए बोला ।

अगले दिन तड़के सुबह ही वह वालटेयर के लिए रवाना हो गयी । इस बार वो पप्माम को भी अपने साथ लेकर गयी । वहां शहर में बच्चे को लेकर कैसे घूमा जा सकता है भला ? फिर इस बार जितनी खरीदारी करनी है पहले कभी नहीं की । नयी साड़ियां, फैंसी सैंडिल और मेकअप का सामान । हालांकि जगदीप मेकअप से सामान पर खीज रहा था । "क्यों फालतू पैसे खराब करती हो तुम्हें क्या करना है ये सब । बस तुम्हारे माथे पर
बिंदी और लंबी चोटी में गजरा लगा हो । बिना काजल के भी सुंदर दिखती हो, मेरे लिए ऐसी ही अच्छी हो ।"

"अरे वाह !! सारी दुनिया जानती है औरत सजी-धजी ही अच्छी लगती है फिर तुम्हारे प्रोजेक्ट में औरतें कितना कुछ लगाती हैं । उतने

व्यक्तित्व तो दर्पण की छाया की तरह होता है । जहां तक दृष्टि देख पाती है उतना ही सत्य हम पहचानते हैं । शीशे के पीछे पारे की पॉलिश तक कौन देख सकता है । प्रति छवि के पार और महसूस कर सके कांच की चमक के पीछे दरकती गर्द की चुभन । सतही तौर पर यही सही है शायद ।

तो मुझे नाम भी पता नहीं है।'' सुकन्या अपने अज्ञान पर हंसी ।

''उनकी बात मत करो सुकू । वो जैसे मर्जी रहें तुम अपनी तरीके से रहो जैसी थी वैसी ही । मुझे उन लोगों की तरह तुम्हारा बनने की कोशिश करना भी भला नहीं लग रहा ।''

''अच्छा वो डॉक्टरनी है । क्या गवारों की भाषा बोलती है ।'' ''लेडी डॉक्टर बोलो या डॉ. बोस'' जगदीप बीच में ही देखते हुए बोला ।

''वही सही, हां, डॉ. बोस तो तुम्हें कैसी लगती है ?'' अब सुकन्या अपनी आंखों में अपनी पूरी चेतना लाकर जगदीप का सूक्ष्म से भी सूक्ष्म भाव पकड़ना चाहती थी । ''उसे क्या लगना है, मैंने तो कभी ध्यान ही नहीं दिया, उस पर । वैसे भी मैं डॉक्टरों से दूर रहता हूं ।'' जगदीप बोला ।

''फिर तुम्हारी जीप रोज उसकी गाड़ी के पीछे क्यों जाती है ?'' सुकन्या ने पूछा । ''हद करती हो तुम भी जगदीप बिगड़कर बोला, उसका घर पहले पड़ता है । इसीलिए उसकी गाड़ी पहले निकलती है । गाड़ी ड्राईवर चलाता है मैं नहीं । इतनी छोटी बात तुम्हारे दिमाग में आएगी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता ।

वालटेयर से वापसी के बाद जीवन एक क्रमबद्ध तरीके से चल रहा था । सुकन्या जब भी पति को बाहर बरामदे में छोड़ने आती उसकी निगाह डॉक्टर बोस की गाड़ी का आना जाना परखती । अब जगदीप डॉक्टर की गाड़ी निकलने से पहले ही जाने लगा और खुशी की सांस सुकन्या के दिल से निकली कि मिसिज यादव ने कहा, ''और सुकन्या कैसी हो '' ''मैं ठीक हूं, हम लोग वालटेयर से घूमकर आये हैं ।'' आज सुकन्या बहुत खुश थी, कितने दिनों की घुटन व शक की पीड़ा से उसने मुक्ति पायी थी ।

''अच्छा किया घूम आयीं । अरे हां तुम्हारे जाने के बाद वो लेडी डॉक्टरनी भी कहीं घूमने गयी थी, उसका भी मन नहीं लगा यहां ।'' और मिसिज यादव ने पूरा मुंह खोलकर अट्टाहास किया । सुकन्या के चेहरे की रंगत एकदम पीली पड़ गयी फिर स्वयं को संभालते हुए बोली, ''अच्छा ।'' और घर के अंदर जाने को मुड़ी । ''अरे कहां चल दी इतने दिन बाद तो मिली हो ।''

''नहीं मुझे घर पर काम है ।''

''अरे ऐसा भी क्या काम जरा सुनो तो ।''

मिसिज यादव पूरी तरह सुकन्या को छेड़ने के मूड में थी । सुकन्या के मुंह से निकल गया, ''नहीं मेरे मिस्टर को ऐसी-वैसी फालतू बात करना पसंद नहीं है ।''

"कैसी फालतू बात ? लेडी डॉक्टरनीवाली !" और अपनी बात पर जोर से हसती हुई वह बोली, "अपने बगलवाले घर की मिसिज त्रिपाठी को आवाज देती हुई बोली, "जरा यहां आइए तो मिसिज त्रिपाठी ।" अपने ढीले-ढीले गाउन की बैल्ट कसते हुए वह आयी ।

"क्यों क्या हुआ ?"

"भई जरा सुकन्या को बताओ तो जरा वो लेडी डॉक्टरनीवाली बात ।" दोनों के बीच आंखों से एक मूक संदेश गुजर गया । मिसिज त्रिपाठी अपनी मुसकान समेटते हुए बोली, "अरे छोड़ो भी क्यों बेचारी का दिल दुखाना ? मर्दों की तो जात होती ही ऐसी है ।"

जिस तरह से पूरे दावे के साथ मिसिज यादव बात कर रही थी उससे सुकन्या का सारा हौसला हवा हो गया । वह अपनी रुलायी दबाती घर के अंदर चली गयी ।

सुकन्या को जगदीप ने बहुत उत्साह से घर जाने का समाचार दिया, लेकिन सुकन्या का मौन उसी तरह बना रहा । रत्तीभर भी परिवर्तन नहीं हुआ ।

छुट्टियों के अभाव में जगदीप गांव में ज्यादा नहीं रुक सका । घर से आनेवाले पत्रों से पता लग रहा था सुकन्या का मौन उसी तरह चल रहा है । जगदीप की मां ने लिखा था—'लगता है गांव में अब उसका दिल नहीं लगता उदास चुपचाप पड़ी रहती है, खाती-पीती नहीं । न अपना ही ध्यान है और न ही बच्चे का । आखिर ऐसा कैसे चलेगा ? मुझ से बहू की ऐसी हालत देखी नहीं जाती । तुम आकर इसे अपने संग ले जाओ । यहां पर मामूली वैद्य हैं छोटे-मोटे डॉक्टर हैं सभी को दिखाया है । पर फर्क जरा भी नहीं है । अब जैसा तुम ठीक समझो करो ।'

जगदीप को समझ में नहीं आ रहा था वो क्या करे ? उस दिन जगदीप की जीप वर्क शॉप में थी । त्रिपाठीजी उन्हें अपने संग लेकर अपने घर ही आ गये । मिसिज त्रिपाठी ने चाय आदि का आयोजन किया ।

चाय, पीते-पीते वो बोली, "क्या जगदीप आये हैं ?" चुपचाप सुकन्या को घर छोड़ आते हैं । ऐसे अकेले कैसे कटेगी जिंदगी ?"

"भाभीजी उसकी तबियत ठीक नहीं चल रही ।" जगदीप उदास स्वर में बोला ।

"अरे क्या हुआ उसे ?" मिसिज त्रिपाठी ने चौंककर पूछा ।

"पता नहीं । यहां पर उसने बोलना-खाना दोनों ही बंद कर दिया था । बस हर चीज से उदासीन हो गयी थी । मैंने सोचा घर में चार लोगों में मिलकर बैठेगी ठीक हो जाएगा सब । लेकिन गांव से मां की चिट्ठी आयी है । वहां मां भी उदास, परेशान है । सुकू बिलकुल उदासीन सी हो गयी है ।" मिसिज त्रिपाठी का चेहरा मलिन हो गया, पश्चाताप से जड़-सी बैठी रह गयी । फिर पति की ओर देखकर बोली, "आप जरा अंदर चलिए ।" त्रिपाठी को अपनी पत्नी का यूं अंदर बुलाना बहुत अटपटा-सा लग रहा था, "यार जगदीप माफ करना शायद आज ज्यादा ही हुकूमत करने का मन है इनका । मैं अभी आया ।" अंदर कमरे में आते ही त्रिपाठी, पत्नी पर खीझ उठा, "ये वक्त था अंदर बुलाकर बात करने का, अभी थोड़ी ही देर में तो वो जा ही रहा था ।"

"नहीं" मिसिज त्रिपाठी बोली, "उनके जाने से पहले ही बताना जरूरी है । असल में मिसिज यादव अक्सर ही लेडी डॉक्टर बोस को लेकर सुकन्या को चिढ़ाती थी । मजाक ही मजाक में इतना बड़ा कांड हो जाएगा ये तो हमने सोचा ही नहीं था ।"

"क्या ? तुम भी शामिल थी इस छिछोरेपन में ?" त्रिपाठी क्रोध से बोला ।

"मेरे सामने वो चिढ़ा रही थी, तो सुकन्या बड़ी दुखी हो रही थी, अपने पति के सच्चरित्र होने की दुहाई भी दे रही थी । लेकिन जितना अधिक सुकन्या प्रतिवाद करती मिसिज यादव उतना ही ज्यादा चिढ़ाती गयी । मुझे बुरा लग रहा था । पर मैंने भी तब कहां सोचा था इस छोटी-सी घटना का प्रभाव इतना अधिक होगा ।"

अब तुम कहना क्या चाहती हो ?" त्रिपाठी ने पूछा ।

"यही कि आप जगदीप को यहां से अपनी बदली कहीं दक्षिण में करा लेने का सुझाव दो । यहां अगर सुकन्या ठीक होकर आ गयी तब भी वो ठीक रहनेवाली नहीं है । सुकन्या के भोलेपन पर छेड़छाड़ का आनंद लेने का अवसर मिसिज यादव छोड़नेवाली नहीं है, उन्हें पर-पीड़न का आनंद बहुत भाता है ।

"अच्छा तुम कुछ मत कहना मैं जगदीप से स्वयं ही बात कर लूंगा ।" और थोड़े ही दिन बाद जगदीप ने अपना स्थानांतरण हैदराबाद करवा लिया ।

इस घटना को बीते एक दशक हो गया कि अचानक ही एक पूर्व परिचित से भेंट हो गयी । सब पुराने परिचितों के कुशल-क्षेम जानने के



बीच अनायास ही सुकन्या के विषय में पूछ बैठी । सुनानेवाले ने कहा, "आप उन्हें कैसे जानती हैं ? ये जगदीप साहब ने भी पैसे के लालच में पागल से ब्याह कर लिया । अब पछता रहे होंगे । इतने बड़े पद पर हैं और पत्नी, बिखरे बाल उनके पीछे कहीं भी पहुंच जाती है, आफिस में, क्लब में, कहीं भी । न घर का होश है न बच्चों का । वैसे मेरे कहने का बुरा मत मानिएगा जगदीप साहब कोई हीरो तो हैं नहीं, शक्ल सूरत में । पर उनकी मैडम को उन पर हमेशा ही शक लगा रहता है । पागल है वो तो ।"

"ऐसे मत कहिए, पहले वो ऐसी नहीं थी । किसी ने मजाक ही मजाक में उन्हें पागल बना दिया ।" कहना चाह कर भी वह कह नहीं पायी । व्यक्तित्व तो दर्पण की छाया की तरह होता है । जहां तक दृष्टि देख पाती है उतना ही सत्य हम पहचानते हैं । शीशे के पीछे पारे की पॉलिश तक कौन देख सकता है । प्रति छवि के पार और महसूस कर सके कांच की चमक के पीछे दरकती गर्द की चुभन । सतही तौर पर यही सही है शायद । ●

— १/८ कालकाजी एक्सटेंशन,
नेहरू एनक्लेव, नयी दिल्ली-११००१९

प्रवेश

बचपन में

बचपन में जब
गिल्ली डंडा, कबड्डी
या लुका-छिपी खेलते हुए
मैं गिरता
और छिल जाते घुटने
या बहने लगता खून
तो सबसे पहले दौड़ती मां
पुचकारती
आंचल में छिपा
सख्त हिदायत देती
बरसों बाद
वह पल
मैं फिर से जीना चाहता हूं।

—अजय पांडेय

शिक्षा : बी. एस-सी. (गणित) एल. एल. बी.
आत्मकथ्य : जब कभी भी असमानता देखता हूं और मानवता को सिसकते-तड़पते देखता हूं मन में सहा नहीं जाता और परिणतीस्वरूप कविताएं, कहानियां या नाटक बन जाती हैं।
पता : अधिवक्ता,
इसाई पारा, तुमगांव रोड,
महासमुंद, जि.-रायपुर (म. प्र.)-४९३४४५।



पितृ ऋण

गंगा में करके
बाप की अस्थियों का विसर्जन
पंडितों की दक्षिणा में कांट-छांट करके
यात्रा कर के अतिरिक्त
चौदह रुपये बच पाये थे
जिन्होंने उसके कदम
मदिरालय की ओर उठाये थे
जानेवाला लौट के तो नहीं आएगा
सोचकर, उतार लिया सीने में कड़वा पानी
कुछ ही क्षणों में
स्मृति में विगत के चित्र उभरने लगे
मरते हुए बाप ने कहा था—
बेटा...
मेरी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित अवश्य करना
और—फटी हुई 'जवाहर कट' की जेब से
एक सौ इक्यावन रुपये निकालकर थमाये थे
कितना दूरदृष्टा था बापू
भविष्य की सोचता या
जानता था
जो जीते जी-उसे रोटी के टुकड़े न खिला सके
वो मरने के बाद पितृ ऋण क्या चुकाएंगे
इनके भरोसे रहा तो मेरी अस्थियों को—
कुत्ते ही चबाएंगे।

—डॉ. अनिल शर्मा 'प्रीत'

आत्मकथ्य : समाज में होने वाली विसंगतियों के विरुद्ध लिखना मेरी कमजोरी है।
संप्रति : व्याख्याता के. डी. एम. मेडिकल कॉलेज रामपुर मनिहारन।
पता : (इस्लाम नगर रोड)
रामपुर मनिहारन, सहारनपुर (उ. प्र.)।



रिश्ते का दर्द

हर बार उस रिश्ते की
आहट से
सन्नाटा दरकने लगता है
पुराने इमारत में धंसा दर्द
उभरता है तटस्थ आंखों में
संबंधों का अधजला तंतु
छटपटाता है दुरूह पीड़ा से
कैद हो जाती है चीख
देह की दीवारों में
कोहरे में निःशेष
होने लगता है आकार
तभी एक नये युग की
धड़कन सुनायी देती है
आकाश हो जाता है मन
कसमसाहट संवाद में
तब्दील होती है—
मुक्त होने की अदम्य जिजीविषा लिए
और एक संपूर्ण मानव
बनने की चाह में साझेदारी छोड़ देती हूं मैं ।

—बिभा

शिक्षा : स्नातकोत्तर (प्राणी विज्ञान)
आत्म कथ्य : सामाजिक और पारिवारिक विसंगतियां जिसका विरोध करने में मैं स्वयं को असमर्थ पाती हूं, शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास करती हूं ।
पता : द्वारा : बिनोद महासेठ
बिनोद स्टोर्स, टॉवर चौक,
दरभंगा, बिहार-८४६००४ ।

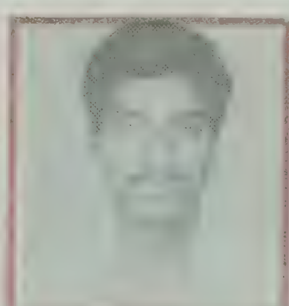
पात्रता

मैंने बनायी
एक ऊंची दीवार
और चढ़ गया उस पर
कि निहार सकूं चांद को
नजदीक से
और पा सकूं चांदनी
औरों से अधिक
लेकिन
चांद वहां से भी उतना ही दूर था
जितना कि जमीं से
चांदनी भी उतनी ही पड़ रही थी
जितनी कि जमीं पर
बस
मेरी पात्रता ही कम हो गयी
और मैं उतना भी न पा सका
जितना कि तृणमय भूमि पर लेटकर
लोग सहजता से पा लेते हैं ।

—शिवम

आत्मकथ्य : व्यक्तिगत अनुभूतियों को सर्वगत करने की कोशिशें हैं मेरी कविताएं ।
संप्रति : अध्ययन
पता : सी-ए—५७सी
जनता फ्लैट, हरिनगर,
नयी दिल्ली-११००६४ ।







आवाज

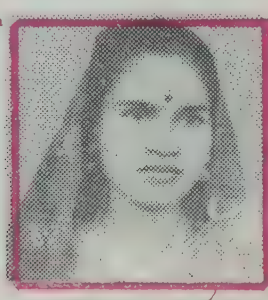
किसी आवाज का सुनायी देना
या किसी वस्तु का टूटना
हमें तुरत ज्ञान हो जाता है इन सबका
पर क्यों नहीं सुन पाता है
किसी के कांच से दिल के टूटने को
बार-बार टूटता है और
कुछ क्षणों में जुड़ जाता है
या फिर उसके जुड़ने का भ्रम है
पर स्पष्ट नजर आती है उसकी दरारें
बस यही वे दरारें है जो हमेशा से
कभी आतंक कहलाती है तो
कभी ये रिश्तों के बीच की दीवारें
काश दिलों के टूटने को सुन पाता हर कोई
अपने दिल सा औरों में
कुछ धड़कता सुन पाता हर कोई ।

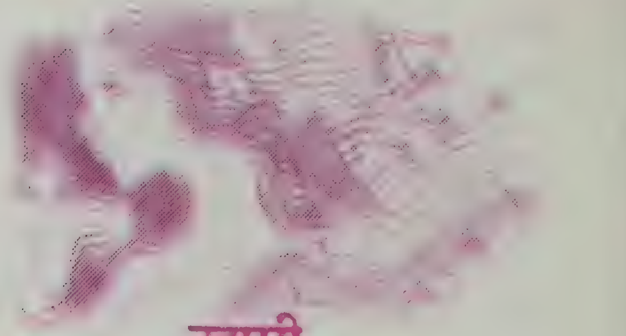
—अनिता राणगा

शिक्षा : स्नातकोत्तर (भूगोल)

आत्मकथ्य : जिंदगी की राह में जब मायूसी और बैचैनीआंसुओं का रूप लेकर आंखों से बहती है तब बरबस ही कोई कविता पीछे छोड़ जाती है, तन्हाई के दर्द को कम करने ।

पता : द्वारा : आर. के. टिंबर
सोजती गेट के अंदर, जोधपुर (राज.)





उदासी

बूंद-बूंद उदासी टपकी
गमों के एक बादल से
मैंने समेट लिया आहिस्ता से
उन्हें अपने आंचल में
धीरे से बह चला
आंसुओं का एक दरिया
और मेरे आंचल की
बूंदों में आ मिला
मेरे अरमान झुलस कर रेत बने
मेरे टूटे सपनों का ढेर बना
एक शिला
फिर लहराया दर्द की लहरों से
उफनता हुआ आहों का समंदर
डूबी हुई है मेरी मुसकानों की
किश्ती मुद्दतों से जिसके अंदर ।

—नमिता त्रिपाठी

शिक्षा : कक्षा ग्यारह की छात्रा

आत्मकथ्य : जब भावनाओं के झोंकों का शब्दों के निर्झर से मिलन होता है, तो कविता का जन्म होता है ।

पता : द्वारा : श्री प्रमोद कांत त्रिपाठी
१०९-बी, मालवीय नगर,
भोपाल (म. प्र.)



महाभारत की नगरी नहीं आज की द्वारका

● आलोक त्रिपाठी

लेखक द्वारा द्वारका पर अभी तक किये गये समस्त शोध कार्यों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान द्वारका को कृष्ण की या महाभारतकालीन द्वारका कहने का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। प्राचीन साहित्य में दिये गये इस नगर के वर्णन एक-दूसरे से भिन्न हैं। उत्खनन से प्राप्त पुरातत्वीय प्रमाण मात्र २००० वर्ष प्राचीन हैं और सागर में खोजे गये अवशेष किसी जलमग्न नगर के नहीं बल्कि तट से समुद्र की लहरों द्वारा बहाकर लाये गये ऐतिहासिक कालीन रचनाओं के खंड मात्र हैं।

गुजरात राज्य में पश्चिमी तट के समीप, अरब सागर में, महाभारत में वर्णित कृष्ण द्वारा स्थापित पौराणिक नगरी द्वारका की रोमांचक खोज गत दो दशकों से अत्यधिक चर्चा का विषय रही है। देश के लगभग हर संचार माध्यम— समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो तथा दूरदर्शन पर यत्र-तत्र उसकी चर्चा होती रहती है। यदि इसे इस शताब्दी की सर्वाधिक प्रचारित-प्रसारित पुरातात्विक खोज कहा जाए तो गलत नहीं होगा।

इतिहास की गुत्थियों को सुलझाने के लिए प्राचीन साहित्य में वर्णित घटनाओं की सत्यता का अध्ययन और प्राचीन स्थलों की खोज पुरातत्ववेत्ताओं के शोध का प्रिय विषय रहा है। इस क्रम में कृष्ण द्वारा स्थापित और महाभारत में वर्णित प्राचीन नगरी 'द्वारका' का अपना विशिष्ट स्थान है। सागर में प्राप्त हो रहे अवशेषों के आधार पर पुरातत्वविदों ने यह सिद्ध करने का दावा किया कि महाभारत में वर्णित घटनाएं पूर्णतः सत्य हैं और इसे

महाकाव्य न कहकर इतिहास कहना चाहिए । यही नहीं यहां से प्राप्त अवशेषों के आधार पर कृष्ण की तिथि भी लगभग ३५०० वर्ष पूर्व सिद्ध कर दी गयी । उनका यह भी दावा था कि इस काल में लौह तकनीकि का ज्ञान था व कृष्ण द्वारा बरसायी गयी कई कि.मी. लंबी व चौड़ी नगरी पुराणों के वर्णनानुसार सागर में समा गयी थी ।

महाभारत के आदि पर्व और सभा पर्व तथा विष्णु और वायु पुराण के अनुसार द्वारका रैवतक पर्वत के समीप स्थित थी, जबकि महाभारत के ही मूसल पर्व, हरिवंश, भागवत पुराण आदि के अनुसार द्वारका सागर के समीप स्थित थी ।

खोज का इतिहास

गुजरात राज्य में ही कई स्थलों को प्राचीन द्वारका माना जाता है । इनमें गिरनार, मूल द्वारका, माधवपुर, द्वारका इत्यादि प्रमुख हैं । उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक विद्वानों द्वारा प्रचलित मान्यताओं व जनविश्वास को स्वीकारते हुए सुदूर पश्चिमी तट पर स्थित द्वारका को महाभारत में वर्णित 'द्वारका' या 'द्वारावली' मान लिया गया था । सन १९०४ में एफ. ई. फर्जीटर व सन् १९२५ में ए. एस. अल्तेकर ने भी इस मत का समर्थन किया । सन् १९४५ में ए. डी. पुसालकर ने अपने एक लेख में प्राचीन साहित्य में दिये गये विवरणों के आधार पर अन्य स्थलों की द्वारका से पहचान अस्वीकारते हुए वर्तमान द्वारका को ही कृष्ण की पौराणिक नगरी सिद्ध किया । उसके उपरांत लगभग सभी विद्वानों ने इसे एक मत से प्राचीन द्वारका होना स्वीकार कर लिया ।

पुरातात्विक शोध

चार दशक पूर्व, सन् १९६३ में डेक्कन कॉलेज, पूना तथा गुजरात राज्य पुरातत्त्व विभाग द्वारा देश के मूर्धन्य पुरातात्विद् प्रो. एच. डी. संकालिया के नेतृत्व में प्रसिद्ध द्वारकाधीश मंदिर के समीप उत्खनन कर इस स्थल की प्राचीनता जानने का प्रथम वैज्ञानिक प्रयास किया गया । यहां से प्राप्त पुरातात्विद् प्रमाण २००० वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं थे । दो हजार वर्ष प्राचीन किसी स्थान को कृष्ण या महाभारत से समीकृत करना संभव नहीं था और द्वारका की ऐतिहासिकता पर एक प्रश्नचिह्न लग गया ।

सन् १९७९ में एक अन्य प्रसिद्ध पुरातात्वविद् डॉ. एस. आर. राव द्वारा यहां किये गये उत्खनन में १५०० ई.पू. (लगभग ३५०० वर्ष प्राचीन) तक के पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त होने का दावा किया गया । इन प्रमाणों को महाभारत की मान्य तिथि तथा साहित्यिक वर्णनों से साम्य होने से बड़ी आसानी से स्वीकार कर लिया गया ।

वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता

सागर से प्राप्त प्रमाणों के आधार पर किये गये दावे ऐतिहासिक, पुरातात्विक और वैज्ञानिक



समुद्र नारायण मंदिर

दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थे । उन्हें स्वीकारने का सीधा अर्थ था सारे भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन । अभी तक महाभारत व रामायण को महाकाव्य माना जाता है जिसमें इतिहास के अंश मौजूद हैं परंतु इन्हें यथावत इतिहास स्वीकार कर लेना संभव नहीं है । द्वारका के अन्वेषक का मत है कि महाभारत महाकाव्य न होकर इतिहास है, किसी भी निर्णय से पूर्व सागर से प्राप्त समस्त अवशेषों तथा अभी तक किये गये तमाम शोधों का वैज्ञानिक विश्लेषण आवश्यक हो जाता है ।

उत्खनन से प्राप्त पुरातत्वीय प्रमाण मात्र २००० वर्ष प्राचीन हैं और सागर में खोजे गये अवशेष किसी जलमग्न नगर के नहीं बल्कि तट से समुद्र की लहरों द्वारा बहाकर लाये गये ऐतिहासिक कालीन रचनाओं के खंड मात्र हैं ।

विभिन्न साहित्यिक वर्णनों से साम्य प्रदर्शित करनेवाले किसी एक स्थल की खोज निश्चय ही अत्यधिक दुष्कर कार्य है क्योंकि विभिन्न ग्रंथों में इसकी स्थिति भिन्न-भिन्न दी गयी है । महाभारत के आदि पर्व और सभा पर्व तथा विष्णु और वायु पुराण के अनुसार द्वारका रैवतक पर्वत के समीप स्थित थी, जबकि महाभारत के ही मूसल पर्व, हरिवंश, भागवत पुराण इत्यादि के अनुसार द्वारका सागर के समीप स्थित थी । एक बौद्ध ग्रंथ घट जातक में इन दोनों का सम्मिश्रण मिलता है । इसके अनुसार द्वारका के एक ओर सागर था और दूसरी ओर पर्वत ।

प्रारंभ में विद्वानों ने जन-प्रचलित मान्यताओं को बिना किसी आधार के स्वीकारते हुए वर्तमान द्वारका को कृष्ण की द्वारका मान लिया था । कालांतर में इस पहचान को प्रामाणिकता प्रदान करने के प्रयास प्रारंभ हुए और प्राचीन साहित्य में इससे साम्य रखनेवाले संदर्भों की खोज प्रारंभ हुई । आश्चर्य का विषय है कि जिस आधार पर अन्य स्थलों को द्वारका मानना अस्वीकार किया गया उन्हें द्वारका के विषय में पूर्णतः नजरअंदाज कर दिया गया और द्वारका को बिना किसी

आधार पर सहज ही कृष्ण की द्वारका स्वीकार कर लिया गया।

पुरातात्विक प्रमाण

पुरातात्विक प्रमाणों के अनुसार द्वारका मात्र २००० वर्ष प्राचीन है और २००० वर्ष प्राचीन किसी स्थल को कृष्ण या महाभारतकालीन नहीं कहा जा सकता। सन् १९७९ में किये गये दूसरे उत्खनन में हालांकि ३५०० वर्ष प्राचीन अवशेष प्राप्त होने का दावा किया गया परंतु इस उत्खनन की न ही कोई विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित हुई है और न ही उत्खननकर्ता के मतों का कोई स्पष्ट आधार ही है।

समुद्र में खोज

वर्तमान द्वारका को कृष्ण या महाभारतकालीन सिद्ध करने के सर्वाधिक प्रमाण सागर से प्राप्त कहे जाते हैं। परंतु ये समस्त अवशेष किसी एक स्थल से प्राप्त न होकर दो अलग-अलग स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

द्वारका व बेट शंखोद्वार, जिसे बेट द्वारका भी कहा जाता है, एक-दूसरे से लगभग ३० कि.मी. दूर स्थित दो पूर्णतः भिन्न स्थान हैं। द्वारका, पश्चिमी सागर-तट पर बसा एक कस्बा है जबकि बेट कच्छ की खाड़ी में स्थित एक द्वीप है। इन दो जगहों से प्राप्त अवशेषों को इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया कि इनके एक होने का भ्रम हो।

बेट द्वारका

बेट द्वारका, ओरवा बंदरगाह से लगभग २ कि.मी. पूर्व में स्थित एक छोटा-सा द्वीप है। इसका द्वारका नाम अभी हाल ही की उत्पत्ति है। वास्तव में इस द्वीप का नाम शंखोद्वार है। समस्त गजेटियर व नक्शों में इसे इसी नाम से जाना जाता है। संभवतः लगभग २००० वर्ष पूर्व द्वारकाधीश मंदिर की दूसरी मूर्ति इस द्वीप पर लाने से इसे भी द्वारका कहा जाने लगा। धीरे-धीरे यहां आनेवाले श्रद्धालुओं को इस नाम की उत्पत्ति दर्शाने के लिए कथाएं गढ़ दी गयीं। वर्तमान में यहां आनेवाले तीर्थयात्रियों को ऐसी ही एक कथा सुनायी जाती है। इसके अनुसार इस स्थान पर सुदामा द्वारा कृष्ण को चावल भेंट करने से इसे 'भेंट द्वारका' कहा गया।

फिश ट्रेप या प्राचीन रक्षा प्राचीर

इस द्वीप के दक्षिण-पूर्व में सागर तट पर मछली पकड़ने को बनायी गयी पत्थर की एक दीवार को महाभारतकालीन नगर की रक्षा प्राचीर कह दिया गया है। इस प्रकार की दीवार समूचे पश्चिम भारतीय तटों ही नहीं वरन विश्व में कई जगह सागर तटों पर पायी जाती हैं। ज्वार के समय पानी बढ़ने पर पानी के साथ मछलियां भी इसके अंदर आ जाती हैं और भाटे के समय पानी उतर जाने पर वे इस दीवार के कारण लौट नहीं पातीं और आसानी से पकड़ ली जाती हैं।

स्लिप वे या प्राकृतिक चट्टान

इसी प्रकार प्राकृतिक चट्टान की एक पट्टी के आकार की रचना को नौकाओं के अवतरण हेतु बनायी 'स्लिप वे' कह दिया गया है। भारतीय पारंपरिक नौका निर्माण का अध्ययन करनेवाले इस तथ्य से भलीभांति अवगत हैं कि भारतीय तटों पर नौकाओं के अवतरण हेतु 'स्लिप वे'-जैसी किसी रचना के निर्माण की कोई परंपरा नहीं है। यही नहीं आज भी बड़े-बड़े फिशिंग ट्रालर्स और नौकाएं ज्वार के समय बिना किसी स्लिप वे के बेट द्वारका में तट पर लाये जाते हैं

और रंग-रोगन, सफाई या मरम्मत के बाद पुनः जल में उतार दिये जाते हैं।

मुद्रा और लेख

यहां से पूर्णतः सुरक्षित एक उत्तर हड़प्पाकालीन मुद्रा व मृदपात्र खंड पर अंकित लेख की प्राप्ति भी एक आश्चर्य से कम नहीं है। सागर से प्राप्त समस्त मृदपात्र खंड लहरों से रगड़-रगड़कर पूरी तरह से घिस जाते हैं परंतु अत्यंत आश्चर्य का विषय है कि २ से.मी. आकार की शंख की बनी मुद्रा और मृदपात्र पर उत्कीर्ण लेख ३५०० वर्षों तक सागर में पड़े रहने पर भी यथावत बने रहें ?

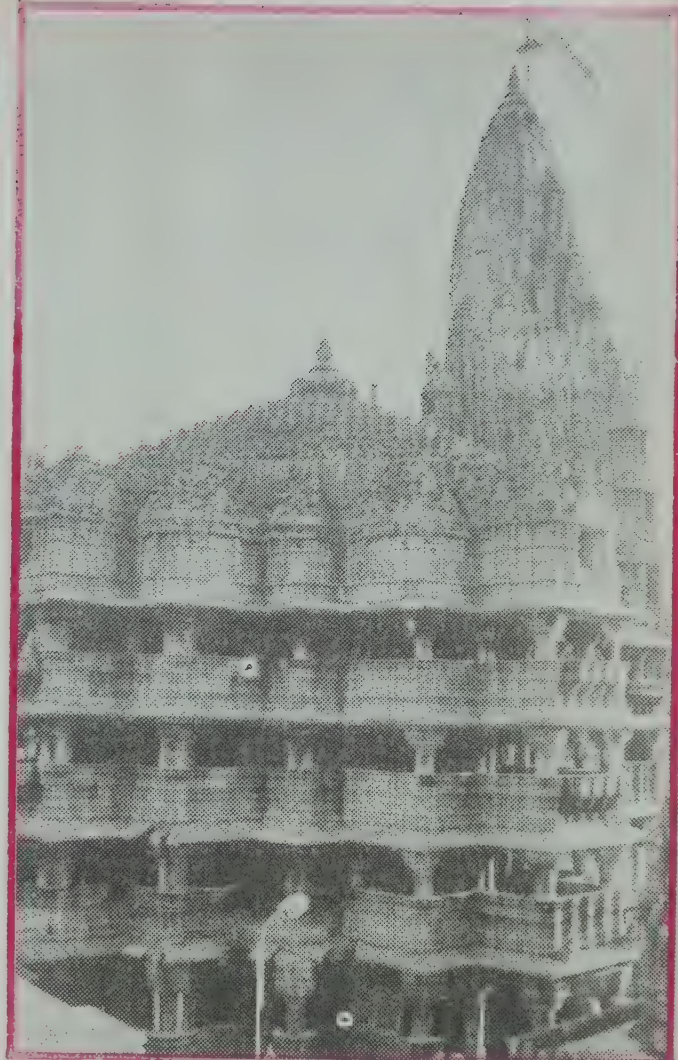
समुद्र-तल परिवर्तन

समुद्र में द्वारका के अन्वेषक के अनुसार लगभग ३५०० वर्ष पूर्व सागर का तल वर्तमान स्तर से लगभग १० मीटर नीचे था। सागर का तल बढ़ने से यहां स्थित पौराणिक नगर जल में समा गया। बड़ौदा विश्वविद्यालय के भू-वैज्ञानिकों द्वारा कच्छ की खाड़ी में ५० लाख वर्षों की रचना का विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। इन वैज्ञानिकों का स्पष्ट मत है कि गत लगभग पांच हजार वर्षों में इस क्षेत्र में अचानक समुद्र-तल परिवर्तन की किसी घटना का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

अतः प्राप्त अवशेषों के विश्लेषण व वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि यहां किसी विशाल नगर के जलमग्न होने की बात महज एक कल्पना मात्र है।

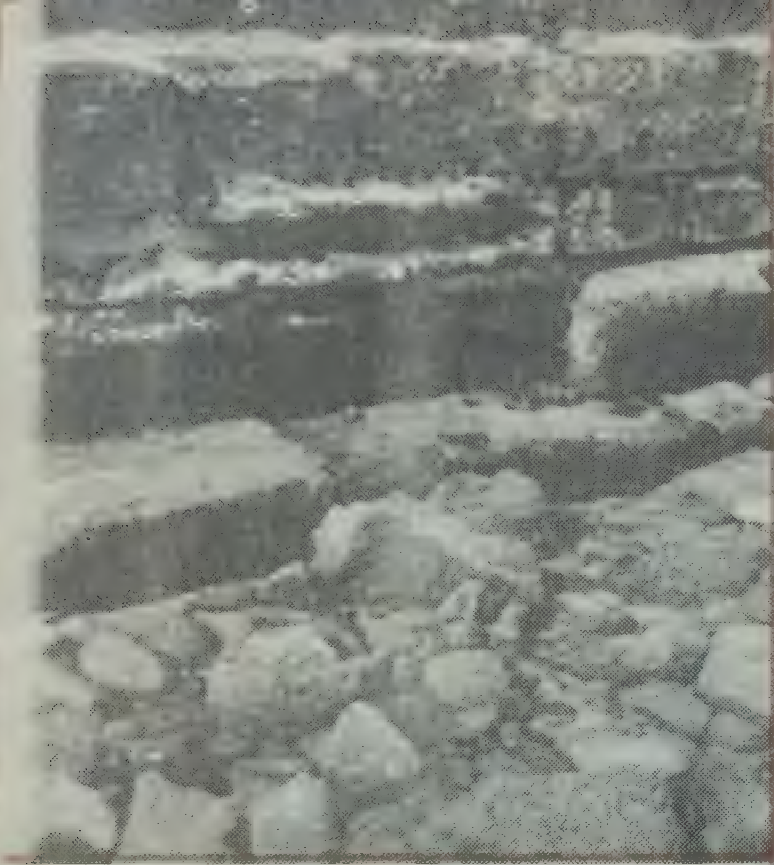
द्वारका

बेट के समान ही द्वारका के समीप भी समुद्र में यहां-वहां पड़े दीवारों के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए



१५वीं-१६वीं शताब्दी में निर्मित द्वारकाधीश मंदिर

हैं जिन्हें जलमग्न नगर की रक्षा प्राचीरें, बुर्ज, मकानों के अवशेष कहा गया है। यहां सर्वाधिक आश्चर्य का विषय यह है कि सागर में प्राप्त दीवारें उत्खननकर्ता द्वारा दो प्रकार की बतायी गयी हैं— प्रागैतिहासिक या महाभारतकालीन (काल-१) तथा ऐतिहासिक कालीन (काल-२)। पुराणों के अनुसार कृष्ण के स्वर्गारोहण के उपरांत द्वारका सागर में समा गयी। यदि इसे सच भी मान लिया जाए तो प्रश्न यह उठता है कि ये ऐतिहासिक कालीन दीवारें इन महाभारतकालीन नगर में कहां से आ गयीं ? क्योंकि द्वारका के एक बार सागर में समाने के पश्चात उसके पुनः बाहर आने या



[illegible]

ऐतिहासिक काल में सागर में कोई नगर बसाने का कोई विवरण कहीं प्राप्त नहीं होता है ।

अन्य पुरावशेष

द्वारका से ही प्राप्त लोहे के पांच भुजाओंवाले लंगर आजकल मछुआरों द्वारा प्रयोग किये जानेवाले लंगरों के समान हैं । सागर से प्राप्त संगमरमर की मूर्तियों के टुकड़े, तांबे का लोटा व उपकरण, पत्थर की चार पांवोंवाली सिल इत्यादि यहां से गुजरनेवाली नौकाओं से गिर गयी या श्रद्धालुओं द्वारा जल में विसर्जित की गयी वस्तुएं हैं ।

प्रमाणों का मनमाना प्रयोग

द्वारका पर किये गये लगभग एक शताब्दी के समस्त शोध कार्यों व प्राप्त अवशेषों के वैज्ञानिक विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि विद्वानों के एक समूह द्वारा साहित्यिक और पुरातात्विक प्रमाणों की मनमाने ढंग से व्याख्या कर जन-प्रचलित मान्यताओं को इतिहास सिद्ध करने के प्रयास किये जाते रहे हैं । यदि इन्हें स्वीकार कर लिया जाए तो भारत का संपूर्ण इतिहास ही परिवर्तित हो जाएगा ।

द्वारका के समीप समुद्र में सतह पर पड़े मिले पत्थर की दीवारों के टुकड़े न ही अपने मूल स्थान पर हैं और न ही महाभारत या कृष्णकालीन या ३५०० वर्ष प्राचीन रचनाएं हैं । सागर की सतह पर यत्र-तत्र पड़े ये स्थापत्य खंड सागर तट पर निर्मित उन रचनाओं के खंड हैं जो सागर की प्रचंड लहरों द्वारा नष्ट कर दी गयीं और उनके खंडों को वेगवान लहरें समुद्र में बहा ले आयीं । इन प्राचीन रचनाओं के कुछ अवशेष आज भी सागर तट पर अपने मूल स्थानों पर विद्यमान हैं ।

व्यवस्थित खोज की आवश्यकता

निश्चय ही महाकाव्यों में ऐतिहासिक अंशों को नकारा नहीं जा सकता और न ही महाभारत, पुराणों, बौद्ध व जैन ग्रंथों में वर्णित प्राचीन द्वारका नगरी के अस्तित्व को ही । परंतु किसी भी तथ्य को स्वीकारने से पूर्व पुरातत्वविदों को प्रमाणों की आवश्यकता होती है । अभी तक प्राप्त पुरातात्विक प्रमाणों के अनुसार वर्तमान द्वारका २००० वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं है । लगभग ६०० ई.पू. से क्रमबद्ध भारतीय इतिहास की जानकारी है और २००० वर्ष प्राचीन किसी स्थान को कृष्ण या महाभारत से समीकृत करना कदापि संभव नहीं है ।

जनसामान्य की धार्मिक आस्थाओं को किन्हीं पुरातात्विक या ऐतिहासिक साक्ष्यों की आवश्यकता नहीं होती, परंतु पुरातत्वविदों का यह पुनीत कर्तव्य है कि वे प्राचीन साहित्य में



बेट द्वारका तट पर बिना किसी स्लिप के आती नौकाएं ।

दिये गये विवरणों के आधार पर व्यवस्थित पुरातात्विक अन्वेषण कर प्राचीन साहित्य में वर्णित पात्रों, घटनाओं व स्थलों की खोज व पहचान कर उनकी सत्यता का विधिपूर्वक अध्ययन करें, जिससे भारतीय इतिहास की तमाम अनसुलझी गुत्थियों को सुलझाया जा सके ।

—पुरातत्व संस्थान, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, २४, तिलक मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१,



सागर-तल में सतह पर पड़े पत्थर के खंबे का भाग ।



द्वारका में समुद्र तट पर नष्ट हुई दीवार के टुकड़े ।



रूसी कठपुतली

भारतीय कठपुतलियों की जन्मस्थली राजस्थान के पारंपरिक पुतलीकारों ने जहां अपनी चपल अंगुलियों के चमत्कारिक संचालन से जनजन का मनोरंजन किया वहीं जीवनदर्शन भी दिया । समाज को ज्ञान दिया हर दिशा से चाहे राजस्थानी लोक संगीत नृत्य, भारतीय नाट्य कला का इतिहास या धार्मिक

कठपुतली के कपड़ों की सिलाई



भारतीय कठपुतली



पारदर्शी : लियाकत ए. भट्टी

चमत्कारिक कथा प्रसंगों से जुड़ी कठपुतली

• कमलेश माथुर

पौराणिक गाथाएं हों । भावनात्मक दृष्टि और आस्थाओं की प्रतीक पुतलियों से जुड़े, पुरातन पुतलीकारों ने सभी लोकधर्मी कलाओं का सशक्त माध्यम बनाते हुए भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में कठपुतली को विशिष्ट स्थान दिलवाया है । वस्तुतः कला विशेषज्ञ जहां कठपुतली की पुरातन व पारंपरिक शैली पर मुग्ध हैं, वहीं पुतलियों द्वारा शिक्षण एवं मानसिक रोगोपचार को भी स्वीकारा है । राजस्थान शिक्षा विभाग में पुतली विषय मान्यता प्राप्त है ।

लोक जीवन से जुड़ी कठपुतली कला का जन्मकाल और स्थान के विषय में अलग-अलग मत है । कहा जाता है कि अनादि काल से पुतलियों या गुड़ियों द्वारा मानव की भूमिका प्रस्तुति की प्रथा रही है । रोचक एवं बाल सुलभ इस विधा से सभी वर्गों का मनोरंजन होता है । आदिम क्षेत्रों में केवल एक डंडे या बांस के सिरे पर मात्र एक हंडिया लटका कर ही किसी का प्रतीक मान लिया जाता था और उसी के अनुरूप उस चरित्र की गाथा सुनायी जाती थी । शनैः-शनैः इसी प्रकार की परंपराओं के भीतर व्याप्त नाटकीय तत्व के प्रकटीकरण की अनुकृति ही कठपुतली बन गयी । आदिकाल से ही भूत-प्रेत, जादू-टोनों आदि प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए किसी भी प्रकार के सांस्कारिक प्रतीकों का प्रयोग होता रहा है । तब से ये प्रतीक पत्थर, लकड़ी या मिट्टी के बने पुतले आदि जातीय या पारिवारिक देवी-देवता के रूप में प्रतिष्ठित होते



राजदरबारों से निकलकर अब चंद होटलों की चमक-दमक में खोयी-सिमटी कठपुतली को प्रतीक्षा है किसी अमर सिंह राठौड़ या पृथ्वीराज चौहान की जो उसका दर्द सुन सके । सरकारी उपेक्षाओं से त्रस्त इन कलाकारों के पास न घर है ना ठिकाना । लगभग सात-आठ हजार आबादीवाली इस नाजायज कच्ची बस्ती में प्रायः कठपुतली में प्राण फूंकनेवाले कलाकार की जिंदगी में प्राण फूंकनेवाला कोई नहीं है । शनैः-शनैः मृत होती कला के प्रति यदि सरकार चाहे तो बहुत-कुछ कर सकती है, कलाकार अनपढ़ होते हुए भी जानता है ।

थे । वे लोग इन्हें प्रतीकात्मक रूप में संगठित विश्व की सभी शक्तियों के रूप में सुरक्षा कवच मानते थे, ताकि चिंता रहित सुखद जीवन जिया जा सके । यहां तक कि रोगोपचार के लिए भी गंडे, ताबीज, भभूत व धागे को अपना अंतिम अस्त्र मानते थे । शनैः-शनैः विकासोन्मुख मनुष्य ने इन्हीं आस्था के प्रतीकों को विशिष्ट स्थानों पर प्रतिष्ठित करना आरंभ किया । आलौकिक शक्तियों को मंदिर में मूर्ति स्वरूप प्रतिष्ठित किया । साथ ही इन मूर्तियों के बनाव-श्रृंगार में मनोहारी कलात्मक निखार आने से इन्हीं प्रतीकात्मक मूर्तियों को मानवीय लीलाओं में उतारा जाने लगा । जैसे विधिवत श्रृंगार, भोजन, पोषाक, प्रसाद, भोग, शयन व आराधना के विशिष्ट स्थान व समय निर्धारित किये जाने लगे । इससे स्पष्ट होता है कि मिट्टी, पत्थर या लकड़ी आदि सभी के पुतलियों के प्रारंभिक स्वरूप हैं ।

मनुष्य जीवन का सहभागी

फिर इन मूर्तियों के उपासकों ने उत्सव और मेले आदि रचा कर इनका आह्वान किया । इसी के साथ जुड़ी रात्रि-जागरण, कथा-वाचन और नृत्य-गायन की परंपरा जिनमें इनकी जीवन लीलाओं की अभिव्यक्ति जनजीवन की दुखहर्ता व संकट-हरिणी बनी । जनास्था के इन प्रतीकों से जुड़े विविध प्रसंगों, जीवन- गाथाओं के साथ बड़े-बड़े पर्व और त्यौहार जुड़ने लगे, मनुष्य को आनंद की अनुभूति होने लगी और उसे मनोरंजन का स्वाद आने लगा । सांस्कृतिक पक्ष उभरने के साथ-साथ आराधना के प्रतीक बदलने लगे । अब ये प्रतीक केवल प्राकृतिक शक्तियां ही नहीं रह गयीं, अपितु विविध सांस्कारिक प्रतीकों के आकृति, गुण और उनके कृतित्व पर विशेष बल दिया जाने लगा । इस प्रकार मानव की सुखद अनुभूति के परिप्रेक्ष्य में पुतलियों को मनुष्य के निजी जीवन की सहभागी बनाया गया । मानव इन्हें ब्रह्मा की तरह जब चाहे नचाने लगा ।

भारत में पुतली जन्म संबंधी अनेक मत हैं । महाभारत, रामायण, पंचतंत्र, कथा सरित्सागर

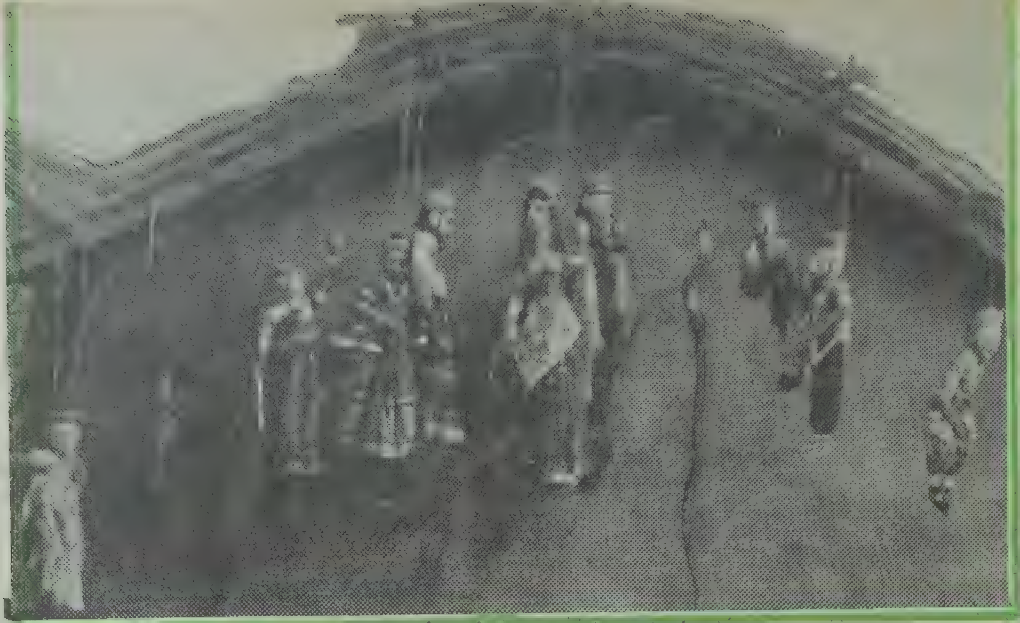
आदि ग्रंथों में किसी न किसी रूप में इनका उल्लेख मिलता है, किंतु 'बीरकरीला' नामक भारतीय ग्रंथ में एक विशिष्ट पुतली का वर्णन मिलता है जो केवल पार्वतीजी के ही पास थी। यह इतनी सुंदर व आकर्षक थी कि पार्वती को सदैव चिंता लगी रहती थी कि कहीं शिवजी इस पुतली में प्राण ही न फूंक दें और इसी से विवाह न रचा लें? 'कथा सरित्सागर' में एक ऐसे दस्तकार का उल्लेख है जो अपनी लाडली बिटिया का जी बहलाता था। 'पंचतंत्र' में उन पुतलियों का संदर्भ है जो लकड़ी की खूंटियों के सहारे नाना भांति के करतब दिखाती थीं। राजा विक्रमादित्य के सिंहासन में स्थित बत्तीस पुतलियां रात्रि को सिंहासन से निकलकर राजा को विविध रंगारंग कार्यक्रम दिखाकर मनोरंजन करती थीं। दिन में इसी सिंहासन पर बैठकर राजा अपना निर्णय सुनाते थे। इसीलिए 'सिंहासन बतीसी' का संदर्भ राजा विक्रमादित्य से सदा-सदा के लिए जुड़ गया। इन बत्तीस पुतलियोंवाला प्रसिद्ध न्याय इतना प्रभावशाली और लोकप्रिय था कि अन्य लोक के प्राणी भी विक्रमादित्य का न्याय सुनने-समझने आते थे। कहा जाता है कि पुतलियां राजा के कहने पर सभी दिशाओं में घूम-फिरकर सच्ची घटना की सही खबर राजा को देती थीं। और इसी के आधार पर न्यायपूर्वक निर्णय लिया जाता था। इस प्रकार विक्रमादित्य का यह रोचक खेल पुतलियों के प्रचार-प्रसार का माध्यम बना। इसके बाद पृथ्वीराज संयोगिता की घटना कठपुतली तमाशे का आधार बनी। तत्पश्चात नागौर के राजा अमर सिंह राठौड़ की मुगल बादशाह शाहजहां के साथ घटी दिलचस्प घटना पुतलियों का आकर्षक विषय बना। रोचक तथ्य यह है कि इस घटना के संदर्भ में चयनित इस विषय को लेकर व पुतलियों का खेल आगरे के किले से प्रायः दिखाया जाता था। एक अन्य कथानुसार सेवकराम नामक बढ़ई बेहद सुंदर खिलौने बनाता था। सिद्धहस्त बढ़ई के खिलौनों को देख बच्चे प्रायः इनसे बतियाते रहते। सेवकराम जब उन्हें खिलौनों से बतियाते देखता तो सदैव एक ही सोच में डूबा-खोया रहता था कि किसी तरह खिलौने भी बोलने लग जाएं। एक दिन शिव-पार्वती भ्रमण करते उधर



पहुंचे, खिलौने देखते ही पार्वतीजी ने शिवजी से इनमें प्राण फूंकने का अनुरोध किया, पार्वती की जिद के कारण शिवजी ने अपनी दिव्य शक्ति से उनमें प्राण फूंक दिये। सभी खिलौने चहचहाने लगे तब से ही कठपुतली खेल शुरू करने से पहले शिव-स्तुति करते हैं—

बैल चढ़े *शिवजी* मिले,
पूरण हो सब काम,
खेल काठपुतली करां,
लैके हरि का नाम

इस प्रकार पुतली उद्‌भव संबंधी कथन की पुष्टि होती है।



अन्य विद्याओं की भांति अभिनय भी एक विद्या है जिसके माध्यम से आवश्यकतानुसार स्वरूप चुने जाते हैं । यह स्वरूप ऐतिहासिक, पौराणिक चमत्कारिक चित्रण, लोक गाथाएं, देवी-देवता, मेले, उत्सव आदि जनास्था से जुड़ी परंपराओं को उजागर करते हैं । स्वरूपों से जुड़ी कठपुतली को भी नाट्य विद्या माना गया है । क्योंकि इसमें भी चरित्र, कथोपकथन, अभिनय आदि नाट्त तत्त्व मौजूद हैं । भारत में धनिक राजा-महाराजओं के समय में इसे पूर्ण संरक्षण प्राप्त था, पर आज यही विद्या दीवानखानों से निकलकर चौबारों, चबूतरों पर जा पहुंची । बिना श्रम व आर्थिक कठिनाई के रात्रि जागरण के साथ कठपुतली प्रदर्शन चलता था । अतएव अनेक विद्वान नाटक का उद्‌गम कठपुतली को ही मानते हैं । नाटक की उत्पत्ति नटों से मानी जाती है तथा नट शब्द सभी पुतली चालकों से सम्बद्ध है । नटों के पूर्वज स्वयं को शिव एवं ब्रह्मा के ही वरदान मानते हैं, क्योंकि ये नट देवी-देवता की प्रतीक पारंपरिक पुतलियों के सभी पुतलीकार धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े होते थे । यहां तक कि पुतली को आकाश-पाताल भेजकर भूत-भविष्य का लेखा-जोखा मंगाते थे ।

संभवतः श्रीलंका को छोड़ सभी एशियाई देशों में कठपुतली का प्रादुर्भाव देखा गया है ।

नट कर्म से जुड़ी

यद्यपि पुतली परंपरा के विषय में भिन्न-भिन्न मत हैं, किंतु राजस्थान के पुतली नट भाव राव और भोजो, भांभी, बलाई और खोरी की ही तरह पंजाब, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात की नट जाति भी भिन्न-भिन्न नामों से जानी जाती है । उड़ीसा के कन्हाई भाट, आंध्र के यक्षभाट, महाराष्ट्र के लावणिये, तमाशिये शाहिर, राजस्थान व गुजरात के भवाई भोपे मांगणिये, कावड़िये सरगड़े व तंजौर के नय्यर आदि किसी न किसी रूप में नट कर्म से जुड़ी जातियां हैं ।

मिस्र, तुर्की, अरब तथा ईरान में भी पारंपरिक पुतली परंपरा प्रचलित है जो भारतीय पद्धति को ही प्रतिपादित करती है । वहां रमजान के दिनों में पुतली द्वारा मनोरंजन होता है । तुर्की में 'करखेज' नामक पुतली विश्व प्रसिद्ध है । जापान में 'डकुंबों' नामक पुतली देवी मंदिर है, बर्मा में पुतली को नाचती-कूदती आत्मा मानते हुए औपचारिक पूजा के बाद इनका प्रदर्शन

होता है । वहीं इंडोनेशिया में 'यांगगोलोक' नामक पुतलियां प्रसिद्धि प्राप्त हैं । थाईलैंड तथा इंडोनेशिया के कठपुतली प्रदर्शन मुख्यतः रामायण, महाभारत से जुड़े कथा प्रसंग होते हैं । रोचक तथ्य यह है कि परिचालक भी पुतलियों की ही तरह या उनके साथ नाचते-कूदते हैं, ताकि भूत-प्रेतादि से बचे रहें । कुछ देश हिंदू धर्म प्रभावी होने से भारतीय संस्कृति प्रधान कथा प्रसंगों से पुतली प्रदर्शन करते हैं ।

राजस्थानी विशेषता

राजस्थान में सूत्रपुतली का जन्मकाल ढाई हजार वर्ष पूर्व माना गया है । लकड़ी पर पुतली का रेखाचित्र अंकित करके सिर्फ मुंह और धड़ तक का भाग ही तराशा जाता है । भुजा व पैर में कपड़े व रुई भरी जाती है । केवल बाहों के अंतिम सिरे, हथेली व अंगुलियां लकड़ी पर तराशी जाती हैं । संचालन धागों से होता है । एक-सी लंबाईवाले ये धागे निश्चित संचालित स्थानों पर ही बांधे जाते हैं ।

राजस्थान में पुतली लक्षण जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़ एवं बसी में प्रमुख रूप से होता है । कठपुतली संचालक इन्हें देव-स्वरूप मानते हैं तथा क्षतिग्रस्त होने पर पुतलियों को फेंकते नहीं हैं, अपितु जल में प्रवाहित करते हैं । पुरातनपंथी संचालक भाट इन्हें अपने पूर्व पूर्वजों की देन मानते हुए किसी भी सीमा तक पारंपरिक पुतली कला क्षेत्र में परिवर्तन नहीं चाहते । अपनी मौलिकता को विधिवत बनाये रखने के पक्षधर ये पुतली संचालक आज भी उन्हीं पौराणिक, ऐतिहासिक व चमत्कारिक कथा प्रसंगों व चरित्रों से जुड़े हैं जो इनके पूर्वज छोड़ गये थे ।

डेढ़ सौ परिवार

गुलाबी शहर जयपुर में स्थित कच्ची बस्ती में बसे लगभग डेढ़ सौ परिवार इस कला से जुड़े हुए हैं । वर्तमान में इन कलाकारों की स्थिति दयनीय व शोचनीय है । लोकजीवन से जुड़े कलाकार पिछले दो दशकों से गुमनाम हो रहे हैं । शाही घरानों से सम्मान प्राप्त कलाकारों ने पहले कभी पुतलियां बेची नहीं थीं, आज वे यहां पुतलियां बनाकर बेचने का धंधा करते हैं । खरीददार चंद विदेशी मेहमान ही होते हैं । राजदरबारों से निकलकर अब चंद होटलों की चमक-दमक में खोयी-सिमटी कठपुतली को प्रतीक्षा है किसी अमर सिंह राठौड़ या पृथ्वीराज चौहान की जो उसका दर्द सुन सके । सरकारी उपेक्षाओं से त्रस्त इन कलाकारों के पास न घर है ना ठिकाना । लगभग सात-आठ हजार आबादीवाली इस नाजायज कच्ची बस्ती में प्रायः कठपुतली में प्राण फूंकनेवाले कलाकार की जिंदगी में प्राण फूंकनेवाला कोई नहीं है । शनैः-शनैः मृत होती कला के प्रति यदि सरकार चाहे तो बहुत-कुछ कर सकती है, कलाकार अनपढ़ होते हुए भी जानता है ।

तथ्य तो यह है कि सूत्रधार जब धागों को अपनी अंगुलियों में धारण करता है, तब स्वयं ही पुतली बन जाता है । संवेदना पुतली में संचारित होती है तथा उसके प्राण और मन पुतली के भीतर प्रवेश करके बोलते हैं । और उसका यही तादात्म्य ही तो सजीवता देता है । काष्ठ की पुतली कला का विशिष्ट अंग है ।

—जी-११, जनपथ,
श्याम नगर, जयपुर



बंगला कहानी

ईंट

नीलिमा सेन गंगोपाध्याय

शीतकालीन रात्रि के शेष प्रहर में अभी वातावरण निस्तब्ध था। अंधकार को भेदकर अभी उजाला फूटने में अक्षम था। लोग निद्रित थे अथवा निद्रालस में अपने-अपने घरों में रजाई लपेटे सरदी को दूर भगाने में संलग्न थे। केवल पासवाले घर के नल में से जल गिरने का शब्द ध्वनित हो रहा था।

स्टोव पर चाय का पानी रखकर मंजरी फिर से लिहाफ में दुबक गयी। उसी समय घर्र-घर्र के भारी स्वर से वातावरण को कंपाती एक गाड़ी ठीक मंजरी के घर के सामने आकर रुक गयी। कुछ क्षण पश्चात् उसकी ही कॉलबेल बजी। गाड़ी रास्ते पर खड़ी थी। मंजरी ने बैठक की खिड़की से झांककर देखा —एक बड़ी लॉरी, ईंटों से भरी उसके घर के सामने खड़ी है। कुहासे के कारण दृश्य थोड़ा अस्पष्ट था। मंजरी विक्षुब्ध मन से सोचने लगी, 'यह क्या बला है ?' चाय का पानी खौलने तक थोड़ी देर लिहाफ की गरमी का आनंद पा लेती, लो वह भी गया। अनमनी हो उठी। मंजरी ने द्वार खोलकर देखा कि एक व्यक्ति लुंगी और हाफ स्वेटर पहने खड़ा है। मंजरी को देखते ही एक स्लिप उसकी ओर बढ़ा दी।

"यह क्या है ?" मंजरी ने पूछा।

"यही तो पता लिखा है। सामान आ गया है। कहां उतारूं ?"

"सामान यानी ईंटें । क्या होगा इनका ? देखूं स्लिप ? कहीं कुछ भूल हुई है ।"

स्लिप देखी —अवंती मजूमदार के नाम एक चालान था अर्थात मेरी मां के नाम ! मां क्या करेगी इन ईंटों का ? वह सोचने लगी नीचेवाली मंजिल पर हमारे घर में चार कमरे हैं । अंतिम कमरा मां का है । बैठक, बाहर का कमरा है, फिर इन ईंटों का क्या होगा ? सोचते हुए उसने दरवाजा जोर से बंद कर दिया ।

अवंती के बाथरूम से कुल्ले करने का शब्द सुनायी दे रहा था । मंजरी ने जोर से पुकारा, "मां !"

मां ने नहीं पूछा कि वह क्यों बुला रही है ? स्वयं ही प्रश्न किया, "घंटी किसने बजायी रे ।"

"तुम्हारे नाम से एक लॉरी भर ईंटें आयी हैं । बात क्या है मां ?"

अवंती के मुख पर घबराहट की एक हलकी-सी छाया उभर आयी, बोली, "इस समय ? इतनी सुबह ?" और बोलते-बोलते जल्दी-जल्दी बाहर की ओर चल दीं ।

मंजरी के होंठों पर संशय की रेखा खिंच गयी, चालान मां के हाथ में दे दिया । बोली, "जाओ देखो क्या करना है ? मेरा चाय का पानी खौल रहा है ।" किंतु ईंटें तो जैसे उसके मस्तिष्क में जम गयीं । लाल-लाल रंग की ये ईंटें ? कितनी होंगी ? लॉरी में कितनी ईंटें आती होंगी ? पांच सौ-हजार दो हजार न जाने कितनी !! उतार कर कहां रखेंगे ? छत पर या घर के सामने फुटपाथ पर !!

हमारे घर में तो काफी कमरे हैं —चार कमरे, रसोई, बाथरूम, पीछे की ओर बरामदा ! यह सब तो पिताजी के समय से ही है । गत बीस वर्षों में केवल एक बार ही घर की मरम्मत हुई थी । पुराने जमाने की ईंटें, सीमेंट, लकड़ी है इसी से आज भी जंगले, दीवारें, दरवाजे सभी मजबूत हैं ।

बीस वर्ष पूर्व पिताजी का देहांत हो गया । उस समय मंजरी ने बी.ए. की परीक्षा दी थी । तब बेकारी की समस्या विकराल रूप से फैली थी । वह नौकरी के लिए कितना घूमी थी ? पिताजी जो कुछ छोड़ गये वही थोड़ा-थोड़ा करके हम खर्च कर रहे थे । अवंती स्वयं घर का सब कार्य करती थी । खाना बनाते-बनाते ईश्वर को व अपने भाग्य को दोष देती जाती ।

मंजरी नौकरी खोजने में व्यस्त थी । इसी बीच उसने स्टेनोग्राफी और टाईपिंग सीख ली । इसी समय भाई ने बोर्ड की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । उसकी पढ़ाई तो रुक नहीं सकती थी । बहन शर्वरी अभी स्कूल की छात्रा ही थी, वह भी पढ़ेगी । वह सोचती रहती —भाई-बहन को पढ़ाना होगा, फिर एक दिन शर्वरी का विवाह भी करना होगा ।

अवंती भी यही सब सोच-सोचकर प्रारब्ध को दोष देती । आंचल से आंसू पोंछती । केवल एक आशा की किरण थी कि मंजरी एक दिन आकर कहेगी, "मां मुझे नौकरी मिल गयी ।" मंजरी का मुख देखकर ही वह भविष्य के प्रति तनिक आशान्वित हो जाती । और एक दिन वह स्वप्न साकार हो गया । मंजरी ने कितने इंटरव्यू दिये थे, कितने अपमानजनक शब्द सुने थे । प्रतिदिन अवंती पूछती, "कोई आशा है ।" "नहीं", मंजरी का संक्षिप्त-सा उत्तर मिलता ।

मां कहती आश्चर्य और दुःख से, "क्या

कहा ?'' वह क्या कहे । फिर वही रूखा-सा उत्तर देना भी बुरा लगता । अपनी असमर्थता का बोध कचोटता । गंभीर मुख से हां-हूं करके अपने कमरे में घुस जाती ।

अवंती कर्त्तव्यपरायण व कुशल गृहिणी थी । उसका मन-संसार भले ही मलिन, विषण्ण रहे, किंतु मंजरी के सामने गरम चाय का कप ठीक समय रख ही देती । फिर कहती —''कुछ तो निश्चय ही होगा, तू इतनी चिंता मत कर ।'' वे आशावादी हैं, पर मंजरी की चिंता मां से भी बढ़कर थी । उसका एकमात्र लक्ष्य था 'नौकरी ।'

बिजली का बिल तो उसके ट्यूशन के रुपयों से चला जाता । भाई-बहन को स्कॉलरशिप मिल गया था । अतः उनकी पढ़ाई का खर्च उनकी प्रतिभा से चल जाता । अभी तक ट्यूशन भी कर रहा था । वे लोग पूर्वी बंगाल के लोग हैं जीवन की विषमताओं के समक्ष हार नहीं मानते ।

बाहर का कोई व्यक्ति समझ नहीं पाएगा, किंतु मंजरी स्पष्ट देख रही है कि रोजाना के खाने-पीने में ही पिता की संचित पूंजी का अधिकांश भाग समाप्त होता जा रहा है । उस ओर सोचने से ही उसका मन जैसे जमने लगता है । बहन शर्वरी बड़ी होती जा रही थी । उसका विवाह । अपने देश में अच्छा वर । यानी अच्छे दाम । अधिक दाम देकर जो वर खरीदा जाए वही अच्छा ।

वह और नहीं सोच पाती । सिर को झटका देकर सोचती —यह सब सोचने का अभी समय नहीं । पहले नौकरी चाहिए । बैंक में रुपया जमा रखना होगा । नहीं तो शर्वरी का विवाह कैसे होगा ?

आखिर एक नौकरी मिली —'रिसेप्शनिस्ट' की । दुश्चिंताओं और स्वल्पाहार से चेहरा समय से पूर्व ही पक गया था, फिर भी बड़ी-बड़ी बोलती-सी आंखें, घने काले केश और गठा हुआ शरीर । मंजरी अब भी आकर्षक लगती थी । साथ ही उसका परिश्रमी स्वभाव था । अतः उसकी उन्नति होती गयी ।

धीरे-धीरे घर का रूप बदलने लगा । ड्राइंग रूम में नये परदे लगे । सोने के कमरे में सुंदर बेड कवर । बीच-बीच में थोड़ा शौक मौज भी । रसोई में काम करने को एक नौकर भी आ गया । अब अवंती को निर्बाध रूप से पुस्तकें पढ़ने का सुयोग मिल रहा था । शर्वरी ने एम.ए. पास कर लिया । उसका विवाह भी हो गया और वह श्वसुर गृह चली गयी । विवाह में मंजरी ने ऑफिस से उधार लिया और बाकी अपनी जमा पूंजी से लेकर पिता की भूमिका का निर्वाह किया । तभी पूरे घर की मरम्मत व रंगाई-पुताई भी करायी गयी थी ।

कुछ दिन पश्चात अभीक नौकरी पाते ही स्वयं अपना विवाह कर सपत्नीक दिल्ली चला गया । अब तो कभी-कभी पत्र आ जाता है बस । और कोई संपर्क अभीक के साथ अब नहीं रहा । उसकी पत्नी घर का कोई दायित्व लेना भी नहीं चाहती ।

मंजरी अब अकेली रह गयी, पर वह बंधनमुक्त कहां हुई ? मां साथ हैं बहुत काम किया बेचारी ने । समय की सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते चालीस वर्ष बीत गये ।

शर्वरी के विवाह की चिंता में मां को नींद

नहीं आती थी । दामाद को क्या-क्या देना होगा, पूजा-उत्सव के समय क्या दे कि परिवार की लाज बनी रहे । यही समस्याएं लेकर वह चिंतित रहतीं । अभीक का जीवन ठीक चल रहा है या नहीं ? जन्मदिन का उपहार ठीक समय पहुंचाया नहीं । इन सब दुश्चिंताओं का पार नहीं था । उनकी इन चिंताओं को मिटाने में मंजरी मिट रही थी । और मंजरी का भविष्य । इस विषय में चिंता करने का औचित्य बोध ही उन्हें नहीं होता ।

मंजरी का अब बहुत से लोगों से परिचय हो गया था । वह मल्टी नेशनल कंपनी में 'रिसेप्शनिस्ट' से लेकर अब वह लेडी आफिसर थी । मान-सम्मान था । एक दिन घर आकर मंजरी बोली, "मैं अब विवाह करूंगी मां ।"

अवंती अभी ही रामकृष्ण मिशन से स्वामीजी द्वारा किया गया गीता -पाठ सुनकर लौटी थी । संसार में तुम किसके हो और कौन तुम्हारा है ? की नीति से हृदय भरा था । स्वामीजी ने कहा था, 'स्वप्न अथवा जागृति में जो भी देखते हो, सब मिथ्या, इन्हीं भावों में डूबी वह घर लौटी थी ।

मंजरी की बात सुनकर पहले मां अचकचा गयी । फिर संज्ञा यथार्थ की ओर लौटी —सत्य जगत की ओर । मंजरी का विवाह । मंजरी , जो उसकी बेटी है कितने समय बाद जैसे यह बात मन में उठी । मंजरी नाम की एक लड़की थी बीस वर्ष पूर्व, जब उसने बी.ए. की परीक्षा दी थी । पति के देहांत के पश्चात् जीवन वीमा से लेकर भविष्य निधि तक दौड़-धूप कर पैसा निकाल घर को डूबने से बचाकर



चलाती आई थी । वही एक दुबली-पतली सी लड़की मंजरी । अपने कोमल हाथों पर घर का कार्यभार व सम्मान उठा लिया था । छोटी बहन का विवाह किया । भाई को जीवन में प्रतिष्ठित किया । और विवाह में लिया कर्जा भी धीरे-धीरे खुद ही चुकाया ।

और बीस वर्ष बाद वह हठात् कह रही है, 'मां मैं विवाह करूंगी ! आश्चर्य !

मंजरी तो परिवार की कर्णधार है । उसके लिए अलग से चिंता क्यों करे वह । वह तो बड़ी है न । चिंता तो छोटों के लिए ही होती है । किंतु मंजरी का विवाह करना भी तो उसका कर्तव्य है । वह भी तो उसी की लड़की है । इस चेतना के आते ही उसके मस्तिष्क में जैसे तूफान उठने लगा । हृदय धक-धक करने लगा ।

अवंती आर्म चेयर में बैठ गयी । यह सब आरामदेह सामान मंजरी ही तो मां के लिए लाई है । जिस पर आराम से बैठकर पांव फैलाकर वह पुस्तकें पढ़ती है । बैग से पान का डिब्बा निकालकर एक पान मुख में डाला, छोटी डिब्बी से सुगंधित जर्दे की एक चुटकी खाई, बोली,, "बैठो पात्र कौन है ? बताओ तो ।"

"मेरा ही सहकर्मी है । परचेज आफिसर, सुगत भट्टाचार्य । डिवोर्सी यानी तलाकशुदा ।

मंजरी ने सब कुछ सीधे-सीधे बता दिया ।

"ऐं दहेजू है । बच्चे भी हैं क्या ?" "न", मंजरी ने कहा । मां फिर बोली, "लड़का कैसा है ? और तलाक क्यों हुआ ?"

मंजरी असहिष्णु सी होकर बोली, "मेल नहीं हुआ । बस पर्सनैलिटी क्लैश ।"

अवंती को मना करने का जैसे एक बहाना मिल गया । किंतु मंजरी चालीस वर्ष की प्रौढ़ा होकर कैसे लज्जावती वधु बनेगी । उसे उल्टा-सीधा समझाना भी व्यर्थ है । अतः वह बोली, "तब विवाह की तैयारी तो करनी होगी । बोलने मात्र से तो विवाह नहीं होता । कुछ आयोजन तो करना ही होगा ।"

मात्र ही तो है और क्या ?"

पुत्र पर किया कटाक्ष झेलकर अवंती एक निश्वास फेंक मुख पर मुसकान लाकर बोली, "फिर भी गहना-वहना तो कुछ बनाना पड़ेगा । कुछ रुपया पैसा तो लगेगा ही । मेरी भी तो कुछ साध है न ।"

पुत्री की ओर स्थिर नेत्रों से अवंती ने देखा । पहले जैसा क्लांत चेहरा अब मंजरी का नहीं रहा । लगता है कि उम्र के वार्धक्य ने उसे अभी नहीं छुआ । लंबी, छरहरी-इकहरी देह-यष्टि अब भी आकर्षक है । फिर मल्टी नेशनल कंपनी के आफिसर के योग्य परितृप्त-मुख । बड़ा आकर्षक है ।

'परचेज आफीसर सुगत भट्टाचार्य क्यों विवाह करना चाहता है ?' अब यह प्रश्न उसके दिमाग में चक्कर लगाने लगा । आय तो अच्छी है । विवाह करके मंजरी आफिस का काम छोड़ सकेगी ? मां ने विश्वास तोड़ दिया । अब सुगत की भी परीक्षा लेनी चाहिए ।

"कैसा आयोजन और तैयारी मां । तलाकशुदा से विवाह करूंगी —दूसरा विाह । मैं किसी की मुखापेक्षी हूं । मेरी नौकरी है, प्रोवीडेंट फंड है । और अब इस उम्र में अविवाहित वर कहां मिलेगा मां ?"

मंजरी का मन हुआ कहे —इतने दिन से अविवाहित वर खोजा क्यों नहीं ? पर फिर चुप रह गयी । बोली, "तुम्हें कोई चिंता नहीं रहेगी । हम लोग तुम्हारी देखभाल करेंगे । यह बात निश्चित हो चुकी है । पुत्र होते भी अभीक तुम्हारा दायित्व नहीं लेता, तब बड़ी होने के नाते मैं ही तुम्हारा भार संभालूंगी । और अब भी कौन सी संतान से सुख पा रही हो ? साहचर्य

मंजरी ने मां को आश्वासन दिया, "वह सब हो जाएगा मां । बैंक में कुछ रुपया है । प्रोवीडेंट फंड से भी लिया जा सकता है । सब मिलाकर दस हजार हो जाएगा ।" वही तो मंजरी का संबल है । घर का ठाठ-बाट बनाए रखने के लिए वह खर्च करती रही है । फिर जितनी आय उतने खर्च । फिर भी वह अपने भविष्य के लिए कुछ बचाती रही है ।

अवंती अब चाय की टेबुल पर आ गयी । मंजरी ने पूछा, "ईंटवाला क्या कह रहा है ?"

अवंती ने मानो सुना ही नहीं । चेयर पर बैठते ही आंखों पर चश्मा चढ़ा लिया और

समाचार पत्र अपनी ओर खींच लिया।

अब मंजरी ने कुछ कड़े स्वर में पूछा, "बात क्या है ? ईंटों का क्या हुआ ?"

"ओ ! वह तुझे नहीं बताया शायद। सोचती हूं ऊपर की मंजिल पर एक कमरा, बाथरूम व रसोई घर यदि बनवा दूं तो मेरा गुजारा हो जाएगा, तब नीचे का घर किराए पर उठाकर मैं ऊपर रहने लगूंगी।"

मंजरी मानो आकाश से धरती पर गिरी, बोली, "तुम्हारी चिंता तो मेरे ऊपर है मां। मैं क्या इस विषय में सोचे बिना ही विवाह कर रही हूं। पर इतना रुपया कहां से आया ? भाई ने भेजा है क्या ?

अवंती स्वाभाविक मुद्रा लाने की चेष्टा करती हुई बोली, "क्यों तुमने दस हजार रुपए जो दिए थे।"

"तू तो विवाह करके चली जाएगी। उसके बाद मेरा क्या होगा ?"

मंजरी के सिर पर जैसे कोई ईंट आकर गिरी, "ये मां हैं —स्वार्थी, लोभी, आत्मकेंद्रित। अब तो इनसे बात करने में भी दुख होता है। इतने वर्षों से केवल रुपया रुपया। जैसे मैं रुपया बनाने की मशीन हूं। दुनिया में मुझे जैसे कुछ चाहिए ही नहीं। मां का स्नेह भी नहीं। एक घृणा पूर्ण वेदना की लहर सारे शरीर में फैल गयी। चाय का कप खिसका कर उठ गयी। इस घर में अब रहा नहीं जाएगा। कोई अपना नहीं। मां भी नहीं। आश्चर्य। 'परचेज आफीसर सुगत भट्टाचार्य क्यों विवाह करना चाहता है ?' अब यह प्रश्न उसके दिमाग में चक्कर लगाने लगा। आय तो अच्छी है। विवाह करके मंजरी आफिस का काम छोड़



सकेगी ? मां ने विश्वास तोड़ दिया। अब सुगत की भी परीक्षा लेनी चाहिए।

उद्‌भ्रांत-सी वह आफ़िस गयी। सुगत से फोन पर दस हजार रु. इस प्रकार खोने की बात बतायी। आभूषण के लिए दिये गये रुपयों से वह मां द्वारा ही ठगी गयी। दोनों के सम्मिलित रुपयों से फ्लैट खरीदने की आशा अब नहीं है। अब तुम्हारी क्या राय है ?" उसने पूछा।

सुगत भट्टाचार्य ने उत्तर दिया, "ठीक है और दो वर्ष प्रतीक्षा कर लूंगा, तब तक रुपया जमा हो जाएगा। फ्लैट न होने से विवाह के बाद एक कमरे के अपार्टमेंट में रहना संभव न होगा।"

शीत की धूप में तपती ईंटें अब अस्पष्ट नहीं। खूब स्पष्ट ही दिख रही हैं। अवंती कुछ मिस्त्रियों के साथ खड़ी ईंटों की गिनती कर रही है। अपने भविष्य की मजबूत दीवार खड़ी करने की तैयारी कर रही है शायद। और मंजरी के भविष्य की गिरती दीवार क्या ये ईंटें संभाल पाएंगी ? अर्थहीन जीवन का बोझ लेकर फिर अपने परिचित परिवेश में लौटना ही पड़ा।

४६ बी, रिचि रोड कलकत्ता-७०००१९
अनु. मालती कुलश्रेष्ठ

वैद्य की सलाह

सुशीला, अनूपशहर

प्रश्न : उम्र ३० वर्ष है । कई वर्ष से आधे शरीर में बहुत दर्द रहता है । अब हल्का-हल्का बुखार भी हो जाता है । अनेक चिकित्सकों से सलाह ली कोई आराम नहीं ।

उत्तर :असगंध चूर्ण दो सौ ग्राम, महायोगराज गूगल बारह ग्राम, मुक्ता शुक्ति भस्म बारह ग्राम लेकर सभी दवाओं की अस्सी मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और दशमूलारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

राजीवरमण, मुजफ्फरपुर

प्रश्न : ४-५ साल से आंव की शिकायत है । शौच के साथ तेल की तरह झाग आता है । शौच-विसर्जन के लिए चार-पांच बार जाना पड़ता है । कमजोरी बढ़ रही है ।

उत्तर : चित्रकादि बटी दो-दो सुबह-शाम गरम पानी से लें । कुटजारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

नलय कुमार, घोघरडीहा

प्रश्न : आठ साल से पेट में जलन और सिर में दर्द बना रहता है । पेट में गैस रहती है । यह बार-बार निकलती रहती है ।

उत्तर : अविपत्तिकर चूर्ण एक-एक चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । साथ में लवणभास्कर चूर्ण एक-एक चम्मच भोजन के बाद पानी से लें ।

श्याम बाबू, घोरावल

प्रश्न : २२ वर्षीय युवक हूं । मेरी समस्या बहुत विकराल है । बड़ी तेजी से बाल झड़ रहे हैं । दिन पर दिन गंजा होता जा रहा हूं । कोई शारीरिक परेशानी नहीं है । मानसिक रूप से बहुत परेशान हूं ।

उत्तर : शंखपुष्पी चूर्ण आधा चम्मच और आंवला चूर्ण आधा चम्मच सुबह-शाम पानी के साथ लें । महाभृंगराज तेल की प्रतिदिन सिर पर हल्की-हल्की मालिश करें ।

लखन कुशवाहा, गर वांध

प्रश्न : पैर के अंगूठे से दर्द शुरू होकर जोड़ों में रहता है । सूजन, बुखार और भूख न लगने की शिकायत है । काफी परेशान हूं । कृपया उपचार बतायें ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । श्वेत पर्पटी ६० ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा खाने के बाद पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी एक-एक दोपहर-रात पानी से लें ।

जनार्दन प्रसाद, महेशगंज

प्रश्न : मेरी आयु ५६ वर्ष है । बीस वर्ष से परेशान हूं । सोराइसिस और बवासीर है ।

उत्तर : केशोर गूगल एक वटी और

पुनर्नवागूगल एक वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । आरोग्यवर्धनी वटी दो-दो पानी से लें ।

सुधा देवी, गया

प्रश्न : ५१ वर्षीय हूं । कई वर्ष से अनेक शारीरिक रोगों से पीड़ित हूं । गर्भावस्था के समय रीढ़ की हड्डी में दर्द के साथ बुखार शुरू हुआ । अभी भी कभी-कभी हो जाता है । साइटिका का दर्द बना रहता है । हाथों का मांस शिथिल हो गया है । रजो निवृत्ति दो वर्ष पूर्व हो चुकी है ।

उत्तर : रास्ना गूगल दो-दो वटी सुबह-शाम गरम पानी से लें । दशमूलारिष्ट दो चम्मच और अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

भवेश कुमार, सुल्तानगंज

प्रश्न : २० वर्षीय युवक हूं । सरदी, खांसी, कफ और बुखार रहता है । स्मरणशक्ति कमजोर है । चेहरे पर फुंसियां भी हो जाती हैं ।

उत्तर : तालीशादि चूर्ण साठ ग्राम, टंकण भस्म दस ग्राम और चन्द्रामतरस दस ग्राम लेकर सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । संजीवनी वटी दो-दो दोपहर-रात गरम पानी से लें ।

हीरालाल, खडगपुर

प्रश्न : सात वर्षों से भयंकर कमर दर्द से पीड़ित हूं । मूत्र वैसे तो खुलकर आता है, किंतु अंत में थोड़ा-थोड़ा होता है । साइकिल चलाने पर घुटनों में दर्द हो जाता है ।

उत्तर : गोक्षुरादि गूगल एक वटी और चंद्रप्रभा वटी एक, सुबह-शाम गरम पानी से लें । महायोगराज गूगल एक वटी रात दूध से लें ।

विपुल, फैजाबाद

प्रश्न : मेरी मां की आयु ४५ वर्ष है । सात-आठ माह से एड़ियों में दर्द रहता है । रात को काफी बढ़ जाता है ।

उत्तर : केशोर गूगल दो-दो वटी सुबह, दोपहर और रात गरम पानी से लें ।

हेमचंद्र मिश्र, केशवपुरम

प्रश्न : ५६ वर्षीय हूं । सात साल से परेशान हूं । नहाने के बाद सारे बदन में दर्द बना रहता है । चलने पर बढ़ जाता है । थकान हो जाती है । पेट में गैस बहुत बनती है ।

उत्तर : त्रयोदशांग गूगल दो वटी और चंद्रप्रभा वटी एक सुबह-रात दूध से लें । अश्वगंधारिष्ट दो चम्मच और द्राक्षारिष्ट दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

विजय जैन, बीणा

प्रश्न : उम्र चालीस साल है । सिर दर्द हर समय बना रहता है । अब याददाश्त भी कमजोर हो गयी है । सभी प्रकार की जांच करा चुका हूं । सब ठीक है । कृपया अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : गोदंती भस्म तीस ग्राम और शंखपुष्पी चूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । सुबह-शाम एक-एक मात्रा पानी से लें । बलारिष्ट दो चम्मच और सारस्वतारिष्ट दो चम्मच लेकर भोजन के बाद पियें ।

श्रीमती सरोज, हरिहरपुर

प्रश्न : उम्र तीस वर्ष है । दो संतानें हैं । पेशाब में जलन, योनि में हल्का-हल्का दर्द बना रहता है । कमजोरी भी है । स्वभाव में चिड़चिड़ापन

आने लगा है ।

उत्तर : चंदनादि लोह दस ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम और सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । चंद्रप्रभावटी एक-एक रात दूध से लें ।

अंजु, जयनगर

प्रश्न : २४ वर्षीय हूं । चेहरा काला नजर आता है । भूख कम लगती है । चक्कर कभी-कभी आ जाते हैं । उत्साह नहीं है । अच्छी दवा लिखें ।

उत्तर : पुनर्नवामंडूर तीस ग्राम, नवायस लोह पंद्रह ग्राम, शंख भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, मालती बसंत पांच ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म दस ग्राम लेकर साठ मात्रा बनायें । दोपहर-रात एक-एक मात्रा शहद से लें ।

ओम कैलाश, महमूदपुर

प्रश्न : ४५ वर्षीय हूं । छह महीने पहले दुर्घटना के कारण चोट लगी । पैरों में भी चोट लगी । किंतु चलने में कोई परेशानी नहीं है । दर्द बना रहता है । काफी परेशान हूं ।

उत्तर : लाक्षा गूगल दो वटी और चंद्रप्रभा वटी एक सुबह और रात दूध से लें ।

रचना, जोगसर

प्रश्न : २६ वर्षीया दो बच्चों की मां हूं । शरीर में अचानक दाने हो जाते हैं । कभी-कभी अंगुलियों में मवाद वाला घाव बन जाता है ।

उत्तर : रसमाणिक्य दस ग्राम और गिलोय सत्व दस ग्राम लेकर अस्सी मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । सारिवाधासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । केशोर गूगल एक-एक वटी रात दूध से लें ।

संजय, झांसी

प्रश्न : पत्नी की आयु २६ वर्ष है । डेढ़ वर्ष पूर्व मेरा विवाह हुआ था । शुरू से ही गर्भाशय के विकारों से पीड़ित है ।

उत्तर : चंद्रप्रभा वटी एक-एक सुबह-शाम गरम पानी से लें । अशोकारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें ।

कु. परवीन, भरतपुर

प्रश्न : २६ वर्षीय युवती हूं । चार साल से मुंह पर कालापन व दाग धब्बे हैं । एक साल एलोपैथी से चिकित्सा की लेकिन लाभ नहीं मिला ।

उत्तर : आरोग्यवर्धनी वटी एक, केशोर गूगल एक वटी लेकर सुबह-शाम पानी से लें । सारिवाधासव दो-दो चम्मच भोजन के बाद लें ।

शंभू प्रसाद, चकाई

प्रश्न : मेरे पिताजी की उम्र ७० वर्ष है । उनको छाती में भयंकर दर्द होता है । डॉक्टर दिल की बीमारी बताते हैं ।

उत्तर : सितोपलादि चूर्ण साठ ग्राम, श्रृंग भस्म तीस ग्राम और नागार्जुनाभ्ररस दस ग्राम लेकर सभी औषधियों की साठ मात्रा बनायें । एक-एक मात्रा सुबह-शाम शहद से लें । अर्जुनारिष्ट दो-दो चम्मच भोजन के बाद पियें । पुष्करमूल चूर्ण आधा-आधा चम्मच रात में गरम पानी से लें ।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

खिलना कहीं छुपा है मोहब्बत के फूल का

● डॉ. मनोहर भंडारी

प्रेम शब्द की उत्पत्ति हुई है, संस्कृत की प्री धातु से, प्रीणाति इति प्रियः जो प्रिय लगता है। प्रिय शब्द में इमनिच प्रत्यय लगाकर प्रेम शब्द बना है।

विवाह सात साला अनुबंध नहीं

हमारे यहां देह को, यौन को, काम को प्रेम नहीं माना गया है। यही वजह है कि विवाह चार साला या सात साला अनुबंध नहीं होता है। हमारे यहां संबंधों की आयु, संबंधों के स्थायित्व तथा प्रगाढ़ता में उत्तरोत्तर वृद्धि करती है। इस संदर्भ में सुमित्रानंदन पंत का यह उद्घोष यथार्थ ही है—

देह नहीं है परिधि प्रणय की
प्रणय दिव्य है मुक्ति हृदय की
यह अनहोनी रीति
देह वेदी हो प्राणों के परिणय की

रामधारीसिंह दिनकर देह को प्रेम-सेतु कहते हैं, 'नारी के भीतर एक और नारी है, जो अगोचर और इंद्रियातीत है। इस नारी का संधान पुरुष तब पाता है, जब शरीर की धारा उछालते-उछालते, उसे मन के समुद्र में फेक देती है। जब दैहिक चेतना से परे वह प्रेम की दुर्गम समाधि में पहुंचकर निस्पंद हो जाता है। और पुरुष के भीतर भी एक और पुरुष है, जो शरीर के धरातल पर नहीं रहता, जिससे मिलने की आकुलता में नारी अंग-संज्ञा के पार पहुंचना चाहती है। इंद्रियों के मार्ग से अतींद्रिय धरातल का स्पर्श यही प्रेम की आध्यात्मिक महिमा है।' स्वामी रामतीर्थ कहते हैं, 'प्रेम एक रोमांस भर नहीं है, एक आत्मीयता है। अंतरंगता है। एक विश्वास है। एक शक्ति है। जीवन के लिए एक सार्थक प्रेरणा है। प्रेम बंधन नहीं है, मुक्ति है।

प्रेम प्राणवायु

प्रिय मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु नस्कृधि
प्रियं सर्वस्य पश्यत, उत शूद्रे उत आर्ये

अर्थात संसार का कोई भी प्राणी क्यों न हो, हम सभी के प्रिय बनें। विश्वव्यापी प्रेम की स्थापना हो, हमारा किसी से भी (शूद्र अथवा आर्य) विरोध न हो। वास्तव में प्रेम इसीलिए अंधा कहलाता है, प्रेम देख ही नहीं पाता कि कौन शूद्र है, कौन आर्य है, ब्राह्मण है, पशु है, पक्षी है, पेड़ है, पौधा है। प्रेम तो प्राणवायु की तरह है, पक्षपात से परे। जग को यही शिक्षा देने हेतु प्रकृति अनूठी घटनाएं रचती है। शबरी राम को जूठे बेर खिलाती है और उसके प्रेम में मंत्रमुग्ध राम जूठे बेर खाते हैं, सुदामा के चावल कृष्ण को बहुत रास आते हैं, बुद्ध सुजाता की खीर खाकर बोधि को तत्पर होते हैं, शंकराचार्य चांडाल के चरण छूते हैं और विवेकानंद गणिका को गुरु कहते हैं।

अर्थात संसार का कोई भी प्राणी क्यों न हो, इन सभी से प्रेम करें । निष्कलुषी प्रेम की सम्भावना हो, इसका किसी से भी (शूद्र अथवा आर्य) विरोध न हो । वास्तव में प्रेम इसीलिए अंधा कहलाता है, प्रेम देख ही नहीं पाता कि कौन शूद्र है, कौन आर्य है, ब्राह्मण है, पशु है, पक्षी है, पेड़ है, पौधा है ।

वैसे तो प्रेम शब्दातीत है, फिर भी महर्षि नारद ने भक्ति सूत्र में प्रेम की शब्दों के माध्यम से सर्वोत्कृष्ट परिभाषा प्रस्तुत की है—

अशब्दम्, अरूपम्, अस्पर्शम्, अव्ययम्

इसी परिभाषा को आगे बढ़ाते हुए नारदजी कहते हैं—

गुणरहितं, कामनारहितं, प्रतिक्षणवर्धमानम्
अविच्छिन्नं सूक्ष्मतरं, अनुभवगम्यम्

प्रेम अद्भुत अनुभूति

वस्तुतः प्रेम व्यष्टि से व्यष्टि को जोड़नेवाली संज्ञा का नाम है । साथ ही व्यष्टि को समष्टि तक ले जानेवाली साधना का नाम है । तुलसीदास हो या मीरा, सूरदास हो या कबीर उन्होंने प्रेम के दिव्य प्रकाश में ही जाना कि प्रेम अद्भुत अनुभूति है, अद्वैत का मूल है प्रेम । दरअसल प्रेम सतत् है, अभय है, आनंद स्रोत है, आत्मीयता है, अंतरंगता है, तन्मयता है, करुणा है, कृतज्ञता है, विनम्रता है, उत्सर्ग है, समर्पण है । प्रेम एक शाश्वत सत्य है, निस्सीम है, और है एक अलौकिक छंद । प्रेम एक ऐसी अग्नि है जो हृदय को सदैव बालती (जलाती) रहती है, इसी आग के विषय में भक्त कवि रहीम कहते हैं—

सुलगे जेते बुझि गए बुझे ते सुलगे नाहि
रहमन दाहे प्रेम के बुझि-बुझि सुलगाहि

प्रेम तो सतत जलनेवाला अलाव है । एक बार अगन की लगन लगी फिर चैन नहीं । यह प्रेमाग्नि मांगती है, सर्वस्व न्यौछावर करने का साहस । पतंगे के उत्सर्ग-सी तैयारी ।
कबीरदासजी कहते हैं—

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहि
सीस उतारे भुइं धरै, तब पैठे घर माहि

सीस यानी सिर प्रतीक है प्रतिष्ठा का, अहंकार का, आत्म-विश्वास का, मैं पन का । प्रेम में इस 'मैं' का विसर्जन आवश्यक है । बकौल जिगर—

तमाम उठ गए पर्दे तो इससे क्या हासिल
मजा तो जब था मैं भी न दरमियां होता

प्रेम का समर्पण अद्भुत है, इससे घटित होता है आत्म-विसर्जन । इस महिमामयी की विराटता, भव्यता अद्वितीय है । और जब किसी के जीवन में प्रेम घटित होता है, तब उसे सारा संसार प्रेममय लगता है । ऐसा व्यक्ति दुनिया की निगाहों से छुप नहीं सकता । प्रेम जब घटित होता है, तब उसकी खबर दूर-दूर तक अपने आप फैलती है—

खिलना कहीं छुपा है मुहब्बत के फूल का
ली एक सांस और गली तक महक गयी

सारे जमाने को खबर

एक कृष्ण पैदा होता है, एक ईसा जन्म लेता

है, एक मुहम्मद उतरता है, सारे जमाने को खबर लगती है। राम, बुद्ध, महावीर, मूसा, कबीर, तुलसी, रसखान, रैदास, रामकृष्ण, चैतन्य पैदा होते हैं, महकता रहता है— आलम सदियों तक। जिसके दिल तक उनकी महक जाएगी उसमें भी परिवर्तन घटित होते हैं और ये परिवर्तन अवश्यंभावी है। फैज़ कहते हैं—

रात यूं दिल में तेरी खोई हुई याद आई
जैसे विराने में चुपके से बहार आ जाए
जैसे सहराओं में हौले से चले बादे नसीम
जैसे बीमार को बेवजह करार आ जाए

प्रेम में अद्‌भुत क्षमता है। मरुस्थल को गुलशन में बदलने की क्षमता प्रेम में ही है। प्रेम नष्ट नहीं करता, प्रेम परिवर्तन करता है। नष्ट करना हिंसा है। यदि हमारे ग्रंथ हिंसा को प्रेम में परिणत करने में असमर्थ हैं तो ऐसे ग्रंथ या ज्ञान व्यर्थ है। वह ज्ञान मस्तिष्क के लिए एक जलाशय-सा है, जहां प्रवाह नहीं है, स्थिरता है। पानी या ज्ञान के मामले में स्थिरता का अपरिहार्य परिणाम है, सड़ांध। ज्ञान में जड़त्व मूढ़ता है। प्रेम सतत प्रवाहमान है। प्रकृति विविध तरीकों से प्रयास करती है, हमारे जड़त्व को दूर करने के लिए। दिनकरजी ने कहा है—

सारी देह समेट निविड़ आलिंगन में भरने को
गगन खोलकर बांह विमुख वसुधा पर झुका हुआ है।

प्रेम सर्व शक्तिमान

यह विस्मय का विषय है कि हम प्रेम के दिव्य प्रकाश को बुझाकर, इस ईश्वरीय-संपदा को जो हमें विरासत में मिली है, मिट्टी में मिलाकर प्रसन्न हैं। नाशवान भौतिक सुखों के पीछे मानवीय मूल्यों को भुला बैठे हैं। जबकि प्रेम को सर्वशक्तिमान माना गया है। प्रेम को सृष्टि का नियंता कहा गया है। महाकवि कालिदास कृत कुमार संभव में गिरिराज हिमालय से नारदजी भगवती पार्वती के बारे में कहते हैं **'प्रेम्णा शरीरार्धहरां हरस्य'** अर्थात प्रेम के बल पर पार्वती हर (महादेव) के शरीर के अर्ध-भाग को हर लेगी। जिनका नाम ही हर है उनका शरीरार्ध हरण करना प्रेम के सर्वशक्तिमान होने का सीधा प्रमाण है। शिव-पार्वती का अर्धनारीश्वर स्वरूप की ही परिणति है। प्रेम के विषय में नारदजी कहते हैं, **'वादः नावलम्ब्यः'** प्रेम वाद पर अवलंबित नहीं है।' वाद का प्रश्न ही नहीं। वाद तो मस्तिष्क के क्षेत्र की बात है। मस्तिष्क के नियंत्रण से परे है प्रेम। महान आध्यात्मिक संत जिद्दू कृष्णमूर्ति, प्रेम के विषय में अपनी अनूठी शैली में वार्तालाप करते हुए कहते हैं, "स्वामित्व भाव, संवेदना, भावना, क्षमाशीलता, प्रार्थना भावमय आदि दुधारी वृत्तियां हैं। ये जीवनदान भी दे सकती हैं और हत्या भी करवा सकती हैं। क्योंकि ये मस्तिष्क के क्षेत्र की संज्ञाएं हैं। ये संज्ञाएं जब लुप्त हो जाती हैं और आपका हृदय मस्तिष्क के नियंत्रण से, विचारों से मुक्त हो जाता है, तब घटित होता है प्रेम। सच्चे आदरभाव, करुणा, त्याग, निष्ठा के बिना प्रेम घटित नहीं होता।"

वास्तव में प्रेम रसायनों या मस्तिष्क के विशिष्ट केंद्रों से नियंत्रित कोई जैविक क्रिया नहीं है। प्रेम है हृदय की रागिनी। विवाद है मस्तिष्क का द्वंद्व। हृदय को तर्क से, विवाद से क्या लेना वह तो है प्रेम से लबलबाता महासागर है।

— ३, सवाद नगर, इंदौर-४५२००१

कोई भी व्यवसाय प्रारंभ करने से पूर्व प्रत्येक व्यवसायी उसकी संभावनाओं का पूर्वानुमान लगाता है । क्षेत्र में उसकी मांग और पूर्ति को परखता है, तत्पश्चात वह किसी व्यवसाय में हाथ डालता है । व्यावसायिक क्षेत्र में आज कड़ी स्पर्धा है । आप जो व्यवसाय करने जा रहे हैं उसमें यदि कुछ लोग पहले से हैं तो आपको उनकी स्पर्धा में तो उतरना ही पड़ेगा, साथ ही अपनी उत्तमता प्रकट करनी होगी ताकि ग्राहक आपकी ओर आकृष्ट हों ।

पोपट लालजी ने यही तो किया । उनके चरित्र की यह विशेषता है कि वे व्यावसायिक लोगों में राजनेता और राजनेताओं में व्यवसायी हैं । ऊंचे-ऊंचे राजनेताओं से गूढ़ संबंध होने के बावजूद जब राजनीति में उनकी दाल नहीं गली, तब उन्होंने व्यवसाय करने की सोची । ऐसा व्यवसाय जिसमें स्पर्धा कम हो तथा लाभ पूरा । अंततः उनको इसमें सफलता मिली । आज वे अपने व्यवसाय में शीर्षस्थ हैं ।

हमारे देश में प्रजातंत्र शासन प्रणाली है । यह वह प्रणाली है जो प्रत्येक दल को जनसेवा, राष्ट्र सेवा के अवसर प्रदान करती है । इसीलिए

व्यंग्य

आंदोलन सामग्री के थोक विक्रेता

□ डॉ. मंगल बादल



प्रत्येक विरोधी दल सत्ता में आने के लिए सत्ता दल के विरुद्ध रोज-रोज नये-नये आंदोलन छेड़कर जनसेवा और राष्ट्र सेवा के सुअवसर खोजता है । प्रजातंत्र ने हमारे देश को न केवल बड़े-बड़े नेता बल्कि कुशल व्यवसायी भी प्रदान किये हैं । पोपटलालजी भी उनमें से एक हैं । उनका पूरा नाम पोपट लाल 'सर्वसेवी' है । उनका कहना है कि वे जाति, धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर सबकी सेवा में विश्वास करते हैं । आंदोलनकारी चाहे किसी जाति या संप्रदाय का हो वे भेदभाव नहीं बरतते । इसी कारण से उनकी दुकान पर प्रत्येक वर्ग के लोग आते हैं । मांग ने उनके पांव गहराई से जमा दिये । 'नगर बंद' से उन्होंने कारोबार शुरू किया था ; आज वे 'प्रदेश बंद' और 'भारत बंद' के ठेके धड़ल्ले से लेते हैं ।

पोपटलालजी का कारोबार काफी फैला है । वे कवि सम्मेलनों की 'हूटिंग' से लेकर मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री की सभाओं तक को उखाड़ने का सामान मुहैया करवाते हैं । शहर में कोई जनसभा हो या धार्मिक सम्मेलन, उसके आयोजक सर्वप्रथम पोपटलालजी से मिलते हैं । पोपटलालजी ने यदि उन्हें पूर्ण सफलता का आश्वासन दे दिया तो कोई माई का लाल उस

यदि आपको भी किसी प्रकार के आंदोलन में किसी प्रकार की सामग्री या बंदों की जरूरत है तो आप पोपटलालजी की सेवाओं से लाभ उठा सकते हैं । ग्राहक की संतुष्टि ही उनकी संतुष्टि है । रही बात पोपट लालजी के दुकान के पते की , तो वे हर शहर और गांव में मिलेंगे !

सभा को असफल नहीं कर सकता । वे आयोजकों को यह भी सलाह देते हैं कि आयोजन की सफलता के लिए किस नेता या अभिनेता को बुलाया जाए । वे इसका प्रबंध भी कर देते हैं । यह दूसरी बात है कि वे इन सबके लिए 'एडवांस-शुल्क' ले लेते हैं । 'उधार' उनके विचार में ऐसी कैंची है जो प्रेम के धागों को काटकर व्यवसाय को असफल कर देती है ।

उन्होंने बतलाया कि बड़े सोच-विचार के बाद ही उन्होंने इस व्यवसाय में उतरने का निर्णय लिया । सबसे पहले उन्होंने राजनीतिक विशेषज्ञों से क्षेत्र का सर्वेक्षण करवाया कि उनके क्षेत्र में आंदोलनों, घेरावों, धरनों, प्रदर्शनों आदि की कितनी संभावनाएं विद्यमान हैं । तत्पश्चात आंकड़ों का गहन अध्ययन किया । उन्हें इस बात की खुशी हुई कि यदि वे 'आंदोलन सामग्री के थोक विक्रेता' के रूप में व्यवसाय प्रारंभ करें तो उन्हें अवश्य सफलता मिलेगी । उन्होंने बिना आगा-पीछा देखे व्यवसाय शुरू कर दिया । एक तो वे व्यवसाय में अकेले, दूसरे अधिक

आंदोलन का सामान सप्लाई करने से पूर्व वे सारी स्थितियों का गहन अध्ययन करते हैं । आंदोलन शांतिपूर्ण होगा या उग्र । यदि उग्र

हुआ तो किस सीमा तक । लाठीचार्ज या गोली चलने की कितनी संभावनाएं हैं, आदि बातों को ध्यान में रखकर ही वे रेट तय करते हैं । वे राजधानी की ओर जानेवाली बड़ी-बड़ी रैलियों का प्रबंध करते हैं । इसके लिए शहर से ग्राम स्तर तक उनके एजेंट कार्यरत हैं, जो उनके काम को बखूबी अंजाम देते हैं । साधारण प्रदर्शन और विशेष प्रदर्शन के लिए उनके आदमी तय हैं वे तंबू, कुरसियों आदि से लेकर झंडे, बैनर, नारे, मशालें, लाठियां, ईंट-पत्थर आदि सप्लाई तो करते ही हैं, किंतु साथ ही ऐसे कुशल और समर्पित कार्यकर्ता जो अपना कार्य संपन्न कर भूमिगत हो जाते हैं । अथवा किसी अन्य प्रदर्शन में भाग लेने चले जाते हैं । जो लोग पकड़े जाते हैं वे पोपटलालजी के आदमी नहीं होते क्योंकि पुलिस उन्हें पहचानती है और पहचान की कीमत पहले ही चुकायी होती है ।

एक भेंट में पोपटलालजी ने बताया कि उनके पास चालीस दिन तक भूख हड़ताल करनेवाले कुशल मेधावी और समर्पित कार्यकर्ता हैं । ऐसे-ऐसे भाषणबाज हैं जो जायदाद के बंटवारे को लेकर हुई लड़ाई को सांप्रदायिक रंग देने में सक्षम हैं । मूलतः पोपटलालजी अहिंसक हैं और कोशिश भी यही करते हैं कि प्रदर्शन दंगे में न बदले, किंतु सत्तापक्ष या आयोजक ऐसा चाहें तो वे रजामंद भी हो जाते हैं, क्योंकि आखिर धंधे का सवाल है । पोपटलालजी अपने कार्यकर्ताओं का बड़ा खयाल रखते हैं । उनके विचार में वे उनके 'कमाऊपूत' हैं । कार्यकर्ता भी उन्हें अपना अन्नदाता समझते हैं । किसी प्रदर्शन या रैली में भाग लेने जाने से पूर्व वे अपने कार्यकर्ताओं का दुर्घटना-बीमा तक करवाते हैं ।

चुनाव या अराजकता के दिनों को वे 'सीजन' कहते हैं । कई दिनों तक यदि बराबर शांति बनी रहती है तो उनके कार्यकर्ता घबरा जाते हैं । बड़े-बड़े अधिकारियों और नेताओं के फोन आने लगते हैं कि आखिर माजरा क्या है ? पोपटलालजी की तबीयत के बारे में पूछा जाता है । तब वे हंसकर कहते हैं, "भई ! अकेला आदमी हूं और इतना बड़ा कारोबार ! कहां तक देखभाल करूं ?" और इसके पांच-सात रोज बाद कोई न कोई आंदोलन शुरू हो जाता है ।

पोपटलालजी यह जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में 'निर्मात्री' और 'विध्वंसक' दो प्रवृत्तियां होती हैं । जीवन-संघर्ष में लगातार चोट खाता आदमी हीन भावना का शिकार होकर विद्रोही हो उठता है, तब उनकी विध्वंसक प्रवृत्ति प्रबल होती है । वे व्यक्ति की उसी प्रवृत्ति को उभारते हैं । तब वह आदमी, आदमी न रहकर पोपटलालजी का हथियार या मोहरा बन जाता है, जिसका वे मनचाहा उपयोग करते हैं । इसीलिए उनका व्यवसाय चल निकला है

नोट : यदि आपको भी किसी प्रकार के आंदोलन में किसी प्रकार की सामग्री या बंदों की जरूरत है तो आप पोपटलालजी की सेवाओं से लाभ उठा सकते हैं । ग्राहक की संतुष्टि ही उनकी संतुष्टि है । रही बात पोपट लालजी के दुकान के पते की , तो वे हर शहर और गांव में मिलेंगे ! जरूरत केवल उनका मुखौटा उतारकर असली चेहरा देखने का है ।

शास्त्री नगर, रायसिंह नगर-३३५०५१

जुलाई की रात थी । आसमान में घने बादल छाये थे । तूफानी हवा चल रही थी । चारों ओर अंधकार छाया था । कभी-कभी बिजली कड़क उठती थी, जिससे वातावरण बड़ा भयानक हो उठा था ।

उसी तूफानी रात में चिंतामणि रोड, जार्ज टाउन, इलाहाबाद स्थित 'झा क्लीनिक' की कॉलबेल बजी । आवाज सुनकर नंदू चौंका । वह सोचने लगा, इतनी रात गये इस तूफान में कौन आ गया । दरवाजा खोला, तो सामने एक पतला-दुबला-सा बूढ़ा आदमी, हाथ में लाठी लिए खड़ा था । नंदू को देखते ही उसने पूछा, "भैया डॉ. साहब हैं ?"

"हां, पर इस भयंकर रात में ?"

वह बूढ़ा हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया, "यदि डॉ. साहब नहीं चलेंगे, तो मेरे मालिक नहीं बचेंगे ।"

बूढ़े की दयनीय हालत एवं आग्रह को नंदू टाल न सका । उसने अंदर जाकर डॉ. भवनाथ झा को जगाया और उसे बूढ़े की बात बतायी । मौसम के बिगड़े हुए मिजाज को देखकर क्षणभर के लिए तो, वह भी सकते में आ गये । लेकिन डॉक्टर अपने कर्त्तव्य को भलीभांति समझते हुए मौसम से विचलित नहीं हुए, और तुरंत उठकर बूढ़े के करीब आये । उनको देखकर बूढ़ा उनके पैरों से लिपट गया और घिघियाते हुए बोला, "डॉ. साहब, मेरे मालिक की जान बचा लीजिए ।"

किस्सा पांच अशरफियों का

• इन्द्र मुकुंदजी

"क्या करूं भैया ! भगवान की लीला है । मेरे मालिक की तबीयत बहुत खराब है । डॉ. साहब को लेने आया हूं । अगर इस वक्त वे नहीं चलेंगे, तो... ।" और वह बूढ़ा फूट-फूटकर रोने लगा ।

उसी वक्त बिजली चमकी और तेज बारिश शुरू हो गयी । नंदू ने दरवाजा खोला और बूढ़े को बरामदे में बैठा दिया । फिर बोला, "क्या तुम्हारे मालिक की तबीयत बहुत ही खराब है ?"

डॉ. साहब को दया आ गयी । उन्होंने नंदू से कहा, "मैं जाता हूं, शीघ्र ही लौट आऊंगा ।"

बूढ़ा साथ में बग्घी (घोड़ागाड़ी) लाया था । डॉ. भवनाथ झा क्लीनिक से आवश्यक दवाओं का बैग उठाकर, बूढ़े के साथ बग्घी पर सवार हो गये ।

धीरे-धीरे बग्घी गंगापार कर पीपल के एक पेड़ के पास पहुंच गयी । डॉ. भवनाथ झा ने चारों ओर नजर दौड़ाकर देखा । दूर-दूर तक

कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था । वह समझ नहीं पा रहे थे कि बारिश और अंधकार की वजह से वहां कुछ नहीं दिखायी दे रहा था या सचमुच वह किसी अजनबी स्थान पर पहुंच गये थे । तभी अचानक बग्घी दायीं और मुड़ गयी ।

डॉ. साहब ने बग्घी के मुड़ते ही सामने एक बड़ी-सी हवेली देखी । हवेली की खिड़कियों से छनकर धुंधली-सी रौशनी बाहर फैल रही थी । बग्घी ज्यों ही हवेली के मुख्य दरवाजे के पास पहुंची, दरवाजा खुल गया और घोड़ा तेजी से बग्घी को खींचते हुए अंदर आकर रुक गया ।

बूढ़ा कोचवान धीरे-से बोला, "सरकार ! हम लोग पहुंच गये ।"

वह उतरकर आगे-आगे बढ़ा और पीछे-पीछे डॉ. भवनाथ झा चलने लगे । डॉ. साहब आश्चर्य से उस विशाल हवेली को देख रहे थे । सभी कुछ ठीक-ठाक से सजा था । लॉन में तरह-तरह के फूल महक रहे थे । दरवाजों पर रेशमी परदे झूल रहे थे । दरवाजों और खिड़कियों पर बड़ी सुंदर नक्काशी की गयी थी ।

बूढ़े ने कहा, "सरकार ! यह हवेली मेरे मालिक के दादाजी ने बनवायी थी । उन दिनों उनकी बहुत बड़ी जमींदारी थी । अब तो वह सब है नहीं, फिर भी खाने-पीने के लिए पुश्तैनी जमीन-जायदाद काफी है ।"

एक दरवाजे का रेशमी परदा हटाकर वह बूढ़ा डॉ. साहब के साथ अंदर दाखिल हुआ । उस कमरे का सौंदर्य देखते ही क्षण भर के लिए डॉ. भवनाथ झा अवाक् रह गये । कमरे के ठीक मध्य में एक पलंग पर ३०-३५ वर्ष का एक युवक लेटा था । उसके सिर की ओर एक युवती बैठी थी । डॉ. साहब के प्रवेश करते ही, वह युवती डॉ. भवनाथ झा की ओर मुखातिब हुई । वह युवती याचनाभरी आंखों से डॉ. साहब को देखने लगी, जैसे कह रही हो कि डॉ. साहब, किसी भी तरह इन्हें बचा लीजिए । डॉ.

डॉ. आदित्यनाथ झा की पत्नी



हाल ही में श्रीमती आशा झा, जब डॉ. भवनाथ झा के निजी पुस्तकालय से कुछ कागजात उलट-पलट रही थीं । तो उन कागजातों के ढेर से डॉ. भवनाथ झा की एक व्यक्तिगत डायरी उनके हाथ लगी । उस डायरी में डॉ. भवनाथ झा की यह सत्य घटना लिखी । आज भी झा-परिवार के पास प्रेतिनी अंजू द्वारा दी गयी अशरफियां मौजूद हैं ।

भवनाथ झा उस सुंदरी को आश्चर्य से देखते रह गये । वह बहुत ही सुंदर थी । उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में गजब का आकर्षण था ।

डॉ. भवनाथ झा उस सुंदरी के रूप से सम्मोहित होने लगे, तभी बूढ़ा बोल पड़ा, "सरकार ! मेरे मालिक कई दिनों से बीमार हैं । कई डॉक्टरों का इलाज करा चुका हूं । कृपया ठीक से जांच कर आप इलाज शुरू कर दें, मुझे आप पर बहुत विश्वास है । आपका नाम मैंने सुना था । सरकार ! मेरे मालिक को बचा लीजिए ।" बूढ़ा बोलते-बोलते फफक पड़ा ।

डॉ. भवनाथ झा ने आगे बढ़कर उस युवक की कलाई थाम ली और उसकी नब्ज टटोलने लगे । पर यह क्या ? नब्ज बिलकुल नहीं चल रही थी । डॉ. साहब परेशान हो गये । फौरन बैग से आला निकालकर युवक की छाती की धड़कन सुनने लगे । फिर निराशा से आला हटाकर बोले, "यह तो दुनिया से जा चुके हैं ।" और तत्काल बैग उठाकर चलने लगे ।

युवती ने जो अब तक जड़ बैठी थी, डॉक्टर को जाते देखकर पूछा, "क्यों डॉक्टर साहब ! मेरे पति का इलाज किये बगैर जा रहे हैं ?"

क्या मेरी बात आपने नहीं सुनी ?" डॉ. साहब बोले ।

"नहीं ।"

तभी वह बूढ़ा, बड़ी मुश्किल से उस युवती के पैरों को अपे हाथों की गिरफ़्त में लेते हुए फफक पड़ा, "मालकिन मालिक नहीं रहे ।"

यह सुनते ही वह युवती कटे वृक्ष की तरह जमीन पर गिर पड़ी ।

डॉ. भवनाथ झा पानी की छींटे डालकर युवती को होश में ले आये । फिर वह चलने को हुए, तो युवती उन्हें रोकते हुए बोली, "डॉक्टर साहब ! आप अपनी फीस तो लेते जाइए ।"

डॉक्टर ने कहा, "नहीं, अब मैं फीस नहीं ले सकता ।" लेकिन डॉ. साहब के इनकार के बावजूद उस युवती ने आगे बढ़कर उनके बैग में पांच अशरफियां रख दीं और उसके साथ ही वह युवती जोर-से ठहाका मारकर हंस पड़ी, "डॉ., मुझे पहचाना ? आंखें खोलकर देखो, मैं कौन हूं ?"

डॉ. भवनाथ झा की आंखें युवती पर ठहर गयीं । उन्होंने उसे बड़े ध्यान से देखा और चीख पड़े, "अंजू तुम ?"

"हां ।" यह सुनते ही डॉक्टर साहब अचेत होकर गिर पड़े ।

सुबह जब डॉ. भवनाथ झा की आंखें खुलीं,

तो वह दर्द से कराह रहे थे । पास ही नंदू बैठा पंखा झल रहा था । उसने पूछा, "क्या हुआ सरकार ! तबीयत तो ठीक है ?"

"मुझे क्या हो गया था, नंदू ?" सर पर जब हाथ फेरा, तो पट्टी बंधी थी । पूछा, "यह पट्टी कैसी है ?"

"सरकार, आपको याद नहीं । कल रात जब आप कॉल पर गये थे, आपका एक्सीडेंट



झा परिवार

हो गया था । वह बूढ़ा बग्घीवाला ही यहां आपको छोड़ गया था ।"

"कौन बूढ़ा ?" याद करते हुए डॉ. साहब ने पूछा ।

तभी रात की सारी घटना याद आ गयी । डॉ. भवनाथ झा ने बैग मंगवाकर देखा तो सचमुच उसमें पांच अशरफियां रखी थीं ।

तत्काल उन्होंने नंदू से गाड़ी मंगवायी और गाड़ी पर चढ़कर गंगा पार झूंसी गये । वहां न वह आलीशान हवेली थी, न रातवाली कोई पहचान की वस्तु । डॉ. भवनाथ झा वापस घर आ गये और धीरे-धीरे अतीत की गहराई में खो गये ।

मेडिकल कॉलेज की फाइनल परीक्षा समाप्त हो चुकी थी । सभी लड़के और लड़कियां घर जाने की तैयारीकर रहे थे । उन दिनों डॉ. भवनाथ झा, लखनऊ में रहते थे ।

अंजू, रवीन्द्र खन्ना की पुत्री थी । वह लखनऊ में अमीनाबाद में रहती थी । इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज की वह छात्रा थी । छुट्टी होने पर वह लखनऊ लौट आती थी ।

उसकी दोस्ती रंजन से थी । वह भी मेडिकल कॉलेज में पढ़ता था । उन दोनों की दोस्ती कब प्यार में बदल गयी । किसी को मालूम नहीं । जब वे अपने-अपने घर विदा होने लगे, तब अंजू ने रंजन से आग्रह किया, "तुम जल्दी ही अपने पिता से आज्ञा लेकर मुझसे शादी कर लेना ।"

"घबड़ाओ न अंजू, मैं शादी की अनुमति लेकर लौटूंगा ।" रंजन ने कहा ।

लेकिन जब रंजन घर पहुंचा, तब उसे पता चला कि उसके पिता ने उसकी शादी गोरखपुर के एक संपन्न घराने की बेटी से तय कर दी थी । रंजन ने गोरखपुर में शादी करने से इनकार कर दिया और अपने पिता से बोला कि वह शादी करेगा तो अंजू से करेगा ।

यह सुनकर उसके पिता नाराज हो गये । उन्होंने रंजन पर गोरखपुर की लड़की से शादी करने के लिए जोर डाला । अंततः रंजन को पिता की आज्ञा के समक्ष झुकना पड़ा । उसकी

शादी गोरखपुर के महेन्द्र पाल सिंह की पुत्री से हो गयी ।

शादी के बाद रंजन लखनऊ पहुंचा और अपनी बीती अंजू को सुनायी । शादी की बात सुनते ही अंजू बिफर गयी । क्रोध से थर-थर कांपने लगी । रंजन ने उसे बहुत समझाया, पर वह मर जाने की धमकी देती रही । रंजन ने तब सारी स्थिति से डॉ. भवनाथ झा को अवगत कराया और कहा कि वह अंजू को समझाए । डॉ. भवनाथ झा ने भी अंजू को समझाने की कोशिश की । पर उसने कहा, "जिस प्रकार रंजन ने मेरी खुशी छीन ली है, उसी प्रकार मैं उसकी खुशी छीनकर ही दम लूंगी ।"

और सचमुच, दूसरे रोज ही अंजू ने विष खा लिया । खबर मिलते ही डॉ. भवनाथ झा अंजू के घर पहुंचे । तब तक अंजू मौत की गोद में जा चुकी थी ।

उस घटना के एक माह बाद डॉ. भवनाथ झा को खबर मिली कि एक दुर्घटना में रंजन की भी मृत्यु हो गयी है ।

डॉक्टरी की पढ़ाई खतम करने के बाद डॉ. भवनाथ झा ने इलाहाबाद में अपने पुश्तैनी मकान में क्लीनिक खोलकर प्रैक्टिस शुरू कर दी ।

इलहाबाद के नेहरू-परिवार के साथ-साथ झा-परिवार का भी नाम बड़े गर्व से लिया जाता है । झा-परिवार ने कई विद्वानों, प्रशंसकों एवं समाज-सेवियों को पैदा किया । भारत सरकार ने भी इस परिवार के सदस्यों के त्याग एवं सेवा के लिए यथोचित सम्मान दिया ।

डॉ. अमरनाथ झा को १९५४ में पद्मभूषण, डॉ. आदित्य नाथ झा को २६ जनवरी, १९७२ को मरणोपरांत पद्मभूषण तथा डॉ. आदित्य नाथ झा की धर्मपत्नी आद्या झा को भू.पू. राष्ट्रपति वी.वी. गिरी ने पद्मश्री से पुरस्कृत किया ।

इस परिवार की देन पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय है तथा अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाएं हैं ।

डॉ. अमरनाथ झा, डॉ. भवनाथ झा, शिवनाथ झा, विभूति नाथ झा तथा डॉ. आदित्य नाथ झा, कर्मयोगी डा. गंगा नाथ झा के सुपुत्र थे ।

हाल ही में श्रीमती आद्या झा, जब डॉ. भवनाथ झा के निजी पुस्तकालय से कुछ कागजात उलट-पलट रही थीं । तो उन कागजातों के ढेर में डॉ. भवनाथ झा की एक व्यक्तिगत डायरी उनके हाथ लगी । उस डायरी में डॉ. भवनाथ झा के जीवन की यह सत्य घटना लिखी थी । आज भी झा-परिवार के पास प्रेतिनी अंजू द्वारा दी गयी अशरफियां मौजूद हैं ।

—II/१२, सियाई कॉलोनी
गोविंदपुर इलाहाबाद-२११००४

सफलता में दोषों को मिटाने की विलक्षण शक्ति है ।

— [illegible]

सब कार्यों में सफलता पूर्व तैयारी पर निर्भर रहती है । पूर्व तैयारी के बगैर निश्चित रूप से असफलता ही हाथ रहती है ।

— [illegible]

ज्योतिष : समस्या और समाधान

— अजय भाम्बी

श्याम किशोर प्रसाद, देहरादून

प्रश्न : शनि का मीन राशि में रहने के बावजूद मेरी पदोन्नति होगी ? कब ?

उत्तर : मीन का शनि आपके मार्ग में व्यवधान नहीं डालेगा ।

अमरनाथ शर्मा, हमीरपुर (हि. प्र.)

प्रश्न : व्यापार में घाटा, उपाय बताएं ?

उत्तर : पुखराज धारण करें, लाभ होगा ।

पुष्पेंद्र उप्पल, दिल्ली

प्रश्न : संतान कब होगी ?

उत्तर : सूर्य की उपासना के साथ-साथ पुखराज धारण करें, इस वर्ष गर्भधारण की संभावना है ।

सुहेल जैन, जम्मू तवी

प्रश्न : जन्म से ही अस्वस्थ, रोग से छुटकारा कब ?

उत्तर : योग्य चिकित्सक को दिखायें, अभी स्वास्थ्य कुछ समय और नरम रहेगा ।

योगिता देवी, सिवनी

प्रश्न : क्या मेरा पी.सी.एस. में चयन होगा ? कब ?

उत्तर : पूर्ण संभावना है ।

मनोज अग्रवाल, कांडला (गुजरात)

प्रश्न : कांडला से बरेली तक ट्रांसफर होगा ?

उत्तर : इस वर्ष हो जाएगा ।

दान सिंह, जयपुर

प्रश्न : वाहन (कार) की प्राप्ति कब ?

उत्तर : अप्रैल '९७ से पूर्व ।

सावित्री तिवारी, कानपुर

प्रश्न : क्या सिविल सर्विसेज में सफलता मिलेगी ? कब ?

उत्तर : मिलने का योग है, प्रयास बढ़ायें ।

एस. दीक्षित, ग्वालियर

प्रश्न : विवाह १७ दिसंबर १९९२ को हुआ, संतान नहीं हुई, कृपया उपाय बतायें संतान योग है तो कब तक ?

उत्तर : संतान डेढ़ वर्ष में हो जाएगी, चिंता न करें ।

जनार्दन, झांसी

प्रश्न : पत्नी से तलाक संभव है या नहीं ? केस विचार में है ।

उत्तर : तलाक हो ही जाएगा ।

अंजू, दिल्ली

प्रश्न : संयुक्त परिवार से अलग मकान लेकर रहना क्या ठीक रहेगा ?

उत्तर : अलग रहना ही पड़ेगा ।

अजय कटारिया, श्रीगंगानगर

प्रश्न : व्यवसाय किस चीज का लाभकारी है ?

उत्तर : आयात-निर्यात का कार्य करना लाभदायक रहेगा ।

सरोजा सोलंकी, लखनऊ

प्रश्न : मेरा स्वयं का मकान कब तक ? उपाय बतायें ?

उत्तर : अगले ढाई वर्ष में आपकी बहुत सारी इच्छाएं पूर्ण हो जाएंगी ।

कंचन वर्मा, जमशेदपुर

प्रश्न : मेडिकल कॉलेज में प्रवेश की सफलता कब तक ? रत्न सुझायें।
उत्तर : नीलम पहनें, सफलता मिल सकती है।

अभिलाषा गोयल, बुलंदशहर
प्रश्न : शुभ विवाह कब होगा ? रत्न सुझायें ?
उत्तर : इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में।

संजीव लाहोटी, नगीना
प्रश्न : विशेष सफलता का योग कब है ?
उत्तर : सोलह वर्ष के बाद।

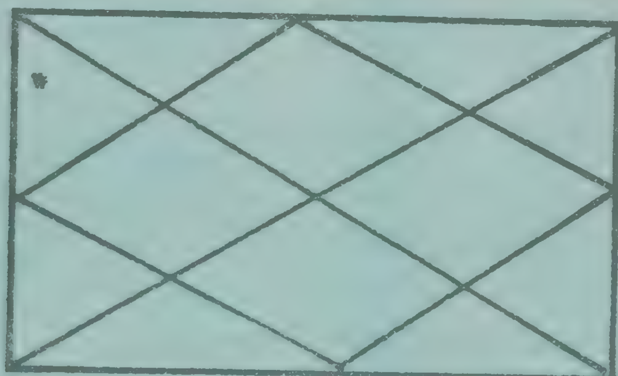
निशा शर्मा, चित्तौड़गढ़
प्रश्न : मिरगी की बीमारी कब खत्म होगी ? ६ साल से है।
उत्तर : अब इस बीमारी से मुक्ति मिलने का समय आ गया है, योग्य चिकित्सक को दिखायें।

केशव चंद्र शर्मा, भोपाल
प्रश्न : मेरी पदोन्नति कब तक ? रत्न सुझायें ?
उत्तर : शीघ्र ही यह शुभ सूचना आपको प्राप्त होगी।

डॉ. आशुतोष जोशी, लखनऊ
प्रश्न : विदेश यात्रा कब और कितने समय के लिए ?
उत्तर : वर्तमान में जाने का योग बन रहा है, लेकिन अधिक समय तक विदेश नहीं रह पाएंगे।

रवींद्र पंवार, श्रीनगर-गढ़वाल
प्रश्न : पी.ओ. परीक्षा में सफलता कब तक ?
उत्तर : प्रयास करें, इस बार सफलता मिलेगी।

प्रविष्टि—१७०



नाम
जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) .... महीना .... सन्.............
जन्म-स्थान.................................जन्म-समय.............................
वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण ....
पता ....
आपका एक प्रश्न..
इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें
संपादक (ज्योतिष विभाग—प्रविष्टि १७०) 'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० मई, १९९६

भारत में दिल से संबंधित रोग जिस गति से बढ़ रहे हैं, उस पर हर व्यक्ति का चिंतित होना स्वाभाविक है । सन् १९९१ के आंकड़ों के अनुसार हृदयवाहिनी रोगियों की संख्या ४ करोड़ चार लाख थी, इनमें से 'कारनरी हृदय' रोगियों की संख्या १ करोड़ इक्कीस लाख और उच्च रक्तचाप के रोगियों की संख्या २ करोड़ दो लाख थी । लेकिन विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि हृदय रोग के होने के कारणों पर रोकथाम न की गयी तो सन् २००१

स्वास्थ्य : एक प्रयोग

हृदय रोगी पूरी तरह जीवन भर स्वस्थ रह सकते हैं

● भगवती प्रसाद डोभाल

तक यह बढ़कर ५ करोड़ २५ लाख हो जाएंगे । इसमें १ करोड़ साठ लाख कारनरी हृदय रोगी और २ करोड़ नब्बे लाख उच्च रक्तचाप के रोगी होंगे । भारत की जनसंख्या की तुलना में अमरीका की जनसंख्या बहुत कम है । लेकिन वहां पर आज ६ करोड़ ६० लाख उच्च रक्तचाप और एक करोड़ एनजाइना के रोगी हैं ।

इन आंकड़ों पर विचार करने से लगता है कि आनेवाले समय में रोकथाम के कोई उपाय नहीं किये गये तो मानव सभ्यता इस रोग की ग्रास होने से नहीं बच पाएगी ।

रोग के कारण

अब प्रश्न उठता है कि कारनरी हृदय रोग के कारक कौन-कौन से हैं । चिकित्सक मुख्य ती कारणों को पहचानने में सफल हुए हैं :

शारीरिक कारण : शारीरिक सक्रियता का अभाव है ।

व्यावहारिक कारण : अधिक तनाव और धूम्रपान करना है ।

औषधीय कारण : उच्च रक्तचाप, अधिक कोलेस्ट्रोल का होना, ट्राइ ग्लीसराइड सीरम में अधिक, शर्करा और निम्न एच डी एल कोलेस्ट्रोल का होना है ।

कैसे बचें

यद्यपि कारनरी हृदय रोग के उपचार के लि सोरबिट्रेट दिया जाता है । लेकिन यह दवाएं रोग की पूर्ण चिकित्सा नहीं कर पातीं । दवाएं कारनरी धमनी की मांसपेशियों को क्रियाविही कर देती हैं, दवाओं का असर सिर्फ ६ से १० घंटे तक रहता है । और रोग जैसा था वैसा ही रह जाता है ।

हृदय चिकित्सा के उपचार में दवा के अतिरिक्त दो अन्य विधियां भी हैं—एंजोप्ला

और शल्य चिकित्सा, यह चिकित्सा भी रोग का स्थायी इलाज नहीं है । रोग पुनः उभर जाता है ।

कारनरी एंजोप्लास्टी में धमनी के भीतर हुई चरबी के जमाव को साफ करते हैं । इसमें भी पचास प्रतिशत रोगी छह महीने के भीतर चरबी का धमनी के भीतर जमने की शिकायत से परेशान हो जाते हैं । इस शल्य क्रिया में रोगी का एक लाख रुपये तक का बजट आता है । 'बाईपास' शल्यक्रिया में शंकरी धमनी को रोगी की टांग की शिरा से बदलते हैं । इसमें छाती की धमनी का भी प्रयोग करते हैं । इस चिकित्सा में डेढ़ से २ लाख रुपये तक व्यय हो जाता है । यह भी स्थायी इलाज नहीं है । इसमें भी रोगी में तीन या पांच वर्ष के भीतर धमनी के बंद होने की संभावना बनी रहती है ।

लाइलाज बीमारी नहीं है

कारनरी धमनी के बार-बार बंद होने के बारे में १०-१५ वर्ष पहले तक यह मान्यता थी कि हृदय रोग एक स्थायी बीमारी है, यह एक बार किसी को हो जाए तो फिर वह जीवनभर इससे ग्रस्त रहेगा । लेकिन यह मान्यता अब बदल गयी है । अनुसंधानों से आज चिकित्सक इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके हैं कि यदि रोगी अपने रहन-सहन में परिवर्तन कर ले तो वह इस जानलेवा बीमारी से मुक्त हो सकता है ।

जीवन के रहन-सहन को बदलने का पहला परीक्षण अमरीका के चिकित्सक डीन अर्निश ने सन् १९७७ और ८० के बीच किया । उनके द्वारा किये परीक्षण से उत्साहजनक परिणाम सामने आये ।

शाकाहारी बनें

आर्निश ने हृदय रोगियों को शाकाहारी

डॉ. विमल छज्जर



भोजन देना शुरू किया। मांसाहार में अंडे का सफेद भाग ही दिया । वसा बिहीन दूध और दही खाने में दी । उन्होंने पूरी कैलरी का दस प्रतिशत प्रतिदिन घटाया और कोलेस्ट्रोल का ५ मिलीग्राम यानी आधा चम्मच क्रीम । खान-पान के परिवर्तन के अतिरिक्त आर्निश ने योग, ध्यान और कसरत के साथ-साथ ३० मिनट सप्ताह में तीन दिन घूमने का नियम बनाया ।

उत्साहजनक परिणाम मिलने पर अमरीका में हृदय रोग के उपचार में एक क्रांति आयी । जहां अमरीका का उपचार में खर्च ११७ खरब डॉलर प्रति वर्ष आता था, वहां इस आर्थिक बोझ को कम करने का नया रास्ता मिला । यह स्थिति तो अमरीका में थी, लेकिन भारत में इसका बीड़ा उठाया युवा चिकित्सक डॉ. बिमल छज्जर ने । इन्होंने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से त्यागपत्र देकर 'साओल हेल्थ एंड रिसर्च फाउंडेशन' की स्थापना की । इसके अंतर्गत हार्ट-क्लब की आधारशिला रखी । इस क्लब के वह रोगी सदस्य हो सकते हैं जिनको दिल का दौरा पड़ चुका हो, एंजाइना का दर्द रहता हो और बाईपास सर्जरी या एंजोप्लास्टी का जिन्हें सुझाव दिया गया हो । जिनकी बाईपास सर्जरी हो चुकी है, वह भी इस क्लब के सदस्य बन सकते हैं । आज डॉक्टर छज्जर के क्लब में १०० सदस्य हो चुके हैं ।

डॉक्टर छज्जर का यह प्रयोग बिना दवा और शल्य चिकित्सा के चल रहा है । यह अमरीका के डॉ. डीन आर्निश से भी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं । हाल ही में 'बिहेविरियल मेडिसिन' की विश्व कांग्रेस जो वाशिंगटन डी. सी. में संपन्न हुई, से डॉक्टर छज्जर लौटे हैं ।

'साओल' क्या है

अब आप प्रश्न करेंगे कि 'साओल' क्या है ? वैसे राजस्थानी भाषा में 'साओल' का अर्थ है संपूर्णता यानी—'जीने के लिए विज्ञान और कला का उचित तालमेल । 'साओल' का कार्यक्रम प्रशिक्षण देता है अपने प्राचीन योग, ध्यान और दर्शन के अनुसार जीवन ढालना । इस सांचे में यदि रोगी अपना जीवन ढाल दे तो वह अपने तनाव को व्यवस्थित कर सकता है । अच्छे स्वास्थ्य के लिए कोई भी इस वैज्ञानिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं कर सकता है । 'साओल' ने वैज्ञानिक अनुसंधानों की पूरी जानकारी प्राप्त कर हृदय रोग के कारणों की रोकथाम कर अच्छे स्वास्थ्य के लिए मार्ग अपनाने का प्रक्षिण तैयार किया है ।

'साओल' का अर्थ है संपूर्णता यानी—'जीने के लिए विज्ञान और कला का उचित तालमेल । 'साओल' का कार्यक्रम प्रशिक्षण देता है अपने प्राचीन योग, ध्यान और दर्शन के अनुसार जीवन ढालना । इस सांचे में यदि रोगी अपना जीवन ढाल दे तो वह अपने तनाव को व्यवस्थित कर सकता है ।

कम वसायुक्त शाकाहारी डाइट, व्यक्ति के भोजन की व्यवहार की व्यवस्था और सामान्य शारीरिक गतिविधि के द्वारा वैज्ञानिक प्रयोग साओल कर रहा है । साओल कार्यक्रम का मुख्य ध्येय है—कारनरी धमनी के अंदर ज[...] होनेवाली चरबी को गलाकर साफ करना, जिससे रक्त का संचरण हृदय में स्वछंद गति[...] हो सके । कारनरी हृदय रोग में मूलरूप से चरबी का धमनी के अंदर जमा होना ही का[...] है । जिससे हृदय को ऑक्सीजन रक्त के [...] नहीं पहुंच पाती और हृदय बगैर ऑक्सीजन[...] अपनी क्रियाओं को संपादित नहीं कर सक[...] है ।

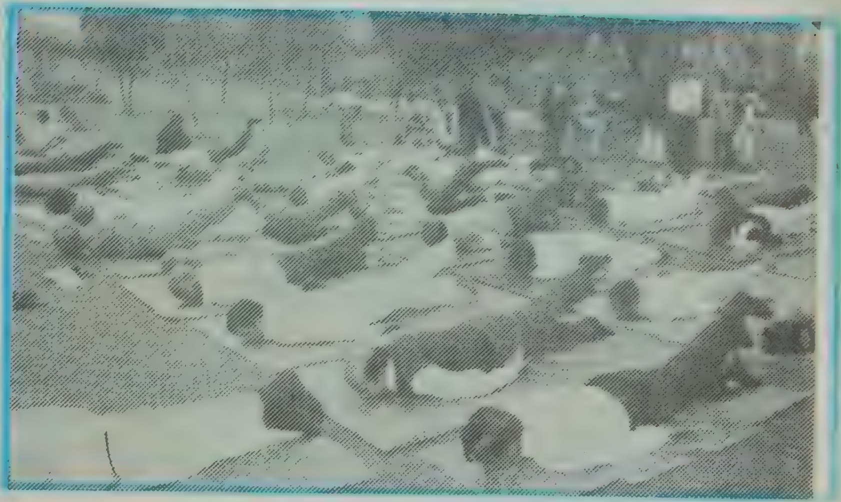
'साओल' हृदय कार्यक्रम के अंतर्गत द[...] महीने का प्रशिक्षण है । इसमें कारनरी हृदय[...] रोग की रोकथाम के लिए चार दिन का यो[...] खानपान की शिक्षा, स्ट्रेस मैनेजमेंट का प्रशिक्षण, सूरजकुंड आदि साफ वातावरण [...] दिया जा रहा है ।

डॉ. छज्जर का संपर्क सन् १९९१ में डॉ[...] डीन अर्निश से अखिल भारतीय आयुर्वि[...] संस्थान में तब हुआ, जब वह एक अंतररा[...] संगोष्ठी में भाग लेने भारत आये । १९९० [...] १९९५ के अंतराल में छज्जर ने अपने[...] प्रयोग के द्वारा रोगियों का उपचार करना शु[...] किया, जिसमें उन्हें शत-प्रतिशत सफलता मिली । उनका दावा है कि अब तक उनके उपचार किये गये रोगियों को ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं पड़ी । साओल हार्ट कार्य[...]



ध्यान

व्यायाम करते हुए हृदय रोगी



में भाग लेनेवाले रोगी को दो सप्ताह के भीतर ही अच्छे परिणाम मिलने शुरू हो जाते हैं । पहला परिवर्तन होता है एंजाइना के दर्द में कमी ।

सस्ती पद्धति

साओल चिकित्सा पर प्रति व्यक्ति खर्च लगभग १२ हजार आता है । उपरोक्त दो चिकित्सा विधि में रोग के पुनः होने की संभावना बनी रहती है । जबकि तीसरी विधि के अंतर्गत पुनः रोग होने की परेशानी से रोगी मुक्ति पा सकता है ।

साओल हृदय कार्यक्रम में योग चार भागों में वर्गीकृत किया गया है—

१. प्रतिदिन १५ मिनट की आंखों, कानों, चेहरे, गरदन, कंधों, छाती, पेट, कमर, जांघों, घुटनों, एड़ियों और पैरों के अगले और पिछले भाग की कसरतें ।

२. आसन १५ से २० मिनट के होते हैं । इनमें सूर्य नमस्कार के अतिरिक्त टाडासन, पद्मासन, संसकासन, अर्धमत्सेंद्रासन, उत्तानपादासन, मयूरासन, सलभासन, भुजंगासन किये जाते हैं ।

३. प्रेक्षा ध्यान तीसरे क्रम में किया जाता है और चौथी क्रिया में कायोत्सर्ग अंतिम क्रिया है । साओल का कार्यालय ए-२५ बी, लाजपत नगर-II, नयी दिल्ली में है ।

आशा का केंद्र

इस केंद्र में सर्वप्रथम 'स्ट्रे मैनेजमेंट' का प्रशिक्षण दिया जाता है । आज के महानगरीय जीवन के प्रदूषित वातावरण में जहां विचित्र प्रकार के तनावों में व्यक्ति कार्य कर रहा है । उसे निश्चय ही हृदय की बीमारियों का सामना एक दिन करना पड़ सकता है । अपने क्रोध, कार्य करने की शैली आदि को इत्मीनान से बदलने की आवश्यकता पर साओल जोर देता है ।

लेखक भी एक दिन साओल केंद्र में हृदय रोगियों को देखने गया वहां पर जीने की एक नयी उमंग सामने है ।

यदि हृदय रोग, मधुमेह और जोड़ों के दर्द से मुक्ति पानी है तो अपने जीवन की दिनचर्या बदलें, और स्वस्थ रहें ।

सी-२,२२५३ वसंत कुंज नयी दिल्ली

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिवप्रसाद पाठक

मेष : स्वजनों के सहयोग से संपत्ति कार्यों में सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । आत्मविश्वास तथा साहस में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से चिंता होगी । विशिष्ट राजनेता अथवा राज्याधिकारी से लाभ मिलेगा । न्यायालयीन कार्यों में विलंब होगा । धार्मिक स्थान की यात्रा होगी । आर्थिक अस्थिरता तथा स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें । परोपकारी कार्यों से पीड़ा होगी ।

वृषभ : धार्मिक तथा मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । आर्थिक कार्यों में व्यर्थ अवरोध उपस्थित होंगे । प्रवास का आकस्मिक अवसर होगा । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा होगी । मित्रों से संतुलित संभाषण करें । व्यर्थ वाद-विवाद टालना हितकर होगा । मासांत में व्यर्थ भय, अज्ञात चिंता तथा उदासीनता का उदय होगा ।

मिथुन : साहस तथा आत्म विश्वास से प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियंत्रण होगा । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से आजीविका संबंधी परिवर्तन होगा । आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । रचनात्मक, सामाजिक अथवा आध्यात्मिक क्रियाशीलता में वृद्धि होगी । संपत्ति कार्यों में सावधानी हितकर होगी । साझे के कार्यों से दूर रहें ।

कर्क : मास में भाग्यदायी सफलता मिलेगी । उच्चाधिकारियों पर प्रभाव वृद्धि होगी । मनोनुकूल कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । सत्संगति से आत्म विश्वास तथा साहस में वृद्धि होगी । शत्रु पक्ष के गुप्त षड्यंत्रों का भंडा फोड़ होगा । शत्रु पक्ष का पराभव होगा । स्वास्थ्य संबंधी विकारों का उदय होगा । रक्त संबंधियों से व्यर्थ वाद-विवाद टालें । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करें ।

सिंह : नवीन संपर्कों से लाभ मिलेगा । प्रवास से इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक वातावरण में व्यर्थ खिन्नता रहेगी । प्रियजन की अस्वस्थता से चिंता होगी । न्यायालयीन अथवा संपत्ति कार्यों में सफलता होगी । शत्रु-पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा । स्वजनों के सहयोग से समस्या का समाधान होगा ।

कन्या : उच्चाधिकारियों की अनुकंपा से पद परिवर्तन अथवा उच्च पद की प्राप्ति होगी । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । अतिथि समागम प्रसन्नतादायी होगा । आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा । संपत्ति कार्यों में

ग्रहस्थिति—सूर्य १४ मई से वृषभ में, मंगल मेष में, बुध १६ से मेष में (वक्री), गुरु धनु में, शुक्र ४ से मिथुन में, शनि मीन में, राहु कन्या में, केतु मीन राशि में, हर्शल नेपच्यून मकर में, प्लूटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

शत्रु-पक्ष अवरोध उपस्थित करेगा । परोपकारी कार्यों से मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । सार्वजनिक कार्यों में मित्रों के सहयोग से उल्लेखनीय उपलब्धि होगी ।

तुला : उद्यम में नवीन अवसरों का उदय होगा । विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से कार्यों में विशिष्ट लाभ मिलेगा । उच्चाधिकारियों से निकटता बढ़ेगी । नवीन दायित्वों की प्राप्ति होगी । पारिवारिक सुखद समाचार मिलेगा । धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य की पूर्ति से प्रसन्नता होगी । व्यर्थ संभाषण टालन हितकर होगा ।

वृश्चिक : साहसिक कार्यों में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी । पारिवारिक विषमता से भावनात्मक पीड़ा होगी । राजकीय कार्यों में दायित्वों की अधिकता होगी । नवीन दायित्व से प्रभाव तथा प्रतिष्ठा वृद्धि होगी । आध्यात्मिक प्रवास अथवा सत्संग का अवसर मिलेगा । संपत्ति कार्यों में विलंब होगा । शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से सर्तकता रखें । न्यायालयीन अथवा संपत्ति कार्यों में विलंब हितकर होगा ।

धनु : रचनात्मक कार्यों से व्यक्तित्व विकास होगा । पारिवारिक कार्यों की अधिकता होगी । राजकीय कार्यों में व्यर्थ व्यवधान उपस्थित होंगे । उच्चाधिकारियों से मतांतर होंगे । संभाषण में संतुलन हितकर होगा । नवीन संपत्ति अथवा वाहन पर व्यय होगा ।

मकर : आजीविका संबंधी परिवर्तनों से चिंता होगी । पारिवारिक वातावरण चिंतनीय होगा । धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । उच्चाधिकारियों की अनुकंपा के बावजूद शत्रु-पक्ष से पीड़ा होगी । भावुकता की अपेक्षा विवेक से कार्य करना हितकर होगा ।

कुंभ : आर्थिक योजनाओं में उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । शत्रु -पक्ष की प्रबलता से चिंतनीय स्थिति का उदय होगा । संपत्ति अथवा वाहन पर धन व्यय होगा । जोखिमपूर्ण कार्यों से धन लाभ होगा । रचनात्मक अथवा सामाजिक कार्यों में व्यस्तता अधिक होगी ।

मीन : परोपकारी कार्यों की अधिकता होगी । आजीविका की दिशा में नवीन दायित्वों की प्राप्ति होगी । आत्मविश्वास तथा साहस से लंबित कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक वातावरण खिन्नतादायी होगा । स्वजनों से भावनात्मक पीड़ा होगी । विशिष्ट राजनेता से भेंट होगी ।

—ज्योतिष धाम :
१२/४, पुराना सुभाष नगर
गोविंदपुरा, भोपाल, मध्य प्रदेश

पर्व और त्यौहार

१ मई—मई दिवस, प्रदोष व्रत, ३ स्नानदान व्रतादि की वैशाखी पूर्णिमा, ६ संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी, १० कालाष्टमी, १३ अचला एकादशी व्रत, १४ भौम प्रदोष, १५ सावित्री चतुर्दशी, १७ स्नानदान श्रद्धादि की अमावस्या, १८ गंगा दशहरा व्रतारंभ, २० रम्भा तृतीया, २१ वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, २३ विंध्यवासनी पूजा, २८ गंगा दशहरा, २९ निर्जला एकादशी भीमसेनी एकादशी गायत्री जयंती, ३० प्रदोष व्रत ।



सार-संक्षेप

प्रेम के बदलते दायरे

• एरिक सीगल

रेस्त्रां में हंसने-गाने-गुनगुनाने और गिलासों के टकराने की आवाज गूंज रही थी । बौब को लगा लोग कोई उत्सव मना रहे हैं ।

बौब ने पूछा, "तुम शादीशुदा हो ?"

"ना ।" वह धीरे-से बोली, "कभी शादी नहीं होगी ।" यह कहते हुए उसने बौब के हाथों को छुआ ।

उसी समय नीकोल की दृष्टि महापालिकाध्यक्ष लुई पर पड़ी । बौब का परिचय कराया । बातें होती रहीं ।

लुई ने दोनों को कल भोजन पर बुलाया । बौब को लौटना था मगर लुई ने बताया कि आंदोलन के कारण कोई उम्मीद नहीं है ।

बौब और नीकोल बैठे रहे । बौब ने उसे बताया कि उसे नशा चढ़ रहा है । फिर बौब बातों में लग गया । उसने नीकोल को याद दिलाया कि वह बता रही थी कि क्यों वह शादी नहीं करेगी । नीकोल ने उत्तर दिया कि शादी सबके लिए है, उसके लिए नहीं ।

"तुम्हारी जैसी सुंदरी... ! तुमको बच्चों की कभी चाह नहीं होती ?"

"मुझे लगता है मुझे चाह है । अगर मुझे ऐसा पुरुष मिले तो ।"

"खुद उसे पालोगी ?"

"क्यों नहीं ?"

"तुम अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते हो ?" नीकोल पूछ बैठी ।

"उसी के कारण मेरा विश्वास शादी में है ।" बौब ने बताया ।

"तुम्हारे विश्वास पर मुझे ईर्ष्या है ।"

दोनों उठकर चलने को तैयार हुए ।

समुद्र के किनारे गाड़ी चल रही थी ।

"समुद्र का जल बुला रहा है", नीकोल ने कहा ।

गाड़ी रुकी । दोनों समुद्र में बढ़ने लगे । नीकोल कपड़े उतार रही थी ।

बौब उसकी सुंदरता देखता रहा ।

"चलो", नीकोल ने पुकारा । वह उसके पीछे गया । अब कोई होनी को नहीं रोक सकता था । उसे मालूम था कि अब क्या होगा और वह यही चाहता भी था ।

बौब और नीकोल बैठे रहे । बौब ने उसे बताया कि उसे नशा चढ़ रहा है । फिर बौब बातों में लग गया । उसने नीकोल को याद दिलाया कि वह बता रही थी कि वह क्यों शादी नहीं करेगी । नीकोल ने उत्तर दिया कि शादी सबके लिए है, उसके लिए नहीं ।

दोनों ने एक- दूसरे को प्यार किया ।

"मेरे साथ सेटे लौट चलो । कोई शर्त नहीं है । बस आज की रात, हम दोनों एक-दूसरे के साथ रहना चाहते हैं ।

"ठीक है ।"

बौब डॉक्टर की अनुमति से लड़के को देखने गया ।

"बोलने पर दर्द करता है", जीन-क्लाउड ने बताया ।

बौब ने उसे बताया कि उसका अपेंडिक्स फट गया था ।

"बौब मुझे दुःख है मैंने तुमको काफी परेशान किया ।"

"शीऽऽ" कहते हुए बौब ने लड़के को चुप रहने का इशारा किया ।

बौब के लौटने पर शीला ने समाचार पूछा । यह सुनकर कि वह ठीक है, शीला ने ईश्वर को धन्यवाद दिया ।

दोनों लड़कियों ने सारी गलतियों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेनी चाही और बौब को बताया कि वे घबरा गयी थीं । बौब ने अपनी पुत्रियों को छाती से लगा लिया और कहा कि सारी गलती मेरी है और किसी की नहीं । हमलोग बराबर साथ रहेंगे । इसे कोई नहीं बदल सकेगा ।

शीला धीरे-से बोली, "मैं तुम्हारी कमी बुरी तरह से महसूस कर रही थी ।" दोनों की अंगुलियां आपस में बंध गयी थीं । बौब ने अपने होंठों का उसे स्पर्श दिया । उसने मन-ही-मन मनाया कि शीला उसे कभी नहीं छोड़े । कभी नहीं ।

दूसरे दिन शीला भी लड़के को देखने गयी । और जब एक दिन बौब नहीं जा सका तब भी शीला उसे देखने गयी ।

"मैं तुम्हें चाहती हूं ।" शीला ने जीन से कहा ।

"जैसे मैं ठीक हो जाऊंगा, मैं फ्रांस चला जाऊंगा ।" सिर घुमाकर उसने कहा ।

उसकी बात को काटते हुए शीला ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता । उसे साथ ही रहना है । लड़के ने कहा, "जब मैं यहां आया मुझे नहीं मालूम था...बौब मेरा क्या है ? मगर तुम जानती थी ?"

"हां", शीला ने स्वीकारा ।

"तब तुम मुझसे नाराज़ रही होगी ?"

लड़के के हाथों को पकड़ते हुए शीला ने कहा कि शुरू में शायद थी । मगर अब एक-दूसरे को जान गये हैं । दोस्त हैं ।"

"तुम बहुत दयालु हो शीला !" लड़का कुछ ज्यादा ही कहना चाहता था । कार में बौब

"चलो", नीकोल ने पुकारा । वह उसके पीछे गया । अब कोई होनी को नहीं रोक सकता था । उसे मालूम था कि अब क्या होगा और वह यही चाहता भी था ।

और शीला यह विचार करने लगे कि हॉस्पीटल के बाद जीन का क्या होगा ? बेटियों को बौब ने कहा कि तुम्हारी मां और मैं सोचता हूं कि उसे घर लाकर रखें जब तक वह स्वस्थ न हो जाए । दोनों बेटियों को सुझाव पसंद आया ।

जीन-क्लाउड पतला और कमजोर हो गया था । शीला ने घर के दरवाजे पर उसे चूमा । फिर जीन अपने ऊपरवाले कमरे में गया । दरवाजा खोलते ही उसे पेले का हस्ताक्षर किया हुआ रंगीन चित्र दिखा । छिपी हुई पौला ने कूदकर पूछा, "पसंद आया ?" जेसी ने ख़ुशी

से कहा, "घर में स्वागत है ।"

करीब-करीब जुलाई के अंत में लड़का घर लौटा । शीला ने अपनी छुट्टी बढ़ा ली, और दोनों, बौब और शीला, हार्वड गये । इस मौसम में हार्वड में ज्यादा बाहरी ही लोग दिखायी पड़ते हैं । दोनों घूमते रहे । बातें करते हुए बौब ने कहा, "अगर नोआस आर्क मुझे दिखायी दे तो रोककर हम दोनों चढ़ जाएंगे ।"

"उन्हें नौजवान नमूने चाहिए ।"

बौब ने बताया कि जितने पूर्वस्नातक इंधर से गुजरे हैं तुमको कनखी से देखते गये हैं ।

"बौब, तुम्हारी बेटी जेस्सीका और जवानी में एक ही मुसकान की दूरी रह गयी है ।"

"वर्षों दूर शीला, वर्षों दूर", कहकर बौब ने नकारा । एक दूब नोचकर शीला ने दांतों के बीच रख ली । फिर बोली, "एक एम.आर.टी. का प्रोफेसर भी समय को रोक नहीं सकता ।"

"मैं रोकना नहीं चाहता । पीछे ले जाना चाहता हूं ।"

मोमबत्ती की रोशनी में दोनों ने रात का भोजन किया । किसी रेस्त्रां में नहीं । लेक्सींटन के अपने मकान में । पलथी मारकर दोनों आग के सामने बैठे थे ।

बौब ने याद दिलाया, "तुम्हें याद है जब हमलोगों ने पहला-पहला प्यार किया था ?"

शीला ने कहा कि वह उस क्षण को भुलाये रखने की कोशिश करती है । वह बहुत घबरा गी थी, तब । बौब ने भी स्वीकारा कि उसे मालूम नहीं क्यों बुरी तरह से डर लगा था ।

बौब, शीला के करीब खिसक आया था । वह उसी जगह बैठी रही । बौब ने पूछा कि क्या वह विश्वास करती है कि वह उसे बराबर प्यार करेगा ।

"ऐसा मैं समझती हूं ।" अपनी बांहों में उसने शीला को लपेटे हुए पूछा—

"तुम विश्वास करती हो मैं जीवन से ज्यादा तुम्हें प्यार करता हूं ।" आंसू उसके गालों पर ढुलकने लगे ।

"मैं जानता हूं, मैं जानता हूं, तुम्हें मैंने चोट पहुंचायी है । क्या समय के साथ इसे तुम भुला सकोगी ?"

"मैं कोशिश करूंगी । मैं वायदा नहीं कर सकती ।"

बौब ने शीला को अपनी बांहों में लपेट लिया । शीला जैसे ही पीछे की ओर झुकी शैंपेन का गिलास गिर गया ।





"शुभ है", कहकर बौब ने शीला की आंखों को, गालों को, होंठों को चूमा । शीला ने बौब को अपनी बांहों में लिपटा लिया और कहने लगी, "मैंने तुम्हारी कमी बहुत महसूस की है । तुमको खोना मैं बरदाश्त नहीं कर पाती, रौबर्ट... ।"

बौब और शीला टहलने निकले ।

"तुम उसे रखना चाहते हो, है न ?"

"नहीं ! सवाल ही नहीं उठता", उत्तर बौब का मिला ।

शीला ने बताया कि उसने यह नहीं पूछा । वह जानना चाहती थी कि उसके अंदर कैसी भावनाएं हैं । बौब ने बताया कि वह ज्यादा खुश नहीं है मगर वह लड़के को बहुत चाहता है ।

"हम सब चाहते हैं ।"

"मैं भी ! बौब", कहते हुए शीला ने कहा कि अब उसे जाने की जरूरत नहीं है । बौब को विश्वास नहीं हुआ कि उसने शीला को सही सुना है ।

"चले जाने पर क्या तुम उसे भूल जाओगे ?"

"नहीं ।"

"एक तुम्हारा अंश उसी के साथ घूमता रहेगा ।"

"हां ।"

"वह लड़का तुमसे अति प्रेम करता है । हमलोगों को यही दिखायी पड़ता है । लड़कियां घबरायी हैं कि कहीं वे तुम्हें न खो दें । अगर वह रहता है तो हमलोगों को तुमको खोना नहीं पड़ेगा ।" एक और बात है, शीला ने धीरे-से कहा, "तुम उसे प्यार करते हो ।"

"हां", बौब ने कहा । और अपने मन में उसने शीला को शुक्रिया किया ।

सुबह जब जीन, बर्नी के यहां ही था, बौब ने लड़कियों से बात छेड़ी । उसने बताया कि शीला और उसकी राय थी कि लड़के को साथ रखा जाए । "तुम्हारी राय क्या है ?"

"क्या यह सच है मौम", जेस्सी ने पूछा ।

शीला ने बताया कि वही सलाह देनेवाली है । तुरंत पौला बोल उठी कि उसे फ्रेंच पढ़ने में सहयोग मिलेगा । यह पौला की 'हां' थी । जेस्सी ने बताया कि वह जीन को काफी पसंद करती है ।

बौब और शीला एक-दूसरे को देखकर मुसकराये ।

लड़के को बर्नी के घर से लाने बौब गया । लौटते समय बौब ने लड़के को समझाते हुए पूछा कि क्या वह उन लोगों के साथ रहना पसंद करेगा ? परिवार का सदस्य होकर । सब चाहते हैं कि तुम रहो ।

जीन ने बताया कि यह नहीं हो सकता । पंद्रह दिनों में स्कूल शुरू होगा । उसे सेंट मालो

में पढ़ना है, जहां उसकी मां चाहती थी ।

बौब ने फिर जोर दिया कि सब उसे अपने पास रखना चाहते हैं । "हम सब तुम्हें प्यार करते हैं... ।"

मगर लड़का अटल रहा । मां सब कुछ तय करके गयी है । उसे जाना ही पड़ेगा । यही सही होगा । बहुत कारणों से । और, उसने अपनी दृष्टि समुद्र की दिशा की ओर घुमा दी ।

तीन दिन बाद की उड़ान में बुकिंग की गयी । बिछुड़ने का समय आया । लोगन का रास्ता, बौब मना रहा था, कभी समाप्त न हो । लड़के को बहुत कुछ बताना था । भावनाओं को साफ करना । प्यार जताना । और, फिर भी कुछ बातचीत रास्ते में नहीं । हवाई अड्डे पर बौब ने लडके से कहा, "संपर्क रखना । अगर चाहते हो तो आगे गरमी में या क्रिसमस में आ सकते हो । जब चाहो आ सकते हो ।" फिर पूछा, "आगे गरमी में आओगे ?"

"हो सकता है ।" लड़के ने विदा की अनुमति मांगी ।

"नहीं अभी नहीं । अभी नहीं ।" बौब ने कहा । जीन ने हाथ बढ़ाया, जैसे समुद्र के पार की जिंदगी की तैयारी कर रहा हो, और विदाई ली । फ्रेंच में विदाई शब्दों को बोलते हुए ।

बौब अब अपने को रोक नहीं सका । उसने छोटे लड़के को अपनी बांहों में उठा लिया और गले लगा लिया । अपने हृदय से लगे हुए लड़के के हृदय की धड़कन को वह महसूस कर रहा था । आपस में दोनों ने कोई शब्द नहीं बोले ।

बौब कहना चाहता था, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं ।" मगर उसके कंठ से निकला,'जाओ ।' उसका गला अवरुद्ध था ।

लड़के ने उसकी ओर एक पल के लिए देखा और बगैर एक शब्द बोले आगे की ओर मुड़ गया ।

बौब बहुत देर तक वहां खड़ा रहा । कुछ रुककर पीछे मुड़ा और खाली बरामदे में चलने लगा ।

— ए-२१ जगत अमरावति अपार्टमेंट
६० ऑफीसर्स होस्टल के पीछे
महेश नगर, बेली रोड, पटना-८०००१

सबसे छोटी फैक्स मशीन

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पोर्टेबल कंप्यूटर की तरह ही अब पोर्टेबल फैक्स मशीन भी भारत में बननी शुरू हो गयी है और यह मात्र दस हजार रुपये में उपलब्ध होगी । इसे कनाडा में बसे एक अप्रवासी भारतीय राजा सिंह तुली ने विकसित किया है । विश्व की अब तक की सबसे छोटी इस फैक्स मशीन को अमरीका में पेटेंट अधिकार प्राप्त हो गया है और अब यह भारत में 'स्लीम फैक्स' के नाम से मिलेगी । यों तो इसे भारत में बनाया जाएगा लेकिन इसके शत-प्रतिशत निर्यात की योजना तैयार की गयी है । आरंभ में 'स्लीम फैक्स इंडिया लिमिटेड' हर साल ऐसी २४,००० फैक्स मशीनों का निर्माण करेगा ।

—प्रकाशचंद्र गंगराड़े

रोचक शोध



महिलाओं की लंबी उम्र का राज क्या है ?

• राजेन्द्र कुमार राय

आजकल अपने देश में उनकी हत्या गर्भ में कर दी जाती है। जी हां, कन्या-भ्रूण-हत्या। लेकिन भारत सहित विश्व के लगभग सभी देशों मे अधिक उम्र के लोगों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या ज्यादा है। आखिर क्यों ? वैज्ञानिक हैरान हैं।

आधुनिक विश्व में अलग-अलग देशों में संस्कृतियां, आहार, जीवन शैली तथा बीमारियों के कारण भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन एक बात सभी देशों में समान है कि महिलाएं पुरुष से अधिक जीती हैं। अस्सी वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं की संख्या पुरुषों से लगभग दोगुनी है। वैज्ञानिक आज भी उम्र के बढ़ने के कारणों को ढूंढ़ने में व्यस्त हैं। इसका रहस्य अभी भी उन्हें सुलझाना है कि समय के साथ उम्र बढ़ने की क्रिया को क्या रोका जा सकता है ? आजकल चिकित्साशास्त्री इस बात की खोज कर रहे हैं कि क्या उम्र बढ़ने की क्रिया को कम किया जा सकता है तथा कौन-कौन से जैविक कारण इस क्रिया से जुड़े हैं ? वैज्ञानिकों को एक सवाल यह भी परेशान कर रहा है कि अधिक उम्र के मामले में औरतों की संख्या पुरुषों से अधिक क्यों है, जबकि कम उम्र में पुरुषों की संख्या ज्यादा है ?

गुणसूत्रों की भिन्नता की भूमिका

कुछ वैज्ञानिक शोधों से यह निष्कर्ष निकला है कि शारीरिक विकास के दौरान औरतों को कुछ विशेष जैविक गुण प्राप्त हो जाते हैं, जिससे उनके शरीर में अधिक दर्द सहने की शक्ति विकसित हो जाती है। कुछ वैज्ञानिकों का विचार है कि गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) की विभिन्नता के कारण भी औरतें ज्यादा जीवनशील हो सकती हैं। लेकिन अभी इसका कोई ठोस सबूत वैज्ञानिकों के हाथ नहीं लगा है। गुणसूत्रों में डी.एन.ए. द्वारा पैतृक गुणों का संचालन होता है। महिलाओं में 'एक्स-एक्स' गुणसूत्र होता है जबकि पुरुषों में 'एक्स-वाई'। जहां महिलाओं के गुणसूत्रों में समानता होती है

वहीं पुरुषों के गुणसूत्रों में भिन्नता । वैज्ञानिकों का अनुमान है कि गुणसूत्रों की भिन्नता अवश्य ही कोई विशेष भूमिका अदा करती है ।

'एक्स-एक्स' गुणसूत्र अधिक शक्तिशाली

कुछ नये वैज्ञानिक प्रयोगों से यह बात पता चली है कि शुरू-शुरू मे गर्भ में महिला बच्चों के मुकाबले पुरुष बच्चे ज्यादा बनते हैं । ऐसा इसलिए होता है कि पुरुष के शुक्राणु का 'वाई' गुणसूत्र छोटा, हलका तथा तेज चलनेवाला होता है, 'एक्स' गुणसूत्र के मुकाबले । इसलिए 'वाई' गुणसूत्र ज्यादा महिला के 'एगटी' से मिलता है, जिसके फलस्वरूप पुरुष बच्चे महिला बच्चे के मुकाबले ज्यादा बनते हैं । इसका अनुपात १२० पुरुष और १०० स्त्री का होता है । परंतु पुरुष बच्चा गर्भ के आरंभ में ही ज्यादा नष्ट हो जाता है । बचपन में भी पुरुष बच्चे जल्दी बीमार होते हैं । लेकिन हर तरह की प्रक्रिया के बाद भी पुरुष बच्चे हमेशा ही स्त्री बच्चों के मुकाबले संख्या में औसतन ज्यादा रहते हैं ।

एक बात जो पूरी तरह वैज्ञानिक प्रयोगों में उभरकर सामने आयी है वह यह कि 'एक्स-एक्स' गुणसूत्र 'वाई-वाई' गुणसूत्र के मुकाबले ज्यादा मजबूत हैं । महिलाओं में किसी एक गुणसूत्र में कमी की दूसरे से पूर्ति हो जाती है, क्योंकि दोनों समान हैं, परंतु पुरुषों में ऐसा नहीं हो पाता है । इस कारण पुरुष जीन में किसी भी खराबी को सुधारना काफी मुश्किल होता है । जीन की कमजोरी पुरुष को कमजोर बना देती है ।

कारनेल विश्वविद्यालय (अमरीका) के डॉ. मार्क वेकस्लाट का कहना है कि औरतें बाहरी बीमारियों को देर तक टाल सकती हैं, लेकिन वैज्ञानिक महिलाओं के अधिक दिनों तक जीने के कारणों को अभी भी खोज रहे हैं । कम भोजन भी उम्र बढ़ा देता है, इस विषय पर भी शोध हो रहा है । देखें, कब तक वैज्ञानिक इस गुत्थी को पूरी तरह सुलझा पाते हैं ।

महिलाओं में नहीं बढ़ता कोलेस्ट्रोल

जोन हापकिंस विश्वविद्यालय के डॉ. किर्बी स्मिथ के अनुसार वाई गुणसूत्रों की अधिकता भी पुरुष की उम्र को कम करती है उन्होंने एक परिवार की चार पुश्तों तक परीक्षण करने पर पाया कि औरतें ज्यादा जीवनशील थीं पुरुषों के मुकाबले और उसी परिवार में वे पुरुष जिनका 'वाई' गुणसूत्र किसी कारण नष्ट हो गया था, ज्यादा जीवनशील पाये गये । हारमोन भी महिलाओं को अधिक दिन जीवित रखने में काफी सहायक होते हैं ।

चालीस से पचास वर्ष के बीच पुरुष ज्यादातर हृदय रोग से मरते हैं । कोलेस्ट्रोल और हृदय रोग में बहुत सीधा संबंध है ।

पच्चीस वर्ष की उम्र तक पुरुषों और औरतों में कोलेस्ट्रोल की मात्रा में बहुत अधिक अंतर नहीं होता, लेकिन उसके बाद उम्र बढ़ने के साथ पुरुषों में कोलेस्ट्रोल खून में बढ़ने लगता है और फिर खतरे की सीमा को पार कर जाता है। अगर स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता है, तो यह खतरा कुछ ज्यादा ही रहता है। लेकिन महिलाओं में कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ता है।

कम भोजन भी बढ़ाता है उम्र

वैज्ञानिकों का विचार है कि स्त्री के हारमोन 'एस्ट्रोजन' (कम घनत्ववाली लिपो प्रोटीन) का नाप कम कर देते हैं, यह एक खराब कोलेस्ट्रोल स्तर की पहचान है और दूसरी तरफ अधिक घनत्व वाली लिपो प्रोटीन का नाप बढ़ जाता है, जो अच्छे कोलेस्ट्रोल के रूप में जाना जाता है, जिसके कारण औरतों में हृदय रोग काफी घट जाता है। औरतें जब ५० वर्ष से अधिक की हो जाती हैं, तो 'एस्ट्रोजन' का बनना बंद हो जाता है। हारमोन मनुष्य की सहनशक्ति पर भी असर डालते हैं, जो मनुष्य की बाहरी बीमारियों को रोकने में मदद करती है। औरतों में अधिक प्रतिरोधक क्षमता होने के कारण एक विशेष प्रकार का प्रोटीन अधिक मात्रा में बनता है। कुछ नये प्रयोगों से पता चला है कि अधिक एस्ट्रोजन भी इस प्रोटीन का अनुपात बढ़ा देती है।

कारनेल विश्वविद्यालय (अमरीका) के डॉ. मार्क वेकस्लाट का कहना है कि औरतें बाहरी बीमारियों को देर तक टाल सकती हैं, लेकिन वैज्ञानिक महिलाओं के अधिक दिनों तक जीने के कारणों को अभी भी खोज रहे हैं। कम भोजन भी उम्र बढ़ा देता है, इस विषय पर भी शोध हो रहा है। देखें, कब तक वैज्ञानिक इस गुत्थी को पूरी तरह सुलझा पाते हैं।

—डी-७५३, सरस्वती विहार,
दिल्ली-११००३४

बुरा मान गये

किस्सा आजादी से पहले का है। सर वजीर हसन का नाम उन दिनों वकालत में जाना-माना था। उनका हाथ में मुकदमा लेने का मतलब था मुवक्किल की निश्चिंतता। अदालत में कानूनी मुद्दों पर बहस करने में उनका जवाब नहीं था।

एक दिन उनका कोई मुकदमा एक अदालत में था। उस अदालत का जज एक अंगरेज था। खैर, मुकदमा शुरू हुआ। सर वजीर हसन जमकर अपना पक्ष रख रहे थे। बहस करते हुए उनसे किसी मुद्दे पर गणित की छोटी-सी भूल हो गयी। इस पर उस अंगरेज जज ने चुटकी ली—"सर हसन, हिंदुस्तान आते वक्त मुझे उम्मीद नहीं थी कि यहां के वकीलों को मुझे साधारण गणित भी समझानी पड़ेगी।"

सर वजीर हसन कहां चुप रहनेवाले थे, तुरंत मुसकराकर बोल उठे—"माई लार्ड, हम वकील तो आपको कानून की छोटी-छोटी बारीकियां बराबर समझाते हैं, मगर आप तो जरा-सा गणित ठीक करने में ही बुरा मान गये।"

अधजला सिगरेट का टुकड़ा

सड़क के छोर पर देखती हूं
एक अधजला सिगरेट का टुकड़ा
जो कुछ देर पहले ही
किसी ने अपनी आलीशान कार
की खिड़की से फेंक दिया सड़क पर
वो अधजला सिगरेट का टुकड़ा
व्यथा सुना गया एक कमसिन भोली
नाजुक सुकुमार कन्या की
जो किसी इनसानी भेड़िये की
शिकार हो जाती है
फिर
बेरहमी से फेक दी जाती है
अधजली सिगरेट की तरह
तिल-तिल कर जलने के लिए

— निर्मला
सी-१/१४०३ वसंत कुंज
नयी दिल्ली-११००७०

सत्य

सुख
जब तुम आये मेरे जीवन में
तो सोचा
तुम्हीं सब कुछ हो
मेरी संपूर्णता तुम्हीं में है
पर, हे सुख
जब तुम चले गये
यूं ही धूप-छांही रंग दिखाकर
तब मैंने जाना कि
सुख से परे भी
सत्य की अपनी सत्ता है
उसके परे का संसार ही तो
वास्तविक जीवन है
तब से अब तक
मेरे मन का दरवाजा
खुला तो रहता है
पर, हे सुख
तुम्हारे लिए नहीं।

—पुष्पा गर्ग
जी.एच-१३/५५६, पश्चिम विहार
नयी दिल्ली-११००४१

महानगर

तुझे मिला महानगर !
सच कहा था मां ने...
आज मैं—
गोबर पुते खुले आंगन के बजाय,
गद्देदार सोफे, कूलर, फ्रिज
और रंगीन टी.वी. के बीच,
कांचवाले बक्स में—
रंगीन मछली-सी
बहुत सुंदर लगने लगी हूं...

सुना है,
वह पुश्तैनी मकान बेचकर...
तुमने/मेरे लिए यह
बंदीगृह खरीदा है...
अब तुम...
कहां रह रही हो मां ?

—राबिन शॉ पुष्प
'रवींद्रांगन'
२ एल/४५ महात्मा गांधी नगर
बहादुरपुर हाउसिंग कॉलोनी,
पो. लोहियानगर, पटना-४०००२०

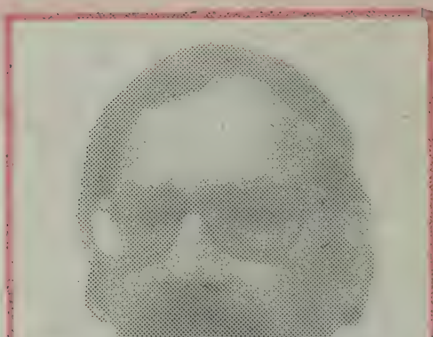
हिंदी के लिए समर्पित विदेशी-भारतीय

'साहित्य एक भावना है, धर्म है तथा दर्शन है समाज का । साहित्य का वर्गभेद नहीं होता है । साहित्य सबके लिए एक सर्वांगीण क्षेत्र है । साहित्य का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत और व्यापक है, इसलिए साहित्य को किसी सीमा-परिधि में नहीं बांधा जा सकता । साहित्य कोई मनुष्य नहीं है जिसे जाति-पांति, ऊंच-नीच, अथवा संप्रदायों में बांटा जाए, इसलिए साहित्य एक ऐसा मंदिर है, जिसके द्वार सबके लिए खुले हैं'—यह कहना है आई. यू. ए. ई. एस. के चेयरमैन डॉ. मोहन के. गौतम का ।

श्री गौतम एक ऐसे साहित्यधर्मी हैं, जिनकी रग-रग में साहित्य बसा हुआ है । वह साहित्य के लिए जीते हैं, साहित्य ही उनका जीवन दर्शन है । श्री गौतम का कहना है कि साहित्य और साहित्यकारों की न कोई जाति होती है और न कोई धर्म होता है । साहित्य का सृजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समाज को एक दिन दिशा देती है ।

साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से यह बताता है कि समाज में क्या हो रहा है । धर्म किधर जा रहा है, लोग किधर जा रहे हैं तथा व्यवस्था में कैसा घुन लग गया है ।

साहित्यकार का क्षेत्र सेवा करना है । वह ऋषि-मुनियों की तरह अपने क्षेत्र की निस्वार्थ सेवा करता है । साहित्यकार की सृजन की प्रक्रिया एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें वह इतिहास, संस्कृति और धर्म के माध्यम से समाज को जीने का तरीका बताता है ।



क्या साहित्य भी वर्तमान व्यवस्था से प्रभावित होता है, श्री गौतम मानते हैं कि व्यवस्था साहित्य को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है । वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में जिस

तरह भ्रष्टाचार का घुन लग गया है और जिस तरह वह प्रदूषित हो गयी है, ऐसे में साहित्य और साहित्यकार बचा नहीं रह सकता है। राजनीति की तरह साहित्य में भी प्रदूषण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी है। 'तो क्या साहित्य का भी पतन हो रहा है ?' श्री गौतम कहते हैं कि 'देखिए न साहित्यकार आजकल क्या सृजन कर रहे हैं और साहित्य आज कहां जा रहा है ?'

श्री गौतम पिछले माह भारत दौरे पर आये। इस समय वह नीदरलैंड की लेडन यूनिवर्सिटी में संस्कृति और अध्यात्म का अध्यापन करते हैं। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय संगठनों, आई. यू. ए. ई. एस., इंटरनेशनल कमीशन ऑन म्यूजियम्स एंड कल्चरल हेरिटेज, ओवरसीज साउथ एशियन इंटरनेशनल एसोसिएशन तथा इंटरनेशनल फोरम ऑव हिंदू स्टडीज के चेयरमैन भी हैं।

भारतीय राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार से दुखी श्री गौतम कहते हैं कि भारतीय राजनीतिक व्यवस्था इतनी प्रदूषित हो गयी है कि लोगों का विश्वास राजनीतिक दलों के नेताओं से उठने लगा है। ऐसे में भारतीय राजनीति के प्रदूषण का प्रभाव साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक है। साहित्य पर पड़नेवाला प्रभाव घातक है। नवयुवकों में अविश्वास की भावना घिरती जा रही है। ऐसे वातावरण में पुराने साहित्यकारों को आगे आकर लोगों को, समाज को तथा देश को सही दिशा देनी चाहिए।

विदेश में साहित्य सेवा के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए श्री गौतम का कहना था कि मैंने विदेश में रहकर भारतीय वंश-परंपरा पर काफी काम किया है। इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से ओतप्रोत नये-नये शोध विदेशी लोगों के सम्मुख रखे हैं, ताकि उन्हें भारत की प्राचीन संस्कृति की सटीक छवि मिल सके।

हिंदी, पंजाबी तथा बंगला पर अधिकार रखनेवाले श्री गौतम ने लखनऊ विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के बाद आगरा विश्वविद्यालय में अध्यापन भी किया। इसके बाद वह नीदरलैंड चले गये। श्री गौतम ने आदिवासी नगाओं पर भी काफी काम किया।

श्री गौतम पिछले माह भारत दौरे पर आये। इस समय वह नीदरलैंड की लेडन यूनिवर्सिटी में संस्कृति और अध्यात्म का अध्यापन करते हैं। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय संगठनों, आई. यू. ए. ई. एस., इंटरनेशनल कमीशन ऑन म्यूजियम्स एंड कल्चरल हेरिटेज, ओवरसीज साउथ एशियन इंटरनेशनल एसोसिएशन तथा इंटरनेशनल फोरम ऑव हिंदू स्टडीज के चेयरमैन भी हैं।

इसके अतिरिक्त साहित्य की भूमिका पर एक तुलनात्मक शोध भी कर रहे हैं। वेद, उपनिषदों और प्राचीन ग्रंथों का 'डच' भाषा में अनुवाद, अज्ञेय की कविताओं तथा साहित्यकार राजेन्द्र अवस्थी के साहित्य पर भी वह इस समय कार्य कर रहे हैं। कई देशों में भारतीय संस्कृति तथा अध्यात्म पर उनके व्याख्यान भी हो चुके हैं।

श्री गौतम कहते हैं कि 'मेरे यहां लगभग डेढ़ लाख हिंदीभाषी अपनी अस्मिता को बचाने के लिए भारत की ओर देखते हैं। नीदरलैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए दो संस्थाएं—हिंदी परिषद तथा हिंदी संस्था हैं, जो मेरी देख-रेख में हिंदी के विकास के लिए कार्य कर रही हैं। सन् १९६० से विदेश में रहकर श्री गौतम ने कई गूढ़ विषयों पर शोध के साथ-साथ कहानियां, उपन्यास तथा कविताएं लिखकर भारतीय संस्कृति की सही तसवीर विदेशों में प्रस्तुत की है। इस समय श्री गौतम हिंदी के साहित्यकारों के लिए कुछ अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार की योजना पर भी कार्य कर रहे हैं। उनका कहना है कि यह पुरस्कार नोबेल पुरस्कार-जैसा सम्माननीय होगा।

श्री गौतम कहते हैं कि 'दूसरी भाषाओं की नकल नहीं करनी चाहिए। दूसरी भाषा के साहित्य की अच्छी बातों को अपनाना चाहिए, तभी हमारा साहित्य और सुदृढ़ होगा। दूसरे देशों की संस्कृति की अच्छी बातें भी अपनानी चाहिए ताकि अपनी संस्कृति का और विकास हो। हॉलैंड ही एक ऐसा देश है जहां संस्कृति को धर्म के साथ मानवता से भी जोड़ा गया है।

संस्कृति का संबंध धर्म से है, मानवता से है तथा साहित्य से है। संस्कृति के बिना साहित्य नहीं और साहित्य के बिना संस्कृति नहीं। साहित्य और संस्कृति के विकास के लिए हमें संघर्ष करना होगा। यह कार्य साहित्यकारों को स्वयं करना होगा, क्योंकि बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं मिलता है।

(प्रस्तुति : सुजीत वाजपेयी)

मातृभक्ति

विश्वविख्यात कूटनीतिज्ञ 'चाणक्य' के बचपन की घटना है। एक दिन इनकी माता अपने पुत्र के दांतों पर गौर कर दुःखी हो गयीं। चिंतित देखकर पुत्र ने कारण जानना चाहा।

मां ने दुःखी स्वर में कहा, 'बेटा, तुम्हारे अगले दो दांतों से लगता है कि तू राजा बनेगा।'

पुत्र ने विस्मित होते हुए पूछा, 'माता, इस बात से तो तुम्हें खुशी होनी चाहिए।'

मां ने सोचते हुए कहा, 'बेटा, राजा बनने के बाद तुम्हें मुझे देखने की फुरसत नहीं मिलेगी।'

पुत्र ने आव देखा न ताव और पत्थर से अपने उन दोनों दांतों को तोड़ दिया।

● **डॉ. वीरेन्द्र झा**

केतकी ने पड़ोस का दरवाजा खटखटाया और ज्योंही बहूजी बाहर आयीं, तो एकदम बोली, ''बहू चूहे को डालने के लिए सूखी रोटी होगी तो देना । मांजी बता रही थीं, 'बहू के हाथ की सूखी रोटियां तो कोई चूहा भी न खाये है, धन्य है बेटा ! जिसने सारी उमर ऐसी रोटियां खाने का बीड़ा उठाया है, मेरे तो पेट में इन्हीं रोटियों से ऐसा दर्द रहता है कि अब तो डॉक्टर भी इलाज करने से मना करने लगा है ।'

''अरे बहूरानी कसूर तो उमर का होता है । जब कुछ पचता ही नहीं और दोष हम औरों के मत्थे मढ़ देते हैं । अरे मढ़ना ही है, तो बहुओं को घर में ऐसे मढ़ो जैसे नगीना अंगूठी में मढ़ा जाता है । अये बहुएं तो घर का श्रृंगार होती हैं ।

● डॉ. सरोजनी प्रीतम



श्रृंगार भी सच कहें तो तभी तक सोहेंगे जब तक खाने-पहनने की उमर हो । तुम्हारी सासूजी तो कहती थीं, खाने-पीने की उमर तो इसी घर में आकर इसकी शुरू हुई है, वरना चार फटी साड़ियां लायी थी, न गहने, न बरतन । क्यों बहू बरतन न लायी, तो भी इस घर में हर रोज बरतन खनके कैसे ? अरे कहीं कोई भांडे पटकने की आवाज आती है, तो मेरा तो कलेजा मुंह को आता है । लगता है सुशीला बहुरानी पर बरतन फेंके जा रहे हैं । मैं तो कहती हूं जाता कौन सिर्फ घरेलू बरतन मांजने, कपड़े धोने और धूप में बाल सफेद करनेवाली है और कौन पढ़ी-लिखी कलम-पेंसिल, पेन, चलाकर बड़े-बड़े अफसरों को मात करनेवाली है । पर आजकल तो यह फर्क भी मिटता ही जा रहा है । मैं तो तुम्ही को देखती हूं न बहूरानी, थक-हारकर घर आती हो, तो यहां काम-काज में लग जाती हो, दिन-रात रोटियां बनाना, पापड़ बेलना कोई आसान काम नहीं है, और उस पर गली-गली में इन रोटियों की यों चर्चा कि

बहूजी को जाने सहसा क्या हुआ वह भीतर गयीं और खाली हाथ लौट आयीं । केतकी ने फटी-फटी आंखों से देखा, चौकन्ने कानों से सुना, वह कह रही थीं, ''आज तो 'ये' खाना ले जा चुके हैं । कल दो टिफिन पैक कर दूंगी, एक अपने उनके लिए, एक आपके चूहे के लिए ... मेरे लिए तो एक ही बात है ...''

बेटियों को दहेज में ऐसे-ऐसे बरतन दो, जो कोई फेंके, मारे या उड़न तश्तरी की तरह उड़ाये, तो वापस लौटकर बरतन के टोकरे में ही पहुंचें । देश ने कितनी प्रगति कर ली पर ऐसे बरतन बनानेवाली एक कंपनी न आयी, जो बरतन ठीक ढंग से बना सके । अरे बरतन तो बरतन है, बरतने के लिए । इसके अलावा कोई प्रयोग करने लगे, तो बरतनों की कन्नियां काट लें, कटोरा मुंह झुलस दे । कलुछी-चमचे तो होते ही चलाने की चीज हैं...लेकिन अगर अस्त्र-शस्त्र की तरह इनका प्रयोग होना होता, तो इनके लिए भी म्यान तो होती । हरेक स्त्री इसे कमर में धारण करती, खुरपा-कलुछी वगैरा ही घरेलूपन की निशानी होतीं । साफ पता चल रोटियां सूखी...अरी बहूरानी सूखी रोटियां तो अच्छी, पानी में भिगो दो या सब्जी हो, तो इसमें डुबोकर रख दो , तो खाई तो जा सकती हैं । तेरा सूखा मरियल बेटा तो ऐसा है कि घड़ों पानी डाल दो, तो भी उस पर बूंद भर पानी न ठहरे । पता नहीं इतनी पढ़ी-लिखी लड़की मिली कैसे ? हमारे यहां भी आयी थी तेरी सास, रिश्ता लेकर । मेरी बहन की लड़की भी दफ़्तर में अफसर थी तेरी तरह । अये वह तो फटाक-से बोली, 'मौसी, लड़के की शक्ल-सूरत नहीं, कद नहीं, अच्छी नौकरी नहीं, पर खानदान तो अच्छा हो । जिसकी अम्मां औरों के घर का कामकाज करके बच्चों का पेट पालती रही हो, उस घर में जाकर क्या करूं ।' पता नहीं तुम



पर क्या जादू किया बहू कि— तुम तो आ ही गयीं इस घर में । मैंने तो सुना अब तुम्हारे पति की नौकरी भी जाती रहेगी । अरे घबराना मत बहू आजकल तो एक चूहा भी नौकरी देने में समरथ हो गया है । देखो न मुझे ही देखो पड़ोस में पांचों घर छोड़कर मैं भी तो तुम्हीं से चूहे के लिए सूखी रोटी मांगने आयी । नरम रोटी मक्खन-टोस्ट- केक के टुकड़े वगैरा तो चूहों को बेहद पसंद हैं, पर तुम जानती हो, चूहे में भी आदमी-जैसे ही गुण तो हैं...अच्छा खाना-पानी मिले, तो वहीं पसर जाते हैं । कुनबे समेत यों धमकते हैं कि बस जब तक मेहमान भगाने की...नहीं-नहीं चूहे भगाने की दवा न छिड़को हिलने का नाम ही नहीं लेते । अरी बहूरानी जैसे चूहे भगाने की दवा मिलती है, वैसे ही कहीं क्या मेहमान भगाने की दवा नहीं मिलती क्या, छिड़क दो तो दूर-दूर से आनेवालों के भी कदम मुड़ जायं । अपने आप भाग जायं । अरी यही दवा मिल जाय, तो मैं तो इसी का इस्टाल लगाकर बैठ जाऊं । पूरे महल्ले की परेशानी दूर कर दूं । वैसे परेशान करने के लिए सूखी रोटी ढूंढ़ते वक्त मुझे तुम्हारा ही दरवाजा क्यों खटखटाना पड़ता । सच बताना बहूरानी ! तुम जो रोटी पकाती हो, वह किस मिट्टी की बनी होती है, जो बनते ही सूखी हो जाती है, खाते ही कांच के टुकड़ों-सी पेट में शूल बन जाती है और शूल बनते ही जगह-जगह इसकी चर्चा आरंभ हो जाती है । यों तो चर्चा करने लायक कुछ भी बनाना हो, तो उसे औरों से भिन्न होना जरूरी है, इसी भिन्नता के मायने में ही मैं तुम्हारी तारीफ करती हूं कि तुम्हारी रोटी पाकर कम-से-कम कोई चूहा तो हमारे घर के चूहेदान में भी आ फंसेगा । अरे बहू यह चूहेदान भी तुम्हारे घर का ही है । मांजी ही दे गयी थीं, मैंने तो हंसकर कह भी दिया था, 'आपने चूहेदान दान करके बड़े पुण्य का काम किया है, वरना आजकल ऐसे उदार लोग कहां ? जिस युग में दया, करुणा, ममता, उदारता आदि की भावना उठती जा रही है, उसी युग में तुम्हारी दान करने की भावना का डंका पीटता रहेगा । पर हाय ! उस चूहेदान में अपने घर की बहूरानी के हाथ की पकी कच्ची, मोटी, सूखी, सड़ी रोटी का टुकड़ा भी लगा देतीं, तो आज मुझे यहां दरवाजे पर घंटों बाहर खड़े होकर, घंटों भाषण पिला-पिलाकर एक सूखी रोटी के टुकड़े के लिए भीख तो न मांगनी पड़ती... ।" बहूजी को जाने सहसा क्या हुआ वह भीतर गयीं और खाली हाथ लौट आयीं । केतकी ने फटी- फटी आंखों से देखा चौकन्ने कानों से सुना, वह कह रही थीं, "आज तो 'ये' खाना ले जा चुके हैं । कल दो टिफिन पैक कर दूंगी, एक अपने उनके लिए, एक आपके चूहे के लिए...मेरे लिए तो एक ही बात है..."

—सी-१११ न्यू राजेंद्र नगर
नयी दिल्ली

● ओलगा चामेरो ट्रेआस

सन् १९५९ की क्रांति से पहले क्यूबा में बहुदलीय प्रणाली थी, लेकिन इसका परिणाम निकला बेरोजगारी, भूमिहीन किसानों, अपोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य-सेवाओं के अभाव में । बहुदलीय प्रणाली के अंतर्गत राजनीतिक और न्याय-व्यवस्था की दृष्टि से क्यूबा अमरीका का उपनिवेश बनकर रह गया था ।

इस अनुभव को देखते हुए क्यूबावासियों का बहुदलीय प्रणाली से विश्वास उठ गया । इसलिए अब वहां एक-दलीय व्यवस्था को स्वीकृति मिली है ।

क्यूबा की इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की आलोचना बिना उसके मूल में गये तथा उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और क्यूबाइयों की स्वभावगत विशेषताएं देखे बिना ही की जाती रही है । ऐतिहासिक दृष्टि से देखें, तो आधुनिक क्यूबा के निर्माता होसे मार्ती ने वहां क्रांतिकारी दल की स्थापना की थी । यह दल क्यूबाइयों की भावनाओं और स्वतंत्र राष्ट्र के लिए उनके संघर्ष के प्रयासों का प्रतिनिधित्व करता है । जब तक क्यूबावासी दलों और विचारों के खेमों में बंटे रहे, वे ऐसी क्रांति की शुरुआत नहीं कर पाये, जिसमें उनकी विजय हो सकती थी ।

दूसरी ओर यह भी सच है कि क्यूबाई लोकतंत्र पश्चिम के मॉडल पर आधारित नहीं है । उसके सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्य भी उनके निकट नहीं हैं । पश्चिम अपने ही मॉडल को सर्वश्रेष्ठ समझता है, इसलिए उसने क्यूबा पर हमेशा यह आरोप लगाया है कि वहां लोकतंत्र का अभाव है । इसके विपरीत सच यह है कि क्यूबा में न केवल लोकतांत्रिक

प्रणाली है, बल्कि वहां पांच वर्ष में एक बार संसदीय तथा दो वर्ष में एक बार स्थानीय निकायों के चुनाव होते हैं ।

लोकतंत्र का पहला अर्थ

क्यूबा के लिए लोकतंत्र का पहला अर्थ है प्रत्येक मनुष्य के लिए जीने का अधिकार— ऐसे जीवन का अधिकार, जिसमें सबको एक अच्छा-सा मकान, शिक्षा की सुविधा, चिकित्सा-सेवा उपलब्ध हो तथा जाति, धर्म या लिंग के आधार पर भेदभाव न हो । लोकतंत्र का अर्थ है एक ऐसा देश जिसमें सामाजिक जीवन समवाय और राजनीतिक स्थिरता पर आधारित हो तथा जनता का सरकार के साथ अंतरंग संबंध हो । इसी बात को लक्षित करते हुए फीदेल कास्त्रो ने कहा था— "मेरा विश्वास है कि सच्चे लोकतंत्र का अर्थ है, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत । मेरा यह भी विश्वास है कि जब तक समाज में यह भेदभाव रहेगा, तब तक लोकतंत्र का अस्तित्व नहीं हो सकता... ।"

कोपेनहेगेन में आयोजित पिछले सामाजिक शिखर सम्मेलन में यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि आजादी के बाद क्यूबा में स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल और आर्थिक स्थिति तथा माताओं और बच्चों की देखरेख में विशेष रूप से अभूतपूर्व उन्नति हुई है ।

चुनाव प्रक्रिया में संशोधन

सन् १९५९ से ही क्यूबा में चुनाव का प्रश्न संचार माध्यमों के लिए प्रमुख विषय रहा है । इसका कारण यह है कि क्रांति के पहले पंद्रह वर्षों तक वहां चुनाव का कोई प्रावधान नहीं था । लेकिन सन् १९७६ में नये संविधान तथा चुनाव-विधान के लागू होने के साथ ही वहां नगरपालिका, प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तरों पर पहले आम चुनाव करवाये गये । तब से वहां हर पांच वर्ष में संसदीय चुनाव तथा दो वर्ष की अवधि में स्थानीय निकायों के चुनाव होते रहे हैं ।

क्यूबा में चुनाव प्रक्रिया में सतत संशोधन होते रहे हैं । तेंतीस वर्षों से चल रही आर्थिक घेरेबंदी और पिछले पांच वर्षों में समाजवादी राष्ट्रों के विखंडन से क्यूबा की अर्थव्यवस्था को पहुंचे आघात के बीच यह प्रक्रिया और तेज हुई है । सन् १९९३ के आम चुनावों से पूर्व इस दिशा में काफी काम हुआ । यह एक प्रकार से राष्ट्रीय जनमत संग्रह था । इस दौरान क्यूबा में २०० से अधिक विदेशी पत्रकार मौजूद रहे । चुनावों में निष्पक्षता का सत्यापन सीटू ने भी किया । क्यूबा सरकार को इन चुनावों में ९० प्रतिशत से अधिक मतदाताओं का समर्थन प्राप्त हुआ । कुल मिलाकर ९९.५७ प्रतिशत मतदाताओं ने इसमें भाग लिया था । यह बात ध्यान रखने की है कि क्यूबा में मतदान अनिवार्य नहीं है और इसकी प्रक्रिया सीधी और गोपनीय है ।

इन चुनावों के दौरान क्यूबा की चुनाव-प्रक्रिया में जो संशोधन किये गये, उनमें सीधे, स्वतंत्र और गोपनीय मतदान के द्वारा विभिन्न स्तरों पर जन-प्रतिनिधियों के चुनाव का प्रावधान भी था । इससे पहले राष्ट्रीय विधानसभा के डेपुटी प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा और प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्य नगरपालिकाओं के प्रतिनिधियों द्वारा चुने जाते थे । वर्तमान में क्यूबा में सोलह वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक व्यक्ति को मत देने और प्राप्त

करने का अधिकार है । हां, संसद के लिए नामांकित होने का अधिकार १८ वर्ष से ऊपर के व्यक्ति को ही होता है ।

पैसे की भूमिका नहीं

मतों की गिनती का कार्य इच्छुक मतदाताओं और प्रेस की उपस्थिति में सीटू में किया जाता है । इस चुनाव-प्रक्रिया में प्रत्येक मतदाता का सहभाग होता है । वे ही प्रत्याशियों का नामांकन करते हैं । इसमें प्रचार या पैसे की कोई भूमिका नहीं है । क्यूबा का साम्यवादी दल प्रत्याशियों को सीधे खड़ा नहीं करता । यह भी अनिवार्य नहीं है कि वे दल के सदस्य हों । चुने गये प्रत्याशी अपने मतदाताओं के निकट संपर्क में रहते हैं । प्रत्येक तिमाही उन्हें अपनी गतिविधियों की जानकारी भी अपने मतदाताओं को देनी पड़ती है । मतदाताओं को असंतोष की स्थिति में अपने प्रतिनिधियों को वापस बुलवाने का अधिकार प्राप्त है ।

दिलचस्प आंकड़े

जुलाई, १९९५ में नगरपालिकाओं और प्रांतीय विधानसभाओं के जो चुनाव हुए, उनमें ९७.७ प्रतिशत मतदान हुआ । यह तथ्य रेखांकित करने योग्य है कि लोकतंत्र होने का प्रमाण-पत्र प्राप्त अनेक देशों की सरकारें भी ५० प्रतिशत से कम मत प्राप्त करके आती हैं । संयुक्त राज्य अमरीका में तो पिछले ३२ वर्षों में ४२ प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने अपने मत का प्रयोग नहीं किया । पिछले चुनावों में निर्वाचित अमरीकी राष्ट्रपति को केवल ३८.७ प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे ।

इन तथ्यों के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता कि क्यूबा का लोकतंत्र या समाज दोष-रहित है । लेकिन अपने समाज और लोकतंत्र की कमजोरियों को बाहरवालों की अपेक्षा स्वयं क्यूबावासी बेहतर ढंग से समझ सकते हैं । उनकी यह वांछा है कि इन कमजोरियों को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के दूर किया जाए । क्यूबा की चुनाव-प्रक्रिया में यह कार्य सरकार में जनता की प्रत्यक्ष साझेदारी के आधार पर करने का प्रयास किया जा रहा है । लोग सामूहिक रूप से विचार करके उसे प्रकट करने में सक्षम हैं । वे अपने सपनों को साकार करने में भी समर्थ हैं । पिछले ३६ वर्षों का अनुभव इस बात का साक्षी है ।

फीदेल कास्त्रो ने कहा था— "मेरा विश्वास है कि सच्चे लोकतंत्र का अर्थ है, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत । मेरा यह भी विश्वास है कि जब तक समाज में यह भेदभाव रहेगा, तब तक लोकतंत्र का अस्तित्व नहीं हो सकता... ।"

(क्यूबा एम्बेसे का पता है : श्रीमती ओलगा, मुनीरका मार्ग, वसंत विहार, नयी दिल्ली-११००५७)

ललित व्यंग्य

राजनीति तो नगर की दुल्हिन है !

• रतनलाल जोशी

कुछ दिन पहले दिल्ली में राष्ट्रमंडल के देशों का संसदीय सम्मेलन हुआ था। सिंगापुर के संसद सदस्य श्री सिया काह हुइ भी उसमें शामिल हुए थे। अपने देश में वह मूर्तिभंजक विचारकों के नेता माने जाते हैं। सम्मेलन में भाषण करते हुए उन्होंने कहा था कि यदि कोई वास्तविक निरर्थकता है, तो वह राजनीतिक सम्मेलन है और यदि कोई सार्थकता है, तो वह है कुछ पैदा करना, चाहे वह बच्चा ही क्यों न हो। राजनीति की निरर्थकता बताते हुए उन्होंने अपनी तर्जनी से सारे सम्मेलन को आगाह करते हुए कहा था—

अगर आप दुनिया की
मशीनों को समुद्र में डूबो दें
तो दुनिया भूखों मर जाएगी,
और अगर आप दुनिया के
राजनीतिज्ञों को समुद्र में फेंक दें
तो कहीं पत्ता भी नहीं खनकेगा !

अरस्तू के कोश में मनुष्य को 'राजनीतिक जानवर' कहा गया है, किंतु हकीम लुकमान की-सी ख्याति रखनेवाले डॉ आर्बुथनाट लेन कहते हैं कि मैंने तो यही देखा है कि राजनीतिज्ञ जब मरते हैं, तो अपने खुद के ही झूठों को निगलकर ही मरते हैं।

वाल्टेयर ने कहा है कि राजनीति तो नगर की दुल्हिन है, मगर कुछ लोगों की बुद्धि ऐसी मारी जाती है कि वे उसे अपनी पतिव्रता पत्नी बनाने की जिद ठान बैठते हैं। बस, बाजार की बहू सिर पर सवार हो जाती है— गनीमत यही है कि सिर सलामत रह जाता है, हां, पगड़ी तो उछाल ही दी जाती है।

लास्की का कहना है कि जनता को जेब में मत रखो— सिर पर भी मत चढ़ाओ। मगर दाल में नमक की तरह उसके स्वाद पर चढ़े रहो। जनता से दुराव अपने ही हाथों अपने लिए उसके घर के दरवाजे बंद करना है। असल में, स्वार्थ ही राजनीति में इतनी आत्महत्याओं की छुरी है।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' इसी बात को काव्य में बांधकर यों कहते हैं—

कुछ रहस्य है ऐसा
जिसे तुम्हारे विश्वासी
जन भी तुमको नहीं बताते,
तो तुमको क्यों हो
इससे अचरज
सब जन अपनी खिचड़ी
पका रहे हैं अपने चूल्हे पर,
तुम्हें क्या पड़ी है जो देखो—
दाने पके हैं कि कच्चे
हां, पर एक खटक है कि
जब गोपनीयता रहे इतनी
तो फिर संग चलने में

कोई क्या शुचि
रुचि रह जाती है
स्वयं बजाने से ही डप
ठीक ताल गाते सीखेगा मानव
क्या गति होगी उसकी
तुम्हीं बजाते रहे ढोल-डप जो ।

सरोजिनी नायडू राजनीतिज्ञों को तीन श्रेणियों में बांटती थीं । मेरे पास तीन गुड़िया हैं । एक नमक की, दूसरी कपड़े की और तीसरी पत्थर की बनी हुई । मैं इन तीनों को पानी में डुबोती हूं । नमक की गुड़िया पानी में घुलकर गायब हो जाती है । कपड़े की गुड़िया पानी में तरबतर हो जाती है और पत्थर की गुड़िया पानी में नहाकर साफ जरूर हो जाती है, चमकने भी लगती है, मगर पानी के साथ उसका दिल नहीं मिलता । नमक की गुड़िया की श्रेणी का राजनीतिज्ञ मेरी नजर में श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ है, जो जनता के साथ अपने अस्तित्व को एक प्राण देता है, दुराव-जैसी कोई बात वहां नहीं रहती । कपड़े की गुड़िया की कोटि का राजनीतिज्ञ दूसरी श्रेणी का राजनीतिज्ञ है, वह जनता के साथ एकाकार नहीं होता । पत्थर की गुड़िया की श्रेणी का राजनीतिज्ञ वास्तव में राजनीतिज्ञ नहीं ठग है । वह जनता के विश्वास से अपनी छवि को मांजता है, जनता को छलता है । इस पर शायद रूसो ने कहा है—

फूल को हम प्यार देंगे,
पर कपट के लिए हमने
कब्र भी खोद रखी है ।



मौलाना आजाद से एक पठान युवक ने जब चिट्ठी लिखकर पूछा कि खान अब्दुल गफ्फार खां को ही आप सीमांत प्रदेश का एकमात्र नेता क्यों मानते हैं, तो मौलाना ने लिखा था कि खान अब्दुल गफ्फार खां सीमांत को ही अपना सब कुछ मानते हैं, उनकी लगन फारसी के इस शेर द्वारा कुछ-कुछ समझ में आ सकती है—

मुकर्रर दर्द : अम दर दिल
अर्जी दरगाह
न ख्वाहम रफत
सर ई जा, सिज्द ईजा
बंदगी ईजा करार ईजा

'—मैंने तय कर लिया है कि इस मंदिर के सिवाय मेरा कोई मंदिर नहीं है—मेरा अर्पण इसके सिवाय और कहां चढ़ सकता है, क्योंकि सिजदे, बंदगी एवं आनंद का यही मेरा स्रोत है !'

फैजी कहता है कि अक्ल की रस्सी हमें खूंटे से तो बांधकर रखती है, किंतु गले की रस्सी बनकर वह हमें अपना पालतू जानवर भी बना लेती है । मौत अनिवार्य है, अपने जाल से यह मछ्यारिन किसी को बचने नहीं देती, किंतु जाल में फंसाकर वह हमें मुक्त भी तो करती है । तीसरी बहन दौलत है, जो नाक में नकेल पिरोकर हमें लद्दू जानवर बनाये रखती है, जब तक कि हम दामन झाड़कर उससे अपना पीछा नहीं छुड़ा लेते या वैराग्य के एक झटके में उछलकर उस पर ही सवारी नहीं गांठ लेते ।

लास्की का कहना है कि जनता को जेब में मत रखो— सिर पर भी मत चढ़ाओ । मगर दाल में नमक की तरह उसके स्वाद पर बने रहो । जनता से दूरियां अपने ही हाथों अपने लिए उसके घर के दरवाजे बंद करना है । असल में, स्वार्थ ही राजनीति में इतनी आवश्यकताओं को पूरी है ।

चौथी बहन हुकूमत है, जो गरज-गरजकर प्रजा पर बरसती है, पर कभी यश नहीं पाती, क्योंकि कहीं सूखा चाहिए तो कहीं बाढ़ । पांचवीं बहन विजय है, जो सुंदरता की खान तो है, किंतु है बड़ी मनहूस । जो उसे पाता है, अंत में पछताता ही है ।

प्रियदर्शी अशोक ने भी खुदवाया था कि युद्ध ज्वाला है और विजय धधकते अंगारे । दोनों को त्याग दो तो सद्धर्म की पात्रता सुलभ है ।

महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था । पांडवों को विजयश्री प्राप्त हुई थी । किंतु युधिष्ठिर को वह स्वजनों के अस्थि-मांस की पोटली ही प्रतीत हुई । अर्जुन ने तब विरक्ति के स्वर में ये वाक्य कहे थे—

यथा हि पुरुषः खत्वा
कूपमप्राप्य चोदकम्
पंकदिग्धो निर्तत
कर्मेदं नस्तथेपमम्
यथारूह्य महावृक्षमा—
हत्य ततो मधु,
अप्राश्य निधनं गच्छेत
कर्मेदं नस्तथोपमम्

'— जैसे कोई पानी पीने के लिए कुआं खोदे, किंतु पानी निकलने से पहले ही कीचड़ में सना बाहर निकल आये, हमारा काम भी ऐसा ही रहा है । जैसे कोई ऊंचे पेड़ पर चढ़कर शहद एकत्र करे, किंतु बिना चखे ही उससे मर जाए, हमारा काम भी वैसा ही रहा है ।'

लिंकन का कहना है कि राजनीति दुनिया का ऐसा दर्पण है, जिसमें तुम्हारे चेहरे को सुधारने के लिए लाखों लोग अपने को रंग बनाने के लिए तैयार मिलेंगे, किंतु यह उसे ही नसीब होगा जो कोरे शब्दों से नहीं, आचरण से ही अपनी छवि उस दर्पण में आंकने की कोशिश करता है ।

एक बार श्रीमती गांधी फ्रांस- यात्रा पर गयी थीं, तो विद्वत-समाज में उन्होंने एक बातचीत के दौरान कहा था कि काव्य, साहित्य या राजनीति का मेरी धारणा में अर्थ यही है कि कृति के दर्पण में हमारा प्रतिबिंब जनता को अपनी धड़कन का ही रेखाचित्र लगे !

इसी बात को स्पष्ट करते हुए पेशेवर राजनेता से कवि इकबाल कहता है—

तर आंखें तो हो जाती हैं
पर क्या लज्जत इस रोने में,
जब खूनेजिगर की आमेजिश से
अश्क-पियाजी बन न सका !

—१२ फिरोज गांधी मार्ग,
लाजपतनगर-३, नयी दिल्ली-११००२४

नयी कृतियां

पाषाणी कौन : दहेज समस्या पर आधारित प्रस्तुत उपन्यास 'फ़्लैश बैक' पद्धति में लिखा गया है । इसकी लेखिका उर्मिला कौल हैं । आज भी न तो दहेज उत्पीड़न ही कम हुआ है और न इस समस्या पर लिखना ही । यह बात अलग है कि इसमें से कितनी कृतियां अपने उद्देश्य में सफल हो पाती हैं । नायिका 'सुरक्षा' का 'सुशील' के साथ विवाह और फिर दहेज के कारण उत्पीड़न इस उपन्यास की मुख्य कथा है ।

उपन्यास में नायिका के संघर्षों का मार्मिक और प्रभावी चित्रण हुआ है । भाषा विषयानुकूल है । दहेज-जैसी सामाजिक समस्या पर केंद्रित यह उपन्यास अपनी सामाजिक उपादेयता में सफल रहा है ।

पाषाणी कौन; लेखक : उर्मिला कौल; प्रकाशक : हिमजा प्रकाशन, पटना; मूल्य : १५० रुपये ।

चुनौतियों का चक्रव्यूह : रामशरण जोशी के २२ उन लेखों का संकलन है जो १९८९ से १९९४ के बीच की कालावधि में लिखे और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए । 'इक्कीसवीं सदी के लिए : विवेकानंद', 'मुख्यधारा की अवधारणा', और 'पूंजीवाद : स्वयंभू मसीहा' जैसे कुछेक निबंधों, जो विचारोत्तेजक भी हैं, को यदि हम छोड़ दें तो शेष लेखों का संबंध तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों और घटनाओं से है, अतः अब वे कालातीत हो चुके हैं । प्रस्तुत संग्रह के कई लेखों में लेखकों ने सामंतवादी प्रवृत्तियों का जमकर विरोध किया है ।

लेखक : रामशरण जोशी, मूल्य : १२५ रु.

नौकरीपेशा नारी कहानी के आइने में : पुष्पपाल सिंह द्वारा संपादित १८ ऐसी कहानियों का संग्रह है जिसमें कामकाजी महिलाओं की बेचारगी की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उनके पारिवारिक जीवन की सच्चाइयों को उकेरा गया है । अचला नागर की कहानी 'सिफारिश' में उस लड़की का दर्द समाया हुआ है जो अपने बॉस के पैंतरों से सही समय पर चेतकर इस्तीफा देकर चुपचाप चली आती है । चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानी 'दरमियान' में नारी के प्राकृतिक झंझटों से उत्पन्न समस्याओं को चर्चा का विषय बनाया है । 'जांच अभी जारी है' में ममता कालिया ने पुरुष प्रधान दफ़्तरों में महिलाओं के उत्पीड़न और उनकी परवशता को उजागर किया है ।

संपादक : पुष्पपाल सिंह, मूल्य : मात्र १०० रु.

परख काल : चर्चित महिला कथाकार दीपक शर्मा का नवीनतम कथा संग्रह । इनकी समस्त कहानियों में पारिवारिक परिवेश में उत्पन्न होनेवाली, कहीं चुलबुली तो कहीं गंभीर, समस्याओं का चित्रण किया गया है । प्रस्तुत संग्रह की कई कहानियां रोचक हैं जो पाठक को बांधने में समर्थ हैं ।

रचनाकार : दीपक शर्मा, मूल्य : ५० रु.
उक्त तीनों पुस्तकों के प्रकाशक : सामयिक प्रकाशन, ३५४३ जटवाड़ा, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

—अनंतराम गौड़

उड़िया की प्रतिनिधि कहानियां : डॉ. बनमाली दास ने उड़िया की प्रतिनिधि कहानियों का हिंदी रूपांतरण करके हिंदी जगत की अमूल्य सेवा की है । उन्होंने बड़ी सूझ-बूझ से उड़िया की २५ सर्वोत्तम कहानियों का चयन किया है । इनमें उड़िया कहानी साहित्य के जनक फकीर मोहन सेनापति से लेकर आज तक के सभी प्रमुख उड़िया कहानीकारों की रचनाएं संग्रहीत हैं ।

प्रकाशक : के. के. पब्लिकेशन, कलकत्ता; मुख्य वितरक : किताब महल एजेंसीज, ८४ के. पी. कक्कड़ रोड, इलाहाबाद; मूल्य : ३९ रुपये ।

जब मैं न रहूं : शीला गुजराल का यह हिंदी में आठवां और पंजाबी, अंगरेजी को मिलाकर चौदहवां काव्य संग्रह है । इस संग्रह में उनकी ८७ कविताएं हैं । सभी कविताएं लीक से हटकर हैं । इन कविताओं का शिल्प और अर्थ विस्तार उन्हें नया आयाम प्रदान करता है । कवयित्री के अनुसार उनकी ये कविताएं अंतिम यात्रा के पूर्व का विदा संदेश हैं । लेकिन यात्रा की अपरिहार्यता ने उन्हें भयभीत नहीं किया है । दूसरों को दीन-दुखियों का सारा दर्द मथ लेने का संदेश देने की प्रेरणा दी है ।

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड, नयी दिल्ली; मूल्य : ६५ रुपये ।

रामायण समग्र मानवता का प्रतिबिंब : रामायण संपूर्ण मानवता और मानवीय मूल्यों का प्रतिबिंब है । यह एक ऐसा पवित्र ग्रंथ है, जो प्रत्येक मनुष्य को जीवन के हर क्षेत्र में आदर्श पुरुष बनने का संदेश देता है ।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के जीवन और उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को इस पुस्तक में लेखक प्रो. जी. बी. कानूनगो ने बहुत





ही सुंदर शैली में प्रस्तुत किया है ।

श्री राम के जीवन को और उनके आदर्शों को नये ढंग से प्रस्तुत करते हुए प्रो. कानूनगो ने कई खोजों से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि श्री राम का जन्म ११ अप्रैल, ४४३३ ईसा पूर्व हुआ था । इस संबंध में उन्होंने अनेक भाषाओं में लिखी रामायण और अन्य कई ग्रंथों को आधार मानते हुए श्री राम की जन्मतिथि को वैज्ञानिक ढंग से खोज निकालने का दावा किया है । यही नहीं अनेक ऐसे तथ्यों को लेखक ने इस पुस्तक के माध्यम से उजागर किया है ।

प्रो. कानूनगो का मानना है कि श्रीराम के जन्म व अन्य तथ्यों के बारे में उनके द्वारा दिये गये प्रमाण अकाट्य हैं । उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम को एक आदर्श मानव माना है और उनके विचार में बाली-वध, सीता-परित्याग – जैसे कार्य उनकी प्रतिष्ठित छवि से मेल नहीं खाते, इसलिए संभवतः यह तथ्य सत्य ही न हों ।

प्रकाशक : हिंदी बुक सेंटर, नयी दिल्ली; मूल्य : २८० रुपये (सजिल्द), १२५ रुपये (अजिल्द) ।

सदेह स्वर्गारोहण : मोहन कुमार सरकार की इस पुस्तक में कैलाश मानसरोवर यात्रा का मनोहारी सचित्र वर्णन है । कैलाश मानसरोवर के लिए दिल्ली से तवाघाट तक ६११ किलोमीटर की यात्रा बस से और फिर ५४० कि. मी. की यात्रा पैदल करनी पड़ती है । यह





यात्रा कठिन और थका देनेवाली है । लेकिन यात्री हिमाच्छादित कैलाश शिखर और मानसरोवर के नीले जल के दर्शन कर सभी थकान भूल जाता है । पुस्तक में दिये गये मानचित्र और चित्रों ने उसकी उपयोगिता बढ़ा दी है ।

प्रकाशक : लेखक, बिहार प्रशासकीय सेवा, भागलपुर (बिहार); मूल्य : १८५ रुपये ।

साठोत्तर हिंदी नाटकों की सामाजिक चेतना : डॉ. जयश्री शुक्ला ने प्रस्तुत पुस्तक में स्वातंत्र्योत्तर काल में चर्चित प्रमुख नाटकों को आधार बनाकर साठोत्तर काल की सामाजिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है । अपने इस प्रयास में उन्होंने तत्कालीन समाज के आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और वैज्ञानिक परिवेश का भी अध्ययन किया है । पुस्तक में हिंदी नाटकों के माध्यम से भारतीय समाज की चेतना के सभी रूपों का भी अंकन किया गया है ।

प्रकाशक : शांति प्रकाशन, ८४/१ पुराना बैरहना, इलाहाबाद; मूल्य : १६० रुपये ।

● नवीन पंत

सोनांचल की कहानियां : इस कहानी संग्रह में औद्योगिक अंचल 'सोनांचल' की मानवीय संवेदनाओं को लेखक ने मार्मिक ढंग से चित्रित किया है । इस कृति की सोलह कहानियों में इस क्षेत्र के जन-जीवन को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास भी है । दिन-पर-दिन होनेवाली सभी सहज घटनाओं को विभिन्न पात्रों से जोड़कर वहां की सामाजिक पृष्ठभूमि को उभारने का प्रयास भी किया गया है । लेखक ने लोकनायक लोरिक की शौर्यगाथा के माध्यम से वहां की लोक परंपरा को लिपिबद्ध किया है ।

लेखक : शंकर सिंह; प्रकाशक : पूर्वांचल प्रकाशन, ११८०, ए ब्लॉक (ज्ञान बिल्डर्स के पास) सोनिया विहार, दिल्ली ।

मध्य प्रदेश के प्राचीन कीर्ति स्थल : इस पुस्तक में मध्य प्रदेश से संबंधित प्राचीन भारत की सांस्कृतिक गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं को विविध रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल अवश्य है, परंतु सांस्कृतिक राजधानी जबलपुर ही है । त्रिपुरी के कलचुरि वंश से लेकर अब तक साहित्य और कला का विकास इस क्षेत्र में यहीं से हुआ है । स्वामी वल्लभाचार्य के चार प्रमुख शिष्यों में से एक कुंभनदास जबलपुर गढ़ा के निवासी थे । चतुर्भुजदास भी यहीं के थे । रीतिकाल के प्रसिद्ध बिहारी, भूषण और पद्माकर मध्य प्रदेश के थे । संस्कृत के कवियों में कालिदास, भोज, भवभूति, मंडन मिश्र और गंगाधर भी यहीं के थे । तानसेन, बैजूबावरा, नायक गोपाल की संगीत कला की उज्ज्वल कीर्ति आज तक रंचमात्र भी धूमिल नहीं हुई है ।

इस पुस्तक में मध्य प्रदेश के प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों के सांस्कृतिक स्वरूप को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है ।

लेखक : डॉ. रामनारायण सिंह 'मधुर'; प्रकाशक : मेघ प्रकाशन, बी-५/२६३, यमुना

विहार, दिल्ली; मूल्य : २०० रुपये ।

जागे शब्द गरीब : दिनेश शुक्ल तीन दशक से दोहे लिख रहे हैं । इस पुस्तक में इनके १२०० दोहे हैं । ये दोहे सांप्रदायिकता, धर्मांध, हिंसा, आतंकवाद, दंगे, कर्फ्यू, अलगाववाद, नस्लवाद - जैसे समाज में व्याप्त जहर का आत्म-साक्षात्कार ही नहीं कराते, उन पर चोट भी करते हैं । अपनी रचनात्मक उत्तेजना से मनोजगत के विभिन्न अनुभूतिक स्तर पर ये कविता संसार को अधिक गहरा, प्रासंगिक एवं समृद्ध बनाते हैं । जैसे,

टूटे पायों पर खड़ा, ये जर्जर जन-तंत्र,
ठोके कीलें स्वार्थ की, एक पांचवां तंत्र ।

प्रकाशक : मेघ प्रकाशन, बी-५/२६३, यमुना विहार, दिल्ली; मूल्य : १०० रुपये ।

पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया— भारत में सबसे अधिक दैनिक, साप्ताहिक या मासिक समाचार पत्र-पत्रिकाएं हिंदी में प्रकाशित होती हैं, किंतु सबसे अधिक प्रकाशन हिंदी के ही असमय में बंद भी हुए । प्रस्तुत पुस्तक के लेखक शिव प्रसाद भारती ने पत्र-पत्रिकाओं के संचालकों, प्रकाशकों, संपादकों तथा पत्रकारों के समक्ष आनेवाली कठिनाइयों के निराकरण का प्रयास करते हुए यह दावा किया है कि यदि उसके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलते रहा जाए तो उनके प्रकाशन कभी बंद नहीं होंगे । नुस्खा बहुत उपयोगी है ! इसका पालन करने में हर्ज भी क्या है ?

प्रकाशक— विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
पृष्ठ संख्या— ३६६; मूल्य— २०० रु.

पानी इन आंखों का— दयाशंकर 'सुबोध' की नौ कहानियां आलोच्य ग्रंथ में संगृहीत हैं । कहानीकार के अनुभव अभी परिपक्व नहीं हो पाये हैं, अतः कहानियां कथावस्तु की ओर संकेत मात्र करके भटक जाती हैं, गंतव्य तक पहुंच नहीं पातीं । किंतु प्रयास यदि जारी रहा तो भविष्य की कहानियों में मंजावट आ सकती है ।

प्रकाशक— जीवन ज्योति प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या— १२०; मूल्य— ६० रु. (बहुत है) ।

चिट्ठी आई है— कमलेश भट्ट 'कमल' की ११ कहानियों का यह संकलन ऐसी कथाओं से भरपूर है जिसके पात्र आज की हिंदी फिल्मों में आम देखे जाते हैं । संकलन की अंतिम कहानी 'चिट्ठी आई है' बहुत साफ-सुथरी और स्वच्छ मनोभावोंवाली है ।

प्रकाशक— अयन प्रकाशन, नयी दिल्ली
पृष्ठ संख्या— १३६; मूल्य— ६० रु.

आखेट महल— आज समाज कितना भ्रष्ट हो चुका है कि जिसमें सुरुचिपूर्ण प्रकृति के स्वभाव के लोग कितना छटपटाते हैं और उधर लोग शर्मिंदगी से अपने चेहरे बदलते रहते हैं । इसका रोचक वर्णन प्रबोध कुमार गोविल ने इस उपन्यास में पाठकों को मिलता है ।

प्रकाशक— दिशा प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या— १४३; मूल्य— ९० रु.

मास्टरजी— मधुकांत कृत कोई १३ कहानियों का यह संकलन अध्यापकीय दृष्टिकोण से प्रभावित है । कहानीकार एक अध्यापक है, अतः उनके पात्रों के साथ ही कथावस्तु भी उसी क्षेत्र की है । एक ही दिशा, और कहीं-कहीं दिशाहीन, होने के कारण अधिक रोचक नहीं बन सकी है ।

प्रकाशक— दिशा प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या— ११९; मूल्य— ७५ रु.

'होली-मिलन'

भटनी (देवरिया) । क्लब की मार्च माह की बैठक, स्थानीय नगर स्थित व्यापार मंडल, अध्यक्ष मुनेश्वर प्रसाद वर्मा के आवास पर 'होली-मिलन' समारोह के रूप में संपन्न हुई । श्री वर्मा की अध्यक्षता एवं शिवाकांत मिश्र 'शिवेश' के संचालन में संपन्न हुई बैठक को वरिष्ठ सदस्य हरि प्रसाद मिश्र ने संबोधित किया ।

बैठक में अशोक कुमार राय, मुनेश्वर मिश्र, सतीश गुप्त, जलालुद्दीन अंसारी, वी. के. श्रीवास्तव तथा हरिशचन्द्र कन्नोजिया ने फागुनी-गीत एवं कविताएं प्रस्तुत कीं । लोक गीत कलाकार संजय कुमार मिश्र ने प्रस्तुत किया ।

विचार गोष्ठी

सीतामढ़ी । कादम्बिनी क्लब द्वारा संयोजिका आशा 'प्रभात' के निवास स्थान पर श्री रमाशंकर त्रिवेदी 'बदनाम' की अध्यक्षता में 'देश के मौजूदा संकट में कलमकारों की भूमिका' विषय पर एक विचार गोष्ठी हुई । गोष्ठी में आशा 'प्रभात', रामचन्द्र विद्रोही, जगदीश प्रसाद, वसंत आर्य, अजय विद्रोही, अरुण चन्द्र दास, रवीन्द्र कुमार 'प्रभात' तथा अरविन्द कुमार आदि रचनाकारों ने भाग लिया ।

मासिक गोष्ठी संपन्न

पूर्णियां । रंगों भरी होली की पूर्व संध्या पर पूर्णियां कादम्बिनी क्लब में मासिक गोष्ठी का आयोजन क्लब की सदस्या श्रीमती उत्तिमा केसरी की अध्यक्षता एवं मंजुला उपाध्याय के संचालन में संपन्न हुआ । कवि गोष्ठी की शुरुआत मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' ने की । श्री कलाधर, प्रो. सुरेन्द्र शोषण, डॉ. उदय भानू, इप्टा से जुड़े श्री नरेश शर्मा, युवा कथाकार श्री चंद्रकांत राय तथा अर्जुन अरुणेश, कृष्ण कुमार, अरुम अभिषेक, उमाशंकर, अनिल कुमार, इत्यादि रचनाकारों ने देर तक अपनी रचनाओं से श्रोताओं को रिझाया । तीसरे दौर का समापन श्रीमती उत्तिमा केसरी की गजल से हुआ । धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका श्रीमती मंजुला उपाध्याय 'मंजुल' ने किया ।

कादम्बिनी क्लब मोदीनगर ने श्रद्धांजलि व्यक्त की

मोदीनगर । कादम्बिनी क्लब के संयोजक डॉ. वी. पी. शर्मा के निवास स्थान पर क्लब की एक शोक सभा आयोजित की गयी । इस अवसर पर संयोजक डॉ. वी.पी. शर्मा ने 'अश्कजी' के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया । इनके अतिरिक्त प्रधानाचार्य श्रीमती शशि प्रभा शर्मा, ब्रजकण, जगदीश पंकज, नरेश मित्तल, अशोक शर्मा व राकेश शर्मा ने अपने शोक उद्गार प्रकट किये । वरिष्ठ सदस्य सुंदर लाल गोयल के पिता जी के आकस्मिक निधन पर भी सदस्यों ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं । शोक सभा में चौधरी उदयवीर, नरेश मित्तल, प्रधानाचार्य कुसुम कपूर, डॉ. रेणु शर्मा, डॉ. सुधा सिशोदिया, डॉ. सुरेंद्र सिंह असीश, डॉ. टी. एस. चौधरी, व्रजकरण, संत प्रसाद प्रेमी, श्रीमती किरण कुमार, सुंदर लाल गोयल, कवि सुमनेश सुमन उपस्थित थे । सभा की समाप्ति श्रीमती किरण कुमार के भक्ति भजन से हुई । मंच संचालन डॉ. टी. एस. चौधरी ने किया और अध्यक्षता श्री राकेश कुमार शर्मा ने की ।

डॉ. उर्मिलेश का अभिनंदन

बरेली । कादम्बिनी क्लब द्वारा आयोजित केंद्रीय विद्यालय वायु सेना स्टेशन आइजट नगर बरेली के प्रांगण में आयोजित समारोह में डॉ. त्रिवेणी दत्त मिश्र की द्वितीय पुण्य तिथि पर प्रख्यात गीतकार डॉ. उर्मिलेश शंखधार का 'सारस्वत अभिनंदन'

किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. चौहान ने किया तथा कमल सक्सेना ने वाणी वंदना प्रस्तुत की । इस अवसर पर स्व. डॉ. मिश्र को श्रद्धांजलि देते हुए उषा पांडेय, शोभा मिश्रा, मधु उपाध्याय 'मोहिनी', मणि उपाध्याय, डॉ. श्वेतकेतु शर्मा, रणधीर प्रसाद गौड़, राममूर्ति गौतम 'दीन', डॉ. ओ. बी. गोस्वामी, प्राचार्या नीरा शर्मा, एन. एल. शर्मा, डॉ. के. के. शुक्ल एवं युवा समाजसेवी राजेन्द्र कुमार सक्सेना आदि ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला । अंत में 'कादम्बिनी क्लब' बरेली एवं कार्यक्रम की संयोजिका मधु उपाध्याय 'मोहिनी' ने आभार व्यक्त किया ।

प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण

सहारनपुर । कादम्बिनी क्लब के तत्त्वावधान में साक्षरता नारा प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह एस. डी. कन्या इंटर कॉलेज में हुआ । प्रतियोगिता में ५७५ प्रतियोगियों ने भाग लिया जिसमें से ६ विजेताओं को जिलाधिकारी सत्यजीत ठाकुर द्वारा पुरस्कृत किया गया । श्रेष्ठ नारे 'भारत देश महान बनेगा पढ़े लिखेंगे सब नर नारी, अभियान चलो छेड़ें ऐसा साक्षर हो जनता सारी' के लिए विभा वर्मा तथा 'साक्षरता की लगा के सीढ़ी, पढ़ पाएंगी तीनों पीढ़ी' के लिए डॉ. अनिल शर्मा को २५०-२५० रुपये नकद व स्मृति चिह्न भेंट किये गये । अन्य चार विजेताओं को एक सौ रुपये नकद व स्मृति चिह्न भेंट किये गये ।

क्लब की संयोजिका अनीता कथूरिया, डॉ. निर्मला बांगा, जिला विद्यालय निरीक्षक ओम प्रकाश सैनी ने भी विचार व्यक्त किये । इस अवसर पर नगराधीश आनन्द द्विवेदी, सहायक सूचना निदेशक चंदन लाल चौधरी, रमेश चन्द्र छबीला, सुरेश कथूरिया, अनुपमा महायन, प्रीति कथूरिया, मनमोहन राय, सीमा कुमारी आदि उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन विजेश जोशी ने किया ।

क्लब की बैठक

पेटलाबाद । कादम्बिनी क्लब पेटलाबाद की एक बैठक कमलेश जोशी के निवास पर आयोजित की गयी । इस बैठक में सदस्यों के अलावा अन्य क्लबों के पदाधिकारी भी उपस्थित थे । इसमें क्लब संयोजक को बैंक ऑव बड़ौदा की गृह पत्रिका द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने एवं फरवरी अंक (कादम्बिनी) में प्रकाशित आलेख हेतु बधाई दी गयी । बैठक में नेताजी सुभाष मंच के अध्यक्ष विजय नागर, रोबर्स क्लब के नितीश नागर एवं सदस्य अरुण प्रकाश, उमलेश जोशी, प्रकाश भंडारी, अंजू यादव, ज्योति पटवा, प्रीति कोड़नकर, हेमेन्द्र गुप्ता, राजेन्द्र चिपउनकर सहित संयोजक शीतला प्रसाद गुप्ता उपस्थित थे ।

कौमी एकता कादम्बिनी कवि गोष्ठी

वडोदरा । गुजरात रिफाइनरी व कादम्बिनी क्लब के सामूहिक आतिथेय में राष्ट्रीय एकता सप्ताह के अंतर्गत एक कौमी एकता सर्वभाषा कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया ।

कवि गोष्ठी में कादम्बिनी क्लब वडोदरा से संबद्ध कवि— श्री रमेश चंद्र शर्मा कपिल, अनवर जमाल, श्रीमती कल्पना शील, क्रांति येवतीकर व डॉ. माणिक मृगेश ने काव्य पाठ किया । इसके अलावा डॉ. विष्णु विराट, डॉ. आशा राम वर्मा, डी. के. शर्मा, उष्मा तलवार, राजू पटेल, सुनंदा भावे, इंदिरानी नाग, उर्मिला प्रजापति, सुषमा श्रीवास्तव, रेणु सक्सेना, निरंजन पंड्या, उदय कुमार सिंह, प्रवीण बलिया व महमूद राज ने भी काव्य पाठ किया ।

कवि गोष्ठी में केंद्रीय विद्यालय हरणी के प्राचार्य श्री एस. के. लखानी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया । अध्यक्ष गुजरात रिफाइनरी के वरिष्ठ कार्मिक व प्रशासनिक प्रबंधक श्री सी. आर. सीकरी थे तथा संचालन डॉ. माणिक मृगेश ने किया ।

सांस्कृतिक समाचार

यूथ फॉर डवलपमेंट द्वारा सम्मान समारोह एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

गाजियाबाद : साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक वातावरण तथा गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कानून-व्यवस्था, विकास, प्रशासन, पत्रकारिता, काव्यजगत, साहित्य और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देनेवाली विभूतियों को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की लब्ध प्रतिष्ठ, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था 'यूथ फॉर डवलपमेंट' द्वारा सम्मानित किया गया। इस संस्था की प्रतिबद्धता कला, संस्कृति, पत्रकारिता, प्रशासन एवं देश की प्रगति से संबद्ध अन्य कार्यों में सक्रिय उन लोगों को रेखांकित करने की है जो अपनी पूर्ण निष्ठा से समाज और राष्ट्र को स्वस्थ परिवेश देने के कृतसंकल्पित हैं। स्थानीय हिंदी भवन में आयोजित इस समारोह के प्रथम चरण अर्थात् सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि थे गाजियाबाद के महापौर श्री दिनेश चन्द्र गर्ग। उन्होंने सम्मानित विभूतियों को सम्मान प्रदान किये। समारोह के प्रथम चरण का संचालन कादम्बिनी के श्री बलराम दुबे ने किया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में यानी रंगारंग हास्य कवि सम्मेलन का संचालन विख्यात कवि एवं पत्रकार श्री सुरेश नीरव ने किया।

जिन व्यक्तियों को सम्मानित किया गया वे हैं : सर्वश्री न्यायमूर्ति आर. पी. शुक्ला, अपर न्यायाधीश राजेश कुमार सिंह राठौर, पुलिस अधीक्षक नगर, नीलम अहलावत, संयुक्त सचिव गाजियाबाद विकास प्राधिकरण, योगेश पाठक, थानाध्यक्ष, मुरादनगर, सुनिता दयाल, समाज सेविका, राजकुमार पप्पू, सभासद : गाजियाबाद, महेन्द्र पाल शर्मा, संयोजक : कादम्बिनी कलब, गाजियाबाद, राजेश शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता, सुश्री मलका, शिक्षाविद् और योगेन्द्र योगी, समाजवादी चिंतक।

सम्मानित कवि एवं पत्रकार थे : सर्वश्री मधुप पाण्डेय, सुरेश 'नीरव', अरुण कानपुरी, सत्यदेव शास्त्री 'भोंपू', धनंजय सिंह, दिनेश रघुवंशी, प्रकाश प्रलय, सरदार मंजीत सिंह और नरेन्द्र मोहन कपूर।

उत्तर प्रदेश की भूतपूर्व मंत्री सुश्री प्रमिला बधवार भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थीं। उन्होंने सम्मानित विभूतियों को बधाई दी।

'यूथ फॉर डवलपमेंट' के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप चन्द्रा ने अपने स्वागत भाषण में अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करते हुए अपने हार्दिक उद्गारों में महापौर दिनेश चन्द्र गर्ग, प्रमिला बधवार और सम्मानित विभूतियों तथा वहां उपस्थित समस्त रसज्ञ श्रोताओं के प्रति अपना आभार प्रदर्शित किया और सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। हजारों की संख्या में उमड़ पड़े जन समूह के प्रति भावविह्वल होकर अपना सम्मान प्रदर्शित करते हुए श्री संदीप चंद्रा ने दो पंक्तियां पढ़ीं:-

जब दवा से काम नहीं चलता तो दुनिया दुआ से काम लेती है,
पीर मिले कामिल से तो खुदा से बात होती है।

